चीन की पुरस्कृत कहानियां

(प्रथम खण्ड)

चीन की पुरस्कृत कहानियां

(प्रथम खंड)

पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस
नई दिल्ली

प्रथम संस्करण फरवरी १९९४

© 1994 विदेशी भाषा प्रकाशनगृह, पेइचिङ

विदेशी भाषा प्रकाशन गृह, पेइचिङ, चीन लोक गणराज्य की ओर से
पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, द्वारा प्रकाशित

लेखक : ली क्वोवन, खो यूनलू तथा अन्य

अनुवादक : अजय प्रबह्मात्मज

सम्पादक : श्ये वाङफान

मूल्य : ८५ रुपये

ISBN 81-7007-183-6

प्रतुल लाहिड़ी द्वारा पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस, ५-ई, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-११००५५ से प्रकाशित और उन्हीं के द्वारा न्यू एज प्रिंटिंग प्रेस, ५-ई, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-११००५५ में मुद्रित।

परिचय

चीन की पुरस्कृत कहानियां के इस प्रथम खण्ड में सात कहानियां संकलित हैं। इन कहानियों के रचनाकार चीन लोक गणराज्य के सामाजिक जीवन के विभिन्न अंगों से घनिष्ठ रूप से जुड़े रहे हैं। यही कारण है कि कहानियों की अन्तर्वस्तु की विविधता के साथ सामाजिक परिवेश भली-भांति प्रतिबिम्बित होता है।

"देह और आत्मा" शीर्षक कहानी पर 'घोड़ों का चरवाहा' नाम की फिल्म भी चीनी भाषा में बन चुकी है।

इस संकलन की कहानियों में यथार्थ जीवन के चित्रण के साथ ही मानवीय संवेदनाओं का, जिनमें प्रेम प्रसंग भी शामिल हैं, सूक्ष्म अध्ययन आपको मिलेगा।

स्त्री सुलभ ईर्ष्या का एक चित्र देखिए। ई रू, लिङ सुङ से कहता है: "लिङ सुङ, संभव है तुम न्यून्यू से हजार गुना या दस हजार गुना सुंदर हो। पर प्यार एक दूसरी चीज है।..." लिङ सुङ उत्तर देती है: "ई रू, मैं आपसे प्यार करती हूं। यदि मेरे पति जीवित होते तो भी मैं उनसे तलाक लेकर आपसे शादी करती। मैं आपसे प्यार करती हूं। प्यार निर्दयी होता है। मैं जानती हूं, संभव है, मैं आपकी न्यून्यू जैसी नहीं, पर मुझे लगता है कि आप मेरे हैं। मैं आपके कमरे में आई हूं, मैं सबको यह बताने आई हूं कि मैं आपकी हूं। हम लोग कल शादी कर लें। एक औरत को अपने प्यार, अपनी खुशी और अपना पुरुष हासिल करने का अधिकार है"... इत्यादि।

अनतिदूर अतीत में चीन लोक गणराज्य में तथाकथित "सांस्कृतिक क्रान्ति" के नाम पर कुछ अतिशयता और अतिरेक की प्रवृत्तियां उभरीं जिनके दुष्परिणाम भी सामने आये, यह सुविदित है। कहानियां यदि इन दुष्परिणामों के उल्लेख से अछूती रहतीं, तो यह अस्वाभाविक होता। किन्तु, ये प्रवृत्तियां देश के प्रति और समाज के प्रति लोगों की कर्तव्य और दायित्व भावना को मलिन नहीं कर सकीं, यह इस संकलन की अन्तिम कहानी से परिलक्षित है।

कहानियों के पुरुष पात्र हों अथवा महिला पात्र, चरित्रों का बारीकी से अध्ययन और कलात्मक निरूपण आपको रुचिकर लगेगा। यह इस संकलन की पठनीयता को बढ़ाता है।

आशा है, **चीन की पुरस्कृत कहानियां** के इस प्रथम खंड का हिन्दी पाठक स्वागत करेंगे और इसे अपनायेंगे।

प्रकाशक

क्रम

चन्द्रग्रहण
ली क्वोवन १

तीन करोड़
खो यूनलू २३

फैक्ट्री क्लर्क की डायरी
च्याङ चिलुङ ६७

देह और आत्मा
चाङ श्येनल्याङ ८९

दक्षिण झील का चांद
ल्यू फ़ूताओ ११४

थ्येनशान पहाड़ का सैनिक
ली पिनख्वेइ १३४

क्या आप कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य हैं?
चाङ लिन १५७

ली क्वोवन

(१९३० -)

ली क्वोवन का जन्म १९३० में शाङहाए में हुआ। उन्होंने १९४७ में नानचिङ राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय में दाखिला लिया और उसके दो वर्षों बाद केंद्रीय नाट्य संस्थान के अनुसंधान विभाग में काम किया। १९५२ में वह चीनी जन स्वयंसेवकों में सम्मिलित हुए और उन्होंने सेना कला मंडली में लेखक के तौर पर काम किया। १९५४ में उन्हें रेलवे मजदूरों के ट्रेड यूनियन के प्रचार विभाग के साहित्य संपादक के पद पर नियुक्त किया गया। तीन वर्षों के बाद १९५७ में उन्हें रेलवे से संबंधित इंजीनियर विभाग में शारीरिक श्रम के लिए लंबे समय तक बाहर भेज दिया गया। १९७९ में फिर से चीनी रेलवे कला मंडली में लेखक के तौर पर उनकी नियुक्ति की गई।

१९५७ में प्रकाशित उनकी कहानी "पुनर्चुनाव" से उन्हें ख्याति मिली। इसके बाद १९७९ तक उन्होंने कुछ नहीं लिखा। १९७९ से उनकी अनेक कहानियाँ प्रकाशित हुईं, जिनमें "बस फ़नश्वेइलिङ पहुंची" और "खोखली घाटी और मनोहर ऑर्किड" अत्यंत चर्चित हुईं। उनका उपन्यास "जाड़े में वसंत" १९८१ में प्रकाशित हुआ।

चन्द्रग्रहण

ली क्वोवन

१

ई रू ने बस की खिड़की से बाहर देखा। थाएहाङ पहाड़ का सुबह का तुषार पर्वतश्रेणियों, जंगलों और फसल काट ली गई नंगे खेतों पर बिखरा हुआ था। पतझड़ का खाली और उदास दृश्य किसी नमक के तालाब के क्षारीय किनारे की याद दिला रहा था, बाहरी दृश्य की निर्जनता किसी के उत्साह को ठंडा करने के लिए पर्याप्त थी। सड़क के किनारे लगे परसीमन के पेड़ों के अलावा जीवन का नामोनिशान न था, बकरियां भावशून्य दृष्टि से गुजरती बस को देख रही थीं।

ई रू को अफसोस हुआ कि इतनी हड़बड़ी में उन्हें नहीं निकलना था। उन्हें पहले पत्र या तार भेज देना चाहिए था! पर किसके पास? शायद क्वो चाची अब तक गुजर चुकी हों!

बस जैसे-जैसे मंजिल के करीब पहुंच रही थी, उनकी उदासी बढ़ती जा रही थी। उन्हें अपनी आत्मिक दुनिया की तलाश में पुराने क्रांतिकारी आधार क्षेत्र में नहीं आना चाहिए था! संवेदनाओं के वशीभूत होकर उन्होंने मूर्खतापूर्ण हरकत की है, क्योंकि लंबे समय से बिछुड़े और खोए अतीत को फिर से पाना असंभव था। बस एस. काउंटी पहुंची, पर वह अभी भी निश्चित नहीं कर पा रहे थे कि वह यहां किस चीज की तलाश में वापस आए हैं। यह सही है कि वह अपने खोए प्रेम को नहीं भुला सकते थे, पर कुछ दूसरी बातों को याद करने की कोशिश ने उन्हें और उलझा दिया। वह अपनी मनोदशा नहीं समझ पा रहे थे।

वह बस-स्टेशन के फाटक से बाहर निकलकर थोड़ी देर चौराहे पर खड़े रहे। तेज पहाड़ी हवा पूरे बदन को कंपा रही थी। पहाड़ी इलाके की तीव्र ठंड के कारण ड्राइवरों ने पहले ही बकरी के रोओं के अस्तर वाले कोटों को उलट कर पहन लिया था। वह उनकी तरफ गए। उन्होंने उनसे पूछा कि यदि वे कमल तालाब की ओर जा रहे हों तो उन्हें साथ ले जा सकते हैं या नहीं? पर उनके सवाल पर ड्राइवरों ने ठहाका लगाया। उन्हें स्वयं भी आश्चर्य हुआ। पहाड़ी लोगों के हंसी-मजाक का स्तर विचित्र था। पुराने क्रांतिकारी आधार क्षेत्र के इन प्रिय और आदरणीय देहाती निवासियों के परिहास से वह परिचित थे। उन्होंने उनसे कहा, "बड़े भाई! हमें आपका पैसा नहीं चाहिए! जाओ, जाकर आठ माओ का टिकट खरीदो और चार चक्कों वाले लोहे के जानवर पर चढ़ जाओ, दोपहर के खाने के समय तक वहां पहुंच जाओगे।"

ई रू हंसे। जब वह एस. काउंटी से गए थे, उस समय बस-स्टेशन नहीं था। अब कमल

तालाब या संभवतः छोटे पहाड़ी गांव याङच्याओनाओ तक सड़क जाती थी, उन्हें इसी गांव में जाना था।

टिकट खिड़की पर आठ माओ देते समय भी वह हिचक रहे थे कि वहां जाएं या न जाएं? अंत में उन्होंने टिकट लिया और वहां जाने का आखिरी फैसला कर लिया, हालांकि वह अभी भी साफ-साफ नहीं बता सकते थे कि वह क्यों याङच्याओनाओ जा रहे हैं। वहां पहुंचने के बाद उन्हें कैसी स्थिति का सामना करना होगा? क्या वहां उन्हें समझ में न आने वाली कोई चीज मिल सकेगी?

इस जगह आने की उनकी पुरानी आकांक्षा थी, यदि नहीं आते तो ऐसा लगता कि कुछ खो गया है। बस के जाने में अभी समय था, उन्होंने टिकट जेब में रखा और संकरी गली शिक्वान से निकले। अब इस गली का नाम सिशिन मार्ग हो गया था। संकरी गली से वह शहर में आए। अतीत में पत्थर की इस ऊबड़-खाबड़ सड़क पर आज के जनरलों या मंत्रियों का तांता लगा रहता था, वे घोड़ों पर या पैदल शहर आते थे। एस. काउंटी का भाप से पकाया कोदों आज निगलने में कठिन होने के बावजूद उन दिनों में उन्हें अत्यंत स्वादिष्ट लगता था। ई रू को हालांकि भूख नहीं लगी थी, पर उन्होंने कुछ खा लेना उचित समझा, क्योंकि बस की यात्रा और कुछ घंटों की थी और संभव था कि कमल तालाब पहुंचने तक दोपहर के खाने का समय निकल जाए। आखिरकार मुख्य चोटी पार कर याङच्याओनाओ जाने के लिए भी शक्ति की जरूरत थी।

अचानक उनके दिमाग में कुछ कौंधा। उन्हें याद आया कि शिक्वान गली में एक मुस्लिम रेस्तरां था, जहां का मटन सूप अत्यंत प्रसिद्ध हुआ करता था। १९४७ में जब वह और क्षेत्रीय प्रचार विभाग के निदेशक पी चिङ एस. काउंटी पहली बार आए थे तो निदेशक ने उनके कंधे को थपथपाकर कहा था, " ई रू! आज तुम मेरे मेहमान हो। मैं शिक्वान के मटन सूप के लिए तुम्हें आमंत्रित करना चाहता हूं।" निदेशक पी चिङ की याद आते ही उनके होंठों पर मुस्कराहट तैर गई। उस दिन निदेशक पी चिङ ने भेड़ के रोएं से बने कागज पर छपे सीमांत क्षेत्र के नोटों का बड़ा बंडल मेज पर फेंका था। मेज पर रखी सिरके और चटनी की शीशियां हिलने लगी थीं। उन्होंने आदेश दिया था, "खूब मसाले डालकर दो बड़े कटोरों में सूप ले आओ।" सचमुच उतना स्वादिष्ट सूप उन्होंने पहली बार पिया था! मटन सूप उन्हें इतना अच्छा लगा था कि सूप में डाली भेड़ की सारी अंतड़ियां निगलने के बाद ही वह उसके स्वाद की प्रशंसा कर पाए थे।

पी को पेट की बीमारी थी, इसलिए उन्होंने ज्यादा खाने की कोशिश नहीं की, पर ई रू ने पेटभर खाने के बाद होंठों को चूसा। "अबे जाहिल, मैं तुम्हारे लिए दूसरा कटोरा मंगवाता हूं," वह हंसते हुए बोले। हंसने के कारण उनकी आंखें सिकुड़कर छोटी हो गई थीं। ई रू ने लज्जित महसूस किया। बैरा सूप से भरा दूसरा कटोरा मेज पर रखता हुआ बोला, "आठवीं राह सेना के छोटे साथियो, आप अपना ख्याल रखें।" उन्होंने अपना सिर झुकाया और थोड़ी देर में कटोरे का सूप उनके पेट में उतर गया। माथे पर पसीने की बूंदें चुहचुहा आईं।

ड्राइवरों और खलासियों की पेशेवर पेट की बीमारी से ग्रस्त होने के बावजूद ई रू ने मटन सूप चखने का फैसला किया।

एस. काउंटी थाएहाङ पहाड़ी इलाके का एक छोटा कस्बा था, नक्शे पर एक बिंदी के इतना छोटा था, शायद सामने आने में उसे शर्म महसूस होती थी। पहाड़ी लोग अपने इस छोटे कस्बे के बारे में ज्यादा नहीं सोचते थे। ई रू ने शिक्वान से तुङक्वान के कई चक्कर लगाए। पर उन्हें मुस्लिम रेस्तरां नहीं मिला। उन्होंने पके शकरकंद बेचने वाले से पूछा। उसके झुर्रीदार चेहरे पर अन्य पहाड़ी लोगों की तरह कोयले की गर्द जमी हुई थी। उसने सोचा ई रू उसे जानबूझकर बुद्धू बना रहे हैं। इसलिए उसने जवाब दिया, "मुस्लिम रेस्तरां? मेरी दुकान सरकारी है और मजदूरों, किसानों व व्यापारियों की साझेदार दुकान है। हमारे ब्रिगेड ने यह नया प्रयोग किया है। मैं इसके लिए सही शब्द नहीं बता सकता। पर यह निजी व्यापार नहीं है। अगर कुछ खरीदना है तो अच्छी बात है, वर्ना अपना रास्ता नापो। मुझे तुच्छ मत समझो!"

उसने सोचा कि ई रू उसे बुद्धू बनाना चाहते थे और जानबूझकर उसे निजी रेस्तरां का मालिक समझकर बातें कर रहे हैं। पर जब ई रू ने दो माओ से दो शकरकंद खरीदे, तब उसे महसूस हुआ कि उससे गलती हुई, देश के दूसरे हिस्से से आया यह आदमी सचमुच मुस्लिम रेस्तरां के बारे में जानना चाहता है। उसने लंबी सांस ली और बताया, "मुस्लिम रेस्तरां को एक सहकारी उद्यम में शामिल कर लिया गया। हां, मेरी दुकान की ही तरह वह दस साल पहले बंद हो गया। मैंने अभी-अभी फिर से व्यवसाय आरंभ किया है। हम लोगों को मजदूर, किसान व व्यापारियों' के सहयोग से चलाए गए दुकान उत्पादक दल के लिए मुनाफ़ा हो रहा है।" इस पहाड़ी बूढ़े की ही तरह ई रू ने भी पत्रकार का पुराना पेशा फिर से आरंभ किया था। उन्हें एड्रियन सागर से आए 'मजदूर, किसान व व्यापारी साझेदार दुकान' शब्द सुनकर अत्यंत खुशी हुई। अलग-थलग और पिछड़े कस्बे में जिस तरह आरंभिक शरद की सुबह के सूरज की रश्मियां नए दिन का संचार कर रही थीं, वैसे ही नयी चीजें नयी आशाएं लाएंगी। संभव है कि पके शकरकंद बेचनेवाला साझेदार दुकान की सहायता से आगामी कुछ वर्षों में मजदूर, किसान व व्यापारी साझेदार आधुनिक उद्यम का अग्रदूत बन जाए। ई रू अपने हाथ में पका शकरकंद लिए वहां से आगे बढ़े। शकरकंद बेचनेवाला फटी आवाज में चिल्ला रहा था, "गर्म, शहद की तरह मीठा शकरकंद!" शायद लंबे समय से इस व्यवसाय से अलग रहने के कारण उसकी आवाज लगाने की आदत छूट गई थी; उसकी आवाज सूखी और फटी लग रही थी। ई रू ने सोचा कि अनेक वर्षों से अभ्यास छूट जाने के कारण कहीं वह भी तो प्रभावित नहीं हुए हैं। जब उन्होंने फिर से कलम उठाई और पत्रकारिता का पुराना पेशा आरंभ किया, क्या वह छठे दशक का पैनापन अपने लेखन में हासिल कर सके?

वह बस में आकर बैठ गए। चलने के साथ ही बस के इंजन की तेज घर्र-घर्र आवाज आने लगी।

ई रू ने पहली नजर में ही भांप लिया कि यह बस पुरानी लॉरी की मरम्मत कर बनाई गई है। पुरानी बस सीधी चढ़ाई पर चढ़ रही थी और बस की महिला चालक बस को ऊपर चढ़ाने की हर संभव कोशिश कर रही थी। उन्हें मालूम था कि थोड़ी देर में सिलिंडर में कोई

गड़बड़ी होगी और वाष्पित्र भी मैला होगा। पर बीस वर्षीया महिला चालक उत्साही और कर्मठ दिख रही थी। उसके छोटे बाल, गर्दन से लिपटा सफेद स्कार्फ और सूरज की रोशनी व पसीने से गंदी हुई उसकी फूलदार कमीज उन्हें किसी पुराने परिचित की याद दिला रही थी। उन्होंने बस की महिला चालक को पीछे से ध्यानपूर्वक देखा। वह धूप का चश्मा पहनने और रौब गांठने वाली पेशेवर महिला चालकों से अलग देहाती लड़की की तरह लग रही थी। शायद उसे अभी-अभी ड्राइवरी लाइसेंस मिला था। बस चलाने के उसके ढंग से ई रू ने अनुमान लगाया कि वह अवश्य ही "तुङफाङहुङ" और "थ्येन्यू ५५" जैसे ट्रैक्टर चला सकती है। उसके घने काले बाल, मजबूत कद-काठी और गोल कंधे उनके दिल की गहराई में बसी एक युवती की याद दिला रहे थे। उसने उनकी यादों की किताब में सबसे सुंदर अध्याय जोड़े थे और उसी की वजह से इन सारे वर्षों में वह महसूस करते रहे थे कि जिंदगी अभी भी जीने लायक है। वह युवती याङच्याओनाओ की उनकी न्यून्यू थी।

क्या वह उसी के कारण वापस आये थे? शायद हां, या सिर्फ उसी के लिए नहीं? उन्हें अपने दिल पर भारी बोझ महसूस हुआ था। फिर किसी तरह आखिरकार उन्हें यह महसूस हुआ कि उनकी इस थकान भरी यात्रा का एक उद्देश्य याङच्याओनाओ की अपनी न्यून्यू को खोजना है। बस की खिड़की से शांत संवेदनशील किसान युवती जैसी कमल तालाब की मुख्य चोटी धुंधले बादलों के बीच दिखाई पड़ी। चोटी देखकर उन्हें महसूस हुआ कि वह घर वापस आ रहे हैं। पार्टी संगठन की तरफ से पार्टी की पुनः सदस्यता प्राप्त होने की औपचारिक सूचना पाकर भी उन्हें ऐसा ही महसूस हुआ था और सचमुच पार्टी उनके घर के समान ही तो थी। पर इन बाईस वर्षों की अवधि के बाद न्यून्यू इन दिनों क्या कर रही होगी? ई रू अत्यंत भावुक व्यक्ति थे और यही उनकी भयानक कमजोरी थी। उन्होंने जान बचाने और सच्चे दिल से प्यार करने वाली न्यून्यू के प्रति आभार प्रकट करने के लिए यहां आने का फैसला किया था। और यही वह बात थी, जो उन्हें ई रू बनाती थी। शायद उनके लौटने से उसकी मानसिक शांति भंग हो, क्योंकि अब तक वह अनेक बच्चों की मां बन चुकी होगी! इसी कारण पूरे रास्ते वह स्वयं को दोषी ठहराते रहे और अपनी अदूरदर्शिता पर पश्चाताप करते रहे। पर अब मुख्य चोटी उन्हें आमंत्रित कर रही थी। आखिरकार उन्होंने सोचा कि उनका फैसला सही था। जल्द ही वह अपने चाहने वालों के बीच होंगे। न्यून्यू, मां की तरह देखभाल करने वाली चाची क्वो और गांववासी। इसी गांव में तो वह बाल सिपाही से आठवीं राह सेना के सिपाही बने थे। उन्हें सबका प्यार मिला था। हां, अलग-अलग प्यार का अनुभव किया था उन्होंने, न्यून्यू का प्यार, क्वो चाची का प्यार और आठवीं राह सेना व कम्युनिस्ट पार्टी के प्रति जनता का प्यार। वह अपने खोए प्यार की तलाश में वापस आए थे। याङच्याओनाओ में उन्होंने पी चिङ के साथ पहले छापामार युद्ध किया और फिर भूमि सुधार और राजनीतिक सत्ता की स्थापना में भाग लिया था।

वह सोच रहे थे, "न्यून्यू! क्या तुम्हें अभी भी हाथ में कारबीन लिए बाल सिपाही की याद है?"

वह इन्हीं सोचों में डूबे हुए थे और बस घर्र-घर्र की आवाज के साथ कमल तालाब कम्यून

की तरफ जा रही थी। घर्र-घर्र की आवाज में यात्री ऊंघ रहे थे, शायद यह उनके लिए मधुर संगीत था।

२

ई रू ने कभी कल्पना नहीं की थी कि वह एक दिन छाएदाम से इस कस्बे में लौटकर आएंगे।

बहुत पहले छोड़कर गए भूरी इमारत के सामने वह खड़े थे। समय के साथ इमारत का रंग और भूरा हो गया था। एक नजर इमारत को देखने के बाद वह तेजी से सीढ़ियां चढ़कर ऊपर आए। उन्होंने बाईस वर्षों के बाद पहली बार उस शीशे के दरवाजे को खोला और महसूस किया कि वह वही उलझे लंबे बालों और ढीले कपड़ों वाले ई रू हैं। दरवाजे के शीशे में एक जोड़ी निर्दोष आंखें सुखद आभा के साथ चमक रही हैं। वह मुस्कराते हुए पुराने परिचित चेहरों को खोज रहे थे, पर कोई नहीं मिला। उन्होंने दूसरे दरवाजों को खोलकर भी झांका, हर जगह से ठंडे स्वर में एक ही सवाल सुनने को मिला, "आप किसे खोज रहे हैं?" या फिर कमरे के अंदर घूरती निगाहें मिलीं।

वह ऊपर अपने भूतपूर्व संपादक के कार्यालय में गए, वहां आखिरकार उन्हें कुछ परिचित चेहरे मिले। लेकिन उनमें से किसी ने उन पर ध्यान नहीं दिया। जिस मेज पर वह काम करते थे, वहां एक औरत बैठी थी। उसने उन्हें चौंककर देखा। पर वह भी उस औरत को नहीं पहचान पाए। उसने सुनहरे रंग का बड़े फ्रेम का आयातित चश्मा पहन रखा था; चश्मा उसके एक-तिहाई चेहरे को ढक रहा था। उसके घूर कर देखने से उन्होंने घबराहट महसूस की। वह छठे दशक में निदेशक पी की बार-बार सुनाई गई उद्घोषणा ऊंचे स्वर में दोहराना चाहते थे, "यदि आपने अखबार के कार्यालय को यामन (पुराने चीन का सरकारी दफ्तर) का रूप दे दिया तो आप जनता की आवाज नहीं सुन पाएंगे। आप जनता से मिलें, जैसे पुराने समय में मुक्त क्षेत्रों में मिला करते थे, उनके साथ एक ही खाङ (उत्तर चीन में कच्ची ईंटों से बनाए गए पलंग जिन्हें गर्म करने के लिए उनके अंदर ही आग जलायी जा सकती है) पर सोएं, आप उनका हिस्सा बन जाएं..." ई रू ने मन ही मन सोचा, "कॉमरेड, आप ऐसे क्यों घूर रही हैं! मैं आपको निगलने या आपका पर्स छीनने नहीं जा रहा हूं!"

"ई रू, तुम?" किसी ने आश्चर्यमिश्रित खुशी के साथ पूछा।

"हां, मैं। तीन फीट मोटी बर्फ!"

कई लोग हंस पड़े। उन दिनों उन्हें सभी "तीन फीट मोटी बर्फ" कहकर पुकारते थे। इस नाम से वह सहकर्मियों के अलावा अपरिचित लोगों के बीच भी जाने जाते थे। ऐसा कहा जाता था कि जब ई रू सोलह या सत्रह वर्ष के थे, लगभग कारबीन इतने लंबे, उन्होंने *शानशी-छाहार-हपेइ दैनिक* के युद्ध समाचार का संपादन किया था। छठे दशक में वह दैनिक अखबार के एक महत्वपूर्ण व्यक्ति हो गए थे। उन वर्षों में उन्होंने बहुत यात्राएं कीं और अपने संस्मरण लिखे। सरकारी योजनाओं में उनकी विशेष दिलचस्पी थी; वह योजनाओं के बारे में उत्साह और विश्वास के साथ लिखते थे। उन्हें पानमुनजोम की शांति वार्ता की रिपोर्टिंग के

लिए कोरिया भी भेजा गया था। युवा पत्रकार उन्हें अनुभवी और दक्ष पत्रकार की नजर से देखते थे।

ई रू "पेशेवर संवाददाता" रह चुके थे और अपरिचितों को भी आसानी से दोस्त बना लेने में माहिर थे। उस पुराने कमरे में उन्होंने सभी नए दोस्तों से एक-एक कर हाथ मिलाया। जब वह खिड़की के पास रखी मेज की तरफ बढ़े तो वहां बैठी छरहरी औरत उनकी तरफ मुड़ी। जैसे ही उसने सुनहरे फ्रेम का चश्मा उतारा, ई रू ने परिचित आकर्षक चेहरे को पहचान लिया।

"लिङ सुङ!..."

वह चुप रही और धीमे से मुस्कराई। उसकी मुस्कराहट से स्पष्ट था कि दोनों पुराने परिचित हैं और मिलने की खुशी व्यक्त करने के लिए शब्दों की जरूरत नहीं है। उन्हें याद आया, बीसेक वर्ष पहले अपनी युवावस्था में भी वह इसी तरह प्यार से मुस्कराती थी। वह उसकी पांडुलिपि परिमार्जित कर या लगभग फिर से लिखकर प्रेस में भेजते थे तो वह इसी तरह मुस्कराकर कृतज्ञता व्यक्त करती थी। फिर काम समाप्त हो जाने के बाद उसने बताया था कि दैनिक अखबार के कार्यालय में क्या गुल-गपाड़ा चल रहा था। उसके सुंदर बाल उन्हें अच्छे लगते थे। चांदी की घंटियों की तरह उसकी सुमधुर हंसी उन्हें आकर्षित करती थी और इत्र की खुशबू उन्हें उत्तेजित कर देती थी। वह अपने पर संयम रखते थे; उन्हें उसके आकर्षण से पैदा हुई अपनी भावनाएं अच्छी नहीं लगती थीं पर वे उनसे बच नहीं पाये। आखिरकार वह उनके अच्छे दोस्त की पत्नी थी। प्रसिद्धि की होड़ में लगी हर औरत की तरह वह भी एक प्रसिद्ध पत्रकार बनना चाहती थी।

संपादकीय कार्यालय की सभी औरतों के कपड़ों से अधिक महंगे और भड़कीले कपड़े लिङ सुङ के थे। पर जब उसने चश्मा उतारा, ई रू ने उसके चेहरे पर पड़े समय के निशान देखे, आंखों के किनारे हल्की झुर्रियां थीं। फिर भी वह जानती थी कि स्वयं को कैसे सजाया जा सकता है। आकर्षक कपड़ों में वह अपनी उम्र से कम लग रही थी, खासकर उसकी पुरानी मुस्कराहट उसकी उम्र पर पर्दा डाल देती थी।

१९५७ में लिङ सुङ के पति की मृत्यु के बाद पूरे कार्यालय में ऐसा कोई नहीं था, जो उनके और लिङ सुङ के प्रेम प्रसंग के बारे में नहीं जानता था। ऐसे समाचार यों भी जल्दी फैलते हैं। ई रू ने उस समय परवाह नहीं की थी।

"कैसी हो?" उन्होंने प्यार से हाथ मिलाते हुए पूछा।

वह धीरे से मुस्कराई। उसने मुस्कराहट से व्यक्त किया कि शब्दों की अपेक्षा खामोशी भावनाओं को अच्छी तरह व्यक्त कर सकेगी। पर ई रू ने मुड़कर दूसरों से पूछा, "कॉमरेड पी चिङ का कमरा किधर है?"

उनके ठिकाने के बारे में लोगों की अलग-अलग राय थी। कई दिनों से उन्होंने अपने नेता को नहीं देखा था। इधर लोगों के बीच अखबार की प्रतिष्ठा बढ़ी थी। बिक्री और व्यक्तिगत ग्राहकों की बढ़ोतरी से स्पष्ट था कि प्रकाशन में सुधार के नतीजे अच्छे रहे थे। पर कॉमरेड

पी चिङ कहां थे? क्या वह कहीं लोगों से अखबार के लिए लिखने का आग्रह करने गये थे?' लिङ सुङ को अवश्य मालूम होगा।

"हो दीदी कह रही थीं कि पी कहीं बाहर गए हैं।" यह कहने के साथ उसने अपने कटे घुंघराले बालों को सहलाया। उसने पूछा, "क्या आपको मालूम है कि आजकल वे लोग कहां रहते हैं? उन्होंने अपना मकान बदल लिया है और उसे खोज लेना आसान काम नहीं है। देखिए, यह लेख मैंने अभी-अभी पूरा किया है..." उसने 'चंद्रग्रहण की वैज्ञानिक व्याख्या' शीर्षक लेख सहसंपादक की तरफ बढ़ाया।

ई रू ने सोचा, शायद अभी हाल ही में चंद्रग्रहण लगा होगा। इतने वर्षों के बाद भी अभी लिङ सुङ उन्हीं बंधे-बंधाये विषयों पर लिख रही थी। ऐसा आभास हुआ कि उसका बौद्धिक विकास बहुत थोड़ा हुआ है और वह अपने कटे घुंघराले बालों पर ज्यादा समय बर्बाद करती है। लिङ सुङ ने ई रू की तरफ देखा। उसकी आंखों में चमक और होंठों पर कंपन था। वह मुस्कराई तो उसके सफेद दांत दिखे। उसकी अर्थ-भरी मुस्कराहट से स्पष्ट था, "आप मुझे अपने साथ चलने के लिए अवश्य कहेंगे!" कभी-कभी चतुर और सुंदर औरतें अपनी इच्छाएं ऐसे भी प्रकट करती हैं।

"आप उनका पता बता दें। हालांकि मैं छाएदाम से आया हूं, पर मुझे विश्वास है कि मैं उनका मकान खोज लूंगा।" अखबार के कार्यालय से निकलने के बाद उन्हें लगा कि उनका फैसला सही था, आखिर कुछ बातें तो बिलकुल ही भूल जाना चाहिए।

शहर वैसा ही था, केवल गलियों की भीड़ नयी थी। ई रू सुनसान छाएदाम में बीस वर्षों से अधिक रहे थे, जहां उन्हें मीलों चलने के बाद मुश्किल से कोई आदमी दिखाई पड़ता था। उनके लिए कुत्ते का भौंकना भी राहत की बात होती थी। अब जबकि वह भीड़ से गुजर रहे थे तो उन्होंने घुटन महसूस की; उन्हें ऐसा लगा कि वह किसी नमक की झील में गिर पड़े हैं, जहां डूबना या तैरना दोनों ही मुश्किल हैं।

हो दीदी के दरवाजा खोलने पर उन्हें राहत मिली। गर्म मिजाज बूढ़ी दीदी के बाल सफेद हो गए थे।

"क्या तुम्हें पी का तार नहीं मिला? उन्होंने सोचा कि तुम हवाई जहाज से जल्दी से आओगे।"

"मैंने हवाई जहाज का टिकट खरीदा था, पर उसे लौटा दिया। एक तिब्बती बूढ़े वाङत्वेइ दादा ने मुझसे एक बार कहा था, 'सुरागाय घोड़े के इतना तेज नहीं दौड़ सकती, पर वह धीरे-धीरे चलकर ल्हासा पहुंच सकती है! तुम खुद देखो कि कितने घुड़सवार इस कोशिश में घोड़े से गिरे?' मुझे उसकी बात सच लगती है..."

"मूर्ख! यह क्यों नहीं कहते कि हवाई जहाज से यात्रा करने में डर लगता है। तुम्हें पहले तो किसी चीज से डर नहीं लगता था।"

"खैर छोड़ो, पी कहां हैं?"

"उन्होंने कुछ दिनों तक तुम्हारी प्रतीक्षा की। तुम नहीं आए तो वह अकेले चले गए।"

"पर अभी वह कहां हैं?" उन्हें लगा कि कॉमरेड पी में अभी भी वही जोश-खरोश है।

"किसे मालूम? बूढ़े हो गए, पर अभी तक ताकत बाकी है।"

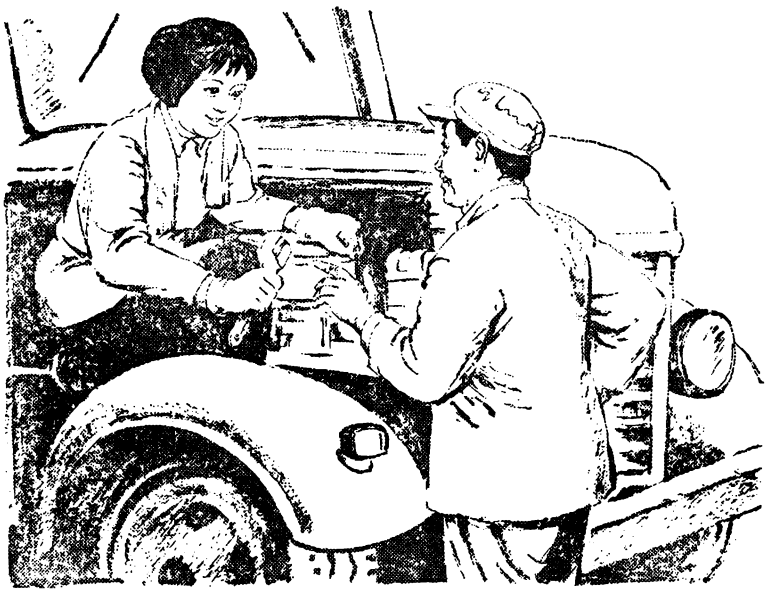

ई रू ने पुराने नेता की व्यस्तता समझी, "किसी जरूरी काम से ही गए होंगे?"

"मालूम नहीं। पर वह पहले की ही तरह दिन-रात काम कर रहे हैं। देखो, ऐसी जल्दबाजी में निकले कि पेट दर्द की दवा भी साथ ले जाना भूल गए।" फिर उसने पूछा, "क्या तुम अखबार के कार्यालय गए थे?"

ई रू ने हां में सिर हिलाया। उन्होंने कमरे में इधर-उधर देखा, पहले की ही तरह किताबों, पेंटिंग और सुन्दर चीनी रेखाक्षरों के अलावा कमरे में कुछ भी नहीं था। पी की यह पुरानी आदत थी।

"क्या तुम उससे नहीं मिले?" हो रू ने चिंता भरी नजरों से ई रू को देखा; ई रू उस परिवार के सदस्य की ही तरह थे। उनकी दोस्ती बहुत पहले भीषण लड़ाई के दिनों में कायम हुई थी।

वह उन पत्नियों में से थीं, जिन्हें अपने पति पर हुक्म चलाना अच्छा लगता है। खैर, कभी-कभी चांद बादलों के पीछे छिप जाता था या कभी उसे ग्रहण ही लग जाता था। फिर उन्होंने चंद्रग्रहण संबंधी क्वो चाची की कहानी याद की कि कैसे स्वर्ग का कुत्ता चांद को खा जाता है। शायद क्वो चाची की व्याख्या की याद ने ही उन्हें याङच्याओनाओ आने के लिए सोचने को प्रेरित किया।

लिङ सुङ धीमे कदमों से उनकी तरफ आ रही थी। वह पास आकर मुस्कराई। उसने कसा हुआ सफेद ऊनी स्वेटर पहन रखा था; उसके शरीर का आकर्षक उभार दिख रहा था। कॉलर के ऊपर उसकी सुराहीदार गर्दन उन्हें दिख रही थी। वह अभी भी सुंदर लगती थी, सुबह की ओस में नहाए किसी फूल की तरह। उसका चेहरा नजदीक आता जा रहा था। वह नहीं हिल सके। उसका ठंडा चेहरा उनसे सटा जा रहा था। उन्होंने अपना सिर हिलाया और उनकी आंखें खुल गईं। उन्हें पता ही नहीं चला कि वह कब सो गए थे और उनका चेहरा बस की खिड़की के शीशे से लगा हुआ था।

रोचक सपना था। पर एक सीमा तक सपने में वास्तविकता भी थी। उन्होंने स्वयं को समझाया, "शायद सपने की यही सच्चाई नहीं होती?"

पुरानी बस अचानक रुक गई। कुछ यात्री बस से उतरे और सड़क के किनारे बैठकर लंबा पाइप पीने लगे। दूर आकाश की तरफ देखते हुए मानो वे ड्राइवर से कह रहे हों, "आराम से ठीक करो, हमें कोई हड़बड़ी नहीं है। कभी-कभी खच्चर भी काम करने से मना कर देता है। बस को भी आराम की जरूरत है।" मजे लेने के लिए कुछ लोग ड्राइवर के इर्द-गिर्द खड़े हो गए। वह यह देख रहे थे कि ड्राइवर बस का इंजन कैसे ठीक करती है। वह बस के सामने आई, इंजन का बोनट उठाकर खराबी का कारण खोजने लगी। उसका सुंदर चेहरा ग्रीस और पसीने से भरा था। उसने ऊपर की तरफ देखा और बोली, "मां, एक बार और दबाओ।"

ई रू ने देखा, बस के अंदर उनके अलावा केवल ड्राइवर की मां बैठी थी। छोटे बालों और बेटी की तरह चौड़े कंधों वाली मां ड्राइवर की सीट पर बैठी हुई थी। उसने गलती से ब्रेक दबा दिया। ब्रेक दबते ही ड्राइवर तेंदुए की तरह उछली और मां पर गुर्रायी, "ब्रेक नहीं एक्सलेरेटर दबाओ...।" ई रू को चूंकि पहुंचने की जल्दी थी, इसलिए वह ड्राइवर की मदद

करने की सोचकर बस से उतरे। छाएदाम के बीस वर्षों के काम ने उन्हें खराब गाड़ी ठीक करने में अनुभवी बना दिया था।

ड्राइवर की मां ने अधीर होकर पूछा, "शिनशिन! क्या अभी तक इंजन चालू नहीं हुआ?"

लड़की ने ऊपर देखा, "अब बस भी करो, यात्रियों को तो कोई शिकायत नहीं है और तुम..."

ड्राइवर की सीट पर बैठी महिला नीचे उतरी और बोली, "वे इंतजार कर सकते हैं, पर मैं नहीं। बेहतर होगा कि मैं चलूं, मैं पहाड़ी से होकर निकल जाऊंगी।" ऐसा लगा कि गाड़ी के ठीक होने तक इंतजार करना उसके धैर्य के बाहर है। अचानक ई रू चौंक उठे! उसकी आवाज क्यों इतनी परिचित लग रही थी?

"मां..." लड़की बुदबुदाई।

"शिनशिन! कोई बात नहीं! मैं चलती हूं।" इतना कहकर वह तेज कदमों से पहाड़ी की तरफ बढ़ गई।

ई रू ने दिल ही दिल में तमन्ना की कि वह महिला एक बार पलटे तो वह देख लें। पर शायद उसने पलट कर न देखने का सोच रखा था। जब तक वह बस के आगे आए, महिला थोड़ी दूर निकल गई थी। उन्होंने उसे पीछे से देखा, उसकी आकृति परिचित लग रही थी।

आखिरकार पुरानी लॉरी का इंजन फिर से स्टार्ट हुआ। शिनशिन खड़ी हुई, उसके चेहरे पर विजयोल्लास था, उसने गर्व के साथ हाथ हिलाकर मां को इशारा किया। फिर उसने यात्रियों से माफी मांगी और उनसे बस में बैठने को कहा। पहाड़ी लोगों की सहनशीलता और धैर्य ने ई रू को चकित कर दिया। शिकायत करने के बदले उन्होंने शिनशिन को सांत्वना दी, "हमें तुम्हारी मां की तरह जल्दी नहीं है। हम अभी भी इंतजार कर सकते हैं... अब तो गाड़ी ठीक हो गई है न?" पर ई रू को मालूम था कि इंजन फिर से बंद हो जाएगा। उन्होंने लोगों को आगाह किया, "मुझे डर है कि गाड़ी फिर से बंद न हो जाए।"

शिनशिन ने उनकी तरफ क्रोध भरी नजरों से देखा और पूछा, "आपको कैसे मालूम? बस में बैठिए, वर्ना हम आपको छोड़कर चले जाएंगे।" अपनी सीट पर बैठती हुई वह गुर्रायी।

उन्होंने हंसते हुए कहा, "चलो, देखते हैं!"

लॉरी थोड़ी देर के बाद फिर रुक गई। शिनशिन बस से उतरी और उनकी तरफ मुस्कराती हुई आई, "क्या आपको बस कंपनी ने यह देखने के लिए भेजा है कि 'किसान-मजदूर-व्यापारी साझेदार उद्यम' कैसे काम कर रहा है?"

उन्हें फिर से एड्रियन सागर तट से आया शब्द सुनाई पड़ा! ई रू को हंसी आ गई। बाद में उन्हें बताया गया कि ट्रैक्टर स्टेशन ने छोटी दूरी की यह यातायात सेवा आरंभ की है, ताकि देहात के लोगों को सामान कंधे पर ढोकर ले जाने की परेशानी से मुक्ति मिले। जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध के दौरन ई रू ने अनाज और खाद्य सामग्री ढोने का काम किया था। एक-एक सीढ़ी करके पहाड़ पर चढ़ने की परेशानी का उन्हें अनुभव था। जवान लड़की की स्पष्टवादिता और मुस्कराहट ने उन्हें आकर्षित किया। इसलिए उसके आग्रह पर वह इंजन देखने आए। कार ठीक करने के बीस वर्षों के अनुभव से उन्हें मालूम था कि उन्हें

क्या करना चाहिए। उन्हें भी कोई जल्दबाजी न थी। उन्होंने दोनों शकरकंद निकाले और एक शिनशिन की तरफ बढ़ाया, "लो, खा लो। तुम्हें शायद भूख लगी हो?"

उसने शकरकंद लेने में झिझक नहीं दिखाई और गड़प से मुंह में रख लिया। निगलने के पहले वह खुश होकर बोली, "शहद से अधिक मीठा! यह तो हमारे याङच्याओनाओ का शकरकंद है!"

ई रू ने उसकी तरफ देखते हुए आश्चर्य के साथ पूछा, "क्या तुम उस छोटे पहाड़ी गांव की रहने वाली हो?"

मुंह में शकरकंद होने के कारण वह बोल न सकी। उसने हां में सिर हिलाया।

"तुम्हारी मां भी याङच्याओनाओ की हैं?"

वह हंस पड़ी। उसे यह सवाल एकदम बेतुका लगा। वह बोली, "शहद से अधिक मीठे शकरकंद की खेती मेरी मां ने ही आरंभ की है। यह एकदम नयी चीज है। क्या आपको मालूम है कि इस मीठे शकरकंद का क्या नाम है? इसे सभी मेरी मां के नाम 'न्यून्य' से जानते हैं!"

यह नाम सुनते ही ई रू की जीभ तालू से सट गई। उन्होंने दूर पहाड़ी की तरफ देखा, न्यून्यू एक-एक सीढ़ी कठिनाई से चढ़ती दूर निकल गई थी। केवल एक छोटी छाया दिखाई दे रही थी। ई रू अचानक मुड़े और उन्होंने शिनशिन को गौर से देखा। उन्होंने सोचा, "अब उसकी एक इतनी बड़ी बेटी है! शायद इसी कारण उसने मेरी तरफ नहीं देखा और इतनी हड़बड़ी में चली गई...।"

उन्होंने शकरकंद खाया। पर शकरकंद की मिठास उनके पश्चाताप की कड़वाहट को दूर न कर सकी; उन्हें नहीं आना चाहिए था। उसकी मानसिक शांति वह क्यों भंग करें?

३

बाहर सुन्दर चांदनी रात में पेड़ झूम रहे थे। ई रू को कम्यून की अतिथिशाला में नींद नहीं आ रही थी। क्या यह न्यून्यू को देखने और उसकी बेटी से मिलने के कारण दिल में भर आई उदासी के कारण था? क्या यह क्वो चाची के निधन का दुखद समाचार सुनने से उनके दुखी होने के कारण था? या सिर्फ बगल के कमरे से आ रही खर्राटों की आवाज के कारण था, जिसने कॉमरेड पी चिङ की याद दिला दी थी?

पहले ऐसी चांदनी रात में वह कपड़े पहनकर बाहर निकलते थे और पी चिङ के साथ मुख्य चोटी पर जाते थे और वहां से याङच्याओनाओ लौटते थे। वह कमल की पंखुड़ियों सदृश तालाब के पास रुककर दो-चार घूंट साफ मीठा पानी पीते थे। फिर वहां से वे दौड़ते हुए सीधे याङच्याओनाओ जाते थे। रास्ते में वह कोट के बटन खोल देते थे और ठंडी बयार का मजा लेते थे। पी चिङ उन्हें निकोलाई ऑस्त्रोवस्की के उपन्यास *अग्निदीक्षा* के पावेल और तान्या का प्रेमप्रसंग या चीनी किसानों के प्रतिनिधि आ क्यू की कहानी सुनाते थे। ...बातचीत करते हुए थोड़ी देर में वे घर पहुंच जाते थे। वहां क्वो चाची और न्यून्यू उनकी प्रतीक्षा में

बैठी रहती थीं। वे छककर मीठी खुशबूदार शराब पीते और ऊंघने लगते थे। चंद मिनटों के अंदर पी खाङ पर लेट जाते और उनके खर्राटे सुनने को मिलते थे।

बगल के कमरे में सोया आदमी भी खर्राटे ले रहा था, पर वे पी के इतने तेज नहीं थे। ई रू जब पहली बार याङच्याओनाओ आए थे, तब उनकी उम्र बाल लीग के नेता से बहुत अधिक नहीं थी। उनकी न्यून्यू तब एक छोटी लड़की थी, उसकी चोटी लहराती रहती थी। वह हमेशा कहती थी, "निदेशक पी, सोने पर आपकी नाक खूब बजती है!"

पी चिङ हंसे देते थे, "क्वो चाची, इसके लिए मुझे माफ करना। जब मैं येनआन में था तो कई विदेशी डाक्टरों से मिला, पर वे भी इसका इलाज न कर सके। बस जापानियों के हारने का इंतजार करो।"

"क्यों? तब आप खर्राटे लेना छोड़ देंगे क्या?" न्यून्यू पूछती।

वह उसकी नाक पकड़कर कहते, "नहीं, तब मैं याङच्याओनाओ से चला जाऊंगा और उसके बाद बेर की शराब पीने का मौका नहीं मिलेगा।"

"और मैं तुम्हारा खर्राटा नहीं सुन पाऊंगी..." ई रू क्वो चाची के इस कथन का आशय नहीं समझ पाए। बहुत बाद में वह इसमें छिपा अर्थ समझ पाए।

"पर यह सब अतीत था..." ई रू को याद आया कि १९५७ में एक बार पार्टी की मीटिंग में उन्होंने खर्राटों के बारे में कहा था, "क्वो चाची अब निदेशक पी का खर्राटा नहीं सुन पाएंगी। इतने वर्षों तक उनके सेक्रेटरी के तौर पर काम करने के बावजूद मुझे भी यह मौका कम ही मिल पाएगा। वह इन दिनों अत्यधिक व्यस्त हैं, सभा बुलाने या राजनीतिक कक्षाओं के संगठन से उन्हें फुर्सत नहीं है। शेष समय में उन्हें कॉमरेड हो रू का सौंपा काम भी करना पड़ेगा। पिछली बार जब क्वो चाची उनसे मिलने आई थीं, कॉमरेड पी को पांच मिनट बैठकर बात करने की भी फुर्सत न थी। उन्होंने मुझसे क्वो चाची की आवभगत के लिए कहा, जबकि क्वो चाची उनके लिए चार बोतल बेर की शराब और कुछ सूखे परसीमन और अखरोट ले आई थीं।"

पी चिङ के साथ लंबे समय से काम कर उन्होंने उनसे सीखा था कि अधिक नहीं बोलना चाहिए। उदाहरण के लिए, उन्होंने यह नहीं बताया कि कैसे झेंपते हुए उन्होंने पांच-पांच य्वान के नोट उनके हाथ में देते हुए कहा था, "ये नोट क्वो चाची को दे देना और उन्हें अपने साथ ठहरने के लिए कहना। आठ-दस दिन की छुट्टी लेकर तुम भी उनके साथ रहो। मैं संपादन विभाग से अनुमति दिलवा दूंगा। उनकी हर इच्छा पूरी करने की कोशिश करना। दुख की बात है कि हो रू उन्हें अपने साथ नहीं ठहरने देगी। शराब भी रख लो, मेरी पत्नी को पनामा प्रदर्शनी में पुरस्कृत शराब के अलावा और कोई शराब अच्छी नहीं लगती।"

ई रू अनुमान लगा सकते थे कि उन पर हो रू का कितना अधिक दबाव था। उन्होंने नोट लेने से इंकार कर दिया था, "आप क्या समझते हैं कि मेरे पास पैसे नहीं हैं?"

पी चिङ ने आह भरी, "ये नोट मेरे पश्चाताप को कम नहीं कर सकते!" उन्होंने गुस्से में कहा, "हम जापानियों से लड़ सकते हैं, दुश्मनों को हरा सकते हैं, पर पेटी-बुर्जुआ विद्रूपताओं के सामने बेबस हो जाते हैं।"

ई रू ने सहानुभूति भरी नजरों से पी चिङ को देखा। वह भी तो भावनात्मक संकट से गुजर रहे थे। पति की मृत्यु के बाद लिङ सुङ उनके पीछे पड़ गई थी और न्यून्यू तथा स्वयं में से एक के चुनाव के लिए बाध्य करने की कोशिश कर रही थी।

क्वो चाची सारी बातें समझकर पी चिङ को माफ कर सकती थीं, क्योंकि मुक्ति के बाद तीसरी बार वह शहर में उनसे मिलने आई थीं। वह ई रू के साथ संपादन कार्यालय के पीछे स्थित अविवाहित युवकों के आवास में आईं। सीढ़ियां चढ़ते समय उन्होंने कहा, "मुझे मालूम है, पी चिङ अब बहुत महत्वपूर्ण कार्यकर्ता हो गया है। पहाड़ी घाटी से आने वाली मुझ जैसी बुढ़िया इस योग्य नहीं है कि उसके भव्य मकान में रह सके।" ई रू ने क्वो चाची की बात समझी। यदि पी चिङ की सुंदर बीवी उस मकान में नहीं होती तो क्वो चाची उनके साथ जिंदगीभर रह सकती थीं। ई रू को याद आया कि मुक्ति के बाद पहली बार यहां आने पर कैसे क्वो चाची ने हो रू को नाराज कर दिया था। उन्होंने उनकी नौकरानी को हो रू की मां समझ लिया था और उससे कहा था कि तुम्हारी बेटी बहुत सुंदर है। फिर हो रू की तरफ संकेत कर कहा था कि तुम्हारी बेटी इतनी भाग्यशाली है कि उसे पी जैसा अच्छा पति मिला है। हालांकि वह खर्राटे लेता है, पर उसकी आदत हो जाए तो साथ रहने वाले को परेशानी नहीं होती। यह भयंकर गलती थी, पर हो रू ने इसका बुरा नहीं माना। उसने मुस्कराकर इसे टाल दिया। पर उसे क्वो चाची की दूसरी टिप्पणी से दुख हुआ। जब क्वो चाची को मालूम हुआ कि बूढ़ी औरत इस घर की नौकरानी है तो वह स्वयं को न रोक सकीं। उन्होंने हो रू से कहा, "तुम जवान और स्वस्थ हो। तुम्हें नौकरानी नहीं रखनी चाहिए थी।" फिर उन्होंने पी की तरफ मुड़कर शिकायत के लहजे में कहा, "आठवीं राह सेना के आदमी से ऐसी उम्मीद नहीं की जा सकती, च्च?"

१९५४ में दूसरी बार वह पी चिङ से मिलने आईं। उस साल पूरे देश में भरपूर फसल हुई थी। क्वो चाची भी अपने साथ कोदों, बेर, आलू, शकरकंद के सूखे टुकड़े, बेर की शराब, उबले अंडे, भुने पैनकेक और याङच्याओनाओ की अन्य मशहूर चीजें ले आई थीं। वह अत्यंत खुश थीं; हो रू को बेटा हुआ था, इसकी खुशी हो रू से भी अधिक उन्हें थी। शायद क्रांतिकारी युद्ध में अपने पति और बेटों के मारे जाने के कारण छोटे बच्चों को वह बहुत पसंद करती थीं। उन्होंने अतीत में जैसे ई रू को प्यार और स्नेह दिया था, वैसे ही हो रू के बेटे को सीने से लगाकर दुलारने लगीं। ई रू ने देखा कि हो रू का चेहरा अचानक पीला पड़ गया। उसे डर था कि बेटे को कहीं क्वो चाची से कोई बीमारी न लग जाए।

दूसरी बार न्यून्यू भी क्वो चाची के साथ आई थी। वही सारा सामान ढोकर लाई थी। छोटे बालों और चौड़े कंधों वाली न्यून्यू कमरे में घुसने के साथ शर्म से लाल हो गई थी।

उस बार क्वो चाची थोड़े समय के लिए रुकीं। न्यून्यू ने कुछ बीज डाले थे और वह उनके लिए बेहद चिंतित थी। क्वो चाची और न्यून्यू के याङच्याओनाओ लौटने के बाद हो रू ने पति से जमकर झगड़ा किया। संयोग से उस समय ई रू किसी पांडुलिपि की तलाश में उनके घर आए थे और उन्हें हो रू का रौद्र रूप देखने को मिला था। दुश्मनों को आतंकित करने वाला छापामार नेता, आकर्षक वक्ता और एक प्रसिद्ध अखबार का प्रमुख संपादक अपनी

पत्नी की फटकार के सामने आहें भरने के अलावा कुछ नहीं कर सका। ई रू भी उस फटकार में शामिल हो गए, "मैंने सुना है कि तुम उस जड़ दिमाग लड़की से शादी करने जा रहे हो।"

"हो दीदी! तुम उसे जड़ दिमाग कहती हो?"

"तुम उभरते हुए संवाददाता हो। क्या उससे तुम्हारी जोड़ी बनती है?"

पी चिङ ने उसे रोकना चाहा, पर उसने कहा, "तुम बीच में न पड़ो। मैं अपनी राय दे रही हूं।"

ई रू ने मुस्कराते हुए पूछा, "हो दीदी, तुम ऐसा क्यों सोचती हो कि यह जोड़ी अच्छी नहीं है? .क्या तुम अपने आंगन में खिले नीले फूल का नाम बता सकती हो?"

वह तो दूर रही, निदेशक पी चिङ भी फूल का नाम नहीं बता सके।

ई रू ने गर्व के साथ कहा, "पर वह बता सकती है!"

हो रू ने गुस्से में कहा, "ठीक है, तुम शादी करना चाहते हो, करो। आखिर यह तुम्हारा निजी मामला है..."

इस घटना के एक दिन पहले ई रू न्यून्यू के साथ शहर घूमने गए थे। वे नए-नए खुले वनस्पति उद्यान को देखने गए। राह चलते उसने यों ही कहा, "मैंने अपनी जिंदगी में पहली बार इतने सुंदर नीले फूल देखे!"

"कहां हैं नीले फूल?" ई रू ने अपने आसपास देखा।

वह मुस्कराई, "यहां नहीं, वह फूल तो निदेशक पी चिङ के आंगन में है। क्या तुम्हें उस फूल का नाम मालूम है? अरे, तुम्हारे जैसा एक प्रसिद्ध संवाददाता भी उस फूल का नाम नहीं बता सकता? मैंने फूलों की किताब में उसका नाम देखा है। बड़ा सुंदर नाम है।"

ई रू ने नाम सुनना चाहा।

"स्मृतिगंधा!" उसने धीरे से कहा।

"न्यून्यू! तुम्हें डर है कि मैं तुम्हें भूल जाऊंगा!"

लाल सेम के पेड़ के नीचे वह गहरी भावनाओं के साथ मुस्कराई, ठीक वैसे ही जैसे वर्षों पहले 'कमल तालाब' की मुख्य चोटी के साफ झरने के पास मुस्कराई थी। "तुम एक प्रसिद्ध पत्रकार हो। मैं तुम्हारा नाम हमेशा अखबार में देखती हूं।"

"न्यन्यू, तुम्हारे नाम का मेरे जीवन में अत्यधिक महत्व है।"

१९५७ में क्वो चाची अकेली आईं। लंबी बीमारी से उठी थीं, लगभग मौत के मुंह से बचकर आई थीं। शायद उन्होंने महसूस किया हो कि अब और अधिक दिन जीवित नहीं रहेंगी। उन्होंने अपने बचाए पैसे से एक ताबूत खरीदा। दोनों अनाथों की शादी भी वह अपने मरने से पहले निश्चित कर जाना चाहती थीं। ई रू के माता-पिता लाल सेना में थे और क्रांतिकारी युद्ध में शहीद हो गए थे। न्यून्यू के माता-पिता कोयला खदान में काम करते थे और खान के अंदर जहरीली गैस के शिकार हो गए थे। उस दुखद दिन क्वो चाची को खान के बाहर न्यून्यू अंकेली मिली थी। वह उसे घर ले आई थीं और अपनी बेटी की तरह पाला था।

अपनी तीसरी यात्रा में ई रू के साथ रहकर क्वो चाची बहुत खुश थीं। वह अविवाहितों के आवास के हर कमरे में गईं, वहां से उन्होंने संपादकों, कलाकारों, फोटोग्राफरों, प्रूफरीडरों तथा दूसरों के गंदे चादर, तौलिए, कमीजें और पैंट इकट्ठे किये। उन्होंने उन कपड़ों को साफ

किया, ठीक वैसे ही जैसे अतीत में याङच्याओनाओ के जवानों के कपड़े साफ करती थीं।

उनका काम करते समय क्वो चाची को पुराने समय की याद हो आई, उन्होंने उम्मीद की कि वे भी पहले की तरह गाने गाएंगे। पहले लाल सेना के जवान जहां भी जाते थे, अपने क्रांतिकारी गीत सुनाते थे और लोगों के दिलों में क्रांति की आग सुलगा देते थे। उन्होंने ई रू से कहा, "वह गीत सुनाओ 'हवा गरज रही है'! मैंने कई वर्षों से यह गीत नहीं सुना है।" वे सभी मिलकर उत्साह से गाने लगे। उन्होंने देखा कि बूढ़ी क्रांतिकारी मां मुस्करा रही है और उसकी आंखों से निकले गर्म आंसू गालों को गीला कर रहे हैं। किसी ने भी नहीं देखा कि पी चिङ दरवाजे के पास खड़े होकर गीत सुन रहे हैं और अपनी आंखों से आंसू पोंछ रहे हैं।

जब उन्होंने पी चिङ को देखा तो ई रू को छोड़ शेष सभी ई रू के कमरे से निकल गए। जब वे तीनों रह गए तो उन्होंने ई रू से ठंडी सांस भरते हुए कहा, "पिछली बार तुमने जो कहा था, वह बिलकुल सच है। हमें अपने अंदर कारण की तलाश करनी चाहिए, बाहर नहीं। क्या हम उसे नहीं खो चुके हैं, जो हमारे लिए सबसे अधिक महत्वपूर्ण है?"

"आप क्या कहना चाहते हैं, निदेशक पी?"

"क्या तुम्हारे पास थोड़ी शराब नहीं है?"

"मेरे पास पनामा प्रदर्शनी में पुरस्कृत मार्के की शराब नहीं है!"

याङच्याओनाओ में जैसे वे क्वो चाची के घर भाप से पकाया बाजरा खाते थे, वैसे ही उन्होंने खजूर की शराब पी और मुर्गे खाए। क्वो चाची उन्हें प्यार से देखती रहीं। उन दोनों ने तमाम विषयों पर बातें कीं, जिनमें से कुछ क्वो चाची नहीं समझ सकीं।

"चाची! तुम मुझसे नाराज हो?" पी ने पूछा। "मैं बड़ा व महत्वपूर्ण आदमी हो गया हूं। पर मैं जानता हूं कि मैं आम लोगों से कट गया हूं और यह मुझे पसंद नहीं है।"

क्वो चाची ने उनके कहने का मतलब समझा और कहा, "कोई बात नहीं। परिवार में झगड़े होते ही हैं! उसके बाद सब कुछ ठीक हो जाता है।"

पार्टी शाखा की मीटिंग में ई रू ने भाषण दिया, "...ईमानदारी से बताएं, शहर आने के बाद हमने अपनी देहाती जनता का कितना ख्याल रखा है? हम आम लोगों से कट गए हैं, हम उन लोगों से कट गए हैं, जिन्होंने क्रांतिकारी युद्ध में हमारी मदद की। हमें बाजरा खिलाया, एक-पहिया-ठेले या स्ट्रेचर पर बिठाकर हमें इधर-उधर ले गए। बीमार पड़ने पर हमारी सेवा की। उनकी मदद से ही पार्टी ने दुश्मनों को हराया और विजय हासिल की। इसीलिए हमारी पार्टी ने बार-बार आगाह किया कि हमें आम लोगों के साथ मिलकर काम करना चाहिए। अगर हम अपनी उस परंपरा को खो देंगे तो हम कहीं के न रहेंगे।" उन्होंने अपने सामने बैठी लिङ सुङ को देखा। वह हाल ही में पार्टी में शामिल हुई थी, उसने पहले की तरह भड़कीले कपड़े नहीं पहन रखे थे। मीटिंग के बाद उसने ई रू को एक पर्ची दी, "यदि आप बुरा न मानें तो मैं क्वो चाची से मिलने आऊंगी।"

जब वह मीटिंग रूम से निकलकर सीढ़ियां उतर रही थी, उसने पलटकर आंखों के इशारे से पूछा, "मेरा स्वागत है न?" ई रू ने सहमति में हाथ से इशारा किया।

लिङ सुङ के पति जब अस्पताल में बीमार पड़े थे, वह उनके इतने करीब हो गई थी कि

उन्हें परेशानी होने लगी थी। पति की मृत्यु के बाद तो उसकी आंखें हमेशा उन्हीं पर लगी रहती थीं। वह चाहे जितना भी बचने की कोशिश करते, पर उसकी आंखें उन्हीं पर स्थिर रहती थीं।

जब वह ई रू के कमरे में आई, उसने क्वो चाची के साथ इतना सुंदर व्यवहार किया कि क्वो चाची भी पसीज गईं। ई रू की समझ में नहीं आ रहा था कि आखिर बात क्या है? अचानक उसने अपनी जेब से किसी कार्यक्रम का टिकट निकाला और कहा, "ओह, मैं तो भूल ही गई थी, यह टिकट मैंने आपके लिए खरीदा है, चाची। यह ऑपेरा का टिकट है। क्या आप जाना चाहेंगी?"

उसने एक रिक्शा बुलाया और चाची को छोड़ने गई।

लौटकर उसने अपना जैकेट उतारा। ई रू के सामने एक सुंदर जवान औरत खड़ी थी; सफेद ऊन का स्वेटर, गोल कंधे, छाती के उभार और पतली कमर से चिपका था। उसकी चमकती बड़ी आंखें ई रू पर स्थिर थीं, "ई रू, आपने दोपहर में 'स्मृतिगंधा' के बारे में बताया था। क्या मैं उस फूल की तरह लगती हूं?"

ई रू खामोश रहे।

"तो आपकी 'स्मृतिगंधा' न्यून्यू है, यह क्वो चाची ने थोड़ी देर पहले मुझे बताया। पर आप स्वयं देखें, कौन अधिक सुंदर है? मैं या वह? कौन अच्छी है?"

ई रू को ऐसी तुलना की आदत नहीं थी। उन्होंने कहा, "लिङ सुङ, संभव है तुम न्यून्यू से हजार गुना या दस हजार गुना सुंदर हो। पर प्यार एक दूसरी चीज है। मैं तुम्हारा आदर करता हूं। मैं तुम्हारा एहसानमंद हूं! हम अच्छे दोस्त बने रहें!"

"ई रू, मैं आपसे प्यार करती हूं। यदि मेरे पति जीवित भी होते तो भी मैं उनसे तलाक लेकर आपसे शादी करती। मैं आपसे प्यार करती हूं। प्यार निर्दयी होता है! मैं जानती हूं, संभव है, मैं आपकी न्यून्यू जैसी नहीं, पर मुझे लगता है कि आप मेरे हैं। मैं आपके कमरे में आई हूं, मैं सबको यह बताने आई हूं कि मैं आपकी हूं। हम लोग कल शादी कर लें। एक औरत को अपने प्यार, अपनी खुशी और अपना पुरुष हासिल करने का अधिकार है"—कहती हुई वह धीरे-धीरे ई रू के करीब आई, उसने ई रू को बाहों में कस लिया और अपने तपते होंठों से ई रू को चूमने लगी।

४

ई रू ने लॉरी का इंजन ठीक कर दिया। शिनशिन खुशी से उछलकर ड्राइवर की सीट पर बैठी। 'कमल तालाब' पहुंचने पर उसने उनसे अपने घर याङच्याओनाओ चलने का आग्रह किया। उनकी भी इच्छा जाने की हुई, पर उहोंने रात में 'कमल तालाब' में रुकने का फैसला किया। पचास वर्षीय प्रौढ़ 'सावधानी' शब्द का अर्थ समझता है।

दूसरे दिन अतिथिशाला से वह याङच्याओनाओ के लिए रवाना हुए। मुख्य चोटी पर चढ़ते

समय सुबह की ताजा हवा अनुप्राणित कर रही थी। पूरे बाईस वर्षों के बाद वह मुख्य चोटी पर जा रहे थे।

पिछली बार याङच्याओनाओ छोड़ते समय न्यून्यू को और उन्हें विश्वास था कि वे दस-पंद्रह दिनों में फिर मिलेंगे। दो कदम चलने के बाद उन्होंने मुड़कर न्यून्यू से कहा था, "न्यून्यू, मैं अधिक से अधिक दो सप्ताह में अपना काम समाप्त कर लौट आऊंगा।"

पर वह नहीं लौट पाए, पूरे बाईस वर्ष नहीं मिल पाए! उन्होंने वह शाम याद की, जब उन्होंने स्वयं को लिङ सुङ के प्रेमजाल से मुक्त किया था। क्वो चाची जब ऑपेरा से लौटकर आई तो उसने ई रू को कहीं जाने के लिए तैयार होते देखा।

"क्या बात है? कहीं जा रहे हो क्या?"

"हां, याङच्याओनाओ!"

"किसलिए?"

"मैं न्यून्यू से शादी करना चाहता हूं।"

क्वो चाची ने खुश होकर कहा, "मैंने पहले ही कहा था। ई रू न्यून्यू को नहीं भुला सकता! न्यून्यू ने दो बार ई रू की जान बचाई है!"

हां, उसने उन्हें दो बार बचाया था, एक बार जब जमींदारों की सेना ने आक्रमण कर दिया था, तब वह तेंदुए की तरह उनसे लड़ी थी और दूसरी बार जब लुङथानखओ अभियान में वह लाशों के बीच अधमरे पड़े थे, तब न्यून्यू ने लाशों के बीच से ढूंढ़कर उन्हें निकाला था।

इन बातों की याद आते ही ई रू ने क्वो चाची को थोड़ी देर पहले का सारा किस्सा सुनाया। कमरे से निकलते समय लिङ सुङ ने बिफरते हुए कहा था, "कल सुबह सभी जान जाएंगे कि मैंने आपके साथ रात गुजारी थी!" इसीलिए क्वो चाची और ई रू रात में ही निकलना चाहते थे। उन्होंने अपना सामान पीठ पर लादा और निदेशक पी से मिलने आए। हो रू सोफे पर लेटी थी। वह ई रू को देखकर खुश हुई, पर क्वो चाची पर नजर पड़ते ही उसकी मुस्कराहट गायब हो गई। उसने उठकर क्वो चाची को बिठाया। जब ई रू ने अपने आने का उद्देश्य बताया तो वह बोली, "क्या निदेशक की प्रतीक्षा करना जरूरी है? भला उनकी अंतहीन मीटिंगों का सिलसिला समाप्त होगा?" क्वो चाची ने कहा, "हमें मिलकर जाना चाहिए।" वह उनसे मिलना चाहती थी।

हो रू ने दराज से पांच-पांच के दो नोट निकाले और क्वो चाची को दिये, "इन्हें रख लें। शायद रास्ते में जरूरत पड़ेगी। या फिर कुछ कपड़े खरीद लेंगी और अपने लिए जैकेट बनवा लेंगी।"

ई रू के क्रोध का ठिकाना न रहा। उन्होंने देखा कि क्वो चाची के हाथ कांप रहे हैं। पहाड़ी घाटी से आने वालों का ऐसा अपमान! युद्ध के दिनों में अपनी जान पर खेल कर उन्होंने निदेशक पी का पता दुश्मनों को नहीं बताया था। दुश्मनों ने उनको कितना मारा था। जान बचाने की कीमत आज मिल रही है—पांच-पांच के दो नोट?

घर लौटते समय क्वो चाची नहीं मुस्कराईं। याङच्याओनाओ पहुंचने पर जब न्यून्यू को उन्होंने देखा, तभी उनकी मुस्कराहट लौट पाई।

"न्यून्यू, देखो, मैं तुम्हारे लिए क्या पकड़कर लाई हूं?"

न्यून्यू को आश्चर्य नहीं हुआ था। क्या वह उस 'स्मृतिगंधा' को भूल सकते थे।

"ओह, मेरा शिकार कहां है?" क्वो चाची ने मुड़कर देखा।

वह न्यून्यू से शादी करने जा रहे हैं, यह सोचकर उन्हें हल्की झेंप हुई। इसीलिए अपना सामान रखने के बाद वह बाल्टी लेकर पानी लेने चले गए थे। युद्ध के दिनों में लाल सेना के जवान जब गांव में आते थे तो यही करते थे। शाम को खाङ पर एक साथ बैठकर तीनों ने भाप से पकाया बाजरा खाया। ई रू के कटोरे का बाजरा खत्म हुआ तो न्यून्यू ने फिर से डाल दिया, कटोरे में बाजरा डालते समय उसका चेहरा शर्म से लाल हो गया। पहाड़ी गांव की प्रथा के अनुसार पत्नी पति को खाना परोसती है। उस दिन खाते समय आदतन ई रू अपना खाना लेने के लिए उठे, पर क्वो चाची ने रोक दिया, "न्यून्यू को लाने दो। तुम दोनों बहुत पहले पति-पत्नी हो गए होते!"

मनुष्य अपनी जिंदगी के कुछ सुंदर लमहे कभी नहीं भूल सकता। एक या दो दिनों की अमूल्य खुशी सुरक्षित रहती है, स्मृति में तो हमेशा बनी रहती है...

तीसरे दिन शाम को ई रू और न्यून्यू साथ बैठे बातें कर रहे थे कि संपादन विभाग का तार मिला। ई रू ने महसूस किया कि उन्हें न्यून्यू को छोड़कर जाना होगा। चलते समय वे तालाब के पास खड़े कुछ देर तक एक-दूसरे को देखते रहे। ई रू केवल इतना कह सके, "न्यून्यू, यही नियति है!"

"कोई बात नहीं! आप जल्दी ही लौट आएंगे।" उसने ई रू को सांत्वना दी।

"हां, मैं लौट आऊंगा, न्यून्यू!"

"मैंने तुम्हें तन-मन से प्यार किया है। मैं सदा के लिए तुम्हारी हूं।" उसने कहा। उसकी आंखें विश्वास से चमक रही थीं और पत्नी की ईमानदारी व शालीनता को व्यक्त कर रही थीं।

यह सच्चा प्यार था, ई रू की जिंदगी का एकमात्र प्यार।

ई रू संपादक कार्यालय पहुंचे। उनकी कार्यक्षमता से सभी परिचित थे। कुछ ही दिनों के बाद उन पर दक्षिणपंथी होने का अभियोग लगा।

पर यह पहले की बात थी। यहां लौटने पर उन्हें मालूम हुआ कि १९५८ में लिङ सुङ ने स्वयं से बीस वर्ष अधिक के एक बूढ़े से शादी कर ली। बूढ़े के पास बहुत पैसे थे, पर उसे प्यार और खुशी मिली कि नहीं, यह किसी को नहीं मालूम। 'सांस्कृतिक क्रांति' के आरंभ में बूढ़े व्यक्ति की तीव्र आलोचना की गई। उसे दिल का दौरा पड़ा और वह कैद में गिर कर बेहोश हो गया। अब वह ठीक-ठाक था और सरकार ने उसे दस हजार युवान दिए थे... हो रू और भी कुछ बताना चाहती थीं, पर ई रू ने बीच में कहा, "मैं भूली बातों को फिर से याद करना नहीं चाहता।"

ई रू जब चोटी पर पहुंचे, उन्होंने एक आदमी को याङच्याओनाओ की तरफ जाते देखा। पीछे से वह आदमी ई रू को परिचित सा जान पड़ा।

५

ई रू को लगा कि पी चिङ जा रहे हैं। असंभव! उन्होंने आंखों के ऊपर हथेली से छाया बनाकर गौर से देखा; पर उस आदमी की छाया कब्रिस्तान के मकबरों से निकली और गांव में खो गई।

ई रू निश्चित थे कि वह पी चिङ ही होंगे। उन्हें याद आया, 'सांस्कृतिक क्रांति' के दौरान पी चिङ पर भी दक्षिणपंथी होने का आरोप लगा था, उन्हें परिश्रम से सुधार के लिए छील्येन पहाड़ के दक्षिण में स्थित घास मैदान के युद्ध के लिए सुरक्षित अनाज गोदाम में भेजा गया था। वहां जब भी डाकुओं का दल आता, मजदूर नेता फोन कर सेना को मदद के लिए बुलाते थे। पी चिङ ने दूसरा उपाय किया। उन्होंने हाथ हिलाकर कहा, "जो पक्के कम्युनिस्ट हैं, आगे आएं। यह अनाज जनता का है, हमारी सरकार का है, हम इसे विद्रोही डाकुओं के हाथ में नहीं जाने देंगे। हम कम्युनिस्टों को अपना साहस दिखाना चाहिए; जिनके पास बंदूक और बम हैं, वे आगे जाएं; जिनके पास हथियार नहीं हैं, वे कुछ भी उठा लें। कॉमरेड, मेरे साथ आएं!"

उस बुरी परिस्थिति में भी निदेशक पी सक्रिय रहे। हाथ में लाठी लिए वह आगे-आगे चले और डाकुओं से लड़ने के लिए बढ़े। ई रू भी उनके साथ थे, वह अपने पुराने नेता से मिलने आए थे।

पी चिङ गरजे, "आक्रमण करो!"

आक्रामक टुकड़ी को देख डाकू भाग खड़े हुए। जब वे लौटकर गोदाम पर आए तो नेता अभी फोन पर बात ही कर रहे थे, "कुछ सशस्त्र टुकड़ियों को यहां जल्दी भेजें...।"

पी चिङ ऐसी दृढ़ इच्छाशक्ति के व्यक्ति थे।

१९५८ में परिश्रम से सुधार के लिए अखबार का दफ्तर छोड़कर ई रू छाएदाम बेसिन गए। छाएदाम बेसिन आने के बाद बाहरी दुनिया से उनका संपर्क नहीं रह गया। उन्होंने केवल एक बार न्यून्यू को पत्र लिखा और अपनी कृतज्ञता व्यक्त की। उन्होंने यह भी लिखा कि वह अपने भविष्य के लिए उन्हें मरा ही समझे और उनका इंतजार न करे। वह पत्र विदाई भाषण के समान था।

१९५९ के अंत में पी चिङ को सुधारने के लिए भेजा गया। उन्हें मालूम था कि ई रू छाएदाम में हैं, पर उन्हें उनका पता नहीं मालूम था। इसलिए उन्होंने लगभग सौ पर्चियां लिखीं और अनाज लेकर छाएदाम जाने वाली गाड़ियों के पीछे चिपकाया। पर्ची पर उनके पते के साथ लिखा था, "ई रू, जितनी जल्दी संभव हो, मुझसे मिलने आओ। मैं इन दिनों छील्येन पहाड़ के दक्षिण में स्थित घास के मैदान के युद्ध के लिए सुरक्षित अनाज गोदाम में हूं।"

छै महीने के बाद एक गाड़ी का इंजन ठीक करते समय उन्हें एक पर्ची दिखी, वह तुरंत उनसे मिलने गए। जब वे फिर से मिले तो पी चिङ ने कहा, "आओ, हम तीन बार गले मिलें।" उन्होंने अपने अंदर की जेब से कपड़े में लिपटा एक छोटा पैकेट निकाला, "छै महीने पहले क्वो चाची मुझसे मिलने आई थीं और कई दिनों तक मेरे साथ रहीं। हमने खूब बातें कीं। जाने से पहले उन्होंने कहा, 'शायद तुम दोनों के पुनर्स्थापित होने तक मैं जीवित न रहूं।

पर मैं तुम दोनों के लिए प्रार्थना करूंगी।' फिर उन्होंने दो पैकेट निकाले। उन्होंने अपना ताबूत १८० य्वान में बेच दिया था और वह पैसे हमारे लिए बराबर-बराबर लाई थीं..." पी चिङ अपने आंसू न रोक सके।

"हमारी पार्टी हमें नहीं भूलेगी! जनता हमें नहीं भूलेगी! ई रू! हमेशा याद रखना जनता हमारे मां-बाप के समान है।"

उन्होंने पैकेट खोला और ई रू ने देखा कि नब्बे य्वान एक साथ रखे हुए थे। पी पैकेट खोलते हुए कुछ सोच रहे थे।

चलते समय ई रू को आभास हुआ कि पी चिङ कुछ कहना चाहते थे, पर उन्होंने वह बात नहीं कही थी। उन्होंने सिर्फ इतना अनुमान लगाया कि शायद वह याङच्याओनाओ लौटना चाहते हैं। ई रू की नजर निदेशक पी चिङ के सूजे हुए पांव पर पड़ी। उन्होंने कहा, "निदेशक पी, आप अपना भी ख्याल रखें।"

पी ने कहा, "मैं ठीक ही रहूंगा।"

बिछुड़ते समय उन्होंने ६ किलोग्राम अनाज के कूपन अपने पुराने नेता को दिए, यही उनके पास था और फिर बस में बैठ गए। पी चिङ भावुक हो उठे और बोले, "ई रू, पर इसके बिना तुम्हारा काम कैसे चलेगा?"

"चिंता न करें। आप अपना ख्याल रखें!" बस चलने पर उन्होंने हाथ हिलाया।

पी चिङ ने चिल्लाकर कहा, "याद रखना, जनता हमारे काम को कभी नहीं भूलेगी!"

यह पहले की बात थी... अभी जुलाई के मध्य में प्रथा के अनुसार लोग कब्रिस्तान आकर अपने मृत संबंधियों के प्रति आदर व्यक्त करते हैं। शायद इसीलिए निदेशक पी क्वो चाची के मकबरे के पास आए होंगे?

ई रू याङच्याओनाओ गांव के करीब पहुंच गए थे। वे बीस वर्षों से अधिक बाहर रहे थे। वह निश्चित नहीं कर पा रहे थे कि उन्हें जाकर न्यून्यू से मिलना चाहिए या नहीं। वह एक पत्थर पर बैठकर पुराने परिचित गांव को निहारने लगे। बीस वर्षों तक वे यातायात ब्रिगेड के काम से इधर-उधर भटकते रहे और आखिरकार अब यहां लौट पाए।

वह गांव के एक मकान के अहाते में घुसे। दरवाजे पर ताला लटका था। पास के बेर के पेड़ के छेद में रखी चाबी पर उनकी नजर पड़ी। सब कुछ पहले की ही तरह था। वह चाबी लेकर दरवाजा खोलने ही वाले थे कि उन्हें अहसास हुआ, यह उचित नहीं होगा, क्योंकि यह अब उनका घर नहीं है। पर अंततः उन्होंने दरवाजा खोला और कमरे में गए।

कमरा बिलकुल वैसा ही था, जैसा वह वर्षों पहले छोड़कर गए थे। उन्होंने मेज पर रखी एक पर्ची देखी। पर्ची पर लिखा था, "मैं शिनशिन के साथ क्वो चाची की श्रद्धांजलि के लिए खरीदारी करने जा रही हूं। आपका खाना कड़ाही में रखा है। गर्म कर खा लेंगे। यदि आप प्रतीक्षा नहीं कर सकते तो क्वो चाची के मकबरे पर आ जाएंगे।"

न्यून्यू ने यह पर्ची अपने पति के लिए लिखी थी। पर्ची की भाषा से यह स्पष्ट था। ई रू पीड़ा के साथ मुस्कराए। उन्होंने क्वो चाची और न्यून्यू के कमरे में झांककर देखा। अंदर कमरे

में कई जोड़े नए जूते रखे थे, जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध के दौरान महिला मुक्ति मोर्चे द्वारा सैनिकों के लिए ऐसे ही जूते बनाए जाते थे।

वह अंदर कमरे में गए और खाङ के पास खड़े होकर उन्होंने गौर से जूतों को देखा। सभी जूते एक ही आकार और नाप के थे। सभी जूतों पर बनाए जाने का वर्ष लिखा देखकर उन्हें आश्चर्य हुआ : १९५७, १९५८, १९५९...। उन्होंने जूतों की गिनती की। कुल बाईस जोड़ी जूते थे। भावावेश में वह बेहोश होते-होते बचे। हाथ के झटके से कड़ाही का ढक्कन गिर गया। कड़ाही में रखा शकरकंद अभी भी गर्म था, चूल्हे पर भी एक पर्ची पड़ी थी :

पापा,

यह वही शहद से भी मीठा शकरकंद है, जिसे आप बहुत पसंद करते हैं। क्या आपको इसका नाम मालूम है? इसे न्यून्यू कहते हैं।

आपकी बेटी,
शिनशिन

वह बाहर के कमरे में आए, दीवार पर उनकी तस्वीर टंगी थी। यह तस्वीर पानमुनजाम सम्मेलन भवन के सामने खींची गई थी। उन्होंने सेना का कोट पहन रखा था, सिर पर टोपी नहीं थी, बाल मुर्गे की पूंछ की तरह खड़े थे। तस्वीर की बगल में कुशल ट्रैक्टर ड्राइवर की उत्तम सेवा का प्रशस्ति पत्र था। उस पर शिनशिन का नाम लिखा था।

ई रू की समझ में नहीं आया कि क्या करें। वह तेजी से बाहर निकले। पश्चिम में सूर्य डूब रहा था। वह तेजी से लुङथानखओ की ओर बढ़े, शायद क्वो चाची वहीं दफनायी गई हों। लुङथानखओ युद्ध में मारे गए उनके पुत्र और पति को वहीं पहाड़ की चोटी पर युद्ध मैदान के पास ही दफनाया गया था। वह अपनी पत्नी से मिलने जा रहे थे, हताश होकर इंतजार करती जिस पत्नी ने बाईस जोड़ी जूते सिले थे। वह अपनी ट्रैक्टर ड्राइवर बेटी से मिलने जा रहे थे और क्वो चाची की कब्र पर जा रहे थे—हां, क्वो चाची, जो उनकी मां के समान थीं। अब उनकी समझ में आया, उन्हें कोई चिंता न हो और मन लगाकर काम कर सकें, शायद इसी कारण क्वो चाची ने पी चिङ को यह बताने से मना कर दिया था कि उनकी पत्नी और उनके जाने के बाद जन्मी बेटी उनकी प्रतीक्षा कर रही हैं। मां की तरह उन्होंने न्यून्यू और उनको अपने बच्चों की तरह पाला था। कितनी दुख की बात है, आज वह दोनों का पुनर्मिलन देखने के लिए जीवित नहीं हैं। शाम का सूरज अपनी हल्की किरणें पहाड़ी पर बिखेर रहा था। ई रू लुङथानखओ पहुंचे।

उस दिन पूर्णिमा थी। सूरज डूब गया था और पूर्णिमा का गोल चांद पूरब से निकल रहा था। शाम गहराने के साथ-साथ धुंधलका बढ़ता गया। ई रू क्वो चाची की कब्र खोज रहे थे कि किसी ने पुकारा, "पापा!" शिनशिन उनकी तरफ दौड़ी आ रही थी। न्यून्यू एक कब्र के पास शांत खड़ी थी। मानो वह मन ही मन में बाईस वर्ष पहले बिछुड़ते समय कही अपनी बात दोहरा रही थी, "आप लौट आएंगे। मैं जानती हूं, आप जरूर लौटेंगे!"

शिनशिन ने फुसफुसाकर कहा, "पापा! कल मां की हिम्मत नहीं हुई कि आपसे बात करे। उसने मुझे बाद में बताया कि आप बिलकुल नहीं बदले हैं!"

"ठीक कहा। कैसे बदल सकता था? इसीलिए तुम्हारा नाम शिनशिन रखा, यानी दो दिल एक में!"

अचानक पास से एक आवाज आई, "नहीं, वे कभी नहीं बदलेंगे, अच्छे दिन आने वाले हैं..."

"निदेशक पी!..." लगभग एक साथ ई रू और न्यून्यू ने आश्चर्य से पुकारा।

निदेशक पी तेज कदमों से उनकी तरफ आए। उन्होंने ई रू और न्यून्यू के कंधों पर हाथ रखा और खुशी से मुस्कराए।

अचानक शिनशिन बोली, "पापा! मां! देखो चांद! देखो, चांद को देखो!..." तभी उन्हें नगाड़ों की आवाज सुनाई पड़ी और आतिशबाजी दिखाई पड़ी। लोग चिल्ला रहे थे, "देखो! देखो, चांद को स्वर्ग का कुत्ता निगलने जा रहा है!..."

चंद्रग्रहण लगने वाला था। पहाड़ी क्षेत्र में अंधेरा छाने लगा। छै से सात बजे तक इस परिवार के लोग क्वो चाची की कब्र के पास अंधेरे में बैठे रहे।

सवा सात बजे चांद फिर से प्रकट हुआ, शिनशिन की आंखों पर चांद की हल्की किरण पड़ रही थी।

साढ़े आठ बजे चांद खिल उठा। आज का चांद अन्य दिनों की अपेक्षा अधिक रौशन था। शिनशिन खुशी से उछल पड़ी, उसने चिल्लाकर कहा, "सब समाप्त हो गया! हमें फिर से चांदनी मिल गई!" शायद वह कब्र में पड़ी अपनी दादी को अपनी खुशी बताना चाहती थी।

हां, वह एक सुंदर रात थी और अगले दिन के सुंदर और प्रकाशमान होने का विश्वास दिला रही थी।

खो युनलू

(१९४७ -)

खो युनलू उर्फ पाओ क्वोलू का जन्म १९४७ में शाङहाए में हुआ था। उन्होंने १९६८ में पेइचिङ के एक उच्च माध्यमिक विद्यालय से पढ़ाई पूरी की और उसके बाद शानशी प्रांत के गांव में खेती का काम किया। वे १९७२ से शानशी के य्वीछि शहर के पालीऐमाइड रेशा कारखाने में मजदूर का काम कर रहे हैं।

"तीन करोड़" खो युनलू की प्रथम प्रकाशित रचना है। उनकी एक अन्य कहानी "एक उच्चस्तरीय कार्यकर्ता का पेइचिङ जाना" १९८१ में प्रकाशित हुई थी।

तीन करोड़

खो युनलू

१

१९७९ का आरंभ। एक निर्माणाधीन विनाइलॉन कारखाना।

इमारतों के बीच की खाली जगहों में लोहे की छड़ें और लकड़ियां बेतरतीबी से बिखरी पड़ी थीं। तेज हवा में सीमेंट की बोरियों के कागज के टुकड़े उड़ रहे थे। कारखाने की निर्माण कमेटी के सदस्य जांच के लिए आए हल्का उद्योग के प्रांतीय ब्यूरो के उच्च अधिकारियों के साथ-साथ चल रहे थे।

"तीन करोड़, उससे कम नहीं, एक पैसा भी कम नहीं? अजीब जिद्द है, है कि नहीं?" प्रांतीय ब्यूरो की पार्टी कमेटी के सचिव और निदेशक तिङ मङ ने बुदबुदाकर कहा। उन्होंने खोजती निगाहों से सबको देखा, ऐसा लग रहा था जैसे वे कुछ सोच रहे हों। उनके बाल छोटे और सफेद थे। माथे पर गहरी सलवटें थीं और चेहरे की झुर्रियां किसी खुरदरी और कठोर चट्टान में पड़ी दरारों की तरह लगती थीं। उनके स्वाभाविक मजाकिया स्वर से जाहिर था कि वह अप्रसन्न हैं।

निदेशक तिङ एक असाधारण व्यक्ति थे। उन्हें हाल ही में पुराने पद पर बहाल किया गया था। "सांस्कृतिक क्रांति" के पूर्व कर्तव्य निभाने की अपनी सावधानी व दृढ़ता के लिए वह पूरे प्रांत में विख्यात थे और उन्होंने अनेक अनुकरणीय कार्य किए थे। उनकी वर्तमान यात्रा का उद्देश्य पिछले दस वर्षों से निर्माणाधीन और "वर्षों लंबी परियोजना" के नाम से प्रसिद्ध विनाइलॉन कारखाने के प्रस्तावित पूरक बजट की जांच करना था। अंततः इस वर्ष अगले बारह महीनों में निर्माण कार्य समाप्त करने की योजना पेश की गई थी। किंतु साथ ही विनाइलॉन कारखाने (पक्ष क) और भवन निर्माण के लिए जिम्मेदार प्रांतीय निर्माण कम्पनी के नौवें विभाग (पक्ष ख) द्वारा संगठित संयुक्त निर्माण निर्देशन कमेटी ने तीन करोड़ य्वान अतिरिक्त राशि की मांग पेश की थी। कारखाने की इमारत के निर्माण का आरंभिक बजट पांच करोड़ था। पर अधिक खर्च होने के कारण पिछले दस वर्षों में बजट का बढ़ना स्वाभाविक था। अभी तक इस मद में पंद्रह करोड़ य्वान खर्च हो चुके थे। निस्संदेह पांच करोड़ य्वान

के आरंभिक बजट की योजना के लिए पंद्रह करोड़ य्वान खर्च करने के बाद फिर से तीन करोड़ य्वान आवंटित करने की बात असंगत थी।

निदेशक तिङ को अच्छी तरह पता था कि अभी की स्थिति में बजट में कटौती करना मुश्किल काम है। यहां तक कि योजना कमेटी, निर्माण कमेटी और केंद्रीय सरकार भी इससे निबटने का सही रास्ता नहीं ढूंढ़ सकी थीं। सबने यही कहा कि अभी की स्थिति को कभी नहीं बदला जा सकता। पर वह कोशिश, एक अच्छी कोशिश, "अभी की स्थिति" में करना चाहते थे, जिसे अभी तक किसी ने चुनौती देने का भी साहस नहीं किया था। उन्हें यह भी पता लगा था कि इस कार्य को निबटाने के लिए स्थितियां उनके अनुकूल हैं; कारखाने की पार्टी कमेटी के सचिव और संयुक्त निर्माण निर्देशन कमेटी के मुख्य निदेशक चाङ आनपाङ ने १९६५ में उनके साथ एक ही कपड़ा कारखाने में काम किया था। चाङ आनपाङ को उन्होंने प्रशिक्षित किया और आगे बढ़ाया था। वह चाङ को अच्छी तरह जानते थे और स्वाभाविक तौर से यह मानकर चल रहे थे कि इस कार्य में चाङ उनकी मदद करेंगे।

पर उनकी उम्मीद के अनुसार कुछ भी नहीं हुआ। पिछले दस से अधिक वर्षों में दोनों के बीच कोई आपसी संपर्क नहीं रह गया था और चाङ आनपाङ भी अब किसी दूरस्थ और गूढ़ व्यक्ति की तरह हो गए थे। हालांकि पुराने वरिष्ठ कार्यकर्ता की तरह उनका स्वागत किया गया और उन्होंने उसमें निहित उत्साह व सहजता को भी महसूस किया, पर सारी नम्रता और व्यक्त आदर के पीछे कहीं कोई सूक्ष्म दीवार खड़ी थी। चाङ आनपाङ की व्यवस्था में पिछले कुछ दिनों से ऐसा लग रहा था मानो पूरक बजट का जांच-कार्य घने कुहासे में छिप गया हो। ऊपरी तौर पर सब कुछ असंदिग्ध लग रहा था और अतिरिक्त राशि की मांग को अनुचित ठहराने का कोई सबूत नहीं था। यदि कोई हिसाब मांगता तो लगभग दो फीट ऊंची "बजट रिपोर्ट" और "कैलकुलेशन रिपोर्ट" का गट्ठर प्रस्तुत किया जा सकता था। कंप्यूटर से निकले सैकड़ों पृष्ठ हिसाब-किताब से भरे थे। यदि कोई राय मांगता तो संयुक्त निर्माण निर्देशन कमेटी के पक्ष क और पक्ष ख के पास विस्तृत और सुसंगत रिपोर्ट पहले से तैयार थी। संक्षेप में, सब मिलाकर ऐसा लगता था कि बजट प्रामाणिक है, केवल एक ही काम बचा है और वह है बजट की मंजूरी का।

कृत्रिम नम्रता और कार्यालयीय माहौल से तिङ मङ और अधिक क्षुब्ध हुए। उनके मन में यह बात घर कर गई कि किसी ने सभी चीजों पर चादर बिछा रखी है और वास्तविक तथ्यों से वह अवगत नहीं है। ऐसा किसने किया है? चाङ आनपाङ ने? तिङ मङ को अभी निर्णय लेना था।

"हमने बजट को कम करने की पूरी कोशिश की। अब इससे कम नहीं किया जा सकता," आगे बढ़कर जवाब देने वाले और कोई नहीं, कारखाने की पार्टी कमेटी के सचिव चाङ आनपाङ स्वयं थे। उनका भरा-पूरा चेहरा लंबा व अंडाकार था, उनकी आंखों में अजीब चमक थी। हालांकि वे साधारण-सी बात कह रहे थे, पर आवाज प्रभावशाली थी। साथ ही इस प्रभावशाली आवाज में एक आत्मीयता थी, जिसके पीछे पुराने वरिष्ठ कार्यकर्ता से अपनी

प्रशंसा सुनने, स्नेह प्रकट करने और अपने काम की कठिनाई बताने का लोभ था कि कैसे उनका सहायक काम को निबटाने की पूरी कोशिश कर रहा है। इतना कहने के बाद चाङ आनपाङ अपने इर्द-गिर्द खड़े सहायकों को देखकर मुस्कराए; सहायकों ने भी तुरंत मुस्कराकर और सिर हिलाकर अपनी सहमति व्यक्त की।

"वह क्या है?" अस्थायी उपयोग के लिए निर्मित इमारत की तरफ इशारा करते हुए तिङ मङ ने पूछा। देखने में वह कोई जीर्ण-शीर्ण गोदाम लग रहा था।

"यह अस्थायी भोजनालय है," चाङ आनपाङ ने शांत स्वर में कहा। उन्होंने उसके बगल में स्थित सीमेंट की बोरियों और मशीनों से भरे पुराने भोजनालय की तरफ दिखा कर कहा, "सामान रखने की जगह की कमी के कारण उसे अस्थायी मालगोदाम बना दिया गया और हमें इस अस्थायी भोजनालय का निर्माण करना पड़ा। इस बात से तो आप भी सहमत होंगे कि मजदूरों को खुले मैदान में नहीं खाना चाहिए।"

बातें करते हुए वे लोग "अस्थायी भोजनालय" में घुसे। ऊपर छत की जगह नरकट की चटाइयां बिछी हुई थीं और नीचे ईंटों के टुकड़ों से फर्श बनाई गई थी। खिड़कियों में चौखट व किवाड़ नहीं थे और जैसे-तैसे लकड़ी की पट्टियों से लगाई गई प्लास्टिक की चादरें हवा में फड़फड़ा रही थीं। सब कुछ सचमुच "अस्थायी" लग रहा था। हल्का उद्योग ब्यूरो के निर्माण विभाग के एक निदेशक ने पुष्टि की, "इन्होंने अस्थायी भोजनालय के लिए आवेदन पत्र दिया था।"

तिङ मङ ने उड़ती नजर से हॉल को देखा और नाराजगी प्रकट की, "यह अस्थायी भोजनालय है!... अस्थायी उपयोग के लिए निर्मित, फिर दीवार में सीमेंट और गारा क्यों लगाया गया है? और फिर घेरा?... इस डर से कि बाद में बहुत आसानी से टूट न जाए, हूं?" तिङ मङ की नजर में जो कुछ आ रहा था, उसकी तरफ क्रोध से इशारा कर रहे थे। "इतनी बड़ी जगह, चौड़े दरवाजे और चौड़ी खिड़कियां। देखें, बीच की दीवार के लिए भी नींव पड़ चुकी है। तो यह अस्थायी भोजनालय है?....यह तो बड़ा क्लब बन सकता है, बस थोड़े रद्दोबदल की जरूरत पड़ेगी!... गलत बजट बनाना और योजना से अलग इमारत का निर्माण करना! यह तो अपराध है।"

अप्रत्याशित प्रश्नों से सभी भौंचक्के रह गए। सभी के होंठों पर ताले लग गए थे। वातावरण में उलझन और आशंका व्याप्त थी। किसी ने सोचा तक नहीं था कि निदेशक तिङ इतनी आसानी से सब कुछ भांप लेंगे। मामला गंभीर था।

चाङ आनपाङ ने थोड़ी अप्रसन्नता के साथ अपने सहायकों को देखा, फिर मुड़कर मुस्कराते हुए अफसोस भरे स्वर में तिङ मङ से कहा, "निदेशक तिङ, सचमुच दूसरा कोई रास्ता न था। वर्षों अति वामपंथी नीतियों के बने रहने के कारण ऐसा होना अवश्यंभावी था। 'उत्पादन पहले और रहन-सहन बाद में' ऐसे नारों के दौरान खुलेआम क्लब चलाने का साहस कौन करता? आप जानते ही हैं, इसकी अनुमति भी नहीं मिलती... हमारे कारखाने के अधिकांश मजदूर युवा हैं और हमें किसी न किसी तरह उनकी सांस्कृतिक रुचियों का ख्याल रखना पड़ता है।"

सहानुभूतिपरक और युक्तिसंगत बचाव की दलील से वातावरण कुछ बदला। सबने राहत की सांस ली और मन ही मन मुख्य निदेशक चाङ की प्रशंसा की। थोड़ी देर के लिए ऐसा लगा कि अब तिङ मङ दुविधा में फंस गए और उनके लिए जवाब देना मुश्किल हो रहा है।

"अच्छा, तो आप इस गलत काम का भी श्रेय लेना चाहते हैं... है कि नहीं?" तिङ मङ ने व्यंग्य करते हुए कहा। "आप जानते हैं, १९७९ है... आप अभी भी धोखा देने की चालबाजी क्यों कर रहे हैं?" उन्होंने जब देखा कि चाङ आनपाङ बचाव में और भी कुछ कहना चाहते हैं तो हाथ हिलाकर उन्हें रोक दिया :

"पहले झूठे बहाने से अस्थायी भोजनालय चलाने पर एक रिपोर्ट पेश कीजिए और किसी भी अनुशासनिक कार्रवाई को स्वीकार करने के लिए तैयार रहिए।"

फिर से सबको झटका लगा।

"फिर अपने क्लब की स्वीकृति के लिए दूसरी रिपोर्ट ब्यूरो को भेजिए। समझ गए न!"

ये दो फैसले इतनी तेजी से आए जैसे बादलों के टकराने से बिजली कौंधी हो। सबने महसूस किया कि निदेशक तिङ सभी से कर्तव्यनिष्ठा चाहते हैं।

तिङ मङ यहीं नहीं रुके। उनकी छिद्रान्वेषी और खोजती आंखों ने निर्माण निर्देशन कमेटी के सभी सदस्यों को गौर से देखा। "ऐसा लगता है कि आपके मुख्य निदेशक में निष्ठा की कमी है... ठीक है, वे ऐसा कर सकते हैं, पर दूसरे साथी क्या कर रहे थे? क्यों नहीं आप में से किसी ने आपत्ति की या कम से कम उच्चस्तरीय अधिकारियों को इसकी सूचना दी?" किसी के मुंह से एक शब्द न निकला। सभी चुप्पी की दीवार की तरह खड़े रहे।

सच यह था कि "सामूहिक लाभ" के तहत किसी भी संस्थान या उद्यम के सभी कार्यकर्ता सरकार से अधिक पैसे मांगने के समय एकमत हो जाते थे। यह स्वाभाविक और समझ में आनी वाली बात थी। "सामूहिक लाभ" को तोड़ने का कोई फायदा नहीं था, क्योंकि छोटे-बड़े सभी कार्यकर्ता अपना हिस्सा चाहते थे और हर कोई अपने पद पर बना रहना चाहता था। यह आजकल का अतिसामान्य तथ्य था और पिछले कुछ दिनों से यह तथ्य तिङ मङ का उपहास कर रहा था और उनके गुस्से को बढ़ा रहा था।

तिङ मङ की उग्र आंखों की तरफ देखने का साहस पाए शा के अलावा किसी को नहीं हुआ। पाए शा प्रौढ़ महिला तकनीक और विनाइलॉन कारखाने के निर्माण कार्यालय की डीन थीं। उन्होंने लापरवाही से ललाट पर आ गए बाल के गुच्छे को ऊपर किया और एक नजर तिङ मङ को देखा और फिर पहले की तरह विरक्त नजरों से दूसरी तरफ देखने लगीं।

"कॉमरेड पाए शा, आप बजट के लिए जिम्मेदार हैं। आपने निष्ठापूर्वक कार्य क्यों नहीं किया?" तिङ मङ ने उनकी तरफ देखा और स्पष्ट आलोचना की। क्रोध के कारण पाए शा के गाल लाल हो गए और आंखों में विद्वेष तैरने लगा।

चाङ आनपाङ ने कहा, "निदेशक तिङ, इन सारी बातों के लिए मुझे जिम्मेदार ठहराया जाना चाहिए।" निष्कपट भाव से आगे बढ़ते हुए उन्होंने कहा, " सभी कॉमरेड विशेष कार्यभारों को पूरा कर रहे हैं और पिछले कुछ वर्षों के दौरान अनेक कठिनाइयां भी थीं। सारी गलती

मेरी है; सचमुच उन्हें दोष नहीं दिया जा सकता। और फिर इस अस्थायी भोजनालय का तीन करोड़ से कोई संबंध नहीं है..."

"इससे कोई संबंध नहीं है? आपको जिम्मेदार ठहराया जाए? आप प्रतीक्षा करें। आपको अभी ढेर सारे जवाब देने पड़ेंगे," तिङ मङ ने चाङ 'आनपाङ की तरफ संदेह भरी नजरों से देखते हुए स्वयं से कहा। "अस्थायी भोजनालय" संबंधी चाङ आनपाङ की चालबाजी से उनका विश्वास और मजबूत हो गया कि अवश्य ही इस तीन करोड़ के पीछे कोई संदिग्ध चाल है। उन्होंने पाए शा की तरफ देखा और फिर से पूछा, "पाए शा, तीन करोड़ पर आपकी अंतिम टिप्पणी क्या है?"

"ईमानदारी की बात यह है कि विनाइलॉन कारखाने के निर्माण कार्य को पूरा करने के लिए कम से कम इतनी राशि अवश्य चाहिए। इस संबंध में हमारे विचार समान और एक हैं," पाए शा के बदले चाङ आनपाङ ने मुस्कराते हुए जवाब दिया, वे फिर से पुराने सहायक के स्वर में बोल रहे थे। उनकी तीव्र इच्छा थी कि तनावपूर्ण माहौल को हल्का किया जाए।

"आनपाङ, यह अच्छी बात नहीं है, है कि नहीं?" तिङ मङ ने उन्हें कठोर और अप्रसन्न नजरों से देखा। "आप सबके बदले बोल रहे हैं। वह गूंगी नहीं हैं, है न?"

चाङ आनपाङ धीरे से मुस्कराए। उनके भाव से ऐसा लगा कि वह तिङ मङ की किसी भी आलोचना को स्वीकार करने को तैयार हैं।

"पाए शा, आप अपनी अंतिम टिप्पणी सुनाएं। आप हमेशा अपने निदेशक पर आश्रित नहीं रह सकतीं," तिङ मङ ने कहा।

"आश्रित? मैंने अब तक आश्रित रहना सीखा ही नहीं।" पाए शा ने ठंडे स्वर में जवाब दिया। तिङ मङ की बातों से उनके आत्मसम्मान को ठेस लगी थी। तीस वर्ष से अधिक उम्र की अविवाहित तकनीशियन पाए शा सारी बातों से पूर्णतः उदासीन थीं। उनके विचार से किसी भी बात के लिए गंभीर होने की जरूरत नहीं थी। अगर तीन करोड़ उन्हें प्रभावित नहीं करता तो तीन करोड़, तीन करोड़ बना रहे। उन्होंने बजट बनाने में अवश्य हिस्सा लिया था, पर वह उससे जुड़ी नहीं रहीं। कारखाने में वह लहर के साथ चलतीं और नियमित रूप से अपने आठ घंटे के निर्धारित कार्य को पूरा करती थीं।

"पाए शा, नाराज न हों," चाङ आनपाङ ने उलाहना भरे मगर रक्षात्मक स्वर में कहा। "निदेशक तिङ तीन करोड़ के संबंध में आपके विचार जानना चाहते हैं।"

"मेरा कोई विचार नहीं है," पाए शा ने कहा, उनके स्वर में अभी भी ठंडापन था। "तीन करोड़ शायद काफी होगा!" उन्होंने तिङ मङ की तरफ देखा भी नहीं। अपने स्कार्फ को हिलाते हुए और कुछ बोले बिना वह दूसरी तरफ घूम गईं।

"शायद? क्या आर्थिक योजना विभाग में काम करने वाले को ऐसे शब्द का प्रयोग करना चाहिए?" तिङ मङ अपना गुस्सा न रोक सके। उनकी आंखों से क्रोध की चिनगारियां निकलीं, गुस्से से उनके गाल तक फड़क रहे थे। खामोश चेहरों को देखने के बाद उन्होंने शांत रहना उचित समझा। क्रोध व्यक्त करने का अर्थ अपनी कमजोरी और असहायता व्यक्त करना ही है। वह निर्भीकता से सच्चाई पर पड़ी चादर हटा देना चाहते थे। अचानक उन्होंने एक महत्वपूर्ण

व्यक्ति के बारे में सोचा। वह चाङ आनपाङ को तिरस्कारपूर्ण नजरों से देखते हुए गंभीर व आधिकारिक स्वर में बोले, "ठीक है, अगर यही स्थिति है तो मैं पूरे मामले की जांच के लिए एक विशेषज्ञ को बुलाऊंगा। छ्येन वेइछुङ...आपने यह नाम सुना है क्या?"

पाए शा अचानक पलटीं, आंखें उनकी चौंक को प्रकट कर गईं।

चाङ आनपाङ ने उम्मीद नहीं की थी कि तिङ मङ ऐसा कुछ करेंगे। फिर भी उन्होंने सहमति प्रकट करते हुए कहा, "यह तो बड़ी अच्छी बात है! यह अधिक विश्वसनीय होगा।" उनकी मुस्कराहट में परेशानी की लेशमात्र भी झलक नहीं थी। वे छ्येन वेइछुङ को नहीं जानते थे, पर उन्हें विश्वास था कि योग्य से योग्य विशेषज्ञ भी कुछ दिनों के अंदर इतने बड़े हिसाब-किताब पर प्रश्नचिन्ह नहीं लगा सकता।

"अच्छा होगा कि बजट आप लोग ही कम कर लें...यदि आप पकड़े गए तो मुश्किल होगी!" तिङ मङ ने कहा।

२

उस दोपहर पाए शा चाङ आनपाङ के घर आईं।

"अगर बजट को फिर से ठीक ही करना है तो हमें यह काम जैसे-तैसे कर लेना चाहिए। इस बार भी तो वह छ्येन वेइछुङ की जांच में खरा नहीं उतरेगा," पाए शा ने स्पष्ट शब्दों में कहा।

"यही कोई बात नहीं है," चाङ आनपाङ ने सिर हिलाते हुए मुस्कराकर कहा। उन्हें कोई घबराहट नहीं थी। दोपहर तक उन्होंने अपनी जांच-पड़ताल कर ली थी। छ्येन वेइछुङ हलका उद्योग विभाग के एक साधारण इंजीनियर और योजना विभाग में डिजाइन बनाने वाले प्रभारी थे। उनका लड़का छ्येन श्याओपो विनाइलॉन कारखाने में मजदूर था।

"आपको शायद विश्वास न हो, पर वह बजट विशेषज्ञ थे और पहले पूरे देश में जाने जाते थे," पाए शा ने उन्हें आगाह किया।

चाङ आनपाङ थोड़ी देर के लिए किंकर्तव्यविमूढ़ हो गए। उन्हें नहीं मालूम था कि छ्येन वेइछुङ बजट विशेषज्ञ रह चुके हैं या कि ये तथाकथित विशेषज्ञ कितने प्रभावशाली होते हैं। अपनी घबराहट छिपाने के लिए जोर से हंसते हुए अपने स्वाभाविक सौम्य और मजाकिया स्वर में वह बोले, "तो तुम डर रही हो? क्यों? यह तो हमारे काम का हिस्सा है।"

"डर? मुझे किस बात का डर होगा?" पाए शा ने खीझते हुए उन्हें तिक्त नजरों से देखा। "मेरा तो यह कहना है कि समस्या मोल लेने का कोई फायदा नहीं है, बस। ऐसी कोई जरूरत नहीं है।" अपनी बात समाप्त करके वह वहां से उठीं और बाहर निकल गईं।

उनकी लंबी-पतली छाया को दरवाजे से बाहर गुम होते देखते हुए चाङ आनपाङ ने महसूस किया कि मामला गंभीर है और उन्हें जल्दी से जवाबी कार्यवाही आरंभ कर देनी चाहिए!...फिर भी वे कुछ सेकेंड तक सोफे पर बैठे रहे, जैसे उन्होंने समाधि लगा ली हो। अचानक उन्हें सुबह जांच के बाद तिङ मङ से हुई बातें याद आईं। उनकी बातें इतनी साफ, निष्कपट और

सीधी थीं कि चाङ आनपाङ प्रभावित हो गए थे। उस क्षण तिङ मङ की गंभीर व सौम्य आंखों से नजरें मिलने पर वे "तीन करोड़" के बारे में हिचकिचाए थे।

मेज पर रखे टेलिफोन की घंटी बजी। सामग्री ब्यूरो का फोन था। वे मजदूरों की बहाली का कोटा मांग रहे थे। चाङ आनपाङ ने उनसे कुछ नई नौकरियों का वादा किया था ताकि ब्यूरो के निदेशकों के बच्चों को प्रांतीय निर्माण कंपनी में लगाया जा सके—यह सब उसी "तीन करोड़" से करना था। चूंकि सामग्री ब्यूरो वाले ज्यादा नखरा-तिल्ला दिखाते थे, इसलिए चाङ आनपाङ उन्हें "हां...हां" कहते आ रहे थे।

एक टेलीफोन कॉल ने चाङ आनपाङ के सामने सब कुछ स्पष्ट कर दिया। "तीन करोड़" के पीछे उन्हें निदेशकों और विभागों के प्रधानों के धुंधले चेहरे नजर आए। उन्होंने रिसीवर रखा और उनकी पुरानी दृढ़ता लौट आई। उन्हें किसी भी तरह "तीन करोड़" प्राप्त करना ही है।

निस्संदेह, इस राशि में से उन्हें एक पैसा भी नहीं छूना था। पर उन्हें पूरी राशि हासिल करनी थी, वर्ना वह अपने दांव-पेंच में पूर्णतः असफल हो जाएंगे। उदाहरणार्थ, कारखाने के सहायक सचिव और सहायक प्रबंधक अहाते वाले सुंदर मकानों में रहना चाहते थे। प्रशासनिक विभाग के प्रधान चाहते थे कि एक अतिथि गृह का निर्माण हो जिसका नियंत्रण उनके हाथ में हो। अस्पताल के निदेशक चिकित्सा भवन में एक मंजिल और जोड़ना चाहते थे ताकि उनके बैठने का कमरा अधिक खुला और आरामदेह हो...। ऐसे लोगों ने कारखाने के नेता के रूप में स्थिति मजबूत करने में उनकी काफी सहायता की थी और उन्हें उनकी मांगें पूरी करनी थीं। यह कारण ही "तीन करोड़" की लड़ाई के लिए उन्हें बाध्य करने को पर्याप्त था। वे उन्हें निराश नहीं कर सकते थे, इससे भविष्य में समर्थन खोने या, यहां तक कि, विश्वासघात की भी संभावना बनती थी।

दरअसल "तीन करोड़" प्राप्त करने का उद्देश्य इन सबसे परे था। एक बड़े कारखाने का छल-कपट करने में कुशल पार्टी सचिव, जिसके पास बहुत अधिक पैसे और सामान, कारें और परिचित हों, वह अवश्य ही समाज में अदृश्य सत्ता हासिल करने के योग्य होता है। अच्छी जिंदगी पसंद करने का अर्थ घर को सोफा, टीवी, फ्रिज आदि वांछित वस्तुओं से सजाना भी तो है। उनके जैसे पद व सत्ता से प्रेम करने वाले व्यक्ति के लिए इसमें सफलता प्राप्त करने का अर्थ शेखी बघारने के लिए ठोस मसालों का मिलना था।

वह सत्तालोलुप पैदा नहीं हुए थे। "सांस्कृतिक क्रांति" आरंभ होने के समय वह एक वर्ष के लिए कारखाने के सहायक प्रबंधक बने थे। उन्हें "सत्ता गुट" का समझकर बाहर भेज दिया गया था और तब उन्हें कुछ दिनों के लिए "गौशाला" में रहना पड़ा था ("गौशाला" का प्रयोग "सांस्कृतिक क्रांति" के समय ऐसे आवास के लिए किया जाता था, जहां लोगों को कठोर श्रम करना पड़ता था)। उस समय उन्हें सबसे अधिक अफसोस सहायक प्रबंधक होने का हुआ था। पर उन्होंने जल्दी ही सीख लिया। बुद्धिमानी के साथ उन्होंने पक्ष बदल लिया और अपनी वफादारी की स्पष्ट घोषणा की तथा मोर्चे पर डटे रहे। फिर उन्होंने नई राह निकाली और आंख मूंदकर स्वयं को प्रचण्ड तूफान के हवाले कर दिया। धीरे-धीरे राजनीति

के वास्तविक रूप से वह परिचित होते गए और अन्ततः उसकी बारीकी भी उनकी समझ में आने लगी। सचमुच तेज राजनीतिक प्रवाह और विश्वासघाती भंवरों ने उन्हें कई बार नीचे डुबोया। पर हर बार किसी न किसी तरह वे सतह पर आ गए। इस प्रक्रिया में उन्होंने अपने पुराने अंतःकरण को दफना दिया और नया रूप धारण किया। संक्षेप में उन्होंने स्वयं को नए सांचे में ढाल लिया था। अब राजनीतिक जीवन के उतार-चढ़ाव के पिछले दस वर्षों के अनुभवों के बाद वह स्वाभाविक रूप से अपने उद्देश्यों को हासिल करने के लिए अधिक उतावले न थे। फिर भी अपने राजनीतिक भविष्य की अदम्य इच्छा उनके दिल से कभी नहीं गई।

इस तरह "तीन करोड़" उनके निजी हित और कारखाने के अंदर व बाहर के दूसरे लोगों के हितों के मेल के प्रतीक थे। उदाहरण के लिए दूर की कौड़ी लाने की जरूरत नहीं है। यदि प्रांतीय निर्माण कंपनी के लिए बजट को थोड़ा नहीं बढ़ाते तो वह मजदूरों की बहाली का कोटा नहीं पा सकते थे। सामग्री ब्यूरो के उच्च अधिकारियों के बेटों की नौकरी के लिए उन्हें इसकी जरूरत थी। उन्हें बहुत सतर्कता के साथ यह सारा काम करना था। वरना वह अपने सामाजिक संबंधों को कैसे बढ़ाते और मजबूत करते? फिलहाल वह प्रिफेक्चर की पार्टी कमेटी के उन नेतृत्वकारी कार्यकर्ताओं के लिए अच्छे रिहाइशी मकानों की व्यवस्था के बारे में सोच रहे थे, जिनके परिजन कारखाने में काम करते हैं। साज-सामान की हेराफेरी से आसपास की काउंटियों को अपने नियंत्रण में करने का विचार भी उनके मन में आया था। संक्षेप में, अभी की स्थिति में अधिकारियों की राजनीतिक सफलता के सभी गुरों को वह अच्छी तरह जानते थे। अगर अपने सामाजिक संबंधों का लंबा-चौड़ा जाल उन्होंने नहीं बिछाया होता तो इतना आगे नहीं बढ़ पाए होते। बस यही बात थी। ये सचमुच जटिल और कठिन मौके होते थे, खासकर संबंध व परिचय बनाने के मामले में। उन्हें अच्छी तरह मालूम था कि पदोन्नति या नौकरी बदलने संबंधी फैसले हर स्थिति में अपने ऊपर के अधिकारियों द्वारा नहीं लिए जाते। संभव है कि किसी अपरिचित छोटे अधिकारी द्वारा खास चैनल से कहलवाने पर काम आसानी से हो जाए।

विनाइलॉन कारखाने में कार्यकर्ता से लेकर साधारण मजदूर तक, जिनके भी संबंध अधिकारियों से थे, सभी के बारे में वे आवश्यक जानकारी रखते थे। वास्तव में उनका एक मुख्य कार्य सबके व्यक्तिगत रिकॉर्डों की जांच करना था। आप प्रशिक्षु मजदूर ही हों, पर यदि आपके मां-बाप या रिश्तेदार महत्वपूर्ण व्यक्ति हैं तो वह इसे हमेशा दिमाग में रखते। जैसे ही जरूरत पड़ती, वे आपकी "समुचित देखभाल" करते और आपके तथा आपकी "पृष्ठभूमि" के धागे से अपना जाल तैयार करने में नहीं हिचकते। इस बार वह इस जाल का प्रयोग "तीन करोड़" के लिए करने जा रहे थे।

दिन का काम समाप्त करने के पहले उन्होंने छ्येन श्याओपो के यूनिट में फोन करके छ्येन श्याओपो को शाम अपने घर भेज देने का संदेश दिया। उन्होंने यूनिट को यह भी बताया कि फिलहाल छ्येन श्याओपो को कोई काम न सौंपा जाए, क्योंकि कारखाने की पार्टी कमेटी के पास उसके लिए दूसरा जरूरी काम है।

३

तिङ मङ ने पहले ही महसूस कर लिया था कि चाङ आनपाङ ने चारों तरफ जाल बिछा रखा है। कारखाने के कुछ अधिकारियों ने उनसे बातें करते समय विभिन्न दृष्टिकोणों से "तीन करोड़" की जरूरत पर बल दिया। कारखाने में काम करने वाले उनके शहर के कुछ दोस्त और उनका भतीजा अस्थायी अतिथि गृह में उनसे अलग-अलग मिलने आए। उनकी बातचीत के पीछे भी चाङ आनपाङ के लंबे अंडाकार चेहरे की धुंधली छवि थी।

घेरा डालने की चाल के बढ़ने के साथ-साथ तिङ मङ का क्रोध बढ़ता गया। पर अजीब विरोधाभास था। उनका क्रोध जितना ही बढ़ा, ऊपर से वह उतना ही शांत होते गए। प्रिफेक्चर पार्टी कमेटी के कुछ पुराने परिचित और प्रांत के एक-दो बड़े वरिष्ठ कार्यकर्ता भी उनसे मिलने आए और "तीन करोड़" के संबंध में दिलचस्पी दिखाई, तिङ मङ ने अच्छी तरह महसूस किया कि चाङ आनपाङ जैसे व्यक्ति को आसानी से किनारे नहीं किया जा सकता। चाङ आनपाङ उस व्यक्ति से बिलकुल अलग थे, जिसे वे दस वर्षों पहले से जानते थे। उस समय उनकी उम्र तीस वर्ष से थोड़ी ज्यादा थी। युवा, निष्कपट, निष्ठावान और सौंपे गए काम को पूरी जिम्मेदारी से निभाने के गुणों से युक्त थे। हालांकि कुछ घमंडी थे, पर हमेशा अपनी आलोचना सुनने और स्वयं को सुधारने के लिए तैयार रहते थे। वस्तुतः वह संभावनायुक्त युवा कार्यकर्ता थे, जिन्हें प्रोत्साहन देना समुचित था। पर अब वह बदल गए थे। "अवसर अपने काम का आदमी स्वयं पैदा करता है" के वह साक्षात् उदाहरण थे।

"अपनी गंदी चालें बंद करें और सावधान हो जाएं, वरना पकड़े जाने पर गंभीर परिणाम होंगे।" तिङ मङ ने सीधे तौर पर ही यह बात चाङ आनपाङ से कही थी, चाङ आनपाङ कुछ सफाई देने के बजाए मुस्कराकर रह गए, जैसे कह रहे हों, "भला मैं निदेशक तिङ से चालबाजी कर सकता हूं?"

तिङ मङ ने महसूस किया कि चाङ आनपाङ पर जबानी बातों का कोई असर नहीं होगा, वह हर बात पर यों ही लापरवाही से मुस्करा देगा। जरूरी यह था कि "तीन करोड़" की यथाशीघ्र जांच पूरी कर ली जाए। उन्होंने इंजीनियर छ्येन वेइछुङ से सारी उम्मीदें लगा रखी थीं, जो शीघ्र ही आने वाले थे।

हल्का उद्योग ब्यूरो में अपने कार्य के पहले दिन ही उन्होंने अंधेरे कोने में ड्राइंग बोर्ड पर झुके इस असाधारण प्रतिभा के धनी व्यक्ति को पहचान लिया था। छ्येन वेइछुङ को देखते ही उनका पुराना रोष जागृत हो उठा था। "छ्येन वेइछुङ! किस फालतू काम में फंसे हुए हैं?" दस वर्ष पहले ही तिङ मङ ने बजट योजना से संबंधित छ्येन के लेख पढ़े थे। राष्ट्रीय निर्माण कमेटी द्वारा उसे निकाले जाने की घटना कल्पनातीत थी। पिछले नौ वर्षों से वह अपना विशेष क्षेत्र छोड़कर एक दूसरे पेशे में लगे हुए थे और कूड़ेखाने में रहते थे।

अंततः छ्येन वेइछुङ विनाइलॉन कारखाने पहुंचे।

जब वे जीप से नीचे उतरे तो निर्देशन कमेटी के सभी सदस्य चौंक पड़े, वे बूढ़े, आगे की ओर थोड़े झुके और बुद्धिजीवी जैसे लगते थे। तिङ मङ ने उनके संक्षिप्त नाम छ्येन कुङ (इंजीनियर छ्येन) से परिचय कराया, हल्का उद्योग विभाग में उन्हें सभी इसी नाम से जानते थे।

छ्येन वेइछुङ का व्यक्तित्व आकर्षक नहीं था, दरअसल वे काफी दुर्बल दिखते थे। उनकी आवाज बहुत ही नम्र थी। वे जब हाथ मिलाते थे तो झुककर देर तक हाथ पकड़े रहते थे। उन्हें पहली नजर में देखकर चाङ आनपाङ ने महसूस किया—घिघियाने वाला चापलूस! उनके अनुमान में छ्येन कुङ अपने उतार पर थे। पर चाङ आनपाङ ने बिना अक्खड़पन या चापलूसी दिखाए अपना आदर व्यक्त करने के साथ-साथ ही अपनी सौम्य मुस्कान द्वारा अपना आभार व उत्साह भी व्यक्त किया। वह आगे बढ़े, उनकी तोंद हिल रही थी, उन्होंने बड़े अंदाज में छ्येन कुङ से हाथ मिलाया और स्वागत में मुस्कराते हुए दो-चार शिष्टाचारी शब्द कहे। फिर पलटकर निर्देशन कमेटी के सभी सदस्यों से परिचित करवाया और नेता के रूप में अपनी इज्जत व प्रतिष्ठा की भी झलक दिखाई।

इसके विपरीत तिङ मङ ने आगंतुक को त्राणकर्ता के रूप में देखा। उन्हें मालूम था कि यह विशेषज्ञ एक ही नजर में इमारत की निर्माण लागत का सही अनुमान लगा लेगा। शाम को अपने अतिथि गृह में छ्येन कुङ के सामने बैठे तिङ मङ सीधे मुद्दों पर आ गए, "छ्येन कुङ, आपको पूरा अधिकार दिया जाता है। हम "तीन करोड़" की जांच के लिए पूरी तरह से आप पर निर्भर करते हैं।"

"नहीं, नहीं। यह मुझ पर नहीं, बल्कि नेताओं पर निर्भर करता है," छ्येन कुङ ने जल्दी से जवाब दिया।

"नेताओं की दूरदर्शिता के सिद्धांत को मैं इस तरह देखता हूं। जनता के सहयोग के बिना वे एक आंख के अंधे हैं और विशेषज्ञों के बिना उनकी दूसरी आंख भी काम नहीं करती। दोनों आंखों के अंधे नेता किसी काम के नहीं होते," तिङ मङ ने कहा। जब उन्होंने देखा कि छ्येन कुङ इस संबंध में और भी कुछ बोलना चाहते हैं तो उन्होंने बात बदल दी। उन्होंने "बजट रिपोर्ट" की फाइलें दराज से निकालीं और उन्हें टेबल पर रखा।

उन्होंने कहा, " सारा हिसाब-किताब इन फाइलों में है। यदि आपको किसी और रिपोर्ट की जरूरत हो तो मैं उसका इंतजाम कर दूंगा। अगर आप निर्माण-स्थल देखना चाहें तो निर्देशन कमेटी वाले किसी को साथ भेज देंगे। अब आप जो भी निर्णय लें, मैं उसकी जिम्मेदारी लूंगा। अब यह हमारा युगल कार्य है। आप बताएं, इसमें आपको कितने दिन लगेंगे?... भोजन? मैं भोजनालय से आपके कमरे में पहुंचा दूंगा।"

तिङ मङ ने "तीन करोड़" की जांच का पूरा अधिकार छ्येन कुङ को सौंप दिया। अगले दिन निर्देशन कमेटी की मीटिंग में उन्होंने स्पष्ट घोषणा की : "बजट की जांच में छ्येन कुङ की प्राथमिक और मेरी पूरक भूमिका है। छ्येन कुङ की हर बात मानी जाएगी।"

छ्येन कुङ चर्चा के विषय बन गए, सभी उन पर गौर करने लगे। हालांकि अभी तक नम्रता के साथ सिर हिलाने और शिष्टाचार के कुछ शब्द बोलने के अलावा वह कुछ और

नहीं कर रहे थे। उन्होंने बजट के सवालों को टालने की कोशिश की और जब बोलना ही पड़ा तो अस्पष्ट रूप से कुछ बोले। निस्संदेह वे किसी विवाद में नहीं पड़ना चाहते थे।

"हमें क्या करना होगा?" "तीन करोड़" की जांच के लिए तिङ मङ के साथ आए हल्का उद्योग विभाग की निर्माण कमेटी के निदेशक ने चिंतित स्वर में पूछा। तिङ मङ की भौहें जुड़ी हुई थीं, वह कुछ सोच रहे थे। उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया।

छ्येन कुङ की तीव्र दुविधा का किसी को अनुमान नहीं हुआ। उस रात अपने कमरे में वह अकेले थे और उनके सामने "बजट रिपोर्ट" की फाइलें, स्लाइडरूल, कैलकुलेटर और अन्य कागजात पड़े थे। वे एकाग्रचित होकर बजट की फाइलें देख रहे थे और लगातार सिगरेट पी रहे थे। सिगरेट के घने धुएं से कमरा भरा था। जब भी रिपोर्ट में उन्हें कोई गलती मिलती, गुस्से में उनकी मुट्ठियां तन जातीं। पर धीरे-धीरे मुट्ठी ढीली हो जाती और वह सिर झटककर गहरी सांस लेते। वह स्वयं को असहाय महसूस कर रहे थे।

तिङ मङ उनसे कई बार मिलने आए और उन्होंने छ्येन कुङ के आंतरिक द्वंद्व को महसूस किया और पूछा भी। पर छ्येन कुङ ने अपने द्वंद्व को प्रकट नहीं किया और कहा, "ओह, कोई खास बात नहीं है।" वह तिङ मङ से कहते भी क्या? दस वर्षों से अधिक की जिंदगी के उतार-चढ़ाव ने उनका सारा उत्साह छीन लिया था और साहस को चकनाचूर कर दिया था। वह स्वयं को किंकर्तव्यविमूढ़ महसूस करने लगे थे।

वह आरंभ से ही तिङ मङ के सच्चे उत्साह और विश्वास से परिचित थे—पिछले दस या उससे अधिक वर्षों में आए बदलाव के पहले लोगों में यही उत्साह और विश्वास था—उन्हें तो यहां तक लगा कि कोई अज्ञात शक्ति उन्हें खींच रही है। जब उन्होंने देखा कि निदेशक होने के बावजूद वह स्वयं उनके लिए खाना ला रहे हैं और खाना रखते हुए प्रेम से बातें कर रहे हैं, तो छ्येन कुङ ने फिर से व्यक्त आदर की कद्र की और सौंपी गई जिम्मेदारी को तीव्रता से महसूस किया।

पर साथ ही अपनी पत्नी की कही बात भी नहीं भूल सके, जो उनके कार्य से अच्छी तरह परिचित थी। उनके यहां आने से पहले पत्नी ने समझाया था, "तुम अपने काम से काम रखना, समझे न? नेता जो करना चाहते हैं, उन्हें करने देना, ज्यादा चतुर बनने की कोशिश न करना। अन्यथा तुम्हारा फिर से पेइचिङ स्थानान्तरण कभी नहीं हो सकेगा।" इन शब्दों में पिछले कई वर्षों की तकलीफ और चिंता छिपी हुई थी। वास्तव में पति-पत्नी दोनों इस प्रयास में लगे हुए थे कि किसी तरह फिर से पेइचिङ स्थानान्तरण हो जाए; उन्हें लगने लगा था कि अपने जीवन के आधे हिस्से में ही सही पर वह अपनी योग्यता द्वारा उचित योगदान कर सकेंगे। किंतु अभी भी ढाक के वही तीन पात थे। उनका सामना उसी पुरानी नौकरशाही और स्वार्थी विभागवाद से हुआ, जिसने उनके असंतोष को और अधिक बढ़ाया ही। प्रायः वह गुस्से में कांपने लगते थे, पर उनका गुस्सा बेअसर सिद्ध होता।

कुछ समय पहले उन्होंने सुना था कि अंततः राष्ट्रीय निर्माण कमेटी ने उनके स्थानान्तरण की अनुमति दे दी है। पर वास्तव में प्रांतीय सरकार और कार्यालय में आकर मामला अटक

गया है तथा पिछले कुछ महीनों से कोई नई जानकारी नहीं मिली थी। जब तिङ मङ ने उनसे विनाइलॉन कारखाने के बजट की जांच के लिए कहा तो अपने पुराने पेशे के अदम्य प्रेम के कारण उत्साह में झट से तैयार हो गए। पर इस मामले में पड़ने के खिलाफ पत्नी के उलाहने के बाद उनकी समझ में आया कि एक बार काम शुरू हो जाने पर उनका यहां से निकलना असंभव हो जाएगा...।

खासकर इस संदर्भ में चाङ आनपाङ की संभावित विशेष भूमिका समझने के बाद उनका अंतर्द्वंद्व बढ़ गया। विनाइलॉन कारखाने में आने के दूसरे दिन उनके लड़के श्याओपो ने उन्हें बताया कि चाङ आनपाङ की पत्नी पार्टी की प्रांतीय कमेटी के संगठन विभाग में काम करती है और चाङ आनपाङ ने छ्येन कुङ का काम बदलने में मदद करने का वादा किया है। यह सुनकर उनकी खुशी का ठिकाना न रहा, उन्होंने कहा, "हमें उन्हें दिल से धन्यवाद देना चाहिए!"

हठात् उनकी आंखें बेटे की तिरस्कार भरी नजरों से मिलीं। "उन्हें धन्यवाद देंगे? क्या कह रहे हैं आप? आप केवल 'तीन करोड़' को मंजूरी दे दें, मैं तो यही कहूंगा।" उनके संदेह को मिटाने के लिए बेटे ने आगे कहा, "निस्संदेह वह इतना साफ-साफ नहीं कहेंगे। सचिव चाङ ने कहा है कि यदि आप अपने विशेष क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का सही उपयोग करना चाहते हैं तो हर आदमी मदद करने की कोशिश करेगा। उन्होंने यह भी कहा है कि मुझे दो दिन काम पर आने की जरूरत नहीं है। मैं आपकी देखभाल करूं। उन्होंने मुझसे आपको यह बताने के लिए कहा है कि विनाइलॉन कारखाने का निर्माण कार्य शीघ्र समाप्त करने के लिए हर तरफ से मदद की जरूरत है। क्या यह अपने आप में स्पष्ट नहीं है?" अब छ्येन कुङ भी चाङ आनपाङ के जाल में फंस गए थे।

तीन दिन गुजर गए थे, पर छ्येन कुङ ने अभी तक कोई कार्रवाई नहीं की थी।

चाङ आनपाङ सभी जगह पहले से अधिक शांत और स्थिर नजर आते और हंसकर बातें करते।

निर्देशन कमेटी के सभी सदस्य निश्चिंत थे कि "तीन करोड़" की मंजूरी मिल जाएगी जबकि हल्का उद्योग ब्यूरो के निर्माण विभाग के निदेशक और उप-निदेशक की चिंता बढ़ती जा रही थी।

तिङ मङ इन सबके बीच खामोश थे।

किसी को नहीं मालूम कि तिङ मङ किस बात की प्रतीक्षा में थे। पर उन्हें आभास हो गया था कि दूसरों की नजर बचाकर कुछ अप्रत्याशित चाल चली जा रही है, पर उन्होंने कुछ कहा नहीं। छ्येन कुङ जब भी निर्माण स्थल पर जांच के लिए जाते, उनकी भौंहें तनी होतीं। उनकी पुरानी नम्रता और सहमति की जगह चेहरे की गंभीरता और चुप्पी ने ले ली थी। चाङ आनपाङ ने भी छ्येन कुङ में आए इस परिवर्तन पर गौर किया और तिङ मङ के सामने पड़ने पर अज्ञात आशंका की भावना से डरे रहते थे।

एक दिन जल्दी ही बनकर तैयार होने वाले शयनागारों की जांच के समय अप्रत्याशित घटना घट ही गई।

प्रांतीय निर्माण ब्यूरो के नौवें विभाग के बजट योजनाकार ने कहा, "इन इमारतों का निर्माण कार्य पूरा हो चुका है। इसमें प्रति वर्गमीटर में सौ य्वान की लागत आई है।"

"आप नहीं कह सकते कि निर्माण कार्य पूरा हो गया है, क्यों?" छ्येन कुङ दल के अन्य लोगों के साथ सफेद पोचारा की गई दीवारों वाले एक कमरे का निरीक्षण कर रहे थे। अपने आपको नियंत्रित करते हुए उन्होंने अत्यधिक नम्रता के साथ कहा, "खिड़की और दरवाजों को क्यों नहीं रंगा गया है? खिड़की के शीशे कहां हैं? रेलिंग? स्नानघर के पाइप? पाइप अभी तक नहीं लगाए गए हैं, लगाए गए हैं क्या?... और आप प्रति वर्गमीटर एक सौ नौ य्वान और उनचास फन खर्च कर चुके हैं!"

बजट योजनाकार ने बात संभालने की कोशिश की, "मैं स्वीकार करता हूं कि निर्माण लागत कुछ अधिक है। पर यह निर्माण बिलकुल नक्शे के अनुसार किया गया है और क्वालिटी भी अपेक्षाकृत ऊंची है।"

"मैं आश्वस्त नहीं हूं। क्वालिटी के बारे में भी संदेह है।" छ्येन कुङ ने सफेद दीवार को जोर से धक्का दिया तो वह हिलने लगी।

"बीच की दीवारें नक्शे के अनुसार ईंटों से नहीं, फट्टों से बनी हैं। यह सब कुछ नक्शे के अनुसार ही बनाया गया है।"

लगातार दी जाने वाली सफाई से छ्येन कुङ का गुस्सा बढ़ता गया। वह अपने हाथों से दीवार को धक्का देते रहे। दीवार खरतनाक ढंग से हिल रही थी और साथ ही चूने-गारे के टुकड़े गिर रहे थे।

"नक्शे के अनुसार फट्टों की ऐसी दीवार बनाई गई है?" छ्येन कुङ ने पूछा। जब छ्येन कुङ ने देखा कि बजट योजनाकार सफाई में फिर से कुछ बोलने जा रहे थे तो उनकी आंखें क्रोध से और अधिक लाल हो उठीं। उन्होंने एक हाथ से योजनाकार की तरफ इशारा करते हुए और दूसरे हाथ से दीवार पर जोरदार मुक्का मारते हुए थोड़े तेज स्वर में कहा, "आप नक्शा ले आएं। जाएं, अभी लेकर आएं। मुझे विश्वास है कि नक्शे में फट्टों की दीवार होगी, पर निश्चित ही फट्टों की ऐसी दीवार नहीं होगी। चूना हटाकर देखा जा सकता है कि इसमें कैसी सामग्री लगाई गई है। आपने सामग्रियों के प्रयोग में कम से कम एक-तिहाई की बेईमानी की है।" उन्होंने दीवार को फिर से धक्का दिया और अपने अनुमान को सही किया, "शायद चालीस प्रतिशत... आप यह न सोचें कि दीवार पर चूना पोतकर आप अंदर की सभी चीजें छिपा लेंगे। नियम के अनुसार आपको यह दीवार तोड़कर फिर से बनानी चाहिए।"

बजट योजनाकार का चेहरा लाल हो उठा। खामोशी छा गई। सभी ने नम्र और सीधे छ्येन कुङ के पूर्णतः विपरीत स्वभाव को देखा। तिङ मङ रोष में थे, मन ही मन कोस रहे थे, "पिछले वर्षों में छ्येन कुङ जैसे विशेषज्ञों को दरकिनार रखा गया। निरी मूर्खता ही तो थी! इन्हीं वजहों से हम पिछड़े हुए हैं।"

उस रात तिङ मङ छ्येन कुङ के कमरे में आए और सीधा सवाल पूछा, "अच्छा, यहां की समस्या आपकी समझ में आई?"

"हां..."

"आप क्या सोच रहे हैं?" तिङ मङ ने मेज पर पड़ी बजट रिपोर्ट की कुछ कॉपियों को उठाया और दूसरे हाथ से उन्हें झटकते हुए कहा, "इनमें तो कोई समस्या नहीं है?"

छ्येन कुङ की पेशानी पसीने से गीली थी। उन्हें झिझक हो रही थी; उन्होंने एक और सिगरेट निकाली। तिङ मङ बैठ गए और सिगरेट सुलगाने के लिए उन्होंने तीली जलाई। फिर किसी पुराने हमदर्द दोस्त की तरह कहा, "आपकी जो भी परेशानी हो, खुलकर बताएं। अपने दिल में रखकर स्वयं को परेशान न करें।"

थोड़ी देर के बाद छ्येन कुङ ने साहस बटोरा और बताया कि उन्हें उम्मीद है कि ब्यूरो पेइचिङ स्थानान्तरण कराने में उनकी मदद करेगा। निस्संदेह बजट की जांच में वह पूरी सहायता करेंगे।

"ओह, यह सौदेबाजी है। क्या आप जांच करने के लिए मोल-भाव करना चाहते हैं?" तिङ मङ चौंककर अचानक खड़े हो गए। हालांकि एक दिन पहले ही उन्होंने ब्यूरो को फोन करके आग्रह किया था कि वे छ्येन कुङ के यथाशीघ्र स्थानान्तरण को मंजूरी दे दें, उन्हें यह उम्मीद नहीं थी कि छ्येन कुङ इस तरह की बातें करेंगे। उन्होंने आगे कहा, "अच्छा! आप इस काम के लिए अपने स्थानान्तरण की शर्त रखना चाहते हैं! कहीं इसका अर्थ यह तो नहीं कि यदि आपके स्थानान्तरण की मंजूरी नहीं मिली तो आप यह काम नहीं करेंगे?"

छ्येन कुङ का चेहरा शर्म और पश्चाताप से रक्तिम हो गया। तिङ मङ कमरे में टहलते रहे। अचानक मेज के पास आकर उन्होंने बजट की सारी रिपोर्टों को इकट्ठा किया और छ्येन कुङ की तरफ बढ़ाते हुए बोले, "यदि आप चाहते हैं तो इस "तीन करोड़" को अपनी स्वीकृति दे दें। आपको पहले ही से पूरा अधिकार दिया जा चुका है। आप बजट विशेषज्ञ हैं, मैं इसे आपके विवेक पर छोड़ता हूं। आप जो भी निर्णय लें।"

अगले दिन सुबह निर्माण विभाग के निदेशक जब तिङ मङ का दरवाजा खोलकर अंदर घुसे तो तिङ मङ मेज पर झुके हुए थे। भूरे रंग का ओवरकोट उनके कंधों पर पड़ा था और हाथ पर माथा टेके वह किसी गहरे सोच में डूबे हुए थे। खिड़की के शीशे पर जमे कुहासे से छनकर कमरे में आने वाली प्रभात की हल्की रोशनी मेज पर रखे लैम्प की पीली रोशनी के साथ मिलकर माथे की शिकनों को प्रकाशित कर रही थी। लगता था काफी देर से वह किसी गहरे सोच में डूबे हुए थे।

"लाओ तिङ, आप रातभर सोए नहीं?" निदेशक ने कमरे में घुसते हुए पूछा। "छ्येन कुङ के कमरे की बत्ती भी रातभर जली रही।"

"हूं..." तिङ मङ ने धीरे से गर्दन हिलाकर संकेत किया कि वह जानते हैं।

"यह चिंता का विषय है, है कि नहीं? अभी भी हम नहीं समझ पा रहे हैं कि "तीन करोड़" को कैसे कम किया जाए।" निर्माण विभाग के निदेशक ने बैठकर गहरी सांस लेते हुए पूछा, "लाओ तिङ, आप इससे फिर रातभर अत्यधिक परेशान रहे, है न?"

"मैं सोच रहा था कि "तीन करोड़" में कटौती होने के बाद क्या करना पड़ेगा... हां, कटौती के बाद यह समस्या है... कारखाने का निर्माण कार्य पूरा करने के लिए हमें विशेष योजना के अनुसार काम करना होगा..."

तिङ मङ का जवाब सुनकर निर्माण विभाग के निदेशक की आंखें खुली की खुली रह गईं।

४

अगले दिन संयुक्त निर्माण निर्देशन कमेटी द्वारा "तीन करोड़" की जांच से संबंधित बुलाई गई सभा में भयंकर विस्फोट हुआ।

"छ्येन कुङ, कृपया ब्यूरो की तरफ से कुछ बोलें," तिङ मङ के यह कहने पर सभी ने समझा कि सभा समाप्त होने वाली है। घने धुएं में लिपटे हर चेहरे में थोड़ी हरकत हुई। निश्चिंत भाव और प्रसन्न मुद्रा में छ्येन कुङ के आरंभिक शिष्ट शब्द सुनाई पड़े; सभी मान कर चल रहे थे कि "तीन करोड़" की स्वीकृति की सूचना दी जाएगी। पर अचानक सभी के चेहरे को काठ मार गया, यहां तक कि कमरे में भरा धुआं भी अपनी जगह ठहर गया। क्या? प्रस्तावित पूरक बजट और वास्तविक जरूरत के बीच "बहुत बड़ा अंतर" था?... चाङ आनपाङ भी स्तब्ध रह गए। लोगों ने एक-दूसरे को देखा और फिर छ्येन कुङ पर सभी की निगाहें टिक गईं।

पतले-दुबले और कद में छोटे छ्येन कुङ सावधानी के साथ शिष्ट शब्दों में अपनी बात कह रहे थे, "मुझे उम्मीद है कि आप गलत न समझेंगे। मैं सिर्फ अपनी राय रख रहा हूं और यह भी अभी पूर्ण नहीं है। निस्संदेह किसी के निर्णय में भूल का होना अपरिहार्य है, पर उपलब्ध तथ्यों के प्रारंभिक विश्लेषण से मेरी यह धारणा बनी है। यह अंतर... एक बड़ा अंतर है। हां, अभी तक मैंने विस्तृत गणना नहीं की है।"

कुछ सदस्य नाराज हो गए। "चंद दिनों में बजट रिपोर्टों पर एक सरसरी निगाह डालकर आपने उसे अस्वीकृत कर दिया, जबकि इसे तैयार करने में एक महीने से ज्यादा लगा और हर मद पर बार-बार विचार किया गया। 'विस्तृत गणना और विश्लेषण' के बजाए 'प्रारंभिक विश्लेषण' पर यह निर्णय अवश्य ही जल्दी में लिया गया है।"

स्तब्धता समाप्त होने पर चाङ आनपाङ ने सूक्ष्मता से गौर किया कि कैसे छ्येन कुङ ने अपनी बात को सुधारा। बजट के "बहुत बड़े अंतर" को बाद में उन्होंने "एक सीमा तक अंतर" कहा। उन्होंने कल की फट्टों की दीवार वाली घटना भी याद की, कैसे सफाई दिए जाने पर छ्येन कुङ क्रोधित हो गए थे। अपनी कुर्सी पर पीछे खिसकते हुए हाथ उठाकर फिर नीचे लाते हुए उन्होंने कहा, "पहले छ्येन कुङ को अपनी बात समाप्त करने दें। हम लोग कई दिनों तक उन्हें सारी रिपोर्ट देने के लिए परेशान रहे। छ्येन कुङ यहां जांच कार्य के लिए आए हैं, यह नहीं हो सकता कि वह अपने विचार न रखें। मैं आपको आश्वस्त कर सकता हूं, वह विनाइलॉन कारखाने के बारे में सचमुच चिंतित हैं।" इतना कहकर पहले की तरह मुस्कराते हुए उन्होंने छ्येन कुङ की तरफ देखा। उनकी आंखों ने उनकी आन्तरिक शक्ति और नम्रता व्यक्त की और इससे भी अधिक उन आंखों में छ्येन कुङ के प्रति विश्वास और आदर का भाव था।

पर तिङ मङ ने हाथ बढ़ाकर सबको संबोधित किया, "यदि आप सहमत नहीं हैं तो छ्येन

कुङ के विरोध में तर्क दें। केवल सांस थामकर बैठे न रहें। सब लोग अपनी-अपनी राय रखें, इस सभा का यही तात्पर्य है; है कि नहीं छ्येन कुङ?'' उन्हें मालूम था कि पिछली रात छ्येन कुङ सो नहीं पाए थे और वह अभी-अभी व्यक्त छ्येन कुङ की ''धारणा'' के अंतर्निहित अर्थ को भी समझ रहे थे। वह चाहते थे कि हर तरफ से पैसा बटोरने वाले छ्येन कुङ को उत्तेजित करें।

सभा में बैठे लोगों में कुछ तिङ मङ और चाङ आनपाङ के तीव्र संघर्ष को समझ नहीं पाए। दोनों ने परस्पर विरोधी और विपरीत दृष्टिकोण रखा था। पिछले कई वर्षों से प्रांतीय निर्माण कंपनी के नौवें विभाग में काम करने वाले एकाउंटेंट कुङ गुस्से में खड़े हो गए। उनकी उम्र तीस से अधिक थी। उनके चेहरे का रंग सांवला था और उन्होंने पीले फ्रेम का चश्मा पहन रखा था, जिसके अंदर से उनकी तेज और थोड़ी उभरी आंखें चमक रही थीं। उन्होंने बजट तैयार करने की पूरी कहानी और उसमें उल्लिखित खर्चों का पूरा लेखा-जोखा प्रस्तुत किया ताकि ''तीन करोड़'' की गंभीर जरूरत सिद्ध की जा सके। उन्होंने आंकड़ों की प्रामाणिकता और उसमें आई बढ़त की जरूरत को दोहराया। अंत में अपने सामने बैठी पाए शा की तरफ इशारा करके उन्होंने कहा, ''पक्ष क की कामरेड ने भी बजट में बताए आंकड़ों की पूरी जांच की है।'' चूंकि वित्तीय मामलों में आम तौर पर पक्ष क और ख अवश्यम्भावी रूप से विपरीत मत रखते हैं, इसलिए एकाउंटेंट कुङ के इस अंतिम वाक्य में अधिक वजन था। लोग उनके विचार से अपनी सहमति जताने लगे जबकि सामने बैठी पाए शा आंखें झुकाए मेज को घूर रही थीं; उन्होंने कोई भी प्रतिक्रिया नहीं दिखाई।

पाए शा को छ्येन कुङ की तरफ देखने का साहस न हुआ। प्रौढ़ इंजीनियर अपने पुराने रूप से बिलकुल अलग जीर्ण-शीर्ण और मरियल लग रहे थे, हालांकि पाए शा ने उन्हें शिक्षक के रूप में सबसे अधिक सम्मान दिया और जीवनभर उनके प्रति कृतज्ञ रहीं। १९६५ में पाए शा की उम्र केवल बाईस वर्ष थी और उस समय उनका नाम ली फेइ था। वास्तुशिल्प में डिग्री हासिल करने के बाद राष्ट्रीय निर्माण कमेटी के द्वारा चलायी जाने वाली बजट योजना की प्रशिक्षण कक्षा में उन्हें नामांकित किया गया था। छ्येन कुङ उस समय प्रशिक्षण कक्षा में तकनीकी विषयों के प्रभारी थे। पिछले कुछ दिनों में पाए शा इतना साहस नहीं जुटा पाई थीं कि पुराने परिचय को नया कर सकें।

सभा में छ्येन कुङ पूरे आत्मविश्वास के साथ नहीं बोल रहे थे, झिझक अभी भी मौजूद थी। बोलते समय वह उपयुक्त शब्दों की यों तलाश कर रहे थे मानो पानी व कीचड़ पार करने के लिए उभरी हुई ईंटें खोज रहे हों। इससे बचाव पक्ष वालों का हौसला बढ़ा। पर उनके द्वारा बार-बार ''सही गणना'' या ''आवश्यक शर्त'' दुहराने और पेश करने के कारण छ्येन कुङ का क्रोध और बढ़ा। उनके सामने बैठे सौम्य और शिष्ट लोगों के चेहरे आवश्यक शर्तों और सरकारी आंकड़ों में बदल गए थे। छ्येन कुङ के चेहरे से भी विनम्रता गायब थी और वह चीर कर रख देने वाली नजरों से सभी को घूर रहे थे।

''पक्ष ख अपनी व्यवस्था का खर्च कितना पाता है?'' उन्होंने अपना पहला सवाल पूछा।

"सरकारी अनुबन्ध के अनुसार वह १८ प्रतिशत का अधिकारी है," एकाउंटेंट कुङ ने चश्मे के पीछे आंखों को नचाते हुए सीधा और खरा उत्तर दिया।

"इसमें आप भूल तो नहीं कर रहे?"

"बिलकुल नहीं।" परेशान होकर उन्होंने अनुबन्ध और अधिनियम की मोटी पुस्तक के पन्ने पलटे। एक पेज पर रुककर उन्होंने खुली किताब मेज पर रख दी और कहा, "यह १९७७ का प्रांतीय क्रांतिकारी कमेटी का अनुबंध है : १८ प्रतिशत... १९७७ के पहले यह १७ प्रतिशत था। उस वर्ष के बाद इसे बदलकर १८ प्रतिशत किया गया। मैं कोई भूल नहीं कर रहा।"

इसी समय किसी ने फुसफुसाकर कहा, "बजट विशेषज्ञ पिछले कुछ वर्षों से अपने पुराने पेशे में नहीं हैं। उन्हें केवल पुराना १७ प्रतिशत याद है..."। चाङ आनपाङ ने मौके का फायदा उठाकर छ्येन कुङ की झेंप व घबराहट मिटाने की कोशिश की। वह मुस्कराते हुए बोले, "छ्येन कुङ पिछले कुछ वर्षों से दूसरे काम को निबटा रहे थे और बजट संबंधी कामों के लिए उन्हें समय नहीं मिल पाया। संभव है कि कुछ धाराओं में आए परिवर्तनों की उन्हें उतनी जानकारी न हो। व्यवस्था संबंधी खर्चों में १८ प्रतिशत तक की बढ़ोतरी नई है। निस्संदेह यदि हम पैसे बचाने के लिए इसे घटाकर १७ प्रतिशत कर सकें तो बहुत अच्छी बात होगी।"

छ्येन कुङ बिगड़कर बोले, "१८ प्रतिशत का मतलब १८ प्रतिशत ही है। आप इसे यों ही १७ प्रतिशत कैसे कर सकते हैं? सवाल यह नहीं है कि आप उसे १७ प्रतिशत कर सकते हैं या नहीं? राज्य के अनुबंधों का अक्षरशः पालन होना चाहिए और प्रतिशत को घटाया या बढ़ाया नहीं जाना चाहिए। यह सोच समझकर तय किया जाता है, समझे कि नहीं?" आगे के संदेहों को भी मिटाने के स्वर में उन्होंने कहना जारी रखा, "जिन्हें राज्य के अनुबंधों की सही जानकारी नहीं है, उन्हें बजट पर किसी प्रकार की बहस करने का अधिकार नहीं है। एकाउंटेंट कुङ ने प्रांतीय क्रांतिकारी कमेटी के जिस दस्तावेज को अभी-अभी दिखाया, मैं जानता हूं कि यह १९७७ का है और इस दस्तावेज का नम्बर ३९ है, ठीक है न? खर्च संबंधी नए नियम उसी वर्ष १ मई से लागू हुए। उस दस्तावेज में पांच धाराएं और दो व्याख्यात्मक टिप्पणियां हैं, हैं कि नहीं?"

अब सभी की आंखें छ्येन कुङ से पलटकर एकाउंटेंट कुङ पर टिक गईं। वह दस्तावेज को पलट रहे थे और एक भी शब्द बोलने में असमर्थ दिख रहे थे।

"पर यह अनुबंध निर्माण के लिए है, न कि व्यवस्था संबंधी खर्चों के लिए, समझे?" छ्येन कुङ थोड़ी देर के लिए रुके और फिर "तीन करोड़" की बजट रिपोर्ट को खोलकर एक पेज की तरफ इशारा करके बोले, "यहां रासायनिक औद्योगिक पाइप की व्यवस्था के खर्च के लिए क्यों निर्माण संबंधी सूत्र को अपनाया गया है? व्यवस्था और निर्माण संबंधी खर्चों को एक ही सूत्र से देखा गया है? कहीं आप यह तो नहीं कहना चाहते कि संस्थापना संबंधी खर्च दूसरे सूत्र से दिए जाते हैं, इसकी आपको जानकारी नहीं? ईमानदारी से बताएं!"

"मैं स्वीकार करता हूं कि खर्च के ब्योरों में अंतर है..." हार मानकर एकाउंटेंट कुङ ने नाक पर नीचे खिसक आए चश्मे को ऊपर चढ़ाते हुए कहा।

"आप जितने के अधिकारी हैं उससे अधिक? या कम? आपको यह स्पष्ट करना है।"

"निस्संदेह, यह थोड़ा अधिक है।"

"यह 'थोड़ा' कितना है? बजट बनाने वाले हमारे कॉमरेडों को स्पष्टीकरण के लिए अरबी अंकों का प्रयोग करना चाहिए।"

"इतनी जल्दी यह बता पाना मुश्किल है। आप जानते हैं अलग-अलग प्रकार के पाइप हैं और उनकी कीमतें भी भिन्न हैं। उनकी व्यवस्था संबंधी दिक्कतें और इसी कारण उन पर आनेवाला खर्च भी एक-सा नहीं है..."

"तो क्या संख्या है? आप पहली संख्या बताएं? आपको तो अवश्य ही मालूम होना चाहिए।"

एकाउंटेंट कुङ घबराहट में पसीने से सराबोर थे, उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करें या क्या बोलें।

छ्येन कुङ ने अपना सारा क्रोध दबाकर धीमे स्वर में कहा, "मैंने एक मोटा हिसाब लगाया है। ३२० टन इस्पात की पाइपें बिछाई गईं। अलग-अलग टनों की अलग-अलग कीमत के अनुसार हम हिसाब करें। इसके बाद सभी को जोड़ दें तो यह राशि १,४३,६५,००० य्वान होती है, यह पाइप बिछाने का खर्च है। इसके बदले में निर्माण का सूत्र अपनाकर आपने २३,३३,००० य्वान अधिक मांगे हैं। यही आपका 'थोड़ा अधिक' है, मैं आप लोगों को बता रहा हूं २३,३३,००० य्वान।"

"निर्देशन कमेटी खर्च पूरा करने के इस आग्रह से सहमत थी..." विषम परिस्थिति में फंसे एकाउंटेंट कुङ ने बुदबुदाकर कहा।

छ्येन कुङ असहमति में सिर हिला रहे थे। उन्होंने कहा, "यह नहीं चलेगा। चाहे कोई भी इससे सहमत हो, पर यह नहीं चलेगा। खर्च पूरा करने के लिए दी जाने वाली राशि राज्य के आर्थिक अधिनियमों के अनुसार होती है। यह तय है और इस पर प्रश्न नहीं उठाया जा सकता।"

सभा कक्ष में मौत का सन्नाटा छाया रहा।

तिङ मङ ने चाङ आनपाङ की ओर देखा। उन्होंने सीधे मगर व्यंग्यपूर्ण शब्दों में कहा, "अच्छा, निर्देशन कमेटी की सहमति से ऐसा है। क्या इसका अर्थ यह कि आप इस संबंध में कामरेड चाङ आनपाङ के भी विचार जानना चाहते हैं।"

चाङ आनपाङ ने जल्दी से जवाब दिया, "निस्संदेह सभी बातों के लिए मैं दोषी ठहराया गया हूं, पर मैं स्पष्ट कर दूं कि मैं इन सारे तकनीकी मुद्दों को अच्छी तरह नहीं समझता..." वह सफाई दे रहे थे कि उनकी आंखें प्रांतीय निर्माण कंपनी के नौवें विभाग के अधिकारी की असंतुष्ट नजरों से मिलीं और उन्होंने अपना स्वर बदल दिया। "पर इतना निश्चित रूप से कह सकता हूं कि मैं परिस्थिति से अच्छी तरह परिचित था और मैंने सहमति व्यक्त की थी। मैं अच्छी तरह जानता हूं कि प्रांतीय निर्माण कंपनी के सामने वास्तविक और व्यावहारिक कठिनाइयां हैं। सब मिलाकर मुझे जिम्मेदार ठहराया जाना चाहिए।"

"आपको फिर से जिम्मेदार ठहराया जा रहा है?" तिङ मङ ने पूछा।

"मैं अपनी आत्मालोचना करूंगा।"

"बड़ा आसान है, है कि नहीं? जो सब हो रहा है, इससे आप पूर्णतः परिचित थे। दूसरे शब्दों में आप जानबूझकर आर्थिक नियमों का उल्लंघन कर रहे थे। आपको पार्टी द्वारा अनुशासित किया जाएगा और राज्य के कानून के अनुसार सजा दी जाएगी।"

तिङ मङ के इन शब्दों को सुनने के बाद चाङ आनपाङ सारी बातों के लिए स्वयं को जिम्मेदार ठहराये जाने की बात पर नहीं टिके रहे। उन्होंने स्वीकार किया, "सच यह है कि मैं बजट के विस्तृत और विशेष कोटा के बारे में अधिक स्पष्ट नहीं हूं..."

"तो कौन स्पष्ट है? क्या पक्ष ख द्वारा आपको धोखा दिया गया?... आज पक्ष ख के बारे में मैं विचार नहीं कर रहा हूं। निर्माण ब्यूरो बाद में उससे निबटेगा। अत्यधिक अनुमान द्वारा धोखे से निकाली गई राशि देर-सबेर आपके हाथों में चुभेगी, आप जानते हैं? हल्का उद्योग के निदेशक की हैसियत से आप मुझे एक सवाल पूछने दें। क्या पक्ष क का कोई सदस्य बजट के आंकड़ों के संबंध में स्पष्ट नहीं है?" तिङ मङ की तेज निगाहें पाए शा पर पड़ीं और उन्होंने पूछा, "कॉमरेड पाए शा, आप क्या कहती हैं? क्या आप बजट के बारे में स्पष्ट हैं?"

तिङ मङ का गुस्सा देखकर छ्येन कुङ ने थोड़ी परेशानी महसूस की। वह पाए शा के बगल में बैठे हुए थे और सलाह देने के लहजे में शांत शब्दों से उन्होंने कहा, "यदि बजट योजनाकार ने अपना विषय अच्छी तरह से नहीं सीखा और अपने पेशे में दक्षता हासिल नहीं की तो यह अच्छी बात नहीं है।" पाए शा की मोटी काली पलकें कांपती हुई झुकीं।

तिङ मङ ने पूछा, "पाए शा, क्या आप भी यह कहने जा रही हैं कि आप नहीं समझतीं या बजट के आंकड़ों के बारे में अधिक स्पष्ट नहीं हैं? आप जानती हैं, इस तरह आप भी इस धोखाधड़ी से स्वयं को बचा लेंगी।"

"मैंने कुछ भी नहीं कहा है।" पाए शा ने धीरे से नजर उठाकर तेज स्वर में कहा। वह हल्के क्रोध में थीं। सभा का वातावरण और अधिक तनावपूर्ण हो गया। सभी सदस्य अपनी सांस रोके इस प्रतीक्षा में बैठे थे कि देखें सभा किस दिशा में बढ़ती है। वे सभी पाए शा के व्यक्तित्व और स्वभाव से अच्छी तरह परिचित थे।

तिङ मङ ने अपने हाथों से मेज का सहारा लेते हुए खड़े होकर कहा, "अपनी आलोचना करने के बजाय आप लोग सोच रहे हैं कि आप लोग सही हैं और आपके विरोध में कोई भी एक शब्द नहीं बोल सकता। यही बात है न?... पर आप यह नहीं भूलें कि आप राज्य के अधीन कार्यकर्ता हैं। राज्य आपको पैसे देता है कि आपको कुछ काम करना चाहिए। संरचनात्मक कार्य न करने से आपको कोई दोषी नहीं ठहरा सकता, पर आपको जिम्मेदारी का बोध तो होना चाहिए..." तिङ मङ ने पूरी कोशिश के साथ शांत स्वर में अपनी बात जारी रखी, "अच्छा, इस क्षण हम आपकी बात छोड़ते हैं। इस संबंध में हम बाद में विचार करेंगे। छ्येन कुङ, आप अपनी बात जारी रखें।"

छ्येन कुङ ने पाए शा और तिङ मङ की ओर देखा, उन्होंने अपनी नोटबुक खोली और

हर पेज पलटने के साथ एक के बाद एक गलतियां बताते गए। इनमें से कुछ गलतियां प्रांतीय निर्माण कंपनी के नौवें विभाग ने की थीं और अधिकांश गलतियां पक्ष क—विनाइलॉन कारखाने की थीं। धोखाधड़ी की राशि तुरंत ही २३,३३,००० से बढ़कर ५०,००,००० हो गई।

इस तरह, एक ही सुबह में तीन करोड़ में से पचास लाख घट गए।

५

चाङ आनपाङ अब छ्येन कुङ के महत्व से इंकार नहीं कर सके। उन्हें अच्छी तरह अहसास हो गया कि छ्येन कुङ अब तक की गई जांच की ही तरह हर चीज की आगे भी जांच करते रहे तो जल्दी ही बजट की और पिछले कुछ वर्षों के अंतिम खातों और गोदामों की सामग्रियों की भी पूरी जांच होगी। तब वह गंभीर मुश्किलों में फंस जाएंगे। निश्चित ही वह यह जोखिम नहीं उठा सकते थे।

वह अतिथि गृह में छ्येन कुङ से मिलने आए। उनके चेहरे पर नम्र मुस्कराहट फैली रही और उन्होंने "तीन करोड़" के संबंध में एक शब्द भी नहीं कहा। इसके बदले उन्होंने छ्येन कुङ को यह बताया कि वह विशेषकर उनके स्थानान्तरण से संबंधित सूचना देने आए हैं। उन्होंने कहा कि थोड़ी देर पहले उनकी अपनी पत्नी से फोन पर बातचीत हुई है। उनकी पत्नी ने उन्हें सूचना दी है कि पार्टी की प्रांतीय कमेटी का संगठन विभाग जल्द ही उनके स्थानान्तरण को मंजूरी देने जा रहा है। चाङ आनपाङ का मित्रवत व्यवहार छ्येन कुङ की उम्मीद से बाहर था, वह स्वाभाविक रूप से कृतज्ञ महसूस कर रहे थे।

"मैंने तो कुछ भी नहीं किया!..." चाङ आनपाङ ने अपना हाथ हिलाते हुए कहा। "निर्णय लेने का अधिकार संगठन विभाग को है। मैंने तो केवल कुछ टांके भिड़ाए बस। सिद्धांततः किसी को ऐसे टांके भिड़ाने की जरूरत नहीं पड़नी चाहिए..." गहरी सांस लेकर उन्होंने अपनी बात आगे बढ़ाई, "पर मुझे उम्मीद है कि आप अभी की स्थिति में जटिल वैयक्तिक संबंधों के महत्व को समझते होंगे। इसके अलावा कोई दूसरा रास्ता भी तो नहीं..." उठकर चलने के समय उन्होंने छ्येन कुङ की तरफ से अटकल लगाने की कोशिश की, " अभी भी अंतिम बाधा को दूर करना बाकी है और यह है हल्का उद्योग ब्यूरो... फिर भी, हम इसके लिए भी कोई रास्ता निकालेंगे..." जब छ्येन कुङ ने कृतज्ञता व्यक्त करनी चाही तो वह बीच में टोककर बोले, "नहीं, नहीं। आप इसे सहायता नहीं कह सकते। विनाइलॉन कारखाने में आपके आने से हमारे काम में बहुत सहायता मिली है... छ्येन कुङ, बजट के बारे में मैं तो इतना ही कहूंगा कि हमारी इच्छाओं का कोई अर्थ नहीं है। आपको जो सही लगे, वही करें। इससे हमें थोड़ी कठिनाई हो सकती है... पर यदि कठिनाई भी होती है तो होने दें। निस्संदेह पिछले कुछ वर्षों से निर्माण कार्यों में आने वाली व्यावहारिक दिक्कतों को आप समझते होंगे। हूं..." चाङ आनपाङ ने गहरी सांस ली, उनकी अगली बातों में उनकी परेशानी झलक रही थी, "मुझे केवल यह डर है कि निर्माण कार्य पूरा नहीं हो पाएगा। दस करोड़ से अधिक की पूंजी

और हजारों मजदूरों के बावजूद हम काम में वह गति नहीं ला सके। यह नुकसान मेरी जानकारी में किसी और चीज से अधिक है।''

चाङ आनपाङ के दिमाग में कब क्या घूम रहा है, इसकी जानकारी किसी को नहीं मिल पाती थी। जब वह घर में अपने सोफे पर बैठे उधेड़बुन में लगे हुए थे, तभी उनकी बेटी हाएयेन आकर सोफे की बांह पर बैठ गई, उसने पूछा, ''पापा, कारखाने के सभी लोग कह रहे हैं कि 'तीन करोड़' की गड़बड़ी के आप जिम्मेदार हैं। क्या यह सच है? वे यह भी कह रहे हैं कि तिङ अंकल से आपका झगड़ा हो गया है, क्या यह भी सच है?'' बेटी के सवालों ने उन्हें परेशान कर दिया, पर उन्होंने अपनी खीझ जाहिर नहीं की। वह अपनी इकलौती बेटी को अत्यंत प्यार करते थे। ''सांस्कृतिक क्रांति'' के दौरान जब वे 'ग्रौशाला' में रहते थे, उस समय हाएयेन की उम्र सात वर्ष थी। वह हर रोज लोगों के उपहास और तानों के बीच से विलो पत्ते की तरह खामोश गुजरकर उनके लिए खाना लाती थी और अपने अंगूठों के बल खड़े होकर उनकी आंखों के कोनों से आंसू पोंछने की कोशिश करती थी। उन्होंने बेटी का हाथ थपथपाकर कहा, '' चिंता न करो। तिङ अंकल और मैं दोनों ही भलाई चाहते हैं। हम दोनों खर्च को अधिक से अधिक कम करने की कोशिश कर रहे हैं...'' उन्होंने अपनी बेटी की शरारती नजरों पर गौर किया और आगे बोले, ''तुम्हें अभी भी संदेह है? तुम यह सोच सकती हो कि तुम्हारे पापा तुमसे झूठ बोलेंगे क्या? बजट का काम करने वाले कुछ कॉमरेडों ने लापरवाही से काम किया है...'' उनकी बेटी ने उनका विश्वास कर लिया, पर वह बेचैनी महसूस करने लगे। वह नहीं चाहते थे कि उनकी बेटी को सच्चाई का पता चले... पर यह पूरी तरह से संभव नहीं था। साथ ही वह यह भी नहीं चाहते थे कि बेटी से झूठ बोलें। उनके सीने में अभी भी पिता का दयालु हृदय था।

अपने दिमाग से परेशानियों को निकालने के लिए वह खड़े होकर कमरे में चहलकदमी करने लगे। खिड़की से उन्हें तिङ मङ और श्याओपो साथ-साथ टहलते दिखाई पड़े। उन्हें बेहद आश्चर्य हुआ, उनका ध्यान तुरंत ''तीन करोड़'' पर चला गया। यह समय अत्यंत नाजुक था और अभी वह ढील नहीं बरत सकते थे।

तिङ मङ छ्येन कुङ से मिलने जा रहे थे। छ्येन कुङ मेज के पास अकेले उदास बैठे सिगरेट पी रहे थे। उस दोपहर अपने बेटे श्याओपो से उनका झगड़ा हो गया था। श्याओपो उनसे कह रहा था, ''यदि तीन करोड़ है तो आप उसे तीन करोड़ रहने दें। तिल को ताड़ बनाने की क्या आवश्यकता है? मैं नहीं समझता कि आप जैसे मृत दिमाग वाला कोई व्यक्ति अभी भी बचा होगा।'' उन्होंने बेटे की सलाह को ठुकरा दिया। हालांकि इस झगड़े ने उनकी आंखें खोल दीं : चाङ आनपाङ की अभी भी यही इच्छा है कि वह अधिक गहराई में न जाएं, विशेषकर गोदाम वाले मामले में। पिछले कुछ वर्षों से निर्माण कार्यों में आने वाली कठिनाइयों से वह अच्छी तरह परिचित थे। ऐसे में कारखाने की परियोजना कभी पूरी नहीं होगी? यह पूर्णतः संभव था।

उन्हें ऐसा लगा कि तिङ मङ गोदाम वाले मामले के सिलसिले में बातचीत करने आए

है। "निदेशक तिङ..." वह अपनी परेशानियां बताना चाहते थे, पर तिङ मङ बीच में ही बोले, "नहीं, मैं यहां आपको समझाने नहीं आया हूं, इसकी जरूरत भी नहीं है। आपको गोदाम के मामले की परिस्थितियों पर अच्छी तरह विचार करना चाहिए... संयोग से अभी-अभी श्याओपो से मेरी बातचीत हुई, मैंने उस नौजवान को कुछ सलाह दी।" वह बैठ गए और अपना कहना जारी रखा, "मैं आपसे दो मुद्दों पर बातें करना चाहता हूं। पहला, मेरी समझ से हम लोगों को केवल बजट की जांच और उसे घटाने का काम नहीं करना चाहिए, हमें ऐसी योजना भी बनानी चाहिए कि कारखाने की परियोजना निश्चित रूप से पूरी हो। हमें इसके लिए आवश्यक कदम उठाने होंगे। निश्चित कोटे के अनुसार बजट तैयार करना और फिर निर्माण कार्य को चलाना व उसे पूरा करना यह अभी की स्थिति में इतना आसान नहीं है।"

"हां, ठीक कह रहे हैं।" छ्येन कुङ ने जल्दी से अपनी सिगरेट बुझाते हुए कहा।

"यह तो पहला मुद्दा है। हम इसे थोड़ी देर के लिए टाल सकते हैं और बाद में गोदाम संबंधी मामले के साथ इस पर विचार कर सकते हैं। मैं जिस दूसरे मुद्दे पर आपसे बात करना चाहता हूं, वह पहले की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण है। हम कपड़ा उद्योग को और अधिक विकसित करने जा रहे हैं; इसमें अभी के कुछ कारखानों के विस्तार के साथ अनेक नई परियोजनाएं होंगी। मैं आपको कार्यकर्ताओं और तकनीशियनों की बजट योजना कक्षा चलाने के लिए आमंत्रित करना चाहूंगा। यह तीन महीने तक चलेगा। आप क्या सोचते हैं?"

"बेशक, यह अच्छा विचार है। वर्ना सभी स्तरों पर सुप्रशिक्षित व्यक्तियों को बहाल किए बिना केवल प्रभावशाली प्रबंध व्यवस्था की बात करना तो हवा में तीर चलाना होगा।" छ्येन कुङ अत्यंत उत्साहित लग रहे थे। छ्येन कुङ को पेइचिङ न जाने देने के अपवाद के अलावा तिङ मङ में सभी बातें अच्छी थीं।

"छ्येन कुङ, मुझे डर है कि हल्का उद्योग ब्यूरो के तत्वावधान में एक बार इस कक्षा के आरंभ होने के बाद प्रांतीय निर्माण कमेटी निश्चिततः ईर्ष्या करेगी। वह आपको बुलाने की भी कोशिश करेगी और आपको प्रांतीय कार्यालय में रखा जाएगा। ऐसी स्थिति में आपका पेइचिङ लौटना अधिक असंभव हो जाएगा। फिर आप क्या करेंगे?"

"आप मुझे नहीं जाने देंगे, इसके बारे में मैं क्या कर सकता हूं?" असहाय स्वर में छ्येन कुङ ने कहा।

"मैं आपको नहीं जाने दूंगा?... इतनी शक्ति!" तिङ मङ ने सिर हिलाया और हंसकर कहा। खड़े होकर वह छ्येन कुङ के सामने आए, "मुझे नाचीज न समझें। मेरे पास आपके जैसा दिमाग भले ही न हो, पर मुझे अच्छे और बुरे की समझ है। राज्य मुझे हर महीने वेतन देता है।" इसके बाद उन्होंने छ्येन कुङ को बताया कि ब्यूरो ने उनके स्थानान्तरण की मंजूरी दे दी है और उसी दिन पार्टी की प्रांतीय कमेटी के संगठन विभाग को रिपोर्ट भी भेजी है।

छ्येन कुङ की आंखें आश्चर्य में खुली रह गईं, उन्हें लगा कि सब कुछ इतनी जल्दी कैसे हो गया।

"आप... आप मुझे प्रतिभाशालियों को रोकने के लिए दोषी नहीं ठहरा सकते। पर इतना

जरूर कहूंगा कि मैं विभागीय स्वार्थ का दोषी हूं। आपके तीन महीने की बजट योजना कक्षा को ऐसा कहा जा सकता है कि हल्का उद्योग ब्यूरो ने पेइचिङ से सेवाएं उधार लीं।'' तिङ मङ मुस्कराए। ''प्रांतीय निर्माण कमेटी इसके बाद आप पर कब्जा करना चाहती है, मैं इसमें कोई हस्तक्षेप नहीं कर सकता। आप बताएं, मैं कुछ कर सकता हूं क्या? मैं आपके स्थानान्तरण का प्रबंध करूंगा। मुझे यकीन नहीं होता कि इतने बड़े प्रांत में प्रतिभाशाली व्यक्तियों की कमी हो।''

छ्येन कुङ से अपनी बातचीत पूरी करने के बाद तिङ मङ पाए शा से मिलने गए।

पाए शा मेज के पास हाथों पर गाल रखे बैठी थीं। उनकी कोहनियों के नीचे १९६५ में राष्ट्रीय निर्माण कमेटी द्वारा आयोजित बजट योजना कक्षा के शिक्षकों और छात्रों का एक समूह फोटो पड़ा था। उन्हें नहीं मालूम कि क्यों एक-दो दिन पहले बक्स से खोजकर उन्होंने यह फोटो निकाला था। फोटो में तीन पंक्तियों में सौ से अधिक व्यक्ति खड़े थे। वह कटे बांहों की ब्लाउज पहने पहली पंक्ति के बीच में उकड़ूं बैठी थीं और उनके पीछे यानी दूसरी पंक्ति के बीच में छ्येन कुङ कुर्सी पर बैठे थे। उस समय वह जवान और जिंदादिल थीं। उनकी आंखों में भविष्य की लालसामय आशाओं की चमक थी। उनकी मुस्कराहट में जीवन के उत्कट प्रेम की नदी बहती थी। फोटो के पीछे सुंदर अक्षरों में कुछ पंक्तियां लिखी हुई थीं :

ली फेइ,

चीन की भावी महिला बजट विशेषज्ञा के नाम

छ्येन वेइछुङ

वस्तुतः ये पंक्तियां उस समय उनके लिए प्रेरणा थीं... उन्होंने यह फोटो यों ही देखने के लिए निकाल लिया था, उन्होंने यह महसूस नहीं किया था कि उन बीते विस्मृत ''सहज'' दिनों की रोशनी में इतने ठंडे और उदास वर्षों के बाद भी चमक मौजूद होगी, जिसका बाद में वह उपहास किया करती थीं और अब यही उज्ज्वल मगर अपरिचित किरणें उन्हें गहरी चोट पहुंचा रही थीं। ऊपर से, पिछले कुछ दिनों की घटनाओं ने उनके मन की शांति छीन ली थी...।

तिङ मङ के अचानक आगमन ने उन्हें आत्मविस्मृति से लौटा दिया। फिर भी वह बैठी रहीं, उनके चेहरे से विद्वेष भाव प्रकट हो रहा था। ऐसी अफवाह थी कि तिङ मङ ने उन्हें अनुशासित करने के उद्देश्य से कार्यकर्ता संगठन विभाग से उनकी निजी फाइल मंगवाई है। चाङ आनपाङ थोड़ी देर पहले पाए शा से बातें करने आए थे, पर उन्होंने हर प्रश्न का गोलमटोल जवाब दिया था, ''जहां तक अधिकारियों की बात है, तुम उसे उनके भरोसे ही छोड़ दो... अब तुम्हारी निजी फाइल मंगवाई गई है, शायद निदेशक तिङ तुम्हारा बहुत अधिक खयाल रखते हैं।'' चाङ आनपाङ की बातों से इतना अवश्य हुआ कि कारखाने में फैली अफवाह की पुष्टि हो गई।

''मैं आपसे आपके काम के बारे में कुछ बातें करने आया हूं।'' तिङ मङ ने एक पलक में कमरे की सहज मगर सुरुचिसंपन्न सजावट देखी और बैठ गए।

पाए शा ने रूखा सा जवाब दिया, "हां, यह तो आपका अधिकार है।"

"मैं पहले यह कहना चाहता हूं कि अपने कार्य में जिम्मेदारी से बचने की कोशिश करना आपकी सबसे बड़ी गलती है। 'तीन करोड़' में इतनी बड़ी समस्या मौजूद है। आप भी इसके लिए जिम्मेदार ठहरायी जाएंगी... आप कितनी जिम्मेदार हैं, यह बाद में विचार किया जाएगा।"

"मैं जिम्मेदारी लेने को तैयार हूं। यदि आप सजा सुनाना चाहते हैं तो बेहिचक सुनाएं।"

"यदि सजा समस्या का समाधान होती तो आप सबों को बहुत पहले ही सजा दी जा चुकी होती।"

पाए शा के होंठों पर एक हल्का तिरस्कार भाव आया।

"आपने पहले बजट योजना की पढ़ाई की है?" तिङ मङ ने ठंडे स्वर में पूछा।

"आप मेरी निजी फाइल देख सकते हैं!"

"उसे संगठन विभाग देखेगा।" उनका दिमाग चौंका। केवल एक दिन पहले उन्होंने मध्य स्तर से ऊपर के कार्यकर्ताओं की फाइल देखने का फैसला किया था। "पहले मैं आपसे और अभी बात करना चाहूंगा।" उन्होंने पाए शा को गंभीर नजरों से देखा और कहा, "आप सोच सकती हैं कि यह दुनिया किसी काम की नहीं है। अगर आप चाहें तो आप समाज को या अपने तीखे अनुभवों को दोषी ठहरा सकती हैं। पर ऐसे उद्देश्यहीन जीवन पर आप स्वयं पछताएंगी।"

"यही मेरी पसंद है, इसलिए ऐसा ही है।"

"मुझे नहीं लगता कि आप पहले भी ऐसी ही रही होंगी और न ही मैं चाहूंगा कि आपकी भावी दशा बनी रहे," तिङ मङ ने रूखे स्वर में उठते हुए कहा।

पाए शा का चेहरा अचानक पीला पड़ गया।

तिङ मङ ने कुर्सी एक ओर खिसकाई और दरवाजे की ओर बढ़े। दरवाजे से निकलते समय उन्होंने पलटकर कहा, "आपको दो दिनों के अंदर दो काम करने हैं। पहला, सभी किताब-किताब को तैयार करना है और गोदाम की सामग्रियों की जांच में छ्येन कुङ की मदद करनी है। दूसरा, सावधानीपूर्वक सोचें और देखें कि अभी भी 'तीन करोड़' में कोई समस्या तो बची नहीं रह गई है।"

पाए शा के मन की शांति अब पूर्णतः खो गई थी। "मुझे नहीं लगता कि आप पहले भी ऐसी ही रही होंगी!..." वह पहले कैसी थीं? फोटो का उनका अपना स्वयं, उन पर हंस रहा था। वस्तुतः दुःस्वप्नपूर्ण दस वर्षों के जीवन ने उन्हें बिलकुल भिन्न और दूसरे व्यक्ति में परिवर्तित कर दिया था। निस्संदेह जवानी के दिनों में घर पर दुर्भाग्य के थपेड़ों ने उनके दिल पर गहरे घाव छोड़े थे। उनसे केवल उनका राजनीतिक जीवन ही नहीं छीना गया था, बल्कि पार्टी के प्रति उनका विश्वास और उनका आत्मसम्मान भी प्रेम के पाखंड और स्वार्थ से तबाह हो गया था। यहां तक कि उनकी जीने की इच्छा लगभग समाप्त हो गई थी... अपने पिछले जीवन को भुलाने के लिए ही उन्होंने अपना नाम बदल लिया था। दस वर्षों में उन्हें जो झेलना पड़ा था, उसने उन्हें सभी लोगों और चीजों के प्रति निष्पन्द बना दिया था। शायद इसी कारण वे सामान्य से अधिक विरक्त, भावशून्य और उदासीन हो गई थीं।

पर पिछले कुछ दिनों में अचानक उनके मन की शांति क्यों छिन गई?... यदि कोई व्यक्ति वस्तुगत रूप में देखे तो उसे पता चल जाएगा कि उनकी आंतरिक परेशानी कुछ दिनों से लगातार बढ़ रही थी। यद्यपि कोई भी सरकारी नीति उनके आदर्शों के टूटे महल को नहीं जोड़ सकी और न प्रेम के प्रति उनका विश्वास जगा सकी, तथापि पिता के प्रति किए गए घोर अन्याय के बाद उन्हें मिली पुनःप्रतिष्ठा, सामाजिक वातावरण की जमी बर्फ के पिघलने से सूर्य की किरणें उनके दिल में पहुंचीं...

अगले दिन सुबह ही पाए शा ने गोदाम की सामग्रियों से संबंधित सभी कागजात इकट्ठे किए और चुपचाप छ्येन कुङ के हाथों में दे दिए। पर उन्होंने जांच कार्य संबंधी कोई भी सूचना नहीं दी।

गोदाम की जांच का नतीजा यह निकला : विनाइलॉन कारखाने को अपने बजट से सामग्रियों की खरीद और उगाही के लिए प्रस्तावित राशि में से एक करोड़ घटाना पड़ा। इस तरह तीन करोड़ में से पहले घटाए गए पचास लाख के अलावा एक करोड़ और घट गया। अब केवल डेढ़ करोड़ बचा रह गया था।

६

चाङ आनपाङ ने मेज पर इतने जोर से मुक्का मारा कि चाय की प्याली उलट गई। अभी वे पचास लाख खोने के गम से उबरते कि एक करोड़ और गंवा बैठे। उन्होंने मन ही मन स्वीकार किया कि उन्होंने तिङ मङ को कम करके आंका। उनके अधीन काम करने वालों की शिकायत, उनकी बर्बादी पर जश्न मनाने वाले विरोधियों की खुशी, उनके विभिन्न संपर्कों का असंतोष... ये सब किसी बड़ी लहर की तरह उन्हें स्वयं में समोने के लिए बढ़ी चली आ रही थीं। उनके सामने डटकर लड़ने के अलावा कोई दूसरा रास्ता चुनने की गुंजाइश नहीं थी।

सबसे पहले उन्होंने छ्येन कुङ पर दबाव डाला। टेलीफोन एक्सचेंज की ऑपरेटर से उन्हें तिङ मङ और हल्का उद्योग ब्यूरो की बातचीत का सार मिल गया। "ठीक है तो मैं भी चुपचाप नहीं बैठा रहूंगा," चाङ आनपाङ ने स्वयं से कहा। पार्टी के प्रांतीय संगठन विभाग में कार्यरत अपनी पत्नी से उन्होंने फोन पर लंबी बात की। कुछ दिनों पहले स्थानान्तरण की अनुमति दिलाने में मदद की जो बात उन्होंने छ्येन कुङ को बतायी थी, वह पूर्णतः झूठ थी। उन्हें अपनी पत्नी से यह जानकारी मिली थी कि विभाग जल्द ही मंजूरी देने जा रहा है और इसी आधार पर उन्होंने झूठी प्रशंसा लूटी थी। अब वह सचमुच अपनी पत्नी से इस सिलसिले में बात कर रहे थे। उनकी पत्नी संगठन विभाग में एक साधारण अधिकारी थी, पर कभी-कभी एक छोटा अधिकारी या प्रबंधक किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति के स्थानान्तरण के काम आ जाता है। स्वाभाविक रूप से उन्होंने पत्नी से बार-बार केवल ऐसा कहा कि उन्हें और विनाइलॉन कारखाने को छ्येन कुङ की जरूरत है, उनके बिना निर्माण कार्य को पूरा करना एक गंभीर समस्या होगी।

इसके बाद प्रांतीय निर्माण कंपनी के निदेशक थान से उन्होंने फोन पर बात की और सभी आवश्यक संकेत दिए। इसके अतिरिक्त उन्होंने अपने सामाजिक संबंधों का फिर से इस्तेमाल किया। ये सारे काम उन्होंने चुपचाप किए, रची जा रही साजिश का आभास तक नहीं होने दिया। नतीजा क्या निकला? इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि कुछ दिनों के अंदर ही हल्का उद्योग ब्यूरो के अनेक कार्यकर्ताओं को ऐसा लगने लगा कि "छ्येन कुङ सीमा का अतिक्रमण कर रहे हैं।" निस्संदेह उनका तात्पर्य यह था कि "तिङ मङ सीमा का अतिक्रमण कर रहे हैं।"

चाङ आनपाङ की सभी गतिविधियों का प्रभाव आखिरकार तिङ मङ के कार्य पर पड़ा। घृणा से दांत भींचने के अलावा तिङ मङ ने कुछ नहीं किया। उन्होंने महसूस किया कि अब उन्हें अधिक दबाव में काम करना होगा। ऐसी बुरी स्थिति से पहले भी उनका पाला पड़ चुका था। उदाहरणार्थ जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध में वह लड़ चुके थे। १९६६ में "सांस्कृतिक क्रांति" आरंभ होने पर वह तुरन्त यह नहीं समझ पाए थे कि यह चीन के लिए महाविपत्ति सिद्ध होगी। उस समय उन्हें सबसे अधिक इस बात ने परेशान किया था कि उन पर अनुचित रूप से प्रतिक्रांतिकारी होने का आरोप लगाया गया था। और अपने "अक्खड़ व्यक्तित्व" के कारण उन्हें गंभीर रूप से सताया गया था तथा उनकी भर्त्सना का प्रचार पूरे प्रांत में किया गया था। उनके इकलौते बेटे को पीटते-पीटते मार डाला गया था और वर्षों से सुख-दुख की साथी उनकी पत्नी को भी इतना सताया गया कि उनकी मृत्यु हो गई। वह आंसू के घूंट पीकर रह गए थे; बस यही वह कर सकते थे...

पर उन्होंने महसूस किया कि अभी उनके पास पिछली बातों को याद करने का समय नहीं है। उन्होंने यह कभी नहीं माना कि चीन समाप्त हो गया है या वह स्वयं समाप्त हो गए हैं। न ही वह यह मानने को तैयार थे कि समाज में फैली गंदगी को साफ नहीं किया जा सकता। निस्संदेह उन्हें जटिलताओं का सुलझाना आ गया था और वे यह भी समझ गए थे कि वर्तमान त्रुटियों को दूर करने के लिए वे केवल अपनी व्यावहारिक शक्ति पर ही निर्भर कर सकते थे। इस रोने-कलपने का कोई फायदा नहीं था। सचमुच, विनाइलॉन कारखाने के चापलूस कार्यकर्ताओं से घिरे चाङ आनपाङ की दूरगामी शक्ति, छ्येन कुङ का प्रत्यक्ष हतोत्साह और उनकी निर्बलता, पाए शा की कटुता जो यह मान रही थीं कि इसका उसे पहले भी अहसास था और स्वार्थी अवसरवादी छ्येन श्याओपो—उन्हें हर दिशा में अंधेरा ही अंधेरा दिख रहा था। पर मुश्किलों को झेलने और उन्हें सुलझाने की वजह से उन्हें अब स्थिति की जटिलता समझ में आई। इन सबों में बदलाव लाने के लिए उन्हें अभी भी जिस चीज की जरूरत महसूस होती थी, वह काम था।

हल्का उद्योग ब्यूरो के कार्यालय के अध्यक्ष के क्वाङशङ तिङ मङ से मिलने विनाइलॉन कारखाने आए। उन्होंने तिङ मङ को बताया कि ब्यूरो के सभी उप-निदेशक अत्यंत चिंतित हैं।

"क्यों चिंतित हैं?" तिङ मङ ने पूछा।

"लाओ तिङ, आप मुझे अपनी राय रखने दें।" के क्वाङशङ का कद छोटा और रंग सांवला था, उनकी पेशानी चौड़ी और पलकें बड़ी थीं। वे क्वाङतुङ के रहने वाले अत्यंत

चतुर व्यक्ति थे। उनकी आंखों में एक चमक थी और उनका उच्चारण दक्षिणी था। "अभी की स्थिति दस वर्ष पहले जैसी नहीं है। अनेक मामलों में हमें युक्तिसंगत रूप से उदार होना चाहिए और हममें थोड़ी लचक होनी चाहिए। अन्यथा योजना के अनुसार विनाइलॉन कारखाने का निर्माण कार्य पूरा नहीं हो पाएगा।"

"यह आपकी अपनी राय है?"

"हां।"

"उपनिदेशकों की क्या राय है?"

"उनकी निजी राय भी लगभग मेरी जैसी ही है।"

"अच्छी बात है। 'तीन करोड़' की पूरी जांच के लिए पार्टी ने मुझे सारा अधिकार सौंपा है। कृपया मेरे काम में हस्तक्षेप न करें। आप अपनी राय भी न दें।" के क्वाङशङ किंकर्तव्यविमूढ़ होकर चिङ मङ को सुनते रहे, "जब आप वापस पहुंचें तो सभी कॉमरेडों को यह बता दें कि वे पार्टी कमेटी की सभा में अपने विचार रखने के लिए आमंत्रित थे। आपके बारे में भी मेरी एक राय है। आप वह नहीं रहे, जो पहले हुआ करते थे।"

विनाइलॉन कारखाने के निदेशक और पार्टी कमेटी के उपसचिव न्ये रुनते तिङ मङ को यह बताने आए कि प्रांतीय निर्माण कंपनी का नौवां विभाग अपने मजदूरों को हटाकर नए निर्माण स्थल पर ले जाने को सोच रहा है। नाममात्र के लिए कुछ मजदूर यहां रह जाएंगे।

"क्या? आपका मतलब वे निर्माण कार्य अधूरा छोड़कर चले जाएंगे?" तिङ मङ ने घूरकर न्ये रुनते को देखा।

न्ये देखने में सुशील लगते थे। उन्होंने अपनी आंखें सिकोड़कर स्थिर कीं और दृढ़ स्वर में कहा, "नहीं, उन्होंने यह नहीं कहा कि वे जा रहे हैं।" तिङ मङ ने जवाब दिया, "ठीक है, यदि वे काम छोड़कर जाना ही चाहते हैं तो चले जाएं। आप जानते हैं, चीन में एक उन्हीं की निर्माण इकाई नहीं है।" न्ये रुनते ने शांत स्वर में कहा, " ऐसे कार्य को समाप्त करने की आवश्यकता आप समझते हैं। यह काम मुश्किल है और इसमें पैसे भी अधिक नहीं मिलते। इसमें तो केवल हड्डी ही हड्डी है, मांस का नामोनिशान नहीं। शायद दूसरी निर्माण इकाइयां इस काम को हाथ में नहीं लेना चाहेंगी।... दूसरे, अधिक मजदूरी लेने के लिए नौवें विभाग का भी प्रांतीय निर्माण कंपनी के अन्य विभागों से पहले से संबंध बना हुआ है।"

"तो यही है हमारी गरिमामय कम्युनिस्ट पार्टी! यह हालत हो गई है!" तिङ मङ कमरे में तेजी से चहलकदमी कर रहे थे। कुछ कदम चलने के बाद वह रुके और उन्होंने पूछा, "क्या आपको चाङ आनपाङ ने यह कहने के लिए मेरे पास भेजा है?"

"हां... नहीं, नहीं, मैं स्वयं भी आकर आपको यह बताना चाहता था।"

तिङ मङ ने न्ये रुनते को ऊपर से नीचे तक देखा और क्रोधित स्वर में कहा, "और हम आधुनिकीकरण के कार्य को पूरा करने का दावा कर रहे हैं?"

"तिङ साहब, एक आप ही सारी चीजों को गंभीरता से ले रहे हैं। इससे काम नहीं चलेगा।" न्ये रुनते ने दिल से यह सलाह दी।

"फिर आप मेरा साथ क्यों नहीं देते? यदि सभी व्यक्ति गंभीरता से काम करें तो सफलता मिल सकती है। ऐसा क्या हो गया है... क्या 'सांस्कृतिक क्रांति' ने आपकी सारी हिम्मत छीन ली? क्या यही कारण है?"

"नहीं, यह बात नहीं है। पर यह आज की सच्चाई है।"

"फिर आप पार्टी क्यों नहीं छोड़ देते?" तिङ मङ ने न्ये रुनते को काटकर रख देने वाली नजरों से देखा। न्ये रुनते ने अपना सिर झुकाया। अंत में तिङ मङ ने बस इतना कहा, "सभी को सूचित कर दें कि पार्टी कमेटी की सभा होने वाली है।"

सभा में तिङ मङ सीधे मुद्दे पर आ गए और बोले, " 'तीन करोड़' के सवाल पर मुझे ऐसा लगता है कि यह दो भिन्न दृष्टि और कार्यपद्धति की लड़ाई बन गई है। एक पक्ष कार्य में प्रगति, बजट तैयार करने में सतर्कता और कम खर्च करके यथाशीघ्र परियोजना को पूरी करना चाहता है। दूसरा पक्ष कारखाने की रक्षा करने के छद्मवेश में अपना स्वार्थ सिद्ध करना चाहता है और इस तरह राष्ट्र को क्षति पहुंचा रहा है। दूसरे शब्दों में अपनी राजनीतिक पूंजी बढ़ाने के लिए देश के पैसों का दुरुपयोग कर रहा है। आपके सचिव चाङ आनपाङ इसके साक्षात उदाहरण हैं।"

पूरे कमरे में स्तब्धता छा गई। खामोशी फैली रही। चाङ आनपाङ ने असहमति में सिर हिलाते हुए जबरन मुस्कराने की कोशिश की।

तिङ मङ ने "तीन करोड़" से संबंधित विस्तृत विवरण पेश किया। सिद्धांत पर दृढ़ता से न टिके रहने के लिए उन्होंने पार्टी कमेटी की आलोचना की। अंत में उन्होंने कहा, " जो कोई भी अपना कार्य पूरी ईमानदारी के साथ निभाने को तैयार नहीं है, वह अपने पद से त्यागपत्र दे सकता है।"

सभा खत्म होने के बाद वह चाङ आनपाङ से अकेले में बातें करने के लिए रुके रहे। उन्होंने रूखे स्वर में कहा, "आप अपना कार्ड दिखाएं।"

"मैं क्या दिखा सकता हूं?" चाङ आनपाङ ने अपनी बांहें फैलाकर एक और जबरन मुस्कराहट फेंकी। वह तनाव को कम करने के साथ-साथ तिङ मङ के सख्त रुख को भी नरम करना चाहते थे। "यही अभी की स्थिति है," उन्होंने धीमे स्वर में बोलना आरंभ किया, "निर्माण इकाई के लिए यदि आप बजट में थोड़ी ढील नहीं देंगे तो वे काम पूरा नहीं करेंगे। बस इतनी सी बात है! ऐसा नहीं है कि वे सहायता करना नहीं चाहते। यदि आपने सख्ती के साथ निश्चित कोटे के अनुसार राशि दी तो वे घाटे में रहेंगे। इसका मतलब यह है कि वे अपने मजदूरों का वेतन देने में भी असमर्थ होंगे, विशेष कार्यों के लिए इनाम देने की बात तो छोड़ ही दें। इन दिनों यही पूरे देश का हाल है। आप जमीन की खरीद से संबंधित दूसरा उदाहरण ले सकते हैं। नियम के अनुसार खेंतीयोग्य जमीनों के एवज में तीन वर्षों तक प्राप्त आमदनी राज्य को चुकानी पड़ती है। यह प्रति मू (चीन में खेतों को नापने की एक इकाई) कुछ सौ य्वान पड़ती है, ठीक है? पर यदि आप कृषि उपकरणों जैसे दूसरे खर्चों को जोड़ें तो प्रति मू कम से कम सात-आठ हजार य्वान की जरूरत पड़ती है। इस सच्चाई को आप

समझते होंगे। कारखाने के साज-सामान या सही यातायात व्यवस्था के अभाव में आप क्या कर सकते हैं? बदले में देने के लिए गोदाम में रखे सामानों पर निर्भर करना पड़ता है। अन्यथा आप मूल योजना के अनुसार कार्य करते रहें और बराबर अधिकारियों से सहायता मांगते रहें। इसके अतिरिक्त आप कुछ नहीं कर सकते और इस तरह काम पूरा होने में सौ वर्षों से भी अधिक लग जाएंगे। आप जानते हैं, 'तीन करोड़' की योजना मैंने अकेले नहीं बनाई। 'तीन करोड़' के बिना कोई भी सचिव कारखाने के कार्य की समाप्ति नहीं देख सकता।'' चाङ आनपाङ अपनी बात पर स्वयं ही खुश हो रहे थे। वास्तव में यह तगड़ी चाल थी और चाङ आनपाङ के अनुसार समस्या के समाधान का कोई दूसरा रास्ता भी नहीं था। नौवें विभाग द्वारा अपने मजदूरों को हटाने की बात के उल्लेख की आवश्यकता नहीं थी।

''यह आपकी अंतिम राय है, फिर भी एक सवाल का जवाब दें। आपने आज की जिस स्थिति का विवरण दिया, यदि उन्हीं स्थितियों के बीच मैं एक वर्ष यहां के काम की देख-रेख करने का फैसला करूं तो क्या मैं दो करोड़ नब्बे लाख में इस कार्य को पूरा कर सकता हूं? आप अपनी राय दें।''

चाङ आनपाङ ने तिङ मङ के गंभीर चेहरे को गौर से देखा और थोड़ी देर सोचने के बाद कहा, ''हां, यह संभव है।''

''दो करोड़ अस्सी लाख के बारे में आपकी क्या राय है?''

चाङ आनपाङ ने महसूस किया कि बातचीत में तीखापन आ गया है। इसके बाद दो करोड़ सत्तर लाख, फिर दो करोड़ साठ लाख और इसी तरह दस-दस लाख घटाकर तिङ मङ पूछते जाएंगे। इसलिए कोई जवाब न देकर वह विचारों में खो गए।

''ठीक है, हम दो करोड़ नब्बे लाख के बारे में पहले बात करें। जब दो करोड़ नब्बे लाख में काम हो सकता है तो आप तीन करोड़ पर क्यों जोर दे रहे हैं। क्या बाकी दस लाख कहीं आप खुद तो नहीं जोड़ेंगे?'' थोड़ी देर चुप रहने के बाद तिङ मङ ने आगे कहा, ''अभी की स्थिति बेहतर नहीं है, यह मैं जानता हूं। पर मुझे यह भी विश्वास नहीं रहा कि आप कम्युनिस्ट समाज में काम कर रहे हैं। दरअसल आप 'अभी की स्थिति' के बहाने अपना स्वार्थ सिद्ध करना चाहते हैं! ... यह रहा आपका हिस्सा और यह मेरा, यही बात है न! इसलिए चीन में यह 'अभी की स्थिति' हुई है।

चाङ आनपाङ दिल ही दिल में अपने पुराने नेता तिङ मङ की गंभीरता का उपहास कर रहे थे। फिर भी उन्होंने कहा, ''मैं तो केवल विनाइलॉन कारखाने को थोड़ी अच्छी तरह चलाना चाहता हूं। इसमें मेरा कोई निजी हित नहीं है। मेरा विचार है, आप यह समझते होंगे।''

''आपका निजी हित नहीं है?'' तिङ मङ के होंठों पर व्यंग्यपूर्ण मुस्कराहट थी। ''आप कुछ दिन और रुकें, फिर जब मैं बहरा हो जाऊं तो आप यह बात कहें।''

''ठीक है, अब मैं और कोई सफाई नहीं दूंगा। बस इतना ही कहना चाहता हूं कि यदि मजदूर यहां काम पर लगे रहें तो आप जो भी राशि प्रदान करें, उससे कोई फर्क नहीं पड़ेगा। ऐसी स्थिति में किसी तरह मैं काम संभाल लूंगा। मैं उम्मीद करता हूं कि इस समस्या को यथाशीघ्र सुलझाने में ब्यूरो मदद करेगा। अभी तो यह हालत है कि नौवें विभाग ने हमारे

साथ काम नहीं करने का फैसला कर लिया है।" चाङ आनपाङ को अच्छी तरह मालूम था कि यदि नौवें विभाग ने काम जारी रखने से इंकार कर दिया तो पूरे प्रांत में दूसरी इकाई को पाना असंभव होगा और फिर कम से कम छै महीने तो काम अवश्य ही बंद रहेगा।

"आपको स्वयं इस समस्या का समाधान करना होगा," तिङ मङ ने चाङ आनपाङ की तरफ देखे बिना बेरुखी से कहा।

"मुझे?" चाङ आनपाङ को थोड़ी देर के लिए कोई शब्द नहीं सूझा कि क्या बोलें। "मैं... मैं शायद इसे नहीं सुलझा सकता!"

"तो फिर आपको अपना पद छोड़ना होगा। जो इस समस्या को सुलझाएगा, वही मुख्य निदेशक होगा। सीधी सी बात है, है कि नहीं?" तिङ मङ ने खड़े होकर खिड़की के बाहर देखा, यह इसका संकेत था कि अब बातचीत समाप्त हो गई है।

चाङ आनपाङ ने महसूस किया कि वह पूरी तरह से तिङ मङ की मुट्ठी में आ गए हैं। सौदा या समझौता करने के उद्देश्य से उन्हें त्यागपत्र देने की बात कहकर तिङ मङ को धमकाने का साहस नहीं हुआ, क्योंकि वह अच्छी तरह जानते थे कि क्या प्रतिक्रिया होगी। पहली बार उन्होंने स्वयं को दरकिनार महसूस किया। उनका दिल क्रोध और घृणा में उफन रहा था। तिङ मङ के सफेद छोटे बालों को देखते हुए वह द्वेष में अपने दांत किटकिटा रहे थे। पर जैसे ही तिङ मङ के पलटने के पहले उनका सिर घूमा चाङ आनपाङ के चेहरे पर नम्र मुस्कराहट लौट आई और उन्होंने कहा, "देखिए, मैं कोई रास्ता निकालता हूं। मैं हाथ पर हाथ रखे नहीं बैठा रहूंगा, मैं आपकी उम्मीद को बेकार नहीं होने दूंगा।"

"मेरी उम्मीद को बेकार नहीं होने देंगे?" तिङ मङ के चेहरे पर तिरस्कार भाव आया। "मैं ब्यूरो की पार्टी कमेटी के सचिव की हैसियत से यहां काम कर रहा हूं। यदि मुझे अपने आपसे बात करनी होती तो मैं आपको गालियां दे रहा होता कि आप कमीने हैं! जरा स्वयं को देखिए, देखिए कि आप कैसे बदल गए हैं!"

तिङ मङ की फटकार के आखिरी शब्दों में किसी वरिष्ठ कार्यकर्ता की चिंता थी और परिवार के किसी बड़े सदस्य की सदिच्छा थी। पर इस सारी चिंता और सदिच्छा ने चाङ आनपाङ की घृणा को किसी फटकार से अधिक बढ़ाया ही। ऐसी स्थिति उनके लिए बर्दाश्त के बाहर थी। घृणा से मुस्कराते हुए उन्होंने मन ही मन कहा, "बस थोड़ा इंतजार करो बच्चू! इतनी जल्दी स्वयं पर इतने अधिक खुश मत हो!"

७

शाम को चाङ आनपाङ घर लौटे। सोफे पर पसरकर सभी चीजों पर विस्तार से सोचते रहे। तिङ मङ और अपनी व्यक्तिगत लड़ाई में तिङ मङ की जीत न देखने के लिए वह दृढ़प्रतिज्ञ थे; अब लड़ाई "तीन करोड़" की सीमा से आगे बढ़ गई थी। वह तिङ मङ जैसे व्यक्तियों से घृणा करते थे। अब उनकी सिर्फ एक ही चाह थी, **बदले की**। वह आजमाइश करना चाहते थे। ऐसी आजमाइश, जिसमें उनकी जीत हो और वे ही विनाइलॉन कारखाने के वास्तविक सर्वेसर्वा सिद्ध हों।

मेज पर रखे टेलीफोन की घंटी बज रही थी। उन्होंने रिसीवर उठाया और यथोचित हंसी के साथ बात की। यह सामग्री ब्यूरो के कार्यालय के सचिव का फोन था, वे अतिरिक्त नौकरियों के बारे में पूछ रहे थे। स्वर में अधीरता थी, "संभव है या नहीं? यदि नहीं तो आप हमें बता दें, हम आइंदा आपको परेशान नहीं करेंगे। हम कोई दूसरा रास्ता निकालेंगे।"

चाङ आनपाङ ने अपनी मनोव्यथा प्रकट नहीं की। न ही उन्हें "तीन करोड़" में हुई कटौती का उल्लेख करने का साहस हुआ। अभिनय करते हुए दृढ़ता के साथ हंसकर उन्होंने कहा, "चिंता न करें। अब देर नहीं होगी। आप निश्चिंत होकर सारी जिम्मेदारी मेरे ऊपर छोड़ दें।" वह ब्यूरो के निदेशकों को अपना नमस्कार कहना चाहते थे, इसलिए चापलूसी के स्वर में हंसी-मजाक की बातें करते रहे। पर उधर से सचिव ने खटाक से रिसीवर रख दिया। चाङ आनपाङ चिढ़ गए, गुस्से में उनका चेहरा पीला पड़ गया और होंठ फड़कने लगे। उन्होंने भी झटके से रिसीवर रख दिया। फिर उन्होंने दो दिनों से बार-बार घेरने वाले असंतुष्ट चेहरों, उनकी अधीरता और उनके आग्रहों के बारे में सोचा। उन्होंने अपनी आस्तीन के सांप के बारे में सोचा—उनकी उम्मीद के बिलकुल विपरीत पाए शा ने गोदाम की सामग्रियों का सारा हिसाब छ्येन कुङ को सौंप दिया था। वह क्रोध में उबल रहे थे। सभी अवसरवादी और स्वार्थी हैं। बहुत प्रयास करने पर काफी देर के बाद वह शांत हुए।

पाए शा कमरे में आईं। उन्होंने अपना स्कार्फ खोलकर एक तरफ रखा और सोफे पर बैठते हुए नयी बजट रिपोर्ट चाङ आनपाङ की तरफ बढ़ाई और बताया, "अतिरिक्त राशि की मांग के लिए बनाया गया पूरक बजट फिर से बनाया गया है। छ्येन कुङ ने इसे देखा है और अपनी मंजूरी दे दी है। अब यह अतिरिक्त राशि एक करोड़ पचास लाख है।"

"वह?... निस्संदेह वह इन मामलों के विशेषज्ञ हैं!" चाङ आनपाङ ने हल्का व्यंग्य करते हुए कहा, "उन्होंने मेरी इतनी मदद की। मुझे भी इसके बदले में उन्हें अवश्य कुछ देना चाहिए।"

"आप कहना क्या चाहते हैं?"

"मैं क्या कहना चाहता हूं?" हालांकि चाङ आनपाङ को इतनी समझ थी कि वह आवेश में अधिक दूर न जाएं, पर वह स्वयं पर नियंत्रण न रख सके और दिल की बात बताने लगे, "यदि मुझे मेरा 'तीन करोड़' नहीं मिला तो वह भी पेइचिङ जाने का सपना छोड़ दें और तिङ मङ जाकर उन्हें सांत्वना देते रहें।"

पाए शा एकबारगी कांप उठीं। उन्होंने चाङ आनपाङ को इतना विद्वेष भरा पहले कभी नहीं देखा था। उन्होंने तीखे स्वर में कहा, " क्या आपको नहीं लगता कि आप सीमा पार कर रहे हैं?"

"मुझे सीमा पार करने की जरूरत नहीं है... तिङ मङ, हल्का उद्योग ब्यूरो और राष्ट्रीय निर्माण कमेटी—उनकी मदद नहीं कर सकते, कर सकते हैं क्या?" छ्येन कुङ के पक्ष में पाए शा के बोलने से चाङ आनपाङ का रोष और बढ़ गया। उसके "विश्वासघात" की बात सोचकर गुस्से में फुफकारते हुए वह बोले, "जब कोई परेशान है तो इतना बड़बड़ करने की क्या जरूरत थी?"

पाए शा तुरंत उठकर खड़ी हो गईं, उन्होंने चाङ आनपाङ को ठंडी निगाहों से देखा। पाए

शा के क्रोध और असहमति से वह जल्द ही होश में आ गए और उन्होंने स्वयं को नियंत्रित किया। सोफे की बाहें थपथपातें हुए उन्होंने ठंडी सांस लेकर कहा, "आप परेशान न हों। मैं खीझ में बकबक किए जा रहा था। काम मेरी इच्छा के अनुसार नहीं हो रहा है, इसलिए मेरा रोष बढ़ता जा रहा है। अभी शांत होने में..."

"आपको नहीं लगता कि यह सचमुच कितनी शर्म की बात है?" पाए शा ने पूछा।

चाङ आनपाङ कुछ बोलने ही जा रहे थे कि अचानक अंदर के कमरे का दरवाजा खुला और उनकी बेटी हाएयेन दरवाजे पर दिखी। उसका चेहरा लाल हो रहा था। डबडबायी आंखों में पीड़ा, शर्म और घृणा थी। निस्संदेह उसने उन दोनों की पूरी बातचीत सुन ली थी।

"हाएयेन, तुम..." चाङ आनपाङ खड़े हो गए, उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि आगे क्या बोलें।

हाएयेन दरवारे पर ही खड़ी रही। उसके होंठ कांपे मगर वह कुछ भी नहीं बोली। अंत में वह पलटकर दांतों को भींचती हुई कमरे से निकल गई।

उनकी बेटी चली गई।

पाए शा भी चली गईं।

उदास और दुखी चाङ आनपाङ सोफे में धंसे रहे।

टेलीफोन की घंटी बजी। उन्होंने रिसीवर उठाया। "हेलो" की आवाज सुनकर उन्हें ऐसा लगा कि उनके सहायक का फोन है, जो "तीन करोड़" के संबंध में जानना चाहता है। बगैर कुछ और सुने चिढ़ते हुए वह बोले, "हां, हां, ठीक है! तीन करोड़, तीन करोड़। तीन करोड़ आपको मिल जाएगा, आप परेशान न हों! और अब मुझे भी ज्यादा परेशान न करें!..."

फोन पर आने वाली आवाज गंभीर, ठंडी और कर्कश लगी। उन्होंने तुरंत पहचान लिया कि यह तिङ मङ की आवाज थी। उदासीन बने वह रिसीवर पकड़े रहे और सोफे पर बैठ गए।

बातचीत खत्म होने के बाद कमरे में असाधारण उदासी और खामोशी फैल गई। चाङ आनपाङ ने अकेलापन, ऊब और थकान महसूस की। उन्होंने सोचा, "महत्वाकांक्षाएं भाड़ में जाएं! बहुत हो गया। राजनीति छोड़कर क्यों न सामान्य आदमी की जिंदगी जी जाए। यही ठीक भी है। सादा और शांत जिंदगी अच्छी है। इससे बेहतर कुछ भी नहीं है।..."

पर व्यक्तिगत लाभ का मोह भी दिल में जड़ जमाए बैठा था। अनजाने में उनकी नजर टेबल पर पड़ी, टेबल पर उनके निर्देशन और अनुमोदन के लिए आई अनेक रिपोर्टें पड़ी थीं। रिपोर्टों की बगल में पद और प्रतिष्ठा की प्रतीक एक मोटी नीली-लाल पेंसिल रखी थी।

लगभग घंटेभर के बाद वह सोफे पर से उठे, ओवरकोट पहना और अपने थके व बेजान शरीर को घसीटते हुए बाहर निकले।

डॉरमीटरी की निचली सीढ़ियों से उन्होंने ऊपर देखा। ऊपर सामने तिङ मङ खड़े नजर आए, वह उनकी तरफ ही नजर टिकाए थे। उनकी नजर में केवल गंभीरता और कठोरता नहीं थी, उनकी आंखों में उम्र में बड़े व्यक्ति की दया व कोमलता भी थी और अगोचर दुख भी था। अचानक चाङ आनपाङ को एक पुरानी घटना याद आ गई। दस वर्ष से अधिक हुए, एक कारखाने का उपनिदेशक बनाए जाने के बाद उन्होंने पहले महीने में लापरवाही से

काम किया था और इसके कारण उत्पादन बहुत घट गया था। सर्वसम्मत मांग थी कि उन्हें पद से हटा दिया जाए और अनुशासित किया जाए। तब तिङ मङ की नजरों में जो दया, कोमलता, कठोरता, गंभीरता और दुख था, आज भी तिङ मङ की नजरें वही व्यक्त कर रही थीं। उस समय तिङ मङ ने सभी के विरोध के बावजूद फैसला किया था और चाङ आनपाङ को अनुमति दी थी कि वह अपनी आत्मालोचना करें और काम जारी रखते हुए अच्छी सेवाओं के जरिए स्वयं को सुधारने की कोशिश करें। प्रायश्चित भाव से चाङ आनपाङ ने अपनी पूरी योग्यता का इस्तेमाल किया था और अंततः सभी चीजें ठीक हो गई थीं तथा कारखाने के घाटे की क्षतिपूर्ति हो गई थी। अभी तिङ मङ उन्हीं नजरों से देख रहे थे, फर्क इतना था कि उनके बाल अब सफेद हो गए थे...

उन पुरानी बातों को याद करके चाङ आनपाङ का विवेक वापस लौटा—सचमुच वह दूसरी तरह का व्यावहारिक जीवन था, वह युवा विश्वास और हंसिया-हथौड़े वाले लाल झंडे के सामने ली गई शपथ से निर्देशित था। लेकिन दिल में क्षणभर से लिए जागी निष्कपटता "वर्तमान के बोध" के असर से धुंधली पड़ गई। अपनी जागृति और शर्म का उन्हें अहसास हुआ, पर वह अधिक देर तक नहीं टिका रहा। केवल घृणा भाव, निर्दयता और जीतने की अदम्य इच्छा उनके चेहरे पर टिकी रही। तिङ मङ ने चाङ आनपाङ के चेहरे के बदलते भावों को गौर से देखा और दुखी मन से स्वीकार किया, "हाय! सब कुछ समाप्त... सब का सब!"

चाङ आनपाङ सीढ़ियों से ऊपर चढ़े और तिङ मङ के पास से गुजरे। उन्होंने एक-दूसरे का औपचारिक अभिवादन किया। चाङ आनपाङ तीसरी मंजिल पर पाए शा के कमरे में गए। वह काठ की मूर्ति की तरह बैठी थीं, उनके चेहरे पर किसी प्रकार का कोई भाव नहीं था। वह बैठ गए और उन्होंने अपनी जेब से नयी बजट रिपोर्ट निकालकर टेबल पर रखी।

उन्होंने कहा, "डेढ़ करोड़। मैंने इसे देख लिया है। इसे ऐसा ही रहने दें। अच्छी रिपोर्ट है।" उनकी आवाज बेजान और थकी हुई मगर उत्तेजनापूर्ण थी। "ऐसा है कि कल मैं डॉक्टरी जांच के लिए प्रांतीय अस्पताल जा रहा हूं। बजट से संबंधित कामकाज आप संभाल लेंगी न? अगर कोई गंभीर समस्या आ जाए तो लाओ न्ये से आप सलाह ले सकती हैं।" पूरी कर्तव्यनिष्ठा के साथ उन्होंने पाए शा को जिम्मेदारी सौंप दीं। उनके बोलने के ढंग से ऐसा लगा कि वह हमेशा के लिए विनाइलॉन कारखाना छोड़कर जा रहे हैं। उनके स्वर में पूरी उदासी थी और उदासी में लाचारी और अपरिहार्यता का भाव घुला हुआ था । थोड़ी देर के बाद गहरी सांस लेते हुए वह बुदबुदाए, जैसे स्वयं से ही कुछ कह रहे हों, "मैं तो एक कारखाने का निर्माण कर रहा था, पर यह इतना आसान नहीं है। मैंने सोचा कि मुझे बोलने का अधिकार है, कुछ कठोर शब्द भी बोल सकता हूं... पर इससे मेरे कॉमरेडों को हानि पहुंची।... यह अक्षम्य है।..." धीरे-धीरे वह जाने के लिए उठे। "सौभाग्य की बात है कि सभी कॉमरेड मुझे समझते हैं। अगर मैं आलोचना के योग्य हूं तो मेरी आलोचना होनी चाहिए... किसी भी सूरत में विनाइलॉन कारखाने का हित हमारे दिलों में है। हमारे बीच... एक-दूसरे के प्रति सद्भाव है।"

पाए शा ने उन्हें उदास व ठंडी नजरों से देखा।

चाङ आनपाङ पाए शा को कुछ खोने का अहसास कराना चाहते थे और इसलिए आगे कुछ और न बोलकर वह वहां से चले गए।

८

अगले दिन पाए शा तिङ मङ के पास कुछ कागजात लेकर गईं, जिनमें उन्होंने हिसाब लगाया था और विभिन्न मदों में होने वाले खर्चों के बारे में लिखा था। पाए शा ने इस तरह चाङ आनपाङ का "जवाब" दिया था। दरअसल पिछली रात जगकर उन्होंने सारे मुद्दों पर गंभीरता से विचार करने के बाद यह फैसला लिया था।

तिङ मङ ने कागजात देखते हुए पूछा, "क्या है यह सब?"

आदतन शांत स्वर में पाए शा ने जवाब दिया, "यह झूठे बजट को पास करवाने के लिए चाङ आनपाङ के प्रयासों का कच्चा चिट्ठा है।"

तिङ मङ ने खुश होकर कहा, "तो आपने पूरा कर दिया, यह अच्छी बात है। इसे छ्येन कुङ को दे दें।"

पाए शा को ठेस लगी। उनसे सीधे-सपाट रवैये की उन्होंने उम्मीद नहीं की थी। "और..." थोड़ी देर सोचने के बाद उन्होंने आगे बताने की कोशिश की।

उनकी बात को काटते हुए तिङ मङ ने सहजता के साथ कहा, "इसे छ्येन कुङ को दे दें। वह देख लेंगे।" उनके इस कथन से स्पष्ट था कि वह किसी तरह की व्याख्या नहीं सुनना चाहते थे।

तिङ मङ के व्यवहार से पाए शा ने महसूस किया कि उनकी ईमानदार कोशिश को तुच्छ समझा जा रहा है। पलकें झपकाकर उन्होंने ठंडी सांस ली और जाने के लिए उठीं।

"क्या? ...क्या आपको ऐसा लग रहा है कि मैं इसे गंभीरता से नहीं ले रहा हूं?" तिङ मङ ने पाए शा के दिल के भाव को ताड़ लिया, टेबल पर पड़े कागजात को थपथपाते हुए उन्होंने सच्चे दिल से कहा, "ऐसी बात नहीं है। मैं इसका महत्व समझता हूं। पर मैं इस बाबत भी सोच रहा हूं कि कॉमरेड पाए शा ने ये कागजात अब क्यों दिए?" थोड़ी देर रुककर फिर बोले, "मैं आपसे कुछ विचार-विमर्श करना चाहता हूं। ब्यूरो, बजट बनाने वालों को प्रशिक्षित करने के लिए एक कक्षा चलाना चाहता है। हमें उम्मीद है कि आप इसमें शामिल होंगी और छ्येन कुङ के सहायक के रूप में काम करेंगी। उनके पेइचिङ जाने के बाद आप बजट परीक्षा की ब्यूरो प्रभारी होंगी। आपका क्या विचार है?"

"मैं इस योग्य नहीं हूं," पाए शा ने जवाब दिया।

"क्या आपने पहले बजट योजना की पढ़ाई नहीं की है?"

"... नहीं...।"

"आदमी में सच बोलने का साहस होना चाहिए, है कि नहीं?" तिङ मङ मुस्करा रहे थे। "आपने पहले इसकी पढ़ाई नहीं की, पर ली फेइ के बारे में आपका क्या कहना है? क्या नाम बदलने से तथ्य भी बदल जाते हैं?"

पाए शा चौंकी और उनका चेहरा अचानक लाल हो गया। गुस्से में वह जाने के लिए मुड़ीं।

"हमें अपने अतीत और वर्तमान को बिना भय के स्वीकार करना चाहिए। मुझे आशा है, आप मुझसे सहमत होंगी," तिङ मङ ने पाए शा को देखते हुए कहा।

"ऐसी बातों में मेरी कोई रुचि नहीं है!" पाए शा ने जवाब दिया और जाने के लिए दरवाजे की तरफ बढ़ीं।

तिङ मङ भी उठकर खड़े हो गए। "आप इसे चरित्र की दृढ़ता कह लें। पर आपकी सबसे बड़ी कमजोरी है कि आप तथ्यों को स्वीकारने से डरती हैं... इस मामले में आप किसी दूसरे से अधिक कमजोर हैं।"

पाए शा अचानक रुक गईं।

"मैं जानता हूं, आप अनेक कटु अनुभवों से गुजरी हैं। उन कटु अनुभवों से आपको सीखना चाहिए और अपने कार्य व जीवन में खुद को बेहतर सिद्ध करने की कोशिश करनी चाहिए... अन्यथा, आप उन अनुभवों के लायक भी नहीं रह जाएंगी। मेरी बातों को समझ रही हैं न?"

थोड़ी देर के लिए खामोशी छाई रही।

तिङ मङ ने पाए शा की बगल में पड़ी छोटी मेज पर "बजट योजनाकार प्रशिक्षण कक्षा की रूपरेखा" की कापी रखते हुए कहा; "इसे ले जाएं और एक नजर देख लें। यदि आपका विचार बदल जाए तो इस संबंध में छ्येन कुङ से बातें कर लें और यदि विचार न बदले तो मुझे वापस कर दें।"

९

राजनीतिक दांव जुटाने के लिए चाङ आनपाङ ने प्रांतीय राजधानी का बवंडर की तरह चक्कर लगाया। राजधानी में बड़े अधिकारियों से मिलने के बाद वह कारखाने लौटे और तुरुप का पत्ता चला। प्रांतीय सरकार ने उनसे एक सम्मेलन में भाग लेने को कहा था, जो पंद्रह दिनों तक चलने वाला था। उन्होंने यह भी बताया कि उन्हें शारीरिक जांच और उपचार के लिए अस्पताल में रहना है। इस तरह उसी दिन उन्होंने कारखाना छोड़ दिया।

समस्याएं ज्यों की त्यों बनी रहीं। कारखाने के पुराने प्रबंधक न्ये रुनते तिङ मङ के सामने बैठे थे। उनके तने चेहरे, झुर्रियों और लटकी भारी पलकों से परेशानी झलक रही थी। क्या किया जा सकता था? यह साफ-साफ चाङ आनपाङ की चाल थी। वह कुछ महीनों तक यहां से गायब रहेंगे। केवल मजदूरों की कमी ही विनाइलॉन कारखाने के निर्माण कार्य को ठप करने के लिए पर्याप्त थी। फिर जो स्थिति उत्पन्न होगी, वह चाङ आनपाङ की वापसी के अनुकूल होगी...

तिङ मङ ने राजधानी जाकर प्रांतीय निर्माण ब्यूरो से सलाह-मशविरा करने को सोचा।

"लाओ तिङ, अभी तक तुम्हारा उग्र स्वभाव नहीं गया? हा, हा!..." तिङ मङ की बातें सुनने के बाद निर्माण ब्यूरो की पार्टी कमेटी के सचिव मा पिन ने कहा। दुबले-पतले और

बातूनी मा पिन लंबे समय से तिङ मङ को जानते थे और अपने इस जिद्दी दोस्त को अच्छी तरह समझते थे। काफी देर से दोनों बातचीत कर रहे थे। आखिर मा पिन ने पूछा, "ठीक है, अपने पुराने साथी को बताओ कि क्या करना है।"

"मैं चाहता हूं कि तुम इस समस्या को सुलझा दो।"

"मजदूरों की समस्या? क्या मैंने अभी प्रांतीय निर्माण कंपनी को फोन नहीं किया? फिलहाल, केवल नौवां विभाग उपलब्ध है। ठीक है, तुमने जितनी बातें मुझे बताईं... हा...हा!" मा पिन फिर से ठहाके लगाने लगे। "तुम्हारी बातें सही हैं, इसमें कोई शक नहीं। पर उनकी भी तो अपनी समस्याएं हैं। ऐसा करते हैं। मैं कंपनी से कहूंगा कि वे नौवें विभाग के अधिकतर मजदूरों को साथ लेकर निर्माण कार्य को आगे बढ़ाएं। क्यों?... जहां तक मुझे लगता है, अनुमति मिलने में दो-तीन सप्ताह का समय लग जाएगा, क्योंकि विभिन्न अधिकारी इस मसले पर विचार करेंगे।" उन्होंने देखा कि उनकी राय से तिङ मङ खुश नहीं हैं, इसलिए बात बदलते हुए आगे कहा, "एक और आसान रास्ता है। मै कंपनी और नौवें विभाग के जिम्मेदार लोगों को यहां बुलाता हूं, वे तुमसे मिलकर कोई उपाय सोचेंगे। क्यों ठीक है न? मुझे उम्मीद है, तुम मेरी प्रशंसा करोगे कि मैं अपने पुराने दोस्त के लिए अपवाद के तौर पर कुछ कर रहा हूं।"

"यह सचमुच बड़ी मदद होगी!"

मा पिन फिर से ठहाके लगा रहे थे। "तुम संतुष्ट नहीं हो?... मैं तुम्हें सच-सच बताऊं। तुमने अभी-अभी फिर से काम शुरू किया है। कुछ समय के बाद सभी चीजें समझ में आ जाएंगी। अभी की स्थिति ही ऐसी है!"

फिर से "अभी की स्थिति"! तिङ मङ की भौंहें तन गईं।

दोपहर में नौवें विभाग के प्रधान लाओ थान और दूसरे लोग तिङ मङ से मिलने आए। लाओ थान ठिगने कद के तगड़े व्यक्ति थे और उनके गाल लाल थे। लाओ थान को तिङ मङ और अपने वरिष्ठ अधिकारी के विशेष संबंध के बारे में पता था, इसलिए जिरह करने के बजाए उन्होंने केवल अपनी परेशानियां बताईं। "ठीक है, आप अपना रोना बंद कीजिए," मा पिन ने पतली सूखी टहनी जैसा अपना हाथ हिलाकर उन्हें चुप करने का संकेत किया और कहा, "अच्छा होगा कि आप काम जारी रखें! ... आपको मालूम है, निदेशक तिङ मङ सिद्धांतों को महत्व देते हैं और आपको उनका समर्थन करना चाहिए... बस। कंपनी वालों को कुछ कहना है क्या?" उन्होंने तिङ मङ की तरफ इशारा किया और आगे कहा, "विशेष मुद्दों पर आप लाओ तिङ और विनाइलॉन कारखाने के लोगों से बातें कर लें।" लाओ थान ने सहमति में सिर हिलाया।

पर जब "विस्तृत बहस" के लिए लाओ थान विनाइलॉन कारखाने पहुंचे तो उन्होंने डेढ़ करोड़ के नए बजट को स्वीकार करने से पुनः इंकार कर दिया।

तिङ मङ फिर से मा पिन से मिलने गए। मा पिन भी सिर हिलाने और कुछ फोन करने के अलावा कुछ और न कर सके। कोई भी नतीजा न निकला। अंततः तिङ मङ समझ गए।

ब्यूरो के प्रधान के नाते मा पिन अपने सहायकों को कड़े निर्देश नहीं दे सकते थे, अन्यथा उनका निर्देश देने का "अधिकार" भी जाता रहता! सो, यह दूसरी "अभी की स्थिति" थी।

तिङ मङ से रहा नहीं गया। उन्होंने अपने मित्र की खुलकर आलोचना की। मा पिन ने तिङ मङ को सारा गुस्सा निकालने दिया। वह शांति से उनकी आलोचना सुनते रहे और सहमति में सिर भी हिलाते रहे। कभी-कभी अपनी कुर्सी पर पीठ को सहारा देकर वह हंसने लगते, मानो किसी युवक के बचकाने विचारों को सुन रहे हों। तिङ मङ के तन-बदन में आग लग गई। उनकी आंखें निहाई पर रखे लाल गर्म लोहे की तरह सुर्ख हो गईं, मा पिन की हंसी के हथौड़े से जिससे चिंगारियां छूट रही थीं। क्रोध में उबलते हुए उन्होंने कहा, "तुम **संवेदनहीन और** सुन्न हो गए हो! तुम धोखेबाज हो!"

मा पिन प्रत्यक्ष रूप से तो शांत रहे, पर उनके चेहरे की मुस्कराहट धीरे-धीरे लुप्त हो गई। उन्होंने भारी दिल से कहा, "लाओ तिङ, यह सच है। जैसा कि तुमने कहा, मैं **संवेदनहीन** और सुन्न हो गया हूं... समस्या यह है... खैर, छोड़ो!" ऊपर की ओर देखते हुए उन्होंने तेज स्वर में कहा, "यह केवल नौवें विभाग या केवल निर्माण ब्यूरो की बात नहीं है। आजकल सभी... सभी जगह ऐसा ही है! तुम क्या कर सकते हो?" उन्होंने लंबी सांस लेते हुए अंत में कहा, "लाओ तिङ, आजकल काम करवाना उतना आसान नहीं रह गया है।"

"इसलिए ही तो हमें अधिक मेहनत करने की जरूरत है। अन्यथा क्या बचा रह जाएगा, तुम ही बताओ?" तिङ मङ ने अपने दोस्त से सहानुभूति जताते हुए उन्हें सांत्वना देने की **गरज से कहा, "तुम** थोड़ी देर आराम कर लो। मैं जाकर लाओ थान से मिलता हूं और इस संबंध में उनसे पूछता हूं।"

न्ये रुनते तिङ मङ के बारे में अत्यधिक **चिंतित** थे, उन्हें डर था कि कहीं मामला बढ़कर गतिरोध की स्थिति में न आ जाए। वह बात करने के लिए लाओ थान के पास गए। उन्होंने जानबूझकर लाओ थान को बताया कि तिङ मङ ने पहले ही अनेक जिला और शहर निर्माण कंपनियों से संपर्क किया है और उन्होंने फैसला किया है कि जल्दी ही उनमें से किसी एक के साथ अनुबंध पर हस्ताक्षर कर लेंगे। उन्होंने यह भी बताया कि हल्का उद्योग ब्यूरो ने अगले कुछ वर्षों के लिए अनेक नई परियोजनाएं बनाई हैं, जो प्रांतीय निर्माण कार्य का एक बड़ा हिस्सा होगा। गंभीर लहजे में उन्होंने कहा, "नौवें विभाग से तिङ मङ का झगड़ना छोटी बात नहीं है, यह छोटी बात नहीं है। उन्होंने मुझसे कहा है कि आगे से हल्का उद्योग ब्यूरो की एक भी निर्माण परियोजना आपके विभाग को नहीं सौंपी जाएगी। मैं आपसे सहमत हूं, निदेशक तिङ सचमुच सीमा का अतिक्रमण कर..." उनकी बातचीत से ऐसा लगा कि वह तिङ मङ से असंतुष्ट हैं। उनकी बातों से लाओ थान परेशानी में पड़ गए, हालांकि उन्होंने एक भी शब्द नहीं कहा, पर सारे नतीजों पर गंभीरता से सोचने को बाध्य हुए। यह तो अच्छी बात होती कि नौवें विभाग को अपने इलाके की ही किसी निर्माण परियोजना की जिम्मेदारी मिल जाती, इससे उन्हें अपने मुख्य कार्यालय से अधिक दूर जाकर काम नहीं करना पड़ता और विशेषकर मजदूरों के परिवार वाले भी खुश रहते।

न्ये रुनते ने तिङ मङ को लाओ थान से हुई बातचीत के बारे में बताया। अपनी भौहें

चढ़ाते हुए तिङ मङ ने पूछा, "आप किस देश की कूटनीति कर रहे हैं?" न्ये रुनते ने ठंडी सांस लेते हुए कहा कि उन्हें स्वयं भी यह पसंद नहीं था, पर वर्तमान परिस्थिति में यही एक उपाय बचा था। इसके बाद तिङ मङ ने लाओ थान को मिलने के लिए बुलाया।

लाओ थान इस बात से चिढ़े हुए थे कि तिङ मङ ने निर्माण ब्यूरो की मार्फत उन पर दबाव डाला है। फिर भी इस बार उन्होंने अपनी नाखुशी जाहिर नहीं होने दी। वह मोल-तोल के लिए तैयार होकर आए थे। तिङ मङ उनकी सारी चालाक हरकतों को तुरंत ताड़ गए और अत्यंत सहजता से बोले, "लाओ थान, आप मुझसे मोल-तोल करने की कोशिश कर रहे हैं, है कि नहीं? मुझे तो ऐसा लग रहा है कि मैं किसी विदेशी व्यापारी के साथ मोल-तोल कर रहा हूं।" उन्होंने पास में बैठे न्ये रुनते की तरफ संकेत किया और कहा, "लाओ न्ये की बातों ने स्पष्टतः आपको नरम किया है। अब आपको विनाइलॉन कारखाने का निर्माण कार्य जारी रखना है। हालांकि आपने अभी तक स्वयं यह बात नहीं कही है, पर मैं जानता हूं कि आप अधिक पैसे चाहते हैं।"

लाओ थान का लाल चेहरा और लाल हो गया।

"अच्छा होगा कि हम इस तरह के खेल न खेलें," उन्होंने आगे कहा, "हम सभी कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य हैं, हम उसकी छाप से मुक्त नहीं हो सकते, हो सकते हैं क्या? लाओ न्ये ने आपसे जो कुछ कहा, वह सब झूठ था। मैंने किसी अन्य निर्माण इकाई से कोई बात नहीं की—मैंने सोचा जरूर था, पर अभी तक नहीं की। हमारी आगामी योजनाएं जरूरी नहीं हैं कि इसी इलाके में चलाई जाएं।"

लाओ थान ने चौंककर फटी आंखों से तिङ मङ को देखा। तिङ मङ ने अपनी बात जारी रखी, "मैंने महसूस किया कि आपके निर्माण ब्यूरो से बात करने में कोई फायदा नहीं है। ब्यूरो भी आपको आदेश नहीं दे सकता। यह सब कुछ मैं आपको साफ-साफ बता रहा हूं। मोल-तोल? आप ऊंची जगह पर हैं और अगर चाहें तो अपनी शर्तें भी रख सकते हैं। पर मैं आपको याद दिलाऊं, बीस वर्षों से अधिक समय पहले आप युवा ब्रिगेड के इस प्रांत के पहले कप्तान थे, थे कि नहीं? क्या आप भी इस प्रकार की धोखाधड़ी और चालबाजी से आदर्श बन सके थे? और क्या अब आपको इस चाल से स्वयं पर शर्म नहीं आती?"

लाओ थान का सिर झुका जा रहा था। वह सिगरेट पर सिगरेट पिए जा रहे थे। न्ये रुनते मुंह में पाइप लगाए खामोश बैठे थे, उनका सिर भी झुका था।

"आप, मैं और सारा देश... ओफ्फ छल-कपट! हम क्या कर सकते हैं?" मेज थपथपाते हुए तिङ मङ ने भारी दिल से गहरी सांस ली।

लाओ थान लौटकर नौवें विभाग के अपने दफ्तर में गए। उदासी में वह पूरे आधे दिन तक सिगरेट पर सिगरेट पीते रहे। वह चिंता और उधेड़बुन में फंसे हुए थे कि छ्येन कुङ उनसे मिलने आए। तिङ मङ ने उन्हें भेजा था कि डेढ़ करोड़ के बजट के अनुसार कार्य को पूरा करने में नौवें विभाग की मदद करें। लाओ थान चौंककर रह गए। उन्होंने नए बजट को स्वीकारने की इच्छा कब प्रकट की? क्या तिङ मङ अधिकार नहीं जमा रहे हैं?... पर न जाने

किस कारण से लाओ थान अपने आदमियों और खाकों को लेकर छ्येन कुङ के साथ निर्माण स्थल पर गए।

छ्येन कुङ ने "निर्माण कार्य को सुव्यवस्थित करने की योजना" सबके सामने रखी। अपने अनुभव और ज्ञान के आधार पर बारीकी से खर्च की कटौती के लिए सुझाए उनके प्रस्तावों की मजदूरों ने सराहना की। लाओ थान भी प्रभावित हुए। वह ज्यादा देर तक मौन दर्शक नहीं रहे, खासकर जब उन्होंने सुना कि तिङ मङ ने हल्का उद्योग ब्यूरो की देखरेख में बजट योजनाकार प्रशिक्षण कक्षा चलाने का फैसला किया है, जिससे उनके विभाग के प्रशिक्षु भावी विशेषज्ञ बन सकें।

वह उसी रात तिङ मङ से मिलने गए। उन्होंने खुलकर नहीं बताया कि उन्होंने डेढ़ करोड़ का बजट स्वीकार कर लिया है। इसके बदले उन्होंने अपने सामने पेश आई समस्याओं के बारे में खुलकर बातें कीं। चूंकि कार्य की गति को बढ़ाना उनके लिए मुश्किल था, इसलिए वह नयी तरह की व्यवस्था अपनाने के लिए आर्थिक अधिनियमों को लागू करने के संबंध में सोच रहे थे। दरअसल, इस संबंध में उन्होंने एक रिपोर्ट भी पेश की थी, जिसे निर्माण ब्यूरो की मंजूरी के लिए भेजना पड़ा था। पर महीनों गुजर जाने के बाद भी उसके बारे में अधिकारियों की क्या राय बनी, वह यह नहीं जान सके। उनके वश में कुछ था भी नहीं। आखिरकार वह हर दिन उसकी बाबत नहीं पूछ सकते थे।

"आपको हर दिन...चाहिए था।" तिङ मङ ने उनके हाथों को थपथपाते हुए उनके प्रयासों की प्रशंसा की। "निर्भीक बनें। मैं निश्चित हूं, निर्माण ब्यूरो आपका अवश्य समर्थन करेगा।" थोड़ी देर रुकने के बाद वह आगे बोले, "हां, तो बोनस के अलावा—ओह, आर्थिक अधिनियमों पर मैं मामूली ढंग से बातें कर रहा हूं—क्या कोई उपाय नहीं है?... पुरानी परंपरा के अच्छे तत्वों को नहीं भूलना चाहिए!"

उनका आशय निस्संदेह राजनीतिक विचारधारा के कार्य से था। उन्हें अच्छी तरह से मालूम था कि कुछ लोगों का दृष्टिकोण इस बारे में धुंधला हो गया है।

१०

विनाइलॉन कारखाने के पूरक बजट को काट-छांटकर आधा करने पर सभी चकित रह गए। प्रांतीय राजधानी में तिङ मङ की चर्चा हल्का उद्योग ब्यूरो और निर्माण ब्यूरो तक ही सीमित नहीं रही। सभी जानते थे कि "खूंखार निदेशक" विनाइलॉन कारखाने के मामले में कोई भी समझौता करने को तैयार नहीं है। (तिङ मङ नाम के "मङ" रेखाक्षर का एक अर्थ खूंखार भी होता है)। लोग यह भी जानते थे कि प्रांतीय निर्माण ब्यूरो के पार्टी सचिव मा पिन को कारखाने ले जाया गया था, ताकि वह खुद अपनी आंखों से देख सकें कि इमारती निर्माण में कैसे गति लाई जाती है। इस ढीलेपन और आधे मन से काम करने की वर्तमान स्थिति में उन्होंने एक दृढ़ और आकर्षित करने वाला झंडा फहराया, जिससे लोगों को प्रेरणा मिली और वे लोग इस पर बहस भी करने लगे।

तिङ मङ ने विनाइलॉन कारखाने की पार्टी कमेटी की एक विस्तृत सभा बुलाई। वह नेतृत्व को पुनर्संगठित कर नए सिरे से काम आरंभ करना चाहते थे।

प्रांतीय राजधानी में बैठे चाङ आनपाङ ने स्थितियों में आए बदलाव को देखकर परेशानी महसूस की। जब पार्टी कमेटी ने उन्हें विस्तृत सभा में शामिल होने की सूचना दी, उन्होंने अधिक तीव्रता से महसूस किया कि उन्हें दृढ़ तरीकों से संभावित खतरे का सामना करना है।

फलस्वरूप तिङ मङ के सामने समस्याएं और गहरे तेज रूप में आईं। पहले ही खरीदी जा चुकी जमीन के लिए उत्पादक दल ने आपत्ति उठाई, क्योंकि चाङ आनपाङ द्वारा वादा करने के बावजूद उन्हें लॉरी नहीं मिल पाई थी। प्रिफेक्चर पार्टी कमेटी के संगठन विभाग में कार्यरत चाङ आनपाङ के एक दोस्त द्वारा आवश्यक तकनीशियनों का स्थानान्तरण रोक दिया गया। चाङ आनपाङ ने अपने निजी संबंधों के आधार पर पहले कुछ रेलवे ट्रकों की व्यवस्था की थी, उन रेलवे ट्रकों को अचानक रोक दिया गया, जिससे वर्कशॉप के निर्माण कार्य को पूरा करने के लिए अति आवश्यक खिड़कियां थ्येनचिन शहर में पड़ी रह गईं। ब्वायलर रूम से लिए कोयले के परिवहन के लिए बिछाई जाने वाली विशेष रेलवे लाइन के संबंध में भी समस्याएं थीं, क्योंकि चाङ आनपाङ और रेलवे ब्यूरो के बीच "तीन करोड़" के बजट में अलिखित समझौता पूरा नहीं हुआ था। यहां तक कि गटर के ऊपर लगाए जाने वाले लोहे के ढक्कन भी उपलब्ध नहीं थे। सामग्री आपूर्ति इकाई का पत्र आया, "कुछ अप्रत्याशित समस्याओं के कारण सामग्री आपूर्ति न करने का हमें खेद है।..."

इन सभी "आकस्मिक सूचनाओं" को सुनकर तिङ मङ भौंहें सिकोड़ते रहे। इनमें से हर सूचना निर्माण परियोजना को पूरा करने की सालभर की योजना को बिगाड़ने के लिए पर्याप्त थी। शायद तिङ मङ इन आकस्मिक सूचनाओं के लिए पहले से तैयार थे, क्योंकि उन्होंने न्ये रुनते से कहा, "कुछ कार्यकर्ताओं से कहें कि वे इन समस्याओं का यथाशीघ्र समाधान करें। हमें नेतृत्व को पुनर्संगठित कर लेना चाहिए। इसके बाद हम इन समस्याओं से एक-एक करके निबट लेंगे।"

इसी बीच के क्वाङशङ ने प्रांतीय राजधानी से आकर उन्हें समाचार दिया कि प्रांतीय पार्टी कमेटी के संगठन विभाग ने छ्येन कुङ के पेइचिङ स्थानान्तरण का अनुमोदन नहीं किया। इस समाचार ने तिङ मङ को चौंका दिया। वह छ्येन कुङ से मिलने गए तो वहां के क्वाङशङ, न्ये रुनते और छ्येन कुङ चिंतित मुद्रा में बैठे थे।

कमरे में प्रवेश करने के साथ तिङ मङ ने कहा, "उदास या निराश होने से समस्या हल नहीं हो सकती।" तीनों में से कोई भी एक शब्द न बोला; सभी ने एक नजर उनकी तरफ देखा और फिर दूसरी दिशा में देखने लगे। दरअसल वे इस अफवाह को सुनकर उदास और नाराज थे कि प्रांतीय पार्टी कमेटी के संगठन विभाग ने तिङ मङ को हल्का उद्योग ब्यूरो के नेतृत्वकारी पद से हटाने का फैसला किया है। तिङ मङ इससे अवगत नहीं थे।

"वे क्यों सहमत नहीं हैं?" तिङ मङ ने पूछा।

"शायद छ्येन कुङ ने चाङ आनपाङ को नाराज किया है और आपको मालूम है कि उनकी पत्नी संगठन विभाग में काम करती हैं," के क्वाङशङ ने क्रोधित स्वर में कहा।

"यह तो कानून और अनुशासन का उल्लंघन है!" तिङ मङ भी गुस्से में थे।

"पक्का सबूत न होने पर हम कर भी क्या सकते हैं? वे इसे संगठन विभाग के नाम पर कर रहे हैं और कहते हैं कि यह प्रांतीय जरूरतों के अनुसार लिया गया फैसला है, यह बिलकुल उचित है!" के क्वाङशङ ने जोड़ा।

"कोरी बकवास है!"

"निदेशक तिङ, बेहतर होगा कि... न सोचें," छ्येन कुङ ने अंत में कहा। "और... लाओ के सही कह रहे हैं। आजकल अपने काम को जो गंभीरता से लेता है, वह परेशानी में पड़ सकता है..."

"तो आप सिद्धांतों पर जोर नहीं देंगे?" तिङ मङ ने फटकारते हुए कहा।

"मैं? मैं अपने बारे में नहीं कह रहा हूं... मैं तो उन लोगों की परवाह भी नहीं करता। उन्हें जो दिल में आए करें। पर मैं उन्हें जरूरत से एक कौड़ी ज्यादा खर्च नहीं करने दूंगा।" छ्येन कुङ के स्वर में नाराजगी थी, वह हाथ झटकते हुए बोले, "आप मुझे करने दें। बस!... अब मेरे सामने सब कुछ स्पष्ट है। यदि मैं पेइचिङ लौट भी जाता हूं और दृढ़ता से कठिनाइयों और ऐसी गंदी चुनौतियों का सामना नहीं करता तो मैं अच्छा बजट नहीं तैयार कर सकता हूं।"

तिङ मङ छ्येन कुङ की बातों से खुश हुए, पर उन्होंने अपनी खुशी जाहिर नहीं होने दी। उल्टे के क्वाङशङ से शिकायत भरे स्वर में बोले, "आप क्या उपदेश दे रहे हैं?... आप और आपकी निराशा!"

"मेरी निराशा?..." के क्वाङशङ ने दुखी होकर कहा, "यही अभी की स्थिति है!"

अभी की स्थिति! ये शब्द सुनते ही तिङ मङ क्रोध से कांपने लगे। "बस एक ही बात से इतनी शिकायत..." थोड़ी देर के बाद शांत स्वर में उन्होंने कहा, "अगर सभी लोग सच्चे दिल से काम करें तो सब कुछ ठीक हो जाएगा। छ्येन कुङ के स्थानान्तरण के बारे में ब्यूरो लौटने के बाद एक-दो दिनों के अंदर हम विचार-विमर्श करेंगे और फिर संगठन विभाग से संपर्क कायम करेंगे।"

"आप संगठन विभाग से संपर्क कायम करेंगे?" के क्वाङशङ ने और भी अधिक सख्ती से कहा, "इसकी जरूरत नहीं पड़ेगी। वे आपसे इसके पहले ही संपर्क करेंगे। मैं आपको बताऊं, वह आपको प्रांतीय मजदूर संघ का उपाध्यक्ष बना रहे हैं। शायद ग्यारहवें उपाध्यक्ष होंगे आप?"

"क्या?"

"हां, कुछ 'दयालु व्यक्तियों' ने रिपोर्ट की है कि 'सांस्कृतिक क्रांति' के दौरान आपके साथ अत्यधिक ज्यादतियां हुई थीं, आजकल आपकी तबीयत भी अधिक अच्छी नहीं है, इसलिए हल्का उद्योग ब्यूरो का श्रमसाध्य काम आपको नहीं करना चाहिए..." के क्वाङशङ अभी और भी कुछ बताने जा रहे थे कि तिङ मङ उठकर खड़े हुए और उन्हें झिड़का, "बस, आगे कहने की जरूरत नहीं है। यह केवल अफवाह है।"

"कभी-कभी अफवाह सरकारी खबर से भी अधिक महत्वपूर्ण होती है।" के क्वाङशङ को भी गुस्सा आ रहा था।

थोड़ी देर तक तिङ मङ कुछ नहीं बोले। उनकी आखों से थकावट झलक रही थी। उन्होंने के क्वाङशङ की तरफ फिर से देखा। इस बार उनकी आंखों में क्षमा थी, उन्होंने अपनी बात दुहराई, "आगे कहने की जरूरत नहीं है, यह केवल अफवाह है।" वह नम्र मगर दृढ़ थे। के क्वाङशङ खामोश रहे। तिङ मङ कुछ देर तक जड़वत खड़े रहे और खिड़की से बाहर दूर कहीं देखते रहे। फिर पलटकर उन्होंने न्ये रुनते से कहा :

"कल सुबह हमारी पार्टी कमेटी की विस्तृत सभा जारी रहेगी।"

११

इस बीच हल्का उद्योग ब्यूरो से तिङ मङ के स्थानान्तरण की बात पूरे कारखाने में फैल गई... यह चाङ आनपाङ के दूर संवेद प्रसारण केंद्र से फैलाई गई थी। इससे सबसे पहले कार्यकर्ताओं के बीच खलबली मच गई। पूरी दोपहर लोग बेचैन रहे। उनमें से कुछ कार्यकर्ता खतरनाक "जवाबी हमला" की तैयारी के संबंध में गुप्त वार्ताएं कर रहे थे, वे पूरे जोश में थे। वे अगले दिन पार्टी कमेटी की अंतिम विस्तृत सभा में "लहर को उलटने" जा रहे थे। ज्यादातर कार्यकर्ता स्थितियों का परेशानी से भरे अंदाजा लगा रहे थे... शाम को एक और अफवाह फैली : विशेष रेलवे लाइन बिछाने संबंधी समस्याओं को निबटाने के लिए विनाइलॉन कारखाने से भेजे गए प्रतिनिधियों से रेलवे ब्यूरो ने कहा, "कृपया तिङ मङ को स्वयं यहां भेजें!"

रात में न्ये रुनते तिङ मङ से मिलने गए। उन्होंने दरवाजे को धक्का देकर खोला; तिङ मङ खिड़की के सामने खड़े अंधेरे में टिमटिमाती बिखरी रोशनियों को देख रहे थे। उनके चेहरे पर चिंता की लकीरें थीं और अचानक वह कुछ अधिक बूढ़े लगने लगे थे। शर्म और अपराध भावना से ग्रस्त न्येन रुनते दरवाजे पर ही खड़े रहे।

"कुछ गंभीर मामला है क्या?" पलटने पर उन्हें देखकर तिङ मङ ने नर्मी से पूछा।

न्ये रुनते ने झिझकते हुए कहा, "कारखाने की स्थिति सामान्य नहीं लग रही है। कल की सभा रद्द कर दी जाए क्या...?"

तिङ मङ ने निश्चयात्मक स्वर में कहा, "नहीं। यह होगी। स्थिति सामान्य है। ... और कोई बात?"

न्ये रुनते वास्तव में उन्हें रेलवे लाइन से संबंधित समस्या के बारे में बताने आए थे, पर उन्होंने केवल इतना कहा, "अगर अब भी कोई समस्या है तो हम उसे स्वयं सुलझाने की कोशिश करेंगे।"

"अच्छी बात है... मेरी तरफ से कॉमरेडों को धन्यवाद कहें।" तिङ मङ ने सहज होकर कहा। रेलवे लाइन से संबंधित समस्या की जानकारी उन्हें आज मिल चुकी थी।

उस रात तिङ मङ से मिलने कोई भी नहीं आया, मानो सभी ने महसूस किया हो कि तिङ मङ को आराम की जरूरत है। उनका घर हमेशा ठहाकों से भरा रहता था, आज वहां खामोशी थी। रात भी गहरी और शांत थी। स्टोव की आग से कमरा काफी गर्म हो गया था। उन्होंने एक खिड़की थोड़ी खोली। कुछ ठंडी हवा अंदर आई। कमरे में चहलकदमी करने के बाद

अनजाने में वह आईने के सामने आकर खड़े हो गए। पहली बार आईने में उन्होंने स्वयं को गौर से देखा और पाया कि उनके सारे बाल लगभग सफेद हो गए हैं। वह बूढ़े हो रहे थे और समय घटता जा रहा था। ... पर अभी उन्हें बहुत सारे काम करने थे। उनकी चिंता के ठोस कारण थे। उन्हें यह चिंता नहीं थी कि वह निदेशक रहेंगे या नहीं। न ही उन्हें "तीन करोड़" की लड़ाई के नतीजे की चिंता थी। उन्हें चिंता थी—देश की, पार्टी की! उन्हें विश्वास नहीं हो पा रहा था कि देश की बागडोर चाङ आनपाङ जैसे व्यक्तियों के हाथों में होगी, जो कम्युनिस्ट पार्टी की बिलकुल परवाह नहीं करते। पर इस संदर्भ में व्यावहारिक समस्याएं उनकी चिंता बढ़ा रही थीं... दूर टिमटिमाती रोशनियों को देखते हुए उन्होंने गंभीरता से सोचा। बहुत ही गंभीरता से।

दरवाजा खुला। आधी रात को मा पिन उनसे मिलने आए। उन्होंने सच्चे दिल से कहा, "लाओ तिङ, मुझे तुमसे सीखना चाहिए। विकट से विकट परिस्थिति में भी हमें विश्वास नहीं खोना चाहिए। हमें आशावादी होना चाहिए।"

"मैं तुमसे सच कहूं, मैं बहुत ही चिंतित हूं।" तिङ मङ ने कहा।

"यही कि डेढ़ करोड़ के बजट में निर्माण कार्य को पूरा नहीं किया जा सकता?"

"नहीं," तिङ मङ ने कुछ सोचकर मेज पर रखी अलार्म घड़ी उठाई। उन्होंने उसमें चाभी भरी और फिर से उसे टेबल पर रख दिया। "देखो, घड़ी में जब तक चाभी रहेगी, घड़ी टिक-टिक करती रहेगी। मुझे विनाइलॉन कारखाने के बारे में अधिक चिंता करने की जरूरत नहीं है। सभी विभाग सक्रिय हैं। यदि थोड़ी बहुत समस्याएं भी होंगी तो वे निर्माण कार्य पूरा करने में आड़े नहीं आएंगी। मुझे जो चिंता है ... तुम तो जानते हो।" अनजाने में अपने सफेद बालों में उंगली फेरते हुए उन्होंने कहा।

मा पिन ने अपने पक्के दोस्त के दिल की बात समझी। वह भी स्वयं को गौरवान्वित महसूस कर रहे थे। थोड़ी देर के बाद उन्होंने कहा, "फिर भी लाओ तिङ, हमारी और तुम्हारी चिंता भिन्न है। तुम चिंतित हो, ठीक है। पर तुम अभी भी आशावादी और विश्वास से भरे हो। मेरी चिंता निराशा पैदा करती है, मैं हताश हूं, मेरा विश्वास खो चुका है।"

"मुझे यही डर है कि तुम्हारी चिंता ही अंतिम सत्य न बन जाए..."

मा पिन थोड़ी देर तक कुछ नहीं बोले। फिर विरोध करते हुए उन्होंने विश्वास के साथ कहा, "नहीं, नहीं, नहीं! मैं नहीं मानता। मेरी तरह की निराशा और हताशा अंतिम सत्य नहीं हो सकती! ... लाओ तिङ, यह सच है, "तीन करोड़" के मामले में आपके गंभीर रुख से कितने लोग जागृत हुए हैं! छ्येन कुङ, बजट योजनाकार पाए शा, कारखाना प्रबंधक न्ये, नौवें विभाग के लाओ थान और मैं भी। हां, यहां तक कि तुम्हारा पुराना दोस्त जो इतना पीछे था, वह भी जागृत हुआ है! ... मैं तुम्हारी राय से सहमत हूं। अभी की स्थिति को बदलने के लिए एक चीज की कमी है। और वह है काम!'

"तो तुम्हें लगता है अभी भी संभावना है?... यह तो निश्चित ही सुखद बात है!" तिङ मङ की आंखों में उनकी चिंता और गहरी सोच के साथ वह चमक भी थी जो मजाक करते वक्त उनकी आंखों में उतर आती थी।

च्याङ चिलुङ

(१९४१ -)

च्याङ चिलुङ का जन्म १९४१ में हपेइ प्रांत की छाङश्येन काउंटी के एक गांव में हुआ था। १९५८ में उन्होंने थ्येनचिन भारीमशीन कारखाने में मजदूर की नौकरी की। १९६० में वह सेना में शामिल हो गए। १९६५ की गर्मियों में वह पुनः कारखाने लौटे और उत्पादक दल के नेता, कारखाना निदेशक के क्लर्क, वर्कशाप में पार्टी शाखा के उपसचिव और वर्कशाप के उपनिदेशक आदि विभिन्न पदों पर उन्होंने कार्य किया।

च्याङ चिलुङ ने १९६२ से लिखना आरंभ किया। १९७६ में प्रकाशित "मशीनरी और बिजली ब्यूरो के प्रधान के जीवन का एक दिन" कहानी ने तीव्र सामाजिक प्रतिक्रिया उत्पन्न की। १९७९ में प्रकाशित "मैनेजर छ्याओ ने कार्यभार संभाला" कहानी ने उस वर्ष राष्ट्रीय कहानी प्रतियोगिता में प्रथम श्रेणी का पुरस्कार प्राप्त किया। उसी वर्ष उन्होंने चीनी लेखक संघ की सदस्यता ली। १९८० में प्रकाशित उपन्यासिका "पथप्रदर्शक" को राष्ट्रीय उपन्यासिका प्रतियोगिता (१९७७-८०) में द्वितीय पुरस्कार मिला।

फैक्ट्री क्लर्क की डायरी

च्याङ चिलुङ

४ मार्च, १९७९

आज मैं समय से एक घंटे पहले कारखाने गया, क्योंकि निदेशक वाङ जाने वाले थे। मेरा अनुमान था कि उनके जैसा आदमी जाने के पहले सभी के आ जाने की प्रतीक्षा नहीं करेगा। निश्चित था कि कारखाने का काम आरंभ होने से पहले वह कारखाना छोड़ देना चाहेंगे।

निदेशक वाङ ने स्वयं कंपनी के पास आवेदन देकर अपना स्थानान्तरण करवाया था। मैं अच्छी तरह समझ सकता हूं, उन्होंने यही सोचा होगा कि यदि वह यहां रुके रहे तो कारखाने में अपना समय बर्बाद करेंगे। निस्संदेह उपनिदेशक ल्वो ने इसके लिए विवश किया था। संभवतः कारखाने का हर आदमी इस बात से वाकिफ था, पर किसी में इतनी हिम्मत नहीं थी कि शीशाविहीन खिड़की से चिपके कागज को फाड़ दे, जिससे सत्य की हवा आ सके। खासकर निदेशक वाङ के सामने तो यह करने का साहस किसी में नहीं था। यह एक मौन समझदारी थी, जिसने आसपास के लोगों के लिए कभी चीजों को असहनीय नहीं होने दिया।

पिछले चार वर्षों से मैं यहां क्लर्क हूं। मेरे सामने दो निदेशक जा चुके हैं। निदेशक वाङ तीसरे हैं। उन्होंने बड़े उत्साह और जोश के साथ कार्यभार संभाला था, पर अब निराश हो अपने उत्तराधिकारी को रास्ता दे जा रहे थे। जो अधिकार की खोज में रहते हैं, वे प्रभाव और सत्ता का इस्तेमाल करते हैं; पर सत्ता भी उस व्यक्ति का इस्तेमाल कर बदला लेती है। स्थानान्तरण, पुनर्चुनाव और नेताओं की अदला-बदली संभवतः समस्याओं को सुलझाने का आसान तरीका है। यह पहले भी होता था, अब भी होता है। देश-विदेश सब जगह यही हाल है। हर बार एक निदेशक के स्थानान्तरण के साथ एक आत्मा नंगी होती हैं। मुझे शांत होने में समय लगेगा। मैंने क्लर्क की हैसियत से पहली बार अपने प्रभाव का इस्तेमाल किया और निदेशक वाङ को नयी जगह पहुंचाने के लिए कारखाने की जीप की व्यवस्था की।

मेरे पहुंचने पर रिसेप्शन पर बैठे व्यक्ति ने कहा, "निदेशक वाङ आधे घंटे पहले चले गए।"

"अकेले?"

"पार्टी सचिव ल्यू उनका सामान ले गए हैं।"

"और कारखाने की जीप?"

"कल रात उपनिदेशक ल्वो ने जीप कहीं भेज दी थी।"

मेरे दिल में हूक उठी। मैंने निदेशक वाङ की मदद के लिए एक घंटा पहले आना तय

किया, पर उन्हें अपमानित करने पर तुला व्यक्ति एक दिन पहले ही दांव चल गया। मेरे अंदर क्रोध की एक लहर उठी, मुझे पार्टी सचिव ल्यू पर बड़ा तेज गुस्सा आया। ऐसी ईमानदारी किस काम की, निष्प्रभावी व्यक्ति! आपके शानतुङ प्रांत ने प्राचीन काल से ही कितने बड़े व्यक्ति और वीर पैदा किए, पर आपमें उनका एक अंश भी क्यों न आया। वरिष्ठ अधिकारी ने न केवल निदेशक को बाहर भेजा, बल्कि वह उनका सामान भी ढोकर ले गए और उन्हें भीड़ भरी बस में चढ़ा दिया।

मैं इन्हीं विचारों में खोया कारखाने के गेट पर खड़ा था, तभी जीप आकर गेट पर रुकी। उपनिदेशक ल्वो जीप से उतरे, उनके पीले चेचकरू चेहरे पर आत्मसंतोष की मुस्कान थी। मुझे देखकर हंसते हुए बोले, "लाओ वेइ, क्या बात है? आज बड़े सबेरे आ गए? अच्छा, निदेशक वाङ से मिलने आए थे? वह चले गए क्या?"

"हां, चले गए।" खराब मूड में रहने के कारण मैंने विशेष कुछ नहीं कहा। दूसरे ऐसी-वैसी कोई बात कहकर अनावश्यक मुसीबत मोल नहीं लेना चाहता था। आखिर एक क्लर्क की हैसियत ही क्या होती है?

उपनिदेशक ल्वो ने अपनी जेब से दोहरी आवाज वाले पटाखे निकाले। मेरी तरफ बढ़ाते हुए उन्होंने कहा, "ये दो तुम ले लो।"

मैंने नहीं लिये और कहा, "मैं इन्हें छोड़ने का साहस नहीं कर सकता।"

उन्होंने दबी हंसी के साथ कहा, " ओह, ऐसा कहो न कि अब पटाखे छोड़ने की उम्र नहीं रही!"

"क्या आप हमेशा जेब में पटाखे लेकर चलते हैं?" मैंने पूछा।

उन्होंने बताया, "वसंत त्योहार के बच गए थे। दुर्भाग्य को भगाने के लिए छोड़ रहा हूं।"

...ब...बम्म!

"ही... ही... ही...ही!"

ठंडी हवा के झोंके की तरह वह आवाज कानों में घुसी और हड्डी तक को कंपा गई। अच्छा हुआ कि निदेशक वाङ पहले चले गए, दोहरी आवाज के पटाखे की आवाज सुनकर उनके दिल पर क्या गुजरती?

कारखाना निदेशक! कौन सोच सकता था कि इस पद के लिए कोई इतना पतित व्यवहार कर सकता है। इस पद को पाने और अपने पद के आगे से 'उप' उपसर्ग हटाने के लिए ल्वो पहले ही तीन निदेशकों को भगा चुके थे। पर कंपनी ने दो बार नए निदेशक को नियुक्त कर दिया। क्या निदेशक वाङ के बदले फिर से कोई निदेशक आएगा या फिर उपनिदेशक की उम्मीद के अनुसार उनके पद के आगे से 'उप' जैसा भारी उपसर्ग हट जाएगा? यदि ऐसा हुआ तो मुझे भी इस कार्यालय को छोड़ने के बारे में सोचना होगा और उत्पादन विभाग में सांख्यिकीविद् की पुरानी नौकरी पर लौट जाने के लिए मजबूर होना पड़ेगा।

११ मार्च, १९७९

"लाओ वेइ, क्या यह सच है कि उपनिदेशिक ल्वो को निदेशक बना दिया गया है?" अनेक मजदूर मुझसे यह सवाल पूछ रहे थे।

मैंने बार-बार यही जवाब दिया, "मुझे नहीं मालूम।" इस जवाब को सुनने पर मजदूरों ने आश्चर्य प्रकट किया, "रहने भी दें। भला आपको मालूम नहीं होगा?"

मेरे दयनीय देशवासियो... तुम्हें कोई अधिकार नहीं है, पर तुम इतने जिज्ञासु हो। तुम सब बस किसी विषय पर गप्प लड़ाना चाहते हो। कोई भी निदेशक हो, तुम्हें तो अपना काम करना है। किसी की भी नियुक्ति हो, इससे तुम्हें क्या? पिछले कुछ दिनों से उपनिदेशक ल्वो को सभी निदेशक कहने लगे हैं। कुछ वर्कशाप अपनी रिपोर्ट अब उपनिदेशक ल्वो के बजाए निदेशक ल्वो के नाम भेजती हैं। मजदूरों से भी दयनीय स्थिति उन कार्यकर्ताओं की है, जो हवा के रुख के अनुसार पीठ कर लेते हैं।

"लाओ वेइ, आपने देखा? आखिर उपनिदेशक ल्वो ने निदेशक का पद संभाल ही लिया। सुबह से रात तक वह पूरे कारखाने में घूमते और निरीक्षण करते हैं। बात करते समय उनकी आवाज का स्वर भी ऊंचा हो गया है और चेहरे का हाव-भाव भी पहले से अच्छा लगता है।"

"हां, मैंने देखा है।" क्या सचमुच लोग इस बात को बहुत अधिक महत्व नहीं दे रहे हैं? आपको मालूम होना चाहिए कि आप कारखाने में दूसरों का चेहरा देखने नहीं, अपना काम करने आए हैं! शायद क्लर्क होने के कारण मैं इतना बेसुध या फिर तटस्थ हूं। मैं सबकी बातें सुनता हूं और सभी के चेहरों के भाव देखता हूं। पर बिना सुने मैं उनकी बातें सुन लेता हूं, बगैर कोशिश के उनके चेहरे के भाव देख लेता हूं, हमेशा इन सबसे दूर ही रहने की कोशिश करता हूं।

कितने दुख की बात है! किसी दिन यदि मैं स्वयं कारखाना निदेशक बना, मैं किसी को भी इस तरह परेशान नहीं रहने दूंगा। मैं अपने लिए रोबोट को क्लर्क के तौर पर रख लूंगा, जिसके हृदय नहीं होता, जो सांस नहीं लेता, जिसके मुंह-कान नहीं होते और स्टील के बने चेहरे पर कोई भाव नहीं होता। संक्षेप में, जो प्रकृति के हिसाब से बदलेगा, न कि राजनीतिक मौसम से।

मैं जानता हूं, इन दिनों मेरे भाव और मेरी आवाज के टोन पर कोई निगरानी रख रहा है। मैं अभी भी ल्वो मिङ का उल्लेख उनके पूरे पद के साथ करता हूं, "उपनिदेशक ल्वो"। जिन दस्तावेजों को निदेशक के पास भेजना चाहिए, उन्हें मैं नियम के अनुसार निदेशक की अनुपस्थिति में पार्टी सचिव ल्यू के पास ले जाता हूं। फिर उनकी सलाह के अनुसार दूसरों तक पहुंचाता हूं। मैं उन्हें सीधे ल्वो मिङ के पास नहीं ले जाता या अपनी सलाह नहीं देता, क्योंकि मुझे अपनी औकात मालूम है। ल्वो ने भी इसे महसूस किया है, पर वह कुछ भी नहीं कर सकते। मुझे अभी तक अधिकारियों से उनकी नियुक्ति की सूचना नहीं मिली है।

ल्वो मिङ के निदेशक बनने पर मुझे कोई आपत्ति नहीं है, क्योंकि यह मेरे अधिकार से बाहर है। पर अधिकारी मेरी राय पर विचार करें तो मैं यही कहूंगा, "यह सच है कि ल्वो मिङ काफी दिनों से इस कारखाने में हैं। यहां की सभी चीजों से परिचित हैं और उनका समर्थन करने वाले लोग भी हैं, पर वह कारखाने का निदेशक होने के योग्य नहीं हैं। उन्हें

केवल निदेशक के पद की चिंता है; इस पद की जिम्मेदारी से उनका कोई वास्ता नहीं है। वह अच्छे निदेशक होने की योग्यता नहीं रखते।"

१२ मार्च, १९७९

आज विचित्र बात हुई! आज उपनिदेशक ल्वो की बेटी ल्वो चिङ्‌य्वी मेरे दफ्तर आई और उसने आधे दिन तक मुझे व्यस्त रखा।

दो साल पूर्व वह देहात से शहर आने में सफल हुई। पर तब से उसे कोई काम नहीं मिला, क्योंकि उसका स्तर काफी ऊंचा था। वह किसी विशेष समूह की इकाई में काम नहीं करेगी। पसंद का काम न मिलने पर या घर से दूर दफ्तर होने पर वह इंकार कर देती है। वह बहुत कम ही दफ्तर आती थी, मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्यों मेरे सामने बैठी लगातार बातचीत किए जा रही है।

वह काफी देर तक इधर-उधर की बातें करती रही। अंत में जब उसके काम का प्रसंग आया, तब उसने तपाक से कहा, "मैं आपके कारखाने में काम करना पसंद करूंगी।"

मैंने अविश्वास प्रकट किया, "तुम मजाक तो नहीं कर रही हो? हमारा कारखाना बहुत छोटा है। हालांकि यह राज्य संचालित कारखाना है, पर यहां केवल २०० मजदूर काम करते हैं। तुम्हें यह जगह बहुत छोटी लगेगी। दूसरे, यह एक रासायनिक कारखाना है, यहां का काम तुम्हारी पसंद का भी नहीं होगा।"

उसने साफ-साफ कहा, "मैं दो वर्षों से अच्छी नौकरी की उम्मीद में बैठी हूं। इस साल मैं २६ की हो चुकी हूं। इस तरह बैठी अब ज्यादा प्रतीक्षा नहीं कर सकती। और फिर यह कारखाना अच्छा है, यहां लागत कम है और मुनाफा ज्यादा है इसलिए मजदूरों को काफी बोनस भी मिल जाता है।"

"जब ऐसा ही तुम्हारा इरादा है तो अपने पिता से इस मामले पर बात क्यों नहीं करतीं!"

"नहीं, यह अच्छा नहीं लगेगा। लाओ वेइ, आप ही मेरी ओर से पापा से बात कर लें!"

अपने व्यक्तिगत हित के लिए वरिष्ठ अधिकारी का कृपा-पात्र बनने के लिए यह अच्छा मौका था। जब कारखाना निदेशक कुछ हासिल करना चाहता है, पर स्वयं करने में उसे हिचक होती है तो उसके क्लर्क को यह जिम्मेदारी सौंप दी जाती है। जरूरत के अनुसार निदेशक की मदद के लिए उसे अपने सामर्थ्य के अनुसार सब कुछ करना चाहिए। पर चार वर्ष पहले पार्टी शाखा के आदेश के खिलाफ जाने के बजाय मैंने यहां आकर क्लर्क बनना स्वीकार किया था। यहां आने पर मैंने एक सौगंध खाई थी : चाहे किसी के लिए भी काम करूं, उससे सिर्फ कार्यालयी रिश्ता रखूंगा और किसी निजी काम के झमेले में नहीं पड़ूंगा। मैं कार्यालय के नियम के अनुसार कारखाने के काम की देखभाल करूंगा। किसके साथ काम कर रहा हूं, यह मेरे लिए महत्वपूर्ण नहीं होगा और सरकारी काम में अपनी व्यक्तिगत इच्छा को हस्तक्षेप नहीं करने दूंगा। इसलिए मैंने उसे जवाब दिया, "मैं पहले पार्टी शाखा से इस संबंध में पूछूंगा। फिर हम इस विषय पर बात कर सकते हैं।"

ल्वो चिङ्यूवी को मेरी बात अच्छी नहीं लगी। निस्संदेह उसने इस समय आने का फैसला इसलिए किया होगा कि उसके पापा के निदेशक बनने की पूरी संभावना है। आज के समाज के नए श्रेणी विभाजन के अनुसार निदेशक की बेटी का ओहदा क्लर्क से ऊंचा है, इसलिए क्लर्क को उसकी अच्छी सेवा करनी चाहिए। किसी भी सूरत में मैं निदेशक की बेटी का क्लर्क नहीं कहलाना चाहता। ल्वो चिङ्यूवी मेरी बात से बिलकुल खुश नहीं थी और अपने पिता की तरह झूठी मुस्कान फेंकते हुए उसने दरवाजा खोला और चली गई।

१५ मार्च, १९७९

सचिव ल्यू ने खुश होकर धीमे स्वर में मुझे बताया, "नए निदेशक जल्दी ही आने वाले हैं।" सचिव कभी-कभी बच्चों की तरह भोला व्यवहार करते हैं। इसके पहले तीन बार उन्होंने खुशी-खुशी नए निदेशकों का स्वागत किया और भारी दिल से उन्हें विदा किया। यहां तक कि उनका सामान भी ढोया। अब नए निदेशक के आने की बात सुनकर वह फिर से खुश हैं।

शायद मैं खुशी और निराशा दोनों से तटस्थ हूं।

१८ मार्च, १९७९

"ट्रिंग... ट्रिंग... ट्रिंग..."

बाहर से ही मुझे अपने कार्यालय में बजती टेलीफोन की घंटी सुनाई पड़ी। हम हमेशा उनका उपहास करते हैं जो समय से एक मिनट पहले काम पर नहीं आते। हम मजाक में उन्हें "घड़ी के साथ चलने वाला" कहते हैं। सच यह है कि दस दिनों में आठ दिन कार्यालय में मेरे पहुंचने के पहले से घंटी बजती रहती है। इस समय आने वाले अधिकांश फोन निदेशक के लिए होते हैं, क्योंकि पाली आरंभ होने के समय उन्हें पकड़ पाना आसान होता है। पाली आरंभ होने के आधे घंटे बाद भी उन्हें खोज पाना मुश्किल होता है। मुझे मालूम नहीं कि वे कहां गायब हो जाते हैं; यह भी नहीं मालूम कि वे कार्यालय के काम में व्यस्त रहते हैं या अपने काम में।

"ट्रिंग... ट्रिंग... ट्रिंग..."

क्लर्क की इच्छा न हो तो वह एकदम बहरा बन जाता है। चाहे लगातार घंटी बजती रहे, मैं हमेशा आम दिनों की ही तरह दरवाजा खोलता हूं और थैले से ब्रेड या खाने की कोई और चीज का एक टुकड़ा तोड़ने के बाद ही रिसीवर उठाता हूं।

"हेलो, हेलो, क्या लाओ वेइ हैं! मेरी एक मदद करें। कल मेरे पिता का देहांत हो गया, आज उन्हें अंतिम संस्कार के लिए ले जाना है। क्या आप निदेशक से कहकर कारखाने की कार की व्यवस्था करवा देंगे?"

"आप कौन हैं?" मैंने चौंककर पूछा।

"मैं फाङ हूं, फाङ वानछङ। माफ करें, आपको थोड़ी परेशानी होगी।"

मैंने अनिच्छा से कहा, "आपने पहले इस बारे में क्यों नहीं बताया?"

"मुझे भी मालूम नहीं था कि इतनी जल्दी वह चल बसेंगे।"

यह एक गंभीर समस्या थी। मैंने समझाते हुए कहा, "आप भी अच्छी तरह जानते हैं कि कारखाने में केवल एक जीप और एक कार है। दोनों गाड़ियां कच्ची सामग्री लाने के लिए बाहर गई हैं। एक-दो दिनों से पहले नहीं लौट पाएंगी। मैं कुछ भी करने में असमर्थ हूं।"

फाङ ईमानदार और मेहनती क्रेन आपरेटर हैं। यदि दूसरा कोई उपाय होता तो वह कभी मदद नहीं मांगते। वह जिद्दी भी हैं। मैंने सारी स्थिति उन्हें समझा दी, फिर भी वह अनुरोध करते रहे, "लाओ वेइ, मैं निदेशक ल्वो से बात नहीं कर सकता। लोग चाहे जो भी कहते रहें, पर आप पिछले कुछ वर्षों से निदेशक के क्लर्क हैं और आपकी पहुंच मुझसे अधिक है। आप ही का भरोसा है। अंतिम संस्कार का समय तय कर पाना आसान नहीं होता। मेरे संबंधी आ रहे हैं और यदि हमें कार नहीं मिली तो हम श्मशान घाट नहीं जा सकेंगे। मैं क्या करूं? लाओ वेइ, मैं आपका भरोसा कर रहा हूं। कृपया कोशिश करें।"

अब यह मेरे ऊपर था कि फाङ के पिता का अंतिम संस्कार हो जाए; पर मेरी समझ में नहीं आया कि मैं कार की व्यवस्था कहां से करूं। मजदूरों की नजर में क्लर्क की हैसियत बड़ी होती है। उन्हें यह नहीं मालूम कि देखा जाय तो मैं निदेशक के नौकर से अधिक कुछ नहीं हूं, उनके लिए दौड़धूप करके उनके आदेशों को तोते की तरह दुहरा दिया करता हूं। पर ऐसे समय पर सत्य के तर्क से फाङ को नहीं समझाया जा सकता था। फिलहाल उनकी जान-पहचान में मैं ही बड़ी हैसियत का था। उनके पास भी दूसरा कोई उपाय न था।

मैं रिसीवर थामे परेशान मुद्रा में बैठा था कि एक गोल-मटोल व्यक्ति मेरे पीछे से सामने आया (मुझे नहीं मालूम वह कब अंदर आया था)। उसने हंसते हुए मुझसे कहा, "मुझे बात करने दें।" मैं चिढ़ा हुआ था, मैंने बेमन से पूछा, "हां, क्या बात है?"

गोल-मटोल नाटे व्यक्ति के फूले केक जैसे चेहरे पर उभरी चमकीली सोनमछली जैसी आंखें थीं। वह व्यक्ति अत्यंत प्रसन्नचित्त लगा। उसकी मुस्कराहट से ऐसा लग रहा था जैसे किसी पुराने परिचित से मिल रहा हो। मैंने अनुमान लगाया कि वह आपूर्ति और विपणन विभाग का प्रभारी होगा और किसी काम के सिलसिले में कारखाने आया होगा। मैंने हाथ से बायीं तरफ इशारा किया, "उत्पादन विभाग बायीं तरफ तीसरे दरवाजे में है।"

नाटे व्यक्ति ने सिर हिलाकर कहा, "मेरा नाम चिन फ़ङछि है। मुझे रसायन ब्यूरो से पूर्वी रासायनिक कारखाने का काम सौंपा गया है।"

तो वह नए निदेशक थे! मैं सकते में आ गया। मैंने स्वयं को गाली दी कि मैं लोगों की वेशभूषा से उनका अनुमान लगाने लगा हूं। कम से कम क्लर्क को तो दंभ से दूर रहना चाहिए।

मैंने चिन फ़ङछि को रिसीवर दिया। उन्होंने रिसीवर लेकर गंभीर मगर सांत्वना देने के स्वर में कहा, "चिंता न करें, कॉमरेड फाङ। आपको कार कितने बजे चाहिए?" उन्होंने अपनी जेब से बॉल पेन निकाला, मैंने उन्हें कागज दिया। लिखते हुए वह फाङ की बात दुहरा रहे थे।

"आपको दस बजे कार चाहिए, ठीक है। आपका पता क्या है? चिनचओ रोड, सेक्शन-५, नंबर-८, ठीक है। आपका पूरा नाम क्या हुआ? फाङ वानछङ। अच्छा! आप दस बजे कार का इंतजार करें। कार समय पर वहां पहुंच जाएगी। तकल्लुफ मत कीजिए और किसी से

इसकी चर्चा न कीजिए। और कोई बात हो तो बताएं! मैं कौन हूं, इससे फर्क नहीं पड़ता। मैं आपके काम आ सकूं, यही काफी है। हां, एक बात और। बूढ़े व्यक्ति की मृत्यु से अधिक दुखी नहीं होना चाहिए। आप परेशान न हों। आप अपना ख्याल रखें और कुछ दिन आराम करें...''

चिन फ़ङछि ने बाएं हाथ से रिसीवर उठाकर फिर दूसरा नंबर घुमाया, ''रासायनिक मशीनरी मरम्मत केंद्र? आप कौन हैं? लाओ तू? मैं कौन बोल रहा हूं? हा! हा! हां, नए पद पर अभी-अभी आया हूं। मुझे आना ही था, दूसरा कोई उपाय नहीं था। तुम सबों को और कारखाने को मैं छोड़ना नहीं चाहता था। भई, एक जरूरत आ पड़ी है, मुझे अपनी गाड़ी की जरूरत है। क्या मिल सकेगी? मिल जाएगी? बहुत अच्छा। ड्राइवर श्याओ सुन से कह दें कि उसे चिनचओ रोड, सेक्शन-५, नंबर-८ पते पर दस बजे पहुंचना है। वहां फाङ वानछङ नामक व्यक्ति मिलेगा। धन्यवाद, बहुत-बहुत धन्यवाद, मेरी किसी मदद की जरूरत हो तो एक फोन कर देना।''

रिसीवर रखने के बाद उन्होंने पलटकर मुझसे पूछा, ''यहां हमारे पास कितने टेलीफोन हैं?''

मैंने कहा, ''यह एक छोटा कारखाना है। यहां केवल तीन टेलीफोन हैं। एक तो यह है, एक उत्पादन विभाग में है और एक रिसेप्शन पर।''

वह कुर्सी खींचकर बैठ गए और अपनी जेब से सिगरेट का पैकेट निकालकर मेरी तरफ बढ़ाया। उन्होंने अपनी सिगरेट जलाई। उन्होंने मुझे थोड़ी देर तक देखा, उनकी उभरी आंखें हंसी से चमक रही थीं। उन्होंने कहा, ''शायद पूछने की जरूरत नहीं है? आप अवश्य ही कॉमरेड वेइ हैं, यहां की सारी चीजों के प्रभारी क्लर्क, हैं न!''

मैंने धीमे स्वर में कहा, ''मेरा नाम वेइ चिश्याङ है। मुझे मेरी योग्यता से बड़ा काम सौंप दिया गया है। आपको इसी परिस्थिति में काम चलाना होगा।'' मेरे स्वर से स्पष्ट था कि क्लर्क होने की मुझे कोई खुशी नहीं है।

निदेशक चिन ने नम्र स्वर में कहा, ''मैं अभी-अभी आया हूं और यहां के माहौल से परिचित नहीं हूं। मुझे हमेशा आपकी मदद की जरूरत पड़ेगी।''

मैंने हाथ झटक कर कहा, ''मैं इस दिशा में नहीं सोच रहा था।''

निदेशक चिन मेरे जवाब से अप्रसन्न दिखे। उन्होंने गंभीरता से अपनी बात पर जोर देकर कहा, ''ईमानदारी की बात यह है कि जनता कार्यकर्ताओं को सिखाती है और क्लर्क निदेशक के प्रशिक्षक होते हैं। जब भी कोई सभा होती है या कोई रिपोर्ट भेजनी होती है तो निदेशक अपने क्लर्क पर निर्भर करता है। यदि क्लर्क प्रतिभाशाली हो तो निदेशक सक्षम लगता है, यदि क्लर्क अच्छा न हो तो निदेशक से कोई उम्मीद नहीं होती। सारे सरकारी दस्तावेज पहले आपके हाथ में आते हैं, फिर उन्हें विभिन्न प्रभारी मैनेजरों को देने का काम आपका होता है। सचमुच, आप निदेशक के निरीक्षक हैं। निदेशक मजदूरों को संभालता है तो क्लर्क निदेशक को संभालता है।''

उनकी बात सुनकर मैं स्थिर नहीं रह सका। पहले तो मुझे आशा बंधी, पर न जाने क्यों बाद में परेशानी-सी महसूस हुई और मेरा चेहरा लाल हो गया। मैं निश्चित नहीं कर पा रहा

था कि वह मेरी खुशामद कर रहे हैं या मुझ पर व्यंग्य कस रहे हैं। कारखाने में मेरी हैसियत बस इतनी है कि जिस काम का मुझे प्रशिक्षण नहीं मिला, मैं वह काम कर रहा हूं। मैं नए निदेशक की बात से हक्का-बक्का रह गया। अभी भी मैं नहीं कह सकता कि उनके बारे में मेरे क्या विचार हैं? बस इतना लगा कि काम करने वाले व्यक्ति हैं।

दोपहर में पिता का अंतिम संस्कार कर बिना कपड़े बदले फाङ वानछङ सीधे कारखाने आए और नए निदेशक से मिलना चाहा। निदेशक चिन सचिव ल्यू के साथ वर्कशाप में काम की स्थिति देखने गए थे। जब मजदूरों ने मुझे फाङ के साथ निदेशक की खोज में जाते देखा तो जिज्ञासा में उन्होंने हमें घेर लिया।

निदेशक को देखते ही फाङ पुरानी थ्येनचिन शैली में उनके कदमों पर लेट गया, वह फर्श पर अपना सिर पटककर उन्हें प्रणाम करने लगा। यह चौंकाने वाली बात थी कि परिवार के एक बूढ़े की मृत्यु के बाद यह पुरानी प्रथा हमारे कारखाने में भी आ गई थी। मैंने फाङ से इसकी कल्पना भी नहीं की थी। निदेशक चिन भी नहीं समझ पाए। घबराहट में उन्होंने खड़े होने में उनकी मदद की, "कॉमरेड फाङ! यह आप क्या कर रहे हैं?"

फाङ कृतज्ञता से अभिभूत थे। पर निदेशक की भावुकता देखकर वह हकलाते हुए इतना ही बोल पाए, "निदेशक चिन, आपको धन्यवाद! यदि आपने मेरे घर गाड़ी नहीं भेजी होती तो मेरे पिता की लाश न जाने कितने दिनों तक पड़ी रहती। अब तक तो लाश से बदबू भी आने लगी होती। मेरे स्वर्गीय पिता अवश्य ही आपको धन्यवाद दे रहे होंगे! धन्यवाद..."

निदेशक चिन ने फाङ का कंधा थपथपाकर सांत्वना देनी चाही, पर नाटे निदेशक का हाथ संभवतः लंबे मजदूर के कंधे तक नहीं पहुंच पाता, इसलिए फाङ का हाथ थामकर उन्होंने गंभीरता से कहा, "बहुत हुआ। आजकल जिसके पास संपर्क है, वह उसका फायदा उठाता है और जिसके पास पद है, वह उसका इस्तेमाल करता है। पर उन मजदूरों का क्या होगा, जिनका कोई संपर्क या प्रभाव नहीं है? शायद यही कारण है कि एक तो मजदूरों और नेताओं के बीच विरोध बना हुआ है और दूसरे, मजदूर १९५८ के पहले की तरह काम नहीं कर रहे हैं। हम शिकायत करते हैं कि वे आत्मकेंद्रित हो गए हैं और केवल अपने हितों के बारे में सोचते हैं, पर मुझे लगता है कि जब उनके सामने कोई मुसीबत आती है तो कोई उनकी परवाह नहीं करता। ऐसे में यदि वे अपनी देखभाल नहीं करेंगे तो कौन करेगा?"

निदेशक चिन की साफगोई से मुझे आश्चर्य हुआ। वह अभी-अभी आए थे और अपने पुराने दोस्तों की तरह मजदूरों से साफ-साफ बात कर रहे थे। उनकी बातचीत में मजदूरों का गुस्सा भी प्रकट हो रहा था।

निस्संदेह, निदेशक की ये बातें मजदूरों के दिल में एकदम जा बैठीं। मजदूरों की प्रशंसाभरी नजरों व फुसफुसाहट से मैं यह कह सकता था कि निदेशक चिन ने अपनी स्पष्टवादिता से मजदूरों पर किसी बड़ी सभा में औपचारिक रूप से "शपथ-ग्रहण" करने वाली भाषा की अपेक्षा कहीं अधिक प्रभाव डाला था।

मजदूरों ने गर्मजोशी से नए निदेशक का स्वागत किया, यह देखकर सचिव बेहद खुश

थे। उन्होंने निदेशक से कहा, "आप स्वयं देखें, यहां के मजदूर कितने अच्छे हैं। वे सब आपका स्वागत कर रहे हैं।"

निदेशक चिन बढ़कर फाङ के पास गए और सुबह फोन पर उनसे कही बात को फिर से दोहराया, "वानछङ, कोई भी मरने के बाद नहीं लौटता। आप भी परेशान न हों। कुछ दिन आराम करें और अंतिम संस्कार के सारे कार्य निपटाएं। अपना ख्याल अवश्य रखें।"

फाङ वानछङ ने शरमाते हुए कहा, "नहीं!" वह इतना प्रभावित थे कि अपनी बात नहीं कह पा रहे थे। "मैं आराम करना नहीं चाहता। मैं यहां काम करने आया हूँ।" इतना कहकर वह कपड़े बदलने चले गए। निदेशक चिन के कहने पर भी उन्होंने आराम नहीं किया और जरूरत से ज्यादा समय नहीं लिया। परिवार के सदस्य की मृत्यु पर मिलने वाली तीन दिनों की छुट्टी में उन्होंने केवल डेढ़ दिनों की छुट्टी ली।

सचिव ल्यू निदेशक चिन को दूसरी वर्कशॉप में ले गए। मैं अपने कार्यालय की तरफ जाने के लिए मुड़ा, तभी भीड़ के पीछे खड़े उपनिदेशक ल्वो पर मेरी नजर पड़ी। वह सिगरेट पीते हुए ल्यू और चिन को जाते देख रहे थे। उनके चेहरे के सारे दाग साफ-साफ दिखाई दे रहे थे। उनके चेहरे के दाग उनके मूड के बैरोमीटर हैं। जब वह खुश होते हैं तो दाग दिखाई नहीं पड़ते, पर जब चिढ़े या नाराज होते हैं तो चेहरे के लाल होने पर सारे दाग सफेद हो जाते हैं।

वह फाङ के पास गए और हंसते हुए बोले, "फाङ वानछङ, मैं सोच भी नहीं सकता था कि तुम्हारे जैसे मजबूत आदमी की टांगें इतनी कमजोर होंगी। किसी ने तुम्हें कार दिलवा दी और तुम घुटनों के बल बैठ गए।"

फाङ वानछङ ने हकलाते हुए पूछा, "उपनिदेशक ल्वो, आप क्या ...?"

ल्वो का स्वभाव कुत्ते जैसा है। वह बिना किसी चेतावनी के भौंकने लगते हैं और बिना किसी कारण के काट खाते हैं। मैंने उन्हें न देखने का बहाना किया और सिर झुकाए अपने कार्यालय की तरफ बढ़ा। फिर भी, वह पीछे से दौड़े आए और मेरे साथ चलने लगे।

"लाओ वेइ, अपने नए बॉस सचमुच लोगों का दिल जीतना जानते हैं।"

मैंने कोई जवाब नहीं दिया। जब निदेशक सींग भिड़ाते हैं, मैं बीच में नहीं पड़ता। मैं किसी के भी साथ नहीं रहता। फिर भी मैं अनुमान कर सकता हूं कि अपना छोटा रासायनिक कारखाना शीघ्र ही झगड़े का अड्डा बनने वाला है।

२३ मार्च, १९७९

"निदेशक चिन ने काम संभालने के साथ एक जरूरतमंद मजदूर को दूसरी इकाई से कार मंगवा कर दी।" यह समाचार कारखाने में तेजी से फैल गया। हर बार दूसरे को कहने के साथ इसमें कुछ जुड़ता गया। यहां के लोग आसानी से संतुष्ट होते हैं और आसानी से भड़क जाते हैं।

२ अप्रैल, १९७९

आज मैं निदेशक चिन के साथ कंपनी रिपोर्ट पेश करने गया। जीप में बैठे हम दोनों में काफी देर तक कोई बात नहीं हुई। अचानक उन्होंने मुझसे एक अप्रत्याशित सवाल पूछा।

" 'कुत्ता भी अपनी गली में शेर होता है', यह पंक्ति किस ऑपेरा की है?"

"शाच्यापाङ" मैंने कहा।

हम दोनों फिर से चुप हो गए, पर मैंने इस सवाल का मतलब अच्छी तरह समझा।

जीप से उतरकर कंपनी के कार्यालय में जाते समय निदेशक चिन ने मुझसे कहा, "हम अपनी रिपोर्ट सबसे पहले पेश करेंगे। मीटिंग के आरंभ में हर आदमी भद्रता से पेश आता है। सभी बड़े अधिकारी काम निबटाने की जल्दी में नहीं रहते, आरंभ में वे दूसरों की बातें भी ध्यान से सुनते हैं। हमारे कारखाने जैसे छोटे कारखाने की रिपोर्ट अन्यथा बीच में दब जाएगी। मीटिंग आरंभ होती है तो सभी अधिकारी ध्यान से सुनते हैं। बाद में बूढ़े अधिकारी थक जाने पर सिगरेट व चाय पीने लगते हैं या टॉयलेट जाते हैं, इसलिए रिपोर्ट पर कोई ध्यान नहीं देता।"

उनकी बात सही थी, पर मैं उनके बारे में थोड़ा चिंतित था। अभी कारखाने में आए उन्हें एक महीना भी नहीं हुआ था। भला वह क्या रिपोर्ट पेश करेंगे?

कंपनी ने सभी निदेशकों को इस मीटिंग के लिए बुलाया था। सचिव ल्यू को आशंका थी कि निदेशक चिन को कारखाना आए अभी अधिक समय नहीं हुआ और वे सारी परिस्थिति से परिचित नहीं हैं। अपने सहज स्वभाव के अनुसार उन्होंने सलाह भी दी कि उपनिदेशक ल्वो को भेजा जाए। मुझे मालूम था कि ल्वो इस मीटिंग में जाने के लिए उत्सुक भी थे। पर निदेशक चिन ने हंसकर कहा, "मेरे जाने से भी वही बात होगी।" मुझे नहीं मालूम कि वह ल्वो मिङ को इस मौके से वंचित करना चाहते थे या अपने नए पद के कारण इस मौके को स्वयं खोना नहीं चाहते थे। अवश्य ही यह उनकी बड़ी सूक्ष्म चाल थी।

मीटिंग आरंभ होने पर बोलने वाले वह पहले व्यक्ति थे। उन्होंने रिपोर्ट अच्छी तरह पेश की। उन्होंने बताया कि कैसे फाङ वानछङ ने तीन दिनों की छुट्टी में से केवल डेढ़ दिनों की छुट्टी ली। उन्होंने मजदूरों की प्रशंसा की, अपने बारे में कुछ भी नहीं बताया। उन्होंने नेताओं को यह विश्वास दिला दिया कि वह बिल्कुल समर्थ हैं। बाद में कंपनी के अधिकारियों ने हमारे कारखाने की प्रशंसा की और यह हमारे कारखाने जैसी छोटी इकाई के लिए एक बड़ी बात थी।

मुझे पूरा विश्वास हो गया कि निदेशक चिन उतने साधारण नहीं हैं। दूसरी रिपोर्ट आने के साथ उन्होंने मुझसे धीरे से कहा, "लाओ वेइ, मैं थोड़ी देर के लिए बाहर जा रहा हूं। आप अच्छी तरह से टिप्पणी लेंगे और दूसरे कारखाने के अनुभवों और कंपनी के अधिकारियों के सुझावों को ध्यान से सुनेंगे।" इसके बाद वह लगभग मीटिंग समाप्त होने के समय लौटे। यह आश्चर्य की बात थी।

२५ अप्रैल, १९७९

एक के बाद दूसरी आश्चर्यजनक घटनाएं होती हैं; इन दिनों उपनिदेशक ल्वो के चेहरे के दाग नहीं दिख रहे हैं। अधिकार जमाने की प्रतिद्वंद्विता इतनी जल्दी कैसे समाप्त हो गई? ल्वो मिङ आसानी से हार मानने वाले व्यक्ति नहीं हैं। क्या उन्होंने निदेशक चिन से हार मान ली? पर यह संभव नहीं है।

आज दोपहर में जब मैं भोजनालय से कार्यालय लौटा तो निदेशक चिन मेरे कमरे में किसी से फोन पर बात कर रहे थे। उपनिदेशक चापलूसी की मुद्रा में खड़े थे। "... उसका नाम ल्वो चिङय्वी है। हां, ल्वो ...चिङ...य्वी। वह मेरी रिश्तेदार है। नहीं, आप यह कर सकते हैं या नहीं? यह काम हो जाना चाहिए। आप इस सप्ताह के अंत तक मुझे बता दें। ठीक है ...अच्छी बात है ... निश्चित है।"

सब कुछ स्पष्ट हो गया। निदेशक चिन हमेशा ऐसे ही दूसरों का दिल जीतें, इससे मैं सहमत नहीं हो सकता। पर मैं उनकी चालाकी की प्रशंसा किए बिना नहीं रह सकता। ल्वो मिङ जैसे सहायक के साथ काम करना आसान नहीं है, वह इस कारखाने के अंदर-बाहर से परिचित हैं और उनका समर्थन करने वाले लोग भी हैं। यदि निदेशक चिन ल्वो मिङ को संभाल लेते हैं तो उनकी स्थिति मजबूत हो जाएगी। मैंने नहीं सोचा था कि वह ऐसा कुछ भी कर सकते हैं। तभी तो कुछ मजदूर उनकी पीठ पीछे कहते हैं कि वह बड़े "धूर्त" हैं!

१० मई, १९७९

निदेशक चिन के साथ मैं ब्यूरो की मीटिंग में गया था। थोड़ी देर बैठने के बाद उन्होंने धीरे से कहा, "लाओ वेइ, टिप्पणी अच्छी तरह लें। मैं एक मिनट के लिए बाहर जा रहा हूं।" कंपनी की मीटिंग हो या ब्यूरो की, वह हमेशा ऐसे ही करते हैं। आखिर बाहर जाकर वह करते क्या हैं?

थोड़ी देर प्रतीक्षा करने के बाद मैं भी बाहर निकला। मैंने सोचा कि जरा उन्हें देखूं। रासायनिक ब्यूरो भवन के अनेक कमरों के दरवाजे गर्मी पड़ने के कारण खुले हुए थे। निदेशक चिन हर मंजिल पर जाकर लोगों से मिल रहे थे। पहली से चौथी मंजिल तक वह हर कमरे में गए, हर जगह उनका व्यवहार ऐसा था जैसे पुराने दोस्त से मिल रहे हों। उन्होंने हर सेक्शन के प्रधान और कार्यकर्ता का अभिवादन किया और उनसे हंसकर बात की। वह हर जगह अपनी जेब में महंगी सिगरेट लेकर गए और बड़ी उदारता से पीने वालों को दीं। कभी-कभी दूसरों का कप उठाकर पुराने दोस्त की तरह उसी कप से चाय पी ली। केवल वही सिगरेट नहीं बांट रहे थे, दूसरे भी उन्हें सिगरेट पिला रहे थे। पर वह सभी सेक्शन के लोगों से अच्छी तरह परिचित जान पड़े। उन्होंने कभी उनसे गंभीर बातें कीं और कभी हंसी-मजाक किया। थोड़े ही समय में कई घंटे बीत गए।

हमारी छोटी इकाई रासायनिक ब्यूरो की नजर में शायद बहुत छोटी और महत्वहीन थी।

इस साधारण कारखाने का निदेशक ब्यूरो में हंसी-मजाक करते हुए घूम सकता है और अपने से बड़े कार्यकर्ताओं से भी बातें कर सकता है। यह उल्लेखनीय बात है। इस संदर्भ में मैंने उन्हें असाधारण समझा।

मीटिंग के बाद कारखाने लौटते समय मैंने निदेशक चिन से पूछा, "मैंने सुना है कि कंपनी और ब्यूरो में आपके अनेक दोस्त हैं। क्या यह सही है?"

उन्होंने मेरी तरफ देखकर हंसते हुए कहा, "क्या आपने आज सबों को नहीं देखा?"

मैं अपना असमंजस नहीं छिपा सका।

उन्होंने खुलकर कहा, "लाओ वेइ, थोड़े समय में मैं जितना जान पाया हूं, आप एक बड़े अच्छे क्लर्क हैं। जब आप लिखते हैं तो तेज और सुंदर लिखते हैं। दिनभर आप मेहनत से काम करते हैं, किसी भी निदेशक से कहीं ज्यादा व्यस्त रहते हैं। पर आप एक सीमा तक किताबी कीड़े हैं और चीजों को सीधे रूप में देखते हैं। मैंने तो यही सीखा है। पूंजीवादी समाज में पैसे से हर काम हो सकता है। अपने देश में सारा काम संपर्क से होता है। यह स्थिति अगले चार-पांच वर्षों में नहीं बदलने जा रही है। हमारा कारखाना छोटा है और वहां छोटे कार्यकर्ता हैं। हमारी प्रतिष्ठा और पहुंच नहीं है। यदि हम अपने संपर्कों का फायदा नहीं उठाएंगे, यदि डोर अपनी तरफ नहीं खीचेंगे तो हम कभी आगे नहीं बढ़ पाएंगे।"

भयंकर दृष्टिकोण! मैं नहीं बता सकता कि मैं उनसे घृणा करता हूं या उनका सम्मान करता हूं।

१२ मई, १९७९

उपनिदेशक के हंसते चेहरे से सारे दाग लगभग गायब हो गए। उन्होंने खुश होकर मुझे बताया, "लाओ वेइ, आप मेरी एक मदद कर दें। क्या आप आज रात निदेशक चिन को अपने साथ मेरे घर खाने पर ले आएंगे? मुझे डर है कि वह नहीं आएंगे, इसलिए आपसे कह रहा हूं।"

मैंने मन ही मन सोचा, "आप बड़े क्षुद्र आदमी हैं। बेटी की नौकरी के बदले आप उन्हें खाना खिलाना चाहते हैं।" फिर यह सोचकर कि ल्वो मिङ पहले एक अप्रशिक्षित पम्प मजदूर थे, बाद में संयोग से पार्टी में आ गए और धीरे-धीरे उन्नति कर उपनिदेशक बन गए। ऐसे आदमी से और उम्मीद भी क्या की जा सकती है? फिर भी मैं उनके घर खाने पर नहीं जाना चाहता था।

पहले जब भी ऐसा कोई अनचाहा निमंत्रण मिला, मैंने हमेशा पत्नी और बच्चे के बहाने उसे टाल दिया। कभी कहता कि पत्नी बीमार है तो कभी कहता कि बच्चे को बुखार है। किसी न किसी बहाने मैं पीछा छुड़ा लेता था। मैंने आज भी एक बहाना बनाया, "मेरे बच्चे को निमोनिया हो गया है। मुझे सीधे घर लौटकर उसे अस्पताल ले जाना है।"

ल्वो ने कठोर नजरों से देखते हुए कहा, "मैं जानता हूं, यह मेरी गुस्ताखी है कि एक साधारण उपनिदेशक होकर एक महत्वपूर्ण क्लर्क को अपने घर आने के लिए कह रहा हूं।

फिर आप ऐसा करें। आप निदेशक चिन के साथ पहले मेरे घर आएं और फिर आपकी जो मर्जी हो करें।"

कोई चारा न था! ल्वो चले गए और मैं स्वयं को गाली देने के सिवा कुछ न कर सका, "यदि मेरे बेटे ने क्लर्क बनने का फैसला किया तो मैं उसकी उंगलियां काट दूंगा!"

काम खत्म होने के पहले उपनिदेशक ल्वो की तरफ से मैं निदेशक चिन को निमंत्रित करने गया। उन्होंने खुशी-खुशी निमंत्रण स्वीकार किया और मुझे भी अपने साथ चलने के लिए कहा। मैंने फिर से वही बहाना बनाया। निदेशक चिन की आंखें सिकुड़ कर छोटी हो गईं। उन्होंने हंसते हुए कहा, "लाओ वेइ, आपको झूठ बोलना भी नहीं आता। अब से आप सच ही बोला करें। आपका चेहरा सच या झूठ बता देता है।"

मैंने झूठ बोला, "निदेशक चिन, मैं सच कह रहा हूं।"

उन्होंने ठहाका लगाया, "आप हमेशा एक ही बहाना बनाते हैं, उसे कभी नहीं बदलते। जरा दूसरों की बातें भी सुना करें। कारखाने के सारे लोग जानते हैं कि लाओ वेइ हमेशा एक ही बहाना बनाते हैं। कोई भी बात हो, यदि आप नहीं जाना चाहते तो आप कहते हैं कि पत्नी या बच्चा बीमार है। आपके जैसा तेज आदमी और भी कोई बहाना बना सकता है। आप हमेशा अपने घर के सदस्यों पर ऐसी विपत्ति क्यों लाते हैं?"

मैं झेंपते हुए हंसा और मैंने असहमति में अपना सिर हिलाया।

उन्होंने मेरा कंधा थपथपाया। "इतने सिद्धांतवादी न बनें। उपनिदेशक के निमंत्रण को ठुकराकर आप कुछ हासिल नहीं कर लेंगे। हम उस शराब की एक बूंद तक नहीं छुएंगे, जिसकी कीमत दो य्वान के नीचे हो। हम दोनों साथ चलेंगे, ठीक है! उनके घर जाकर आपको कुछ नहीं बोलना है। केवल सिर झुकाकर खाना खा लेंगे आप। आप मुफ्त में मिले भोजन को नहीं ठुकरा सकते।"

आखिरकार मैं नहीं गया, पर मैं ल्वो मिङ के निमंत्रण का मतलब जानता हूं। उनकी बेटी ने आज ही से राज्य संचालित नंबर-१० रेडियो कारखाने में काम आरंभ किया है। निदेशक चिन निश्चित ही अपना काम बना सकते हैं, उन्होंने बड़ी आसानी से ल्वो मिङ जैसे आदमी को पालतू बना लिया।

जब पार्टी उत्साह, अनुशासन और कानून से काम नहीं बनता तो वह व्यक्तिगत उपकार और वफादारी करते हैं। मैं नहीं जानता क्यों, पर निदेशक चिन मेरे लिए आदरणीय नहीं हुए। पहली मुलाकात में बनी उनकी सादगी और सहृदयता की मेरी धारणा बाद की घटनाओं से धीरे-धीरे मिट गई।

(जून से सितम्बर १९७९ तक की डायरी काट दी गई है)

९ अक्तूबर, १९७९

वरिष्ठ अधिकारी अपने मातहतों के आदर्श होते हैं। यदि नेता और कार्यकर्ता का संबंध

जटिल हो तो समाज में भी उसी के अनुसार जटिलता पैदा होती है। और यह जटिलता लोगों की राजनीति और सोच में प्रकट होती है।

ल्वो मिङ और निदेशक चिन आजकल दोस्तों जैसा व्यवहार करते हैं, पर सचिव ल्यू और निदेशक चिन के संबंधों में तनाव आ गया है। पार्टी शाखा की मीटिंग में आज बोनस के सवाल पर सचिव और निदेशक का परस्पर विरोध सामने आ गया।

वरिष्ठ अधिकारियों ने सितम्बर में एक दस्तावेज भेजा था, उसके अनुसार कारखाने के मुनाफे से मजदूरों को बोनस देने की अनुमति दी गई थी। हमारा कारखाना उपलब्ध सामग्रियों का प्रयोग करता है और अधिकांश कच्ची सामग्री अन्य कारखानों की अवशिष्ट सामग्री होती है। हमारा खर्च कम है, पर हम अच्छा मुनाफा कमाते हैं। जितना छोटा कारखाना हो, उतने कम मजदूर होते हैं और उन्हें बोनस देना आसान होता है। सितम्बर महीने का हिसाब करने पर पाया गया कि हर मजदूर को ५० य्वान बोनस में दिये जा सकते हैं। कार्यालय में काम करने वालों तक को ४० य्वान से अधिक मिल सकते थे। अधिकांश मजदूरों के मासिक वेतन के बराबर यह रकम थी।

शानतुङ प्रांत के सीधे और ईमानदार सचिव ल्यू आंकड़े सुनकर दंग रह गए। हालांकि उनकी आर्थिक स्थिति कारखाने के कार्यकर्ताओं से भी नीची थी, पर उन्होंने आपत्ति प्रकट की। "यह स्वीकार्य नहीं है। बोनस के रूप में देने के लिए यह राशि बहुत अधिक है।"

लोगों के चेहरे से मैंने अनुमान लगाया कि वे सचिव ल्यू की राय से सहमत नहीं हैं। "यह अधिक क्यों है?" पैसे में कोई बुराई नहीं है। अधिक देना पाप नहीं है। ४०-५० य्वान अतिरिक्त पाकर कौन खुश नहीं होगा? पर पार्टी कमेटी के किसी भी सदस्य ने सहमति या असहमति में मुंह नहीं खोला। वे निदेशक और सचिव को देखते रहे और फैसले की प्रतीक्षा में बैठे रहे। अधिक पैसे पाकर निश्चित ही उन्हें खुशी होती, मगर उनमें से कोई यह कहना नहीं चाहता था।

निदेशक चिन ने ल्वो मिङ से पूछा, "लाओ ल्वो, आपकी क्या राय है?"

उपनिदेशक ल्वो ने स्पष्ट स्वर में कहा, "हमें निर्देश के अनुसार बोनस बांटना चाहिए।"

सचिव ल्यू ने कहा, "यह दस्तावेज सभी उद्यमों को ध्यान में रखकर बनाया गया था, हमारे कारखाने की विशेष स्थिति है। हमें दस्तावेज की अस्पष्टता का फायदा नहीं उठाना चाहिए। यदि अधिकारियों को पता चला कि हम इतनी बड़ी राशि बांटने जा रहे हैं तो समस्या पैदा हो सकती है।"

"यदि हम बोनस में ये पैसे नहीं बांटेंगे तो फिर इनका क्या करेंगे? क्या इन्हें अधिकारियों को दे दें?" ल्वो ने प्रतिकार किया।

सचिव ल्यू ने कहा, "हम इन्हें बैंक में रखेंगे। सबके हित में इन्हें भविष्य में खर्च करेंगे।"

निदेशक चिन खामोश बैठे सिगरेट पी रहे थे। उनकी राय का कोई भी अनुमान नहीं लगा सकता था। वह संपर्कों से काम करने वाले व्यक्ति थे और पक्ष-विपक्ष को आंकने में निपुण थे। वह मजदूरों को हर महीने कुछ य्वान देने का जोखिम नहीं उठा सकते थे। कंपनी और ब्यूरो के नेताओं और उनके संबंधों पर इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ा तो वह क्या करेंगे? क्या

राज्य के हित के खिलाफ नहीं होगा? क्या इससे राज्य और मजदूरों के संबंधों में कोई फर्क नहीं पड़ेगा? उन्हें क्या करना चाहिए? यह स्पष्ट था। वह इस छोटी समस्या के लिए कोई बड़ा दांव नहीं चलेंगे। खासकर जब पार्टी सचिव ने अपनी स्पष्ट राय रख दी है, वह इसका खुला विरोध नहीं करेंगे। सबके साथ मैंने भी यही अनुमान किया कि निदेशक चिन बोनस की स्वीकृति नहीं देंगे।

निदेशक चिन ने जब बोलना आरंभ किया तो उनकी पहली पंक्ति मेरी उम्मीद के अनुसार थी। उन्होंने कहा, "लाओ ल्यू ठीक कह रहे हैं। बोनस कुछ अधिक जरूर है..."

उपनिदेशक ल्वो का चेहरा लाल हो गया, "आप... क्या..."

निदेशक चिन ने उनकी तरफ मुड़कर हाथ से इशारा किया। निश्चित ही मीटिंग से पहले उन्होंने इस संबंध में बात की होगी। ल्वो मिङ को पहले ही सहमत कर लेने के बाद क्या वह वर्तमान स्थिति का फायदा उठाने के लिए अपनी राय बदल सकते थे? शायद उन्होंने सचिव ल्यू की राय जानने के लिए ल्वो मिङ का लिटमस पत्र की तरह प्रयोग किया था।

निदेशक चिन ने आगे कहा, "हम पूर्वी रासायनिक कारखाने के नेता हैं। हमें सबसे पहले अपने कारखाने की चिंता करनी चाहिए। हमें पूर्वी रासायनिक कारखाने के मजदूरों की चिंता करनी चाहिए। यदि हमने उन्हें नाराज किया तो बहुत बुरा होगा। अधिकारियों के निर्देश पहले ही मजदूरों को बता दिए गए हैं। यदि हमने निर्देशों के अनुसार बोनस नहीं दिया तो हम मजदूरों से किया वादा तोड़ेंगे। मजदूर हमें सिर्फ गालियां ही नहीं देंगे, अगर वे असंतुष्ट हो गए तो इसका बुरा असर उत्पादन पर भी पड़ेगा। इसलिए मैं पूरा बोनस ५० य्वान देने की सिफारिश करता हूं। यदि कंपनी ने कोई आपत्ति की तो हम बताएंगे कि हमने अधिकारियों के निर्देश के अनुसार कार्य किया है। यदि दूसरे कारखानों ने कुछ पूछा तो हम उचित जवाब दे सकते हैं, 'हमने कड़ी मेहनत की है, इसलिए उसका लाभ तो मिलेगा ही। हमने राज्य को अधिक मुनाफा दिया है, इसलिए स्वाभाविक तौर पर हमारा बोनस अधिक होगा ही।' आप लोगों की क्या राय है?"

कमेटी के अधिकांश सदस्यों ने निदेशक चिन से सहमति प्रकट की और यह प्रस्ताव स्वीकृत हो गया। सचिव ल्यू की अभी भी यही राय थी कि बोनस की इतनी बड़ी राशि उचित नहीं है, पर अपनी आपत्ति के लिए वह कोई तर्क न दे सके। हालांकि निदेशक चिन का प्रस्ताव बहुमत से स्वीकृत हो गया था, पर मीटिंग समाप्त होने पर सचिव ल्यू ने निदेशक चिन से रुकने के लिए कहा।

काम समाप्त होने के बाद कंपनी के लिए कुछ आंकड़े लिखने थे, इसलिए मैं भी रुका हुआ था। सचिव ल्यू के कमरे का रोशनदान थोड़ा खुला हुआ था; उनके कमरे में चल रही बातचीत की आवाज मुझ तक आ रही थी। मैं सचिव ल्यू के स्वभाव के कारण चिंतित था; वह बड़े ईमानदार व्यक्ति हैं, उनमें कोई दोष नहीं ढूंढ़ा जा सकता। पहले निदेशक व उपनिदेशक के बीच तनाव आता था तो वे इसकी चिंता दिनभर करते रहते थे। भूतपूर्व निदेशक वाङ उनके स्वभाव के अनुकूल थे, इसलिए दोनों में खूब छनती थी। भूतपूर्व निदेशक वाङ भी अपने अधिकारियों और मातहतों दोनों के प्रति सिद्धान्तवादी और ईमानदार थे। उन्होंने कभी

किसी को धोखा देने की कोशिश नहीं की, पर वह थोड़े संकीर्ण विचारों के थे और बहुत जल्दी नाराज हो जाते थे। साल पूरा होने के पहले ही उन्हें ल्वो मिङ के कारण जाना पड़ा।

अब योग्य और चालाक निदेशक चिन आए हैं। उन्होंने अधिकारियों और मातहतों से अत्यंत घनिष्ठ संबंध कायम कर रखा है। यहां तक कि ल्वो मिङ को भी अपने पक्ष में कर लिया। निदेशक और उपनिदेशक दोनों मिलकर अच्छा काम कर रहे हैं। सचिव ल्यू को भी चिंता नहीं करनी चाहिए। वह सचमुच इस बात को बहुत अधिक महत्व दे रहे हैं। भूतपूर्व निदेशक वाङ और वह दोनों मिलकर ल्वो मिङ का मुकाबला नहीं कर सके। इस बार कैसे वह अकेले निदेशक चिन और ल्वो मिङ से निबट सकेंगे? एक ईमानदार आदमी चालबाज से लड़ाई नहीं जीत सकता। मैं उनके लिए और कारखाने के भविष्य के प्रति चिंतित हूं।

बगल के कमरे में सचिव ल्यू की आवाज ऊंची होती जा रही थी, "किसी नेता की सबसे बड़ी शर्त समस्याओं के प्रति सही विचार का होना है। आपको किसी समूह की सनक का शिकार नहीं होना चाहिए। आपको सभी पक्षों पर विचार करना चाहिए। लोगों को खुश करने के लिए राज्य की संपत्ति हथियाना तो और भी अनुचित है! निदेशक चिन, हमारे पास ऐसी शिकायत लेकर अनेक व्यक्ति आए हैं। आपको और अधिक कर्तव्यनिष्ठ होना चाहिए।"

किसी वरिष्ठ अधिकारी के लिए यह बड़ा आरोप था। मैंने तुरंत आंकड़े एकत्र किए और बगल के कमरे के तनाव को कम करने के लिए वहां पहुंचा।

निदेशक चिन आराम से बैठे हुए थे। सारी बातें सुनने के बाद भी उनके चेहरे पर परेशानी नहीं थी। उन्होंने मुझे देखकर हंसते हुए कहा, "लाओ वेइ, आप अच्छे समय पर आए। आप भी यहां बैठें। अपने सचिव ल्यू ने मुश्किल कर दी है। आश्चर्य नहीं कि हमारे भूतपूर्व सहकर्मी उनके साथ कारखाने में काम न कर सके। हमारे सचिव की रुचि मजदूरों की मदद करने से अधिक इसमें है कि वे अपनी मुश्किलों का रोना रोते रहें। आप ही बताएं, कोई ऐसा सबूत है, जिससे यह सिद्ध होता हो कि मैं अपना काम उचित तरीके से नहीं कर रहा हूं? क्या आप कह सकते हैं कि मैं मजदूरों के हक के लिए राज्य की संपत्ति हथिया रहा हूं? क्या मैं वरिष्ठ अधिकारियों के निर्देशों के अनुसार काम नहीं कर रहा हूं?"

सचिव ल्यू ने हाथ हिलाकर कहा, "जब पैसे की बात आती है तो आप जितना अधिक बाटेंगे, उतनी कम शिकायत आएगी। यदि उसमें थोड़ी कटौती कर दें तो सारे मजदूर बड़बड़ाने लगेंगे। नेता होने के कारण हमें उनके दूरगामी कल्याण की बात सोचनी चाहिए। हमें मजदूरों को सिखाना है, उन्हें राह दिखानी है। क्या दस्तावेज में यह नहीं लिखा है कि हमें मुनाफे का कुछ हिस्सा सामूहिक हित में खर्च करना चाहिए?"

"यदि आप उन्हें पूरे ५० य्वान नहीं देंगे तो वे हमें गालियां देंगे। और फिर यदि आप कुछ काट भी लेते हैं तो आप उस राशि का क्या उपयोग करेंगे?"

"संकट की घड़ी के लिए रखेंगे। हां, यदि अगले महीने कोई बात हुई या कोई नियत कार्य पूरा नहीं हुआ तो हम बोनस दे सकते हैं। यदि हमने बैंक में पर्याप्त पैसे जमा करवा लिए तो हम मजदूरों के लिए आवास की व्यवस्था कर सकते हैं।"

"भूल भी जाएं, सचिव ल्यू! आपको मालूम नहीं कि आप क्या मुसीबत मोल ले रहे हैं।"

निदेशक ,चिन ने मुड़कर मुझसे कहा, "आप क्लर्क हैं और आपके सामने यह स्पष्ट होना चाहिए। यदि आप समय पर अधिकार का प्रयोग नहीं करते तो वह बेकार हो जाएगा। यदि आपने बोनस देने की बात कही है तो आपको देना चाहिए। यदि आपने अभी बोनस नहीं दिया तो हवा बदल जाएगी और निर्देश पलट जाएगा। आप अभी भी मकान बनवाना चाहते हैं? हमारे जैसे छोटे कारखाने के लिए बीस-तीस फ्लैट बनाना मुश्किल होगा। स्थानीय निर्माण ब्यूरो, बिजली सप्लाई विभाग, जल सप्लाई विभाग और फिर कोयला भंडार तथा किराने की दुकान वाले भी कुछ मांगेंगे। हमारे लिए कितने फ्लैट बच जाएंगे? हम सारे पैसे अभी कर्च कर देंगे! हम अपना समय बर्बाद नहीं करेंगे! क्या गालियां सुनना अच्छी बात है? हमारे मजदूरों को इसमें से कुछ नहीं मिलने जा रहा है। यदि हम पैसे लेकर उन्हें दे देंगे तो वह सुरक्षित रहेगा और लाभदायक भी होगा।"

सचिव ल्यू ने सहमति या असहमति नहीं व्यक्त की।

निदेशक चिन ने सिगरेट का पैकेट निकाला और हमारी तरफ सिगरेट बढ़ाई। सचिव ल्यू ने मना कर दिया और अपनी जेब से सिगरेट निकालकर जलाई। निदेशक चिन ने इस पर ध्यान नहीं दिया और सचिव की तरफ बढ़ाई सिगरेट अपने मुंह से लगा ली। सिगरेट जलाकर लंबा कश लेने के बाद उन्होंने कहा, "आपकी सलाह १९५८ के पहले कारगर हो सकती थी, अब नहीं हो सकती। हमारे सामने चुनौतियां हैं, हम वरिष्ठ अधिकारियों के निर्देश को नजरअंदाज नहीं कर सकते और न ही उसका पूरी तरह पालन कर सकते हैं। सचिव ल्यू आपने स्वयं ऐसी स्थिति में कितनी मुसीबतें खड़ी कीं? 'सांस्कृतिक क्रांति' के दौरान गलती से जिन लोगों को जबरन बाहर भिजवाया गया था, बाद में सरकारी अनुमति मिलने पर कोई शहर आया तो आपने तुरंत उसके लिए नौकरी की व्यवस्था नहीं की, आपने की? इस पर आपको कितनी गालियां सुननी पड़ीं? एक बात और बता दूं। यह अवरुद्ध किए गए मुआवजे के बारे में है। जिसने इस सिलसिले में दबाव डाला, उसे जल्दी पैसे मिल गए। जो धीरे-धीरे काम करता रहा, उसे पैसे नहीं मिले। इस तरह की बात हमेशा होती है। जो चौकन्ना नहीं रहता, उसे परेशानी झेलनी पड़ती है।"

निदेशक चिन ने ईमानदारी से अपनी बात कही। वह सचमुच सचिव ल्यू को थोड़ा लचीला बनाना चाहते थे। मगर मैंने महसूस किया कि सचिव ल्यू पर इसका कोई असर नहीं पड़ा, उल्टा वह बड़े विरोधी हो गए।

१० अक्तूबर, १९७९

बोनस दिए जाने की घोषणा के बाद पूरे कारखाने में केवल बोनस की ही चर्चा थी। यह स्वाभाविक भी है। मुझे गुस्सा इस बात पर आ रहा है कि जितनी बातें मुझे मालूम हैं या जितनी बातें दर्ज की गईं, उनसे कहीं अधिक कारखाने के मजदूरों को मालूम हैं कि कल पार्टी शाखा की मीटिंग में इस बारे में क्या बहस हुई। सचिव ल्यू को सभी गालियां दे रहे हैं और निदेशक चिन की हर तरफ प्रशंसा हो रही है।

सचिव ल्यू के प्रति किए गए अन्याय से मुझे धक्का लगा है।

इस मौके का फायदा उठाने के लिए निदेशक चिन ने मजदूरों और कर्मचारियों की एक सभा बुलाई ताकि सभी उनका समर्थन करें। मुझसे उन्होंने कुछ भी लिखने के लिए नहीं कहा और सभा में छोटा मगर उत्तेजक भाषण देकर अपनी दक्षता दिखाई।

उन्होंने कहा, "...इस महीने के बोनस में से एक पैसा भी नहीं काटा गया है। हमने सब दे दिया है। इस महीने का बोनस पाकर कुछ लोगों को आश्चर्य होगा। हम सिर्फ इतना ही कहेंगे कि आप मेहनत से काम करें। यदि हमारे कारखाने का मुनाफा और अधिक हुआ तो अगले महीने बोनस की रकम भी अधिक बड़ी होगी। आप निश्चिंत रहें, जब तक मैं यहां हूं, आपके बोनस में से एक पैसा भी नहीं काटा जाएगा और उसे देने में कोई देरी भी नहीं की जाएगी।..."

२ नवंबर, १९७९

यह रविवार बेकार चला गया। सुबह चार बजे से दोपहर के तीन बजे तक मैं तीन-चार छोटी मछलियां ही पकड़ पाया। घर लौटते समय निदेशक चिन से मुलाकात हो गई। उन्होंने टोकरीभर मछलियां पकड़ी थीं। मैंने उनसे पूछा भी कि उन्होंने कहां से पकड़ीं। वह हंसकर टाल गए। मैंने अनुमान लगाया कि उनकी किसी मछली तालाब के चौकीदार से जान-पहचान होगी, वहीं उन्होंने इतनी मछलियां पकड़ी होंगी। मेरे मना करने के बावजूद उन्होंने आधी मुझे दे दीं। उनके दरवाजे से गुजरते समय उन्होंने मुझे अपने घर में चलने का निमंत्रण दिया। मैं उनकी बात नहीं टाल सकता था और दूसरे मेरी इच्छा भी थी कि उनका घर देखूं। मैंने उम्मीद की कि उनके जैसी पहुंच वाले आदमी का घर अवश्य ही भव्य होगा।

अंदर घुसने के साथ ही मुझे लगा कि उनका घर एकदम साधारण है। वह इतना साधारण था कि मुझे विश्वास ही नहीं हुआ, कहीं निदेशक का घर ऐसा हो सकता है क्या?

उनकी बेटी कमरे में बैठी होमवर्क कर रही थी। उन्होंने उससे कुछ खाना बनाने और शराब लाने के लिए कहा। उसने उन्हें घूरकर देखा और अपनी किताबें समेटकर अपनी दादी के कमरे में चली गई।

निदेशक चिन ने अपनी मां से खाने-पीने की व्यवस्था करने के लिए कहा। उनकी मां ने ना तो नहीं की, पर वे बड़बड़ाती रहीं और थोड़ी देर के अंदर ही सारी समस्याएं बता गईं।

हर महीने सत्तर य्वान से अधिक कमाने वाले निदेशक चिन अपने वेतन का एक छोटा हिस्सा ही परिवार को देते हैं। बाकी से वह अच्छी सिगरेटें और शराब खरीदते हैं। हर रात पड़ोस के रेस्तरां से शराब पीकर घर लौटने के बाद थोड़ा खाकर सो जाते हैं। उनकी मां और दो छोटे बच्चों को उनकी पत्नी के वेतन के सहारे रहना पड़ता है। घर में उनकी प्रतिष्ठा कारखाने की प्रतिष्ठा की अपेक्षा बहुत नीची है।

पहले मैंने कभी नहीं सोचा था कि वह ऐसे व्यक्ति हो सकते हैं। विडंबना यह कि इसके बावजूद उनके प्रति मेरी धारणा अच्छी बनी। उनके परिवार के प्रति पूरी सहानुभूति रखता हुआ मैं इस बात की सराहना करता हूं कि उन्होंने अपनी पहुंच का फायदा

कारखाने को दिलवाया है, अपने परिवार के हित में उसका प्रयोग नहीं किया है।

३१ दिसंबर, १९७९

पाली खत्म होने की घंटी बजने के बावजूद किसी भी कार्यकर्ता ने काम बंद नहीं किया, क्योंकि बैंक से निदेशक चिन का फोन आया था। कार्यालय आने के तुरंत बाद वह वित्त विभाग के कर्मचारी के साथ सुबह बैंक गए थे। कारखाने ने मजदूरों को १०० य्वान सालाना बोनस देना तय किया था, पर बैंक उसकी मंजूरी नहीं दे रहा था। निदेशक सारे दस्तावेज लेकर स्वयं बातचीत करने गए थे। वह सुबह वहीं रहे और दोपहर में खाने के लिए भी नहीं आए। मुझे नहीं मालूम था कि उन्होंने कार्यकर्ताओं को क्यों रोका था।

थोड़ी देर के बाद निदेशक वापस लौटे। उनका चेहरा खुशी से चमक रहा था। उन्होंने कहा, "सबको काम करना है। हम इस रुपए को आज ही बांटेंगे।"

सारे कार्यकर्ता खुश थे। वित्त विभाग के कर्मचारी के निर्देश में उन्होंने सौ-सौ की गड्डियां बनायीं और उसे लाल लिफाफे में डाला।

सचिव ल्यू निदेशक चिन को मेरे कमरे में लाए। उन्होंने चिंता व्यक्त की, "निदेशक चिन, हम ऐसा नहीं कर सकते। मनचाहे ढंग से बोनस बांटना गलत है! दस्तावेज यह नहीं कहता कि आप साल के अंत में इतने अधिक पैसे बांट सकते हैं।"

निदेशक चिन हड़बड़ी में थे, उन्होंने संक्षिप्त-सा उत्तर दिया, "दस्तावेज यह भी नहीं कहता कि मैं नहीं बांट सकता।"

"निदेशक चिन, यह आप गलती कर रहे हैं! क्या कारखाना नए साल से बंद होने जा रहा है?"

"रहने भी दें। आप असहनीय हैं!" निदेशक चिन ने अपना गुस्सा दबाने की कोशिश की। "मैंने कितनी बार आपसे कहा है, हमें जो मिला है, वह बांट देना है। और वह आज ही बांटना है। अन्यथा, मैं बैंक में अपना समय क्यों बर्बाद करता। निर्देश लगातार बदलते रहते हैं। समझे? कौन जानता है कि अगले साल क्या निर्देश आएगा? यदि बोनस रोकने का नया दस्तावेज आ गया तो हम चाहकर भी बोनस नहीं दे सकेंगे। फिर हमें सारे मजदूरों की गालियां सुननी पड़ेंगी।"

"अगर आपको उनकी गालियों का डर है तो मुझे गालियां सुनने दें।"

"पार्टी शाखा की मीटिंग में यह फैसला लिया गया है। आप स्वयं इसे नहीं बदल सकते। बोनस आज दिया जाएगा।" निदेशक चिन झटकते हुए दरवाजे से निकले। मैंने पहली बार उन्हें गुस्सा करते देखा था।

३ जनवरी, १९८०

आज कार्यालय में आने के साथ मुझे अेनक दस्तावेज मिले। उनमें से एक दस्तावेज १९७९ का बोनस रोकने से संबंधित था।

मैं दस्तावेज लेकर निदेशक चिन के पास गया। उन्होंने हंसते हुए कहा, "मैंने तो पहले ही कहा था।"

इसकी घोषणा के बाद पूरे कारखाने में हर जगह निदेशक की प्रशंसा के पुल बांधे जाने लगे। कार्यकर्ताओं ने भी इस संबंध में विचार-विमर्श किया। सभी यही कह रहे थे, "१०० यूवान ठीक समय पर मिल गये। एक दिन भी देर हो जाती तो हम इन्हें खो देते। निदेशक चिन दूरदर्शी और साहसी हैं।"

दोपहर में जन-प्रतिनिधि का चुनाव हुआ। कारखाने के मजदूरों और कर्मचारियों की संख्या के अनुसार नगर-क्षेत्र से हमें एक प्रतिनिधि भेजने का अधिकार मिला था। इस बार का चुनाव लोकतांत्रिक था, वरिष्ठ नेताओं ने उम्मीदवारों को नहीं चुना था, सब कुछ जनता पर छोड़ दिया गया था।

कारखाने में चार मतदान केंद्र बनाए गए। वर्कशॉपों में तीन मतदान केंद्र थे और सभी विभागों के कार्यकर्ताओं के लिए एक अलग मतदान केंद्र था। निदेशक चिन को मजदूरों के मतदान केंद्रों में भारी बहुमत मिला। कार्यकर्ताओं के मतदान केंद्र में उन्हें केवल तीन मत नहीं मिले। ऐसे नतीजे की ही सबने उम्मीद की थी। एक अजीब बात हुई, मजदूरों के मतदान केंद्र के एक मतपत्र पर किसी मजदूर ने लिखा था, "निदेशक चिन चालाक लोमड़ी है।" मतपत्र गिननेवालों में से कुछ मजदूरों ने यह बात दूसरों से कह दी और निदेशक चिन पर लगाया यह लांछन हर तरफ फैल गया।

काम खत्म होने पर निदेशक चिन मेरे कमरे में आए। उनके हाथ में महंगी शराब की एक बोतल थी। "अभी गए नहीं, लाओ वेइ। आइए अपने गृहविहीन बेचारे निदेशक के साथ शराब पीजिए।" उन्होंने थैले से मूंगफली के दो पैकेट निकाले।

मैंने पूछा, "आप घर क्यों नहीं जा सकते?"

"कल शाम मेरा पत्नी से झगड़ा हो गया। अभी घर नहीं लौटना ही अच्छा होगा, वर्ना हम फिर से झगड़ने लगेंगे।" उन्होंने चाय की प्याली में शराब भरी और सिर उठाकर शराब मुंह में डाली।

मैंने कहा, "आप जिस तरह अपने परिवार की उपेक्षा करते हैं, यह कोई अच्छी बात नहीं है। अगले महीने से मैं आपके वेतन का अधिकांश हिस्सा आपके परिवार को दे आया करूंगा।"

वह हंसे, "रहने भी दें, शराब पिएं! एक ईमानदार अधिकारी को भी परिवार का झगड़ा सुलझाने में मुश्किल होती है। मेरी पत्नी मेरे साथ बीस वर्षों से लड़ रही है, पर मेरा स्वभाव नहीं बदला। आप कैसे सोच रहे हैं कि आप सहायता कर सकते हैं? छोड़ें, शराब पिएं।"

बिना कुछ खाए उन्होंने सारी शराब खत्म कर दी। दो पैग पीने के बाद वह एक मूंगफली खाते थे। जितना अधिक पीते थे, शराब पीने की इच्छा उतनी ही बढ़ती जाती थी। थोड़ी ही देर में उनकी उभरी आंखें लाल हो गईं। अचानक उन्होंने मेरी आंखों में देखते हुए कहा, "लाओ वेइ, आजकल लोगों को खुश करना अत्यंत कठिन काम है। चाहे कुछ भी करो, आप उन्हें खुश नहीं कर सकते।"

मैं उनका आशय समझ रहा था, पर क्या जवाब दूं, यह नहीं समझ पा रहा था।

उन्होंने फिर से शराब पी और कहा, "मजदूरों को खुश करने के लिए मैंने अधिकारियों को नाराज कर दिया; दूसरी तरफ यदि अधिकारियों को खुश करूं तो मजदूर

नाखुश हो जाएंगे। आपको मालूम है, किन तीन कार्यकर्ताओं ने मुझे मत नहीं दिया?"

मुझे आश्चर्य हुआ। उन्हें कैसे मालूम हो सकता है कि किसने उन्हें मत नहीं दिया? निश्चित ही उनका संदेह ल्यू पर होगा। यह स्वाभाविक भी था, कोई भी गंभीर और मर्यादित सचिव उन्हें मत नहीं दे सकता था। मैं इतना ही कह सका, "मुझे नहीं मालूम।"

निदेशक चिन ने कड़वी मुस्कान के साथ कहा, "एक मत तो ल्वो मिङ का था, इसमें कोई संदेह नहीं।"

मैंने ल्वो मिङ के बारे में नहीं सोचा था और मुझे पूरा-सा विश्वास भी नहीं हुआ। "मेरा ख्याल है, वह आपके बड़े प्रशंसक हैं।"

"हां, इसलिए कि मैंने उनकी मदद की है, उनकी मेरी जैसी पहुंच नहीं है। पर वह बड़े ही दुर्भावपूर्ण व्यक्ति हैं। वह ईर्ष्यालु भी हैं। उन्होंने मुझे मत नहीं देकर सही काम ही किया है।"

"तीसरा कौन हो सकता है?" मैंने पूछा।

अपनी नाक के ऊपर उंगली रखकर उन्होंने कहा, "मैं!"

मैंने सोचा, उन्होंने या तो अधिक शराब पी ली है या फिर मुझसे मजाक कर रहे हैं।

उन्होंने फिर से शराब पी और नशे की हालत में बहकते हुए बोले, "मैं सच कह रहा हूं। मुझे मालूम है, तुम भी मुझे नीची नजरों से देखते हो। तुम मुझे धूर्त समझते हो। है न? पर तुम्हें मालूम नहीं, पहले मैं ऐसा नहीं था। समाज में जितना अधिक लोगों से मिलता हूं, मेरी खाल पर उतनी ही मोटी ग्रीज की परत चढ़ती जाती है। लोच मछली भी धूर्त होती है, वह कीचड़ में छिपकर लोगों के हाथ से बच जाती है। जब इंसान को चारों तरफ से ठोकरें लगती हैं, वह धूर्त हो जाता है। समाज जितना जटिल होता है, मनुष्य उतना ही धूर्त होता है। यह सीधी सी बात है। सचिव ल्यू अच्छे आदमी हैं, पर उन्हें मेरे बराबर मत नहीं मिले। अब आप ही बताएं कि अच्छे आदमी होने का क्या फायदा है? यदि मैं उनके अनुसार नियमों का ख्याल कर कारखाना चलाऊं तो सारी व्यवस्था खराब हो जाएगी। मजदूर संतुष्ट नहीं होंगे। कारखाना सरकार को मुनाफा अदा नहीं कर सकता तो अधिकारी भी नाखुश होंगे। अधिक मत पाने से मैं खुश हूं, ऐसा न समझें। इसके विपरीत मैं बहुत ही उदास हूं। मुझे मालूम है कि सचिव ल्यू ने मुझे अपना मत नहीं दिया, पर मैंने उन्हें अपना मत दिया।"

"निदेशक चिन, आपने बहुत शराब पी ली है।" मैंने उनकी मदद की और उन्हें रात की ड्यूटी वाले व्यक्ति के बिस्तरे पर सुलाया। "आप थोड़ी देर यहां लेटे रहें। मैं घर से आपके लिए कुछ खाने को ले आता हूं।"

दोपहर में उन्हें मत देने का मुझे अफसोस हुआ। हालांकि उन्हें भारी बहुमत मिला था, पर वह कभी भी जनता के सही "जन-प्रतिनिधि" नहीं हो सकते।

मुझे पूरा विश्वास है कि वह अगली बार चुनाव हार जाएंगे।

चाङ श्येनल्याङ

(१९३६ -)

चाङ श्येनल्याङ का जन्म १९३६ में नानचिङ में हुआ था। १९५५ में पेइचिङ से सीनियर मिडिल स्कूल से स्नातक होने के बाद उन्होंने कानसू प्रांतीय पार्टी कमेटी के कार्यकर्ता विद्यालय में शिक्षक की नौकरी की। १९५८ में उन्हें निङश्या के एक फार्म में शारीरिक श्रम के लिए भेजा गया। १९७९ में उन्हें **श्वो फ़ाङ** पत्रिका का संपादन भार सौंपा गया। इसके अगले वर्ष उन्होंने चीनी लेखक संघ की सदस्यता ली और उन्हें निङश्या लेखक परिषद का निदेशक चुना गया।

छठे दशक में उनकी साठ से अधिक लघु कविताएं प्रकाशित हुईं, पर उसके बाद लंबे समय तक उनकी कोई भी रचना प्रकाश में नहीं आई। इधर १९७९ के बाद वह लगातार लिख रहे हैं। उनकी इधर की रचनाओं में "बूढ़े शिङ और उनके कुत्ते की कहानी" तथा "काल कोठरी में प्रेमालाप" लघु उपन्यास की विशेष चर्चा हुई।

"देह और आत्मा" कहानी पर "घोड़ों का चरवाहा" फिल्म बन चुकी है।

देह और आत्मा

चाङ श्येनल्याङ

वह धनी मां-बाप का परित्यक्त बेटा था...

— विक्टर ह्यूगो ***लेस मिजरेबल***

१

श्वी लिङच्युन ने उम्मीद नहीं की थी कि पिता से फिर मुलाकात होगी।

एक आलीशान होटल की सातवीं मंजिल के सजे-संवरे कमरे में वे मिले थे। खिड़की के बाहर खुला आकाश था, आकाश में रुई के फाहों जैसी बादलों की कुछ धारियां थीं...। सुदूर पीली मिट्टी के पठार पर उसके फार्म की झोपड़ी की खिड़की से विस्तृत मगर सघन हरियाली दिखती थी। शहर आने के बाद से ही वह अनमना महसूस कर रहा था, मानो ऊंचे बादलों के अचानक विस्फोट की चपेट में आ गया हो। पिता के पाइप से निकल रहा कोहरेनुमा नीला धुआं कमरे में फैल रहा था, कमरे की हर चीज उसे पहले से ही अवास्तविक लग रही थी। उसके पिता अभी भी उसी रेड इंडियन प्रधान की आकृति वाले मार्के की थैली का तंबाकू पी रहे थे; बचपन में भी उसने कई बार इस तंबाकू के काफी के स्वाद की भीनी मीठी खुशबू महसूस की थी, बचपन की वही परिचित खुशबू इस बात का प्रमाण थी कि यह घटना स्वप्न नहीं, यथार्थ है।

"बीती बातों को भूल जाना ही बेहतर है," उसके पिता ने हाथों के झटके से संकेत किया। चौथे दशक में हार्वर्ड से बी.ए. करने के बाद से ही उन्होंने कैम्ब्रिज के दिनों में प्राप्त गरिमा बनाए रखी थी। उन्होंने कीमती पश्चिमी सूट पहन रखा था और सोफे पर बैठे हुए थे।

"मुख्यभूमि पहुंचने के साथ ही मैं 'आंखें सीधी रखो' कहावत का मतलब समझ गया था। अच्छा होगा कि तुम स्वयं को समझाओ और विदेश में जाने की तैयारी करो।"

कमरे की सजावट और उसके पिता के कपड़ों ने बीते दिनों की याद दिला दी। वह विचित्र भावनाओं से भर गया। उसने सोचा सचमुच बीती बातों को भूल जाना ही बेहतर है! पर वह कैसे अपने अतीत को भुला दे?

शरद मौसम के ऐसे ही एक दिन, आज से तीस वर्ष पहले, वह श्याफेइ मार्ग पर अपने पिता का आवास ढूंढ़ने की कोशिश कर रहा था। उसके हाथ में मां का लिखा पता था। संयोग से उसे पिता का आवास मिल गया था; वही बगीचा, वही इमारत। बारिश थम गई

थी और पेड़ों के झरते पत्ते विवर्ण और बेजान लग रहे थे। दीवारों के ऊपर कंटीले तार लगे थे। गेट के लोहे के दरवाजे पर धूसर रंग की वार्निश लगी हुई थी। उसने दीवार में लगी घंटी का बटन दबाया। थोड़ी देर बाद लोहे के दरवाजे की छोटी खिड़की खुली थी और उस नौकर का चेहरा दिखा था, जो उसके पिता का पत्र लाया करता था। नौकर ने उसे अंदर जाने दिया। वे पेड़ों से आच्छादित पगडंडी से होकर दोमंजिली इमारत में गए थे।

तीस वर्ष पहले उसके पिता अधिक जवान लगे थे। उन्होंने मटमैला स्वेटर पहन रखा था और उनकी बांह अंगीठी के ऊपरी ढांचे पर टिकी थी। वह तंबाकू पी रहे थे। उनके सामने सोफे पर वही औरत बैठी थी, जिसे लिङच्युन की मां प्रतिदिन गालियां दिया करती थी।

उसने कहा, "तो यह तुम्हारा बेटा है। यह बिलकुल तुम्हारी तरह लगता है। बेटे, इधर आओ।"

लिङच्युन आगे नहीं बढ़ा, उसने वहीं से उस महिला को घूरकर देखा। उसे आज भी उसकी चमकदार आंखें और रंगे होंठ याद हैं।

पिता ने अपना सिर उठाया, "क्या बात है?"

"मां बीमार है और उसने आपको बुलाया है।"

"वह हमेशा बीमार रहती है, हमेशा..." उसके पिता लंबे कदमों से आगे बढ़े और बेचैनी में कालीन पर टहलने लगे। कालीन हरे रंग की थी और उसमें सफेद रंग के धागों से बुनाई की गई थी। लिङच्युन पिता के पीछे चलता हुआ बड़ी मुश्किल से अपने आंसुओं को रोक पाया था।

"अपनी मां से कहना कि मैं थोड़ी देर में आऊंगा।" उसके पिता ने उससे कहा। उसे मालूम था कि यह कोरी बात है और उसकी मां फोन पर कितनी ही बार यह सुन चुकी है।

नम्र और झिझकती आवाज में लिङच्युन ने जिद्द की, "मां ने अभी आपको घर बुलाया है।"

"मैं जानता हूं, जानता हूं..." लिङच्युन के कंधे पर हाथ रखकर उसके पिता उसे दरवाजे तक लाए। "तुम आगे चलो और मेरी कार लेते जाओ। यदि तुम्हारी मां की बीमारी गंभीर है तो उनसे सीधे अस्पताल जाने के लिए कहना।" उसके पिता उसे बरसाती तक छोड़ने आए, वहां आकर उन्होंने उसके बालों को अचानक सहलाया। उन्होंने झिझकते हुए कहा, "काश, तुम थोड़े बड़े होते, तुम... समझ जाते... तुम्हारी मां... उसके साथ जीना... मुश्किल है। वह ऐसी... ऐसी..." लिङच्युन ने अपने पिता को देखा। वह अपनी उंगलियों से अपनी कोहनी मसल रहे थे। पिता की तकलीफ देखकर उसे पिता से सहानुभूति हुई।

पर पिता की बंद मोटरगाड़ी में बैठकर लिङच्युन जब फ्रांसीसी कॉलोनी की पीले पत्तों से ढकी गलियों से गुजर रहा था तो उसकी आंखें भर आईं। वह शर्म, दुख और अकेलेपन के भाव से भर गया। जब वह स्वयं इतना उदास है तो वह दूसरों के लिए क्यों दुखी हो? उसे मां का पूरा प्यार नहीं मिला था, उसकी मां उसके बालों को सहलाने या चूमने से अधिक माजाङ (चीन का एक प्रकार का खेल) की गोटियों को सहलाना या चूमना अधिक पसंद करती थी। न ही उसे पिता का प्यार मिला था। पिता काम से घर लौटने के बाद उदास, दुखी और चिड़े रहते थे और मां से उनका अविराम झगड़ा तो होता ही था। उसके पिता ने कहा

कि यदि वह थोड़ा बड़ा होता तो सारी बातें समझ सकता... पर वास्तव में ग्यारह वर्ष की इस छोटी उम्र में ही वह बहुत कुछ समझने लगा था। मां को सबसे अधिक पिता के कोमल व्यवहार और प्यार की जरूरत थी और पिता बेढब और सनकी पत्नी से पीछा छुड़ाना चाहते थे। पर न तो पिता और न मां का ही उसके लिए कोई महत्व था। वह अमेरिका से पढ़कर लौटे लड़के और जमींदार की बेटी की पारंपरिक शादी की पैदाइश के अलावा कुछ और नहीं था।

वही हुआ, उसके पिता घर नहीं लौटे। और जैसे ही उसकी मां को पता चला कि पिता अपनी रखैल के साथ मुख्यभूमि छोड़कर चले गए, उसके कुछ ही दिनों के बाद एक जर्मन अस्पताल में उसकी मां की मृत्यु हो गई।

ठीक उसी समय मुक्ति सेना ने शाङहाए में प्रवेश किया था...।

और अब तीस वर्षों के बाद किसी भी अन्य दुर्भाग्य से बड़े दुर्भाग्य की तरह उसके पिता अचानक लौट आए थे और उसे अपने साथ देश से बाहर ले जाना चाहते थे। सारा मामला इतना अपरिचित था कि लिङच्युन को विश्वास नहीं हो रहा था कि उसके सामने बैठा आदमी उसका पिता है और वह उसका बेटा है।

उसके पिता की सेक्रेटरी सुङ ने वार्डरोब खोलकर उसके पिता के पहनने के कपड़े निकाले, वार्डरोब के अंदर छोटे-बड़े कई सूटकेस पड़े थे, जिन पर लॉस एंजेल्स, तोकियो, बैंङकाक, हॉङकाङ के होटलों के रंगीन स्टिकर लगे हुए थे। "पान अमरीकन बोइंग-७४७" का अंडाकार टैग भी साफ दिख रहा था। छोटे वार्डरोब में पूरी दुनिया समायी हुई थी। लिङच्युन को अभी तीन दिन पहले ही चाइना ट्रैवल सर्विस से जारी यात्रा सूचना स्थानीय अधिकारियों से मिली थी। दो दिन और दो रात तो बस और ट्रेन में धक्के खाते बीते, तब जाकर वह यहां पहुंचा था।

लिङच्युन ने अपना कृत्रिम चमड़े का सूटकेस सोफे के कोने में रखा था। फार्म पर ऐसा सूटकेस "पश्चिमी ढंग का सामान" माना जाता था, पर इस कमरे में घुसने के साथ ही उसे लगा था कि सूटकेस शर्म से सिकुड़ गया है। सूटकेस से नाइलॉन के धागों की एक थैली बंधी थी, जिसमें टूथपेस्ट और ब्रश के अलावा रास्ते के बचे चाय में उबले अंडे थे। अंडे उबलने से फट गए थे, उन्हें देखते हुए उसे पत्नी की बात याद आई, चलते समय उसने कहा था कि इसमें से कुछ अंडे अपने पिता को देना।

दो दिन पहले उसकी पत्नी श्यूचि जिद्द करके छिङछिङ के साथ काउंटी केंद्र के बस स्टेशन उसे छोड़ने आई थी। लिङच्युन शादी के बाद फार्म से कहीं नहीं गया था, इसलिए यह लंबी यात्रा उस छोटे परिवार के लिए एक बड़ी घटना बन गई थी।

"पापा, पेइचिङ कहां है?"

"पेइचिंग यहां से उत्तरपूर्व में है।"

"क्या पेइचिङ अपनी काउंटी केंद्र से बहुत बड़ा है?"

"हां, बहुत बड़ा है।"

"क्या वहां तारा फूल है?"

"नहीं।"

"क्या वहां बेर हैं?"

"नहीं।"

"फिर..." छिङछिङ ने किसी बड़े व्यक्ति की तरह उसांस ली, अपनी हथेली पर ठोड़ी रखे हुए वह बहुत निराश लगी। उसकी सोच के अनुसार अच्छी जगह का मतलब वहां तारा फूल और बेर का होना है।

"मूर्ख लड़की, पेइचिङ एक बड़ा शहर है," कोचवान बूढ़े चाओ ने कहा और चिढ़ाया, "तुम्हारे पापा इस बार लम्बी यात्रा पर जा रहे हैं। तुम भी बहुत जल्दी अपने दादा के साथ विदेश जाओगी। हैं न, प्रशिक्षक श्वी?"

कोचवान की बात पर उसके पीछे बैठी श्यूचि मुस्कराई। उसने कुछ नहीं कहा, पर उसकी मुस्कराहट विश्वास और निष्ठा व्यक्त कर रही थी। वह ठीक वैसे ही लिङच्युन के विदेश जाने की कल्पना नहीं कर पा रही थी, जैसे बेटी छिङछिङ यह नहीं समझ पा रही थी कि पेइचिङ कितना बड़ा है।

देहात की टेढ़ी-मेढ़ी ऊबड़-खाबड़ सड़क पर घोड़े की दुलकी चाल से वे झटके खा रहे थे। सड़क की बायीं तरफ आयताकार खेत फैले हुए थे, दाहिनी तरफ दूर तक फैला चरागाह था, जहां कभी उसने घोड़ों को चराया था। ऐसा लगा कि इस इलाके में कोई चुंबकीय आकर्षण है। हर एक झाड़ी और पेड़ यादों के प्रवाह को गति दे रहा था। लिङच्युन ने अचानक अपने देहात के प्रति अधिक सहानुभूति महसूस की।

वे सफेद पॉपलर पेड़ के पास पहुंचे, सफेद पॉपलर के तीन पेड़ों के पास बेर के पेड़ थे। वह घोड़ागाड़ी से उतरा और बेर की एक टहनी तोड़ लाया, तीनों घोड़ागाड़ी में बैठे बेर खाने लगे। यह जंगली बेर उत्तरपश्चिम चीन का खास फल था; यह अपने खट्टे, कड़वे व हल्के मीठे स्वाद के लिए प्रसिद्ध था। १९६० के अकाल में वह इन्हीं बेरों के सहारे जिंदा रहा था। वर्षों से उसे बेर खाने का दोबारा मौका नहीं मिला था, आज फिर से बेर खाने पर उसके स्वाद ने उसे और भावुक बना दिया। छिङछिङ का सवाल उसकी समझ में आ गया, वह क्यों पूछ रही थी पेइचिङ में बेर हैं या नहीं?

बेर की गुठली मुंह से फेंकते हुए श्यूचि ने कहा, "निश्चित ही छिङछिङ के दादा ने कभी बेर नहीं खाए होंगे।" विदेश से आए अपने ससुर के बारे में उसने सबसे बड़ी यही कल्पना की।

उसे अधिक सोचने की जरूरत भी नहीं थी—बाप-बेटे का चेहरा इतना मिलता था कि वह राह चलते अपने ससुर को पहचान सकती थी। दोनों की आंखें सिकुड़ी और लंबी थीं, नाक सीधी और मुंह बड़ा था। उन्हें देखकर कोई भी आसानी से कह सकता था कि दोनों में आनुवंशिकी समानता थी, दोनों के आचरण और हाव-भाव भी समान थे।

पिता के चेहरे पर बुढ़ापे का असर नहीं पड़ा था। उनका रंग भी बेटे जैसा गहरा था। यह हॉङकॉङ या लॉस एंजेल्स के समुद्र तट पर धूप सेंकने का प्रभाव था। उनका रंग अभी तक फीका नहीं पड़ा था। हालांकि उनके अधिकांश बाल सफेद हो गए थे, पर वह उनकी पूरी देखभाल करते थे। उनके हाथों पर बुढ़ापे की झुर्रियां पड़ गई थीं, पर उनके नाखून हमेशा कटे-संवरे रहते थे।

कॉफी की मेज पर उत्कृष्ट चाइना कॉफी सेट के अलावा "३-बी" मार्का पाइप, मोरक्को

की बनी तंबाकू रखने की चमड़े की थैली, सोने का पॉलिश किया लाइटर और हीरा जड़ा टाई पिन पड़ा था।

सचमुच, भला कैसे उन्होंने कभी बेर खाए होंगे?

२

"ओ, यहां भी आप ताजा लोकप्रिय गीत सुन सकते हैं," सेक्रेटरी सुङ ने धाराप्रवाह चीनी में कहा। उसकी लंबी और हृष्ट-पुष्ट आकृति से चमेली की खुशबू आई। उसने बालों में सिल्क का बैंगनी रिबन बांध रखा था। उसके लंबे बालों का गुच्छा लहराने पर घोड़े की पूंछ की तरह लगा। "चेयरमैन साहब, पेइचिङ में भी लोग डिस्को की धुन पर थिरकने लगे हैं और वे हॉङकॉङ के लोगों से बेहतर नृत्य करते हैं। यहां भी आधुनिकता आ गई है!"

"कोई भी आनंददायक प्रलोभन का प्रतिरोध नहीं कर सकता।" लिङच्युन के पिता ने किसी मानव के मिथ्याभिमान को समझने वाले दार्शनिक की तरह मुस्कराकर कहा, "अब वे भी स्वयं को तपस्वी नहीं मानते।"

शाम का खाना खाने के बाद उसके पिता और सेक्रेटरी सुङ उसे डांस हॉल में ले गए। वह नहीं जानता था कि पेइचिङ में ऐसी भी जगह है। वह बचपन में अपने माता-पिता के साथ शाङहाए के "सौ आनंद का द्वार" और "फ्रेंच इवनिंग क्लब" जैसे नाइट क्लबों में जा चुका था, आज उसे लगा कि वह फिर से उन पुराने अड्डों पर आ गया है। हल्की रोशनी में स्त्रैण पुरुषों और पुरुष सदृश्य औरतों का थिरकना देखकर उसे लगा कि जैसे चांदनी रात में प्रेतात्माएं विचर रही हों। थोड़ी ही देर में उसे बेचैनी महसूस होने लगी। उसे लग रहा था कि अभिनय करना न आने के बावजूद जैसे उसे मंच पर किसी अन्य अभिनेता के बदले में भेज दिया गया हो।

थोड़ी देर पहले भोजनालय में वह घृणा से कांप उठा था। अनेक प्रकार के व्यंजन आए और उन्हें उलट-पुलटकर बगैर खाए ही रसोईघर में वापस भेज दिया गया। उसकी काउंटी में राज्य द्वारा संचालित भोजनालय से हर व्यक्ति इसलिए बचा हुआ भोजन टिफिन भर कर घर ले जाता है कि बचा हुआ भोजन फेंकना न पड़े।

डांस हॉल में हर नई धुन बजने के साथ अनेक जोड़े बेढब नृत्य कर रहे थे। एक-दूसरे को आलिंगन में लेने के बजाए वे आमने-सामने खड़े होकर लड़नेवाले मुर्गों की तरह आगे बढ़ते और पीछे हटते थे। तो इस तरह ये लोग अपनी अतिरिक्त ऊर्जा का निष्कासन करते हैं। उसने उन लोगों के बारे में सोचा, जो इस क्षण गर्म खेतों में धान काटने में लगे होंगे। अपने शरीर को आगे झुकाकर वे हाथों को हिलाते हुए पल में दाहिने से बाएं और पल में बाएं से दाहिने धान काट रहे होंगे। बीच-बीच में कभी कमर सीधी कर पानी वाले को आवाज देते होंगे, "भैया, जरा पानी पिला देना।" उसकी इच्छा हुई कि कितना अच्छा होता यदि वह

पीले पानी की नहर के पास की घास पर लेटकर हवा में फैली पुआल और लसुनघास की खुशबू ले पाता।

"क्या तुम नाच सकते हो, मि. श्वी?" पास में आकर बैठी सेक्रेटरी सुङ ने उससे पूछा। वह कल्पना में काउंटी के जिस माहौल के मजे ले रहा था, वह माहौल तुरंत वाष्प बनकर उड़ गया। उसने अपनी गर्दन झुकाकर सेक्रेटरी सुङ को देखा। सेक्रेटरी सुङ की भी चमकती आंखें थीं और होंठों पर लिपस्टिक का गहरा रंग था।

"नहीं, मैं नहीं नाच सकता।" लिङच्युन ने विरक्त मुस्कराहट के साथ कहा। वह घोड़े चरा सकता है, हल चला सकता है, फसल काट सकता है, धान ओसा सकता है ... भला नाचने का क्या फायदा है!... वह भी इस प्रकार का नृत्य?

"उसे शर्मिंदा मत करो," उसके पिता ने दबी हंसी के साथ मिस सुङ से कहा, "देखो, मैनेजर वाङ तुम्हारे साथ नाचने के लिए आ रहे हैं।"

भूरा सूट पहने एक आदमी मेज के पास आया और उसने झुककर मिस सुङ की तरफ मुस्कान फेंकी। दोनों नाचने चले गए।

"तुम और किन बातों पर सोचना चाहते हो?" लिङच्युन के पिता ने फिर से पाइप सुलगाया। "तुम मुझसे अच्छी तरह जानते हो कि कम्युनिस्ट पार्टी की नीतियां प्रायः बदलती रहती हैं। अभी बीसा लेना आसान है, कहा नहीं जा सकता कि बाद में क्या स्थिति होगी!"

लिङच्युन ने मुड़कर पिता को देखा, "यहां और भी ऐसी चीजें हैं, जिनसे मैं बिछुड़ना नहीं चाहता।"

"सारी तकलीफ के बावजूद?" उसके पिता का प्रश्न कुरेदने वाला था।

"खुशी और आनंद का मूल्य तकलीफ से ही बढ़ाया जा सकता है।"

"क्या कहना चाहते हो?" उसके पिता ने आश्चर्य के साथ कंधे उचकाकर उसे घूरा।

लिङच्युन के दिल में उदासी की लहरें उठ रही थीं। उसने याद किया कि उसके पिता इस अपरिचित और अबोधगम्य दुनिया के भी हिस्सा हैं। केवल शारीरिक समानता आत्मिक पार्थक्य को नहीं मिटा सकती। उसने अपने पिता को उन्हीं की तरह घूरकर देखा, पर दोनों में से कोई भी सतह के नीचे की सच्चाई नहीं जान सका।

"क्या तुम अभी भी... अभी भी दुखी महसूस करते हो?" आखिरकार उसके पिता ने पूछा।

"नहीं... बिलकुल नहीं!" लिङच्युन ने पिता की तरह हाथ झटककर इन्कार किया। "आपने सही कहा कि बीती बातों को भूल जाना ही बेहतर है। आज की स्थिति बिलकुल दूसरी है..."

नयी धुन बजने लगी थी। मंद और बेपरवाह धुन किसी नहर के पानी की तरह बह रही थी। रोशनी भी पहले से कम हो गई थी, नाचते लोगों को पहचान पाना मुश्किल था। उसके पिता सिर झुकाए अपनी पेशानी को हाथों से मल रहे थे, कमजोरी और पीड़ा से भरी सांस छोड़ते हुए उन्होंने कहा, "सचमुच बीती बातों को भूल जाना ही बेहतर है। पर वे दिन कितनी तकलीफों से भरे थे... मैंने सचमुच तुम्हारी कमी महसूस की... और खासकर अब तो तुम्हारी..."

पिता की बातों ने लिङच्युन के दिल को छू लिया। परिष्कृत धुन ने उसमें सहानुभूति पैदा

की, "मैं... मुझे आप पर विश्वास है," लिङच्युन ने खोए और उदास स्वर में कहा, "मैंने भी आपकी कमी महसूस की।"

"तुमने कमी महसूस की?" उसके पिता ने सिर उठाया।

हां, आज से बीस वर्ष पहले एक शरद रात्रि को उस जालीदार खिड़की से जिसका कागज वर्षा से फट गया था, गट्ठरों की तरह पड़े लोगों पर चांदनी पड़ रही थी। दर्जन या उससे अधिक लोग एक छोटी कच्ची ईंट की झोंपड़ी में सोए थे। लिङच्युन दीवार के पास सोया था, उसने महसूस किया कि उसके कपड़े नमीयुक्त मिट्टी की गंध से भर गए हैं। ठंड में कांपते हुए लिङच्युन ने सोचा इस ठंडे कमरे में नम पुआल पर सोने से अच्छा बाहर बैठना होगा। बाहर चांदनी रात में दलदली कीचड़ शीशे के टुकड़ों की तरह चमक रहा था। चारों तरफ पानी ही पानी था। हवा में भी दुर्गंध थी।

लिङच्युन को बाहर अस्तबल मिला, जहां घोड़ों की लीद की गर्मी थी। घोड़े, खच्चर और गधे नांद में रखी घास खाते हुए नथुनों से आवाजें निकाल रहे थे। एक खाली नांद देखकर वह उसमें घुसा। वह नवजात ईसा की तरह काठ की नांद में जा सोया।

तिकोनी छत की मुंडेर के पास की फांक से तिरछी चांदनी आ रही थी। सभी जानवर सिर झुकाए नांद में रखी घास खा रहे थे, ऐसा लग रहा था जैसे वे चांद की पूजा में झुके हों। उसकी यह अवस्था और सारी परिस्थिति उसकी दुर्दशा को रेखांकित कर रही थी। भीषण अवसाद में डूबा वह स्वयं को बेहद अकेला महसूस कर रहा था। लोगों से परित्यक्त वह आज जानवरों की श्रेणी में आ गया था।

वह खूब रोया। जिंदगी ने जैसे सिकोड़कर उसे छोटा कर दिया था, आज छोटी नांद भी वैसे ही उसके बदन को दबा रही थी। पहले उसे पिता ने छोड़ा। उसके बाद मां की मृत्यु हुई। उसके मामा ने उसकी मां का सारा सामान हथिया लिया और उसे छोड़ दिया। इसके बाद वह एक स्कूल के छात्रावास में गया, जहां सरकारी अनुदान से उसकी शिक्षा-दीक्षा हुई और जिंदगी चली। कम्युनिस्ट पार्टी ने उसे अपना लिया और शिक्षित किया। असामान्य पारिवारिक जिंदगी के कारण अल्पभाषी और अत्यंत संवेदनशील होने के बावजूद धीरे-धीरे छठे दशक की सामूहिक उत्साह भावना ने उसे प्रभावित किया और वह उसमें रुचि लेने लगा। उस दशक में हाई स्कूल के सभी छात्र भविष्य का एक ही सुंदर सपना देखते थे। पढ़ाई पूरी करने के बाद उसका सपना साकार हुआ। उसे शिक्षक की नौकरी मिली; नीला माओ सूट पहनकर हाथ में खड़िया और नोटबुक लिये वह नित्य प्रति कक्षा में जाने लगा। उसे अपनी जिंदगी में एक उद्देश्य मिल गया। दक्षिणपंथी विरोधी आंदोलन आरंभ होने पर स्कूल की पार्टी शाखा के सचिव को दक्षिणपंथियों का कोटा पूरा करना था और पार्टी नेताओं ने बड़ी आसानी से उसे उसके पिता की श्रेणी में डाल दिया। खून का रिश्ता अपरिहार्य रूप से मनुष्य के वर्ग को निर्धारित करता है, यही उस समय की मान्यता थी। इसलिए उसे पूंजीपति वर्ग का एक सदस्य घोषित कर दिया गया। पहले पूंजीपति वर्ग ने उसका परित्याग किया। पूंजीपति वर्ग से उसे कुछ भी तो नहीं मिला था, पर "पूंजीपति" शब्द उसके जीवन से जुड़ गया था। बाद में

जनता ने उसका परित्याग कर दिया और उस पर बुर्जुआ दक्षिणपंथी होने का ठप्पा लगा दिया। अंततः वह सबके द्वारा त्याग दिया गया और उसे सुदूर फार्म में पुनर्शिक्षित करने के लिए भेजा गया।

अपना चारा समाप्त कर एक घोड़े ने लिङच्युन की नांद की तरफ मुंह बढ़ाया। यथासंभव अपनी गर्दन खींचकर वह नांद के पास पहुंचा और उसने नांद में मुंह डाला। घोड़े का मुंह लिङच्युन के सिर के ऊपर था। लिङच्युन ने अपने चेहरे पर घोड़े की गर्म सांस महसूस की। उसने देखा कि कत्थई घोड़ा अनाज की तलाश में उसके सिर पर होंठ फेर रहा था। थोड़ी देर में घोड़े को वहां किसी आदमी के होने का पता चला। चौंकने के बजाए उसने लिङच्युन के सिर को सूंघा और अपनी नाक से उसके चेहरे को सहलाया। उसने प्यार के साथ घोड़े का लंबा मरियल सिर सहलाया, सिसकियों से उसका गला रुंध गया, उसने अपने आंसू घोड़े की अयाल में पोंछे। थोड़ी देर के बाद नांद में घुटनों के बल बैठकर उसने अपने नीचे से अनाज निकालकर घोड़े तक बढ़ाया।

पापा, उस समय आप कहां थे?

३

और अब उसके पिता आए थे।

यह सपना नहीं था! उसके पिता बगल के कमरे में सो रहे थे और वह भी "सिमन्स" बिस्तरे पर पसरा हुआ था। उसने अपने बिस्तरे के गद्दे को सहलाया, यह काठ की नांद से कितना भिन्न था! जालीदार पर्दे से छनकर आ रही चांदनी कालीन, सोफे और बिस्तरे पर पड़ रही थी। दिन भर में लिङच्युन ने जो कुछ अनुभव किया था, वह चांदनी में स्पष्ट आकार ले रहा था। वह अच्छी तरह से समझ गया था कि वह पूर्णतः इनके प्रतिकूल और अनभ्यस्त है। उसके पिता लौटे थे, पर एक अजनबी की तरह। उसके पिता की वापसी ने उसकी तकलीफों को ताजा कर दिया था और उसकी मानसिक शांति भंग कर दी थी।

हालांकि शरद ऋतु आ चुकी थी, पर कमरे की गर्मी और उमस बढ़ती जा रही थी। अपना कंबल फेंककर वह बिस्तरे पर बैठ गया; उसने लैंप जलाया और बगैर किसी लगाव के कमरे में चारों तरफ नजर डाली। उसकी निगाह आकर अपने बदन पर रुकी। उसने अपनी बलिष्ठ बाहों की मांसपेशियों और उभरी हुई पिंडलियों को देखा। फिर पैर के तिरछे अंगूठे और हथेली व तलवे में पड़ी गांठों को देखते हुए उसने पिता की दोपहर में कही बात याद की।

दोपहर में कॉफी पीने के बाद उसके पिता ने सेक्रेटरी सुङ को बाहर भेज दिया था। फिर उन्होंने अपनी कंपनी की प्रगति और लिङच्युन के सौतेले भाइयों की अयोग्यता तथा लिङच्युन और जन्मभूमि के प्रति अपनी लालसा के बारे में बताया था।

"तुम यदि मेरी बगल में रहोगे तो मुझे थोड़ा संतोष होगा।" उसके पिता ने कहा। "तीस वर्ष पहले की बात के बारे में मैं जितना अधिक सोचता हूं, मेरी परेशानी उतनी ही बढ़ जाती

है। मैंने महसूस किया था कि मुख्यभूमि में चल रहे वर्ग संघर्ष अभियान में तुम्हारी बुर्जुआ पारिवारिक पृष्ठभूमि ने तुम्हारी जिंदगी अवश्य मुहाल कर दी होगी। मैंने तो यहां तक सोच लिया था कि तुम जीवित भी नहीं होगे और तुम्हारी चिंता से मैं लगातार परेशान रहता था। बचपन की तुम्हारी तस्वीर हमेशा मेरी आंखों के सामने आ जाती थी। मुझे अभी भी याद है, तुम अपने जन्म के बाद आया की गोद में किस तरह सोए हुए थे। कल ही की बात लगती है, तुम्हारे दादा ने नानचिङ विदेशी-मामलात-ब्यूरो के पास स्थित प्रवासी चीनी होटल में तुम्हारे जन्म की खुशी पर बड़ी पार्टी दी थी। उस दिन शाङहाए के सभी औद्योगिक व व्यापारिक घरानों, रुङ, क्वो, ल्यू और चङ परिवारों के लोग उस पार्टी में आए थे। शायद तुम्हें मालूम हो कि तुम अपने परिवार के 'सबसे बड़े बेटे के सबसे बड़े बेटे'...''

लैंप के हल्के हरे शेड से छनकर आते प्रकाश में लिङच्युन ने अपने हृष्ट-पुष्ट बदन को देखा, वह अजीब भावों से घिर गया। आज ही उसके पिता ने पहली बार उसके बचपन की परिस्थिति के बारे में बताया था, उसे उन बातों की याद नहीं थी। अपने बचपन के बारे में जानने के बाद उसके मस्तिष्क में अपने अतीत और वर्तमान की दो स्पष्ट विरोधी छवियां उभरीं। आखिरकार उसे अपने पिता की परेशानी समझ में आई : एक समृद्ध और संपन्न परिवार के सबसे बड़े लड़के का सबसे बड़ा लड़का, बचपन में रेशम के मुलायम गद्दों में लिपटा और शानदार पार्टी में शहर के बड़े उद्योगपतियों और उनकी श्रीमतियों का आकर्षण केंद्र आज एक मजदूर मात्र था! अपने जीवन की एक अति से दूसरी अति के बीच उसने कितनी खुशी और पीड़ा महसूस की थी।

श्रम सुधार कैम्प से निकलने के बाद समस्या थी कि लिङच्युन को कहां भेजा जाए? उसका कोई घर नहीं था। इसलिए उसे फार्म पर घोड़े चराने के लिए रख लिया गया और वह चरवाहे के नाम से जाना जाने लगा।

प्रातःकालीन सूरज की किरणें अभी विलो की ऊपरी टहनियों को सहला रही थीं और घास के मैदान में घास पर जमी ओस की रुपहली बूंदें सूरज की किरणों से चमक रही थीं, तभी लिङच्युन ने बाड़े का फाटक खोला। बाड़े के जानवर एक-दूसरे को धक्का देते हुए फाटक के घास के मैदान की ओर भागने लगे। इससे चिड़ियां घास के मैदान से तीर की तरह चौंककर चीखते हुए जंगल की ओर उड़ गईं। घोड़े पर सवार घास मैदान की पगडंडियों से गुजरते हुए उसे ऐसा लग रहा था, मानो प्रकृति उसे अपनी गोद में उठा रही हो।

घास मैदान में नरकटों से भरा एक दलदल था। सभी घोड़े सिर झुकाए हुए घास की तलाश में नरकटों की झाड़ियों में घुसे। दलदल के बाहर बैठा वह केवल घोड़ों के हिनहिनाने और उनके चलने से आती छप-छप की आवाजें सुन पा रहा था। एक पहाड़ी ढलान पर लेटकर वह आकाश की तरफ देखने लगा; नीले आकाश में जिंदगी की तरह सफेद बादल विभिन्न रूप और आकार ले रहे थे। घास की पत्तियों को लहराती और दलदल के पानी को छूती हवा अपने साथ ताजी आर्द्रता, घोड़ों के पसीने की गंध और प्रकृति की महक ले आई; हवा ने उसे ताजगी और एक प्रकार की सांत्वना दी। हाथ ऊपर उठाकर उसने अपनी गर्दन

कांख की तरफ घुमाई, उसके बदन में प्रकृति की खुशबू मिल गई थी। आत्मिक ताजगी ने उसे विश्वास और स्वप्न से आपूरित किया, उसने यह महसूस किया कि वह घास मैदान की हवा में घुल-मिल गया है। उसने प्रकृति के हर अंश में स्वयं को देखा और अकेलेपन की पीड़ा से मुक्त हो गया। उसकी उदासी, भाग्य की विडंबना और हताशा विलुप्त हो गई और उनकी जगह प्रकृति और जीवन के प्रति अकस्मात उभरे प्रेम ने ले ली।

दोपहर में घोड़े एक-एक करके नरकटों की झाड़ियों से बाहर निकले, उनका पेट भरा हुआ था, अयाल लहरा रहे थे और वे अपनी पूंछों को झटककर कुकुरमाछियों और मक्खियों को भगा रहे थे। सभी घोड़े उसके पास आकर बड़े विश्वास व घनिष्टता के साथ खड़े हो गए; वे आंखें फाड़कर अपने चरवाहे को देख रहे थे। सात नंबर का चितकबरा घोड़ा बार-बार झुंड के कमजोर घोड़ों को तंग कर रहा था, अंत में वह सौ नंबर के लंगड़े घोड़े को दांत काटने और सताने लगा। सौ नंबर लंगड़े घोड़े से बर्दाश्त नहीं हुआ, उसने भी पलटकर अपनी लंगड़ी टांग से दुलत्ती मारी। सात नंबर घोड़ा पीछे लौटा और किसी बदमाश बच्चे की तरह अपनी गलती छिपाने के लिए सिर उठाकर झुंड के बीच दौड़ने और खुर से मिट्टी उड़ाने लगा। इसी समय लिङच्युन उठा और उसने दो-तीन बार चाबुक फटकारा। सभी घोड़ों के कान खड़े हो गए और उन्होंने भर्त्सना भरी नजरों से सात नंबर घोड़े को देखा। सात नंबर घोड़ा डांट खाए स्कूली लड़के की तरह चुपचाप खड़ा था। वह घुटने भर दलदल में खड़ा मुंह ऐंठता हुआ अपने अगले लंबे दांतों को कटकटा रहा था। ऐसे समय में लिङच्युन को महसूस हुआ कि वह घोड़ों का साधारण चरवाहा नहीं है, बल्कि परीकथाओं में वर्णित दैवी शक्ति और मानव मेधा से संपन्न अलौकिक जानवरों का साथी राजकुमार है।

दोपहर की तेज धूप थी। पहाड़ी की तलहटी में बादलों की छाया धीरे-धीरे सरक रही थी। गर्मी से परेशान जल-पक्षियों का एक झुंड दिखाई पड़ा। चहचहाते हुए जल-पक्षियों का झुंड नरकटों में जा घुसा।

इस इलाके में न केवल भेड़ों व जानवरों को जीवन प्रदान करने वाली घास मैदान की हवा थी, बल्कि हरेभरे पहाड़ों और नीली दरियाओं की अनुपम सुंदरता भी थी। उसके अनुभवों के सीमित क्षेत्र में "मातृभूमि" जैसी अमूर्त धारणा को स्रवित किया जा सकता था और इसी प्रक्रिया में उसने उसकी पूर्णता के भव्य रूप का दर्शन किया। लिङच्युन ने संतुष्टि महसूस की। कुल मिलाकर जीवन सुंदर था। प्रकृति और श्रम ने उसे बहुत कुछ दिया था, जिन्हें वह स्कूल में हासिल नहीं कर सकता था।

कभी-कभी बारिश हो जाती थी। बारिश होने से पहले काले बादल काले रेशमी पर्दे की तरह आकाश से पहाड़ी ढलानों को छूते थे। घास मैदान को नहलाती तेज किरणें सुखद सुनहरी किरणों में बदल जाती थीं। फिर हवा के थपेड़ों से काले बादल पहाड़ी ढलानों से धीरे-धीरे उतरते थे। बारिश की बड़ी बूंदें टपकने से पहले घास मैदान पर राख के रंग का कुहासा-सा छा जाता था। तूफान आने के पहले लिङच्युन को अपने घोड़ों को हांककर किसी जंगल में शरण लेनी पड़ती थी। घोड़े पर सवार अपना चाबुक झटकारता हवा के झोंके के विपरीत वह घोड़े को सरपट दौड़ाता। हवा के झोंके से उसकी फटी कमीज डैनों की तरह

लहराने लगती थी। वह घोड़ों के झुंड में इधर-उधर उन्हें दौड़ाता और तरह-तरह की आवाजें निकालता झुंड के बिछुड़े घोड़ों को बुलाता था। ऐसे मौके पर उसे अपने अंदर प्रचण्ड शक्ति महसूस होती और उसे लगता कि वह नगण्य या तुच्छ नहीं है। इसी तरह हवा, बारिश और कीड़ों का सामना करते हुए उसने धीरे-धीरे अपना आत्मविश्वास फिर से हासिल किया।

ऐसी विपरीत स्थिति में ही विभिन्न ब्रिगेडों के चरवाहे एकत्र होते थे। बारिश से बचने के लिए उनके लिए बनी झोंपड़ी कुहासे और बारिश में लंगर डाली किसी संकरी नाव के जैसी थी। उस झोंपड़ी के अंदर ठंड और सीलन रहती थी और सस्ते तंबाकू का नीला धुंआ भरा रहता था। लिङच्युन चरवाहों के अश्लील मजाक और लतीफे सुनता था और उसे आश्चर्य होता था कि वे श्रम या जीवन के जटिल अनुभवों के बारे में बहुत कम बातें करते थे, जबकि वह जीवन और श्रम के जटिल अनुभवों से परेशान रहता था। दरअसल उनका जीवन आरंभ से ही साधारण था, शायद उनकी भी जिंदगी में मुश्किलें थीं, पर सारी बातों के बावजूद वे खुश और संतुष्ट थे। लिङच्युन के दिल में उनके प्रति श्रद्धा पैदा हुई।

एक दिन साठ वर्ष से अधिक उम्र का एक बूढ़ा चरवाहा उसके पास आया और उससे पूछा, "लोग कहते हैं कि तुम दक्षिणपंथी हो। दक्षिणपंथी का मतलब क्या होता है?"

उसने शर्म से सिर झुका लिया और धीरे से बोला, "दक्षिणपंथी... दक्षिणपंथी वे लोग होते हैं, जिन्होंने भूलें की हों।"

"दक्षिणपंथी लोग सही व्यक्ति होते हैं, उन्होंने १९५७ में सीधी-सच्ची बातें कही थीं," सातवें ब्रिगेड के एक चरवाहे ने कहा। "पढ़े-लिखे व्यक्तियों को उसी वर्ष दक्षिणपंथी कहा गया।" सातवें ब्रिगेड का वह चरवाहा मुंहफट और साफदिल था, उसे लतीफे सुनाने में बड़ा मज़ा आता था। उसे सभी "बातूनी क्वो" कहकर पुकारते थे।

"जहां तक सच्ची बात कहना 'भूल करना' या और कुछ है... तो कोई भी सच्ची बात न करे तो सब कुछ डंडे की मार से बाहर रहेगा।" बूढ़ा चरवाहा किसी सोच में डूब गया, उसने पाइप से दो-तीन कश लेने के बाद आगे कहा, "दूसरी तरफ, कार्यकर्ता होने से बेहतर है मजदूर होना। मैं लगभग सत्तर का हो गया हूं, पर मेरी आंखें अभी तक ठीक हैं, कान काम करते हैं, मेरी पीठ सीधी है और खाते वक्त मैं भुनी दाल को भी कुतर या चबा सकता हूं..."

बातूनी क्वो ने मुस्कराकर कहा, "इसका मतलब तुम्हारे बेटे-पोते सभी मजदूर ही होंगे।"

बूढ़े चरवाहे ने पलटकर जवाब दिया, "मजदूर होने में आखिर क्या बुराई है? यदि तुम शारीरिक श्रम नहीं करोगे तो तुम्हारी जिंदगी तबाह हो जाएगी, अधिकारी बनना और शिक्षा प्राप्त करना तो दूर रहा।..."

इस तरह की सरल व सीधी-सादी बातचीत में लिङच्युन को इंद्रधनुष देखने-सी खुशी होती थी। वह आह्लादित हो उठता था। वह एक साधारण आदमी बनना और अपने साथी मजदूरों का संतोष प्राप्त करना चाहता था।

लंबे समय तक शारीरिक श्रम करने और प्रकृति व मनुष्य के बीच के स्वाभाविक उतार-चढ़ाव से धीरे-धीरे लिङच्युन ने जीने का एक तरीका अपना लिया। इस नए जीवन ने उसकी दैनिक जरूरतों के अनुसार उसे ढाला। समय बीतने के साथ उसका अतीत एक अस्पष्ट स्वप्न की

तरह रह गया या फिर किसी और के बारे में पढ़ी कहानी के समान हो गया। जवानी के दिनों से बिलकुल अलग तरह की नयी जिंदगी से उसकी युवाकाल की स्मृतियां भी धुंधली होती चली गईं। शहर में बिताई जवानी के दौर की जिंदगी माया और भ्रम तथा देहात की जिंदगी ही एकमात्र ठोस सच्चाई लगने लगी।

अंततः वह न केवल स्थानीय जीवन का आदी हो गया, बल्कि कहीं बाहर अब उसका मन भी नहीं लगता था। वह एक देहाती चरवाहा हो गया था।

"सांस्कृतिक क्रांति" के आरंभ होने के समय तक स्थानीय लोग लिङच्युन के अतीत के बारे में भूल चुके थे। क्रांति की उग्र मंजिल में कुछ लोगों ने उसके दक्षिणपंथी होने की याद दिलाई। लिङच्युन की फिर से लोगों के सामने भर्त्सना की जाने वाली थी। उस समय विभिन्न ब्रिगेडों के चरवाहे झोंपड़ी के अंदर बहस के लिए एकत्र हुए और उन्होंने फैसला किया कि चुपचाप बैठें रहने से कुछ नहीं होगा। फार्म के नेताओं की विदाई के बाद उन्होंने अपने जानवरों को एकत्र किया और पहाड़ी इलाके के गर्मी के घास मैदान की तरफ जाने के लिए तैयार हुए। लिङच्युन को भी अपने घोड़ों के साथ जाना था। उस समय क्रांतिकारी जनता का कोई भी सदस्य लिङच्युन की जगह काम करना नहीं चाहता था, क्योंकि वहां से महीनों लौटना संभव नहीं होता था। दो चरवाहों ने घोड़े पर सामान लादने में लिङच्युन की मदद की। घोड़े पर सवार सभी चरवाहे हिचकोले खाते उस अव्यवस्थित जगह को छोड़कर चले गए, जहां नई मुश्किलें पैदा होने वाली थीं।

चरवाहे जैसे ही घास मैदान की पगडंडियों में पहुंचे, उनमें से एक-दो ने खुशी से चिल्लाकर कहा, "चलो जान बची! अब हम पहाड़ियों में जा रहे हैं, अब वहां दोष ढूंढ़ने वाले कुछ भी करें, हमें क्या?" चरवाहों के शोर के कोरस के साथ एक सीटी जैसी मर्माहत ध्वनि मिश्रित होकर प्रतिध्वनित हो रही थी और घोड़ों के सरपट भागने के कारण उनके खुरों से उड़ती धूल का पीला बादल छा रहा था। सामने दूर आर्द्र घास मैदान थे... लिङच्युन के दिल में इन दिनों की याद अमिट रूप से अंकित हो गई थी; वह हमेशा इन दिनों की याद कर भावुक हो जाता था।

इस जगह से उसकी खुशियां और परेशानियां दोनों जुड़ी हुई थीं। व्यक्तिगत अनुभव बढ़ने के साथ-साथ उसकी खुशी का अहसास भावनाओं को पार कर गया था; परेशानी और पीड़ा बड़ी मुश्किल से ही उसे छू सकती थी। धीरे-धीरे उसकी परेशानियां महत्वहीन हो गईं।

पिछले वर्ष वसंत में फार्म की प्रबंध समिति ने अचानक लिङच्युन को पहाड़ी घास मैदान से बुलाया। हाथ में टोपी लिए वह आशंकित कदमों से "राजनीतिक विभाग" लिखे कमरे में घुसा। सहायक निदेशक तुङ ने पहले उसे एक औपचारिक दस्तावेज पढ़कर सुनाया और फिर बताया कि लिङच्युन को गलती से दक्षिणपंथी ठहराया गया था तथा अब उसे सभी दोषारोपणों से मुक्त कर दिया गया है। यह सारी तैयारी उसे फार्म के स्कूल का शिक्षक बनाने के लिए की गई थी।

इस पूरी बातचीत में सहायक निदेशक तुङ गंभीर बने रहे, उनके चेहरे पर कोई भाव नहीं

था। लिङच्युन के कमरे में आने के पहले से एक मक्खी भनभना रही थी, वह उड़कर कभी दीवार पर बैठती थी तो कभी फाइलों के ऊपर सुस्ताती थी। सहायक निदेशक तुङ की आंखें मक्खी का पीछा कर रही थीं; उन्होंने एक पत्रिका मोड़ी और इस प्रयास में लगे रहे कि मक्खी को मार गिराएं।

"तुम बगल के कमरे में जाओ और मिस फान से अपने स्थानान्तरण का कागज ले लो। कल स्कूल में जाना है।" मक्खी आकर उनकी मेज पर बैठी। उन्होंने पत्रिका से उसे मारा, पर वह चतुराई से एक तरफ निकल गई। सहायक निदेशक तुङ निराश व निढाल होकर अपनी कुर्सी पर बैठ गए। "हां, अब अपना काम मन लगाकर करो और ख्याल रखना कि आइंदा कोई भूल न हो बस!"

इस घटना की आकस्मिकता ने लिङच्युन को बिजली के झटके की तरह स्पंदित कर दिया। वह भावशून्य सा हो गया। अपनी परिस्थिति में वह सचमुच राष्ट्र की राजनीति के संदर्भ में दोषारोपणों से मुक्ति का अर्थ नहीं समझ सका। उसकी समझ में यह भी नहीं आया कि इससे उसके अपने जीवन में क्या मूलभूत परिवर्तन आएंगे। फिर भी अपनी सहज अनुभूति से उसे लगा कि अच्छे दिन आने वाले हैं। रक्त के साथ प्रवाहित हो रहे अल्कोहल की तरह खुशी के अहसास ने उसकी भावशून्यता तोड़ी और अजीब उत्साह का संचार किया। उसका गला सूख गया और पूरा बदन कांपने लगा। आखिकार वह अपने आंसुओं को न रोक सका, उसके दिल से आ रही गहरी सिसकियों की आवाज किसी पहाड़ी में प्रतिध्वनित होती आवाज-सी जान पड़ी। इस दृश्य ने गंभीर और भावरहित सहायक निदेशक तुङ को भी भावुक बना दिया, उन्होंने हाथ बढ़ाकर लिङच्युन को सहारा दिया। तुङ का हाथ अपने हाथ में लेने के बाद भविष्य के प्रति उसकी थोड़ी आशा बंधी।

इस तरह उसने फिर से नीला माओ सूट पहनकर हाथ में खड़िया और नोटबुक लिये स्कूल में प्रवेश किया। उसने अपने बाईस वर्ष पुराने सपने का नवीकरण किया।

फार्म के किसी भी मजदूर की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी। उनके बच्चे फटे चिथड़े पहनते थे और क्लास में पसीना और धूल की गंध तथा सूर्य-विरंजित शुष्कता भरी रहती थी। साधारण और बेढंगे डेस्कों के पीछे बैठे बच्चों ने आंखें फाड़कर लिङच्युन को आश्चर्य से देखा; उन्हें यह नहीं मालूम था कि उनका शिक्षक कुछ दिनों पहले तक एक चरवाहा मात्र था। पर कुछ ही दिनों के बाद उसने बच्चों का दिल जीत लिया। उसने काम में कोई विशेष योगदान नहीं किया। उसने यह भी कल्पना करने का साहस नहीं किया कि वह "चार आधुनिकीकरण" या समाजवाद की सेवा कर रहा है। उसने सोचा कि ऐसी यशस्वी प्रेरणाएं वीरों की होती हैं। उसने एक शिक्षक की जिम्मेदारी पूरी करने के अलावा और कुछ नहीं किया। यही करने में उसे बच्चों का प्रेम व आदर मिला। पेइचिङ आने की सुबह उसने देखा था कि सभी बच्चे सड़क के किनारे पंक्ति में खड़े उसकी घोड़ागाड़ी को जाता एकटक देख रहे थे। शायद उन्हें भी मालूम हुआ हो कि आखिर उसने अपने विदेश में रहने वाले पिता से संपर्क कर लिया और कुछ दिनों के अंदर अपने धनी पिता के साथ देश छोड़कर जा रहा है। सभी बच्चे आंसू रोके उदास भाव से उसकी घोड़ागाड़ी को जाते देखते रहे। घोड़ागाड़ी

पुल पार करके सफेद पॉपलर के जंगलों के बीच से निकली। जब तक घोड़ागाड़ी आंखों से ओझल नहीं हो गई, वे चुपचाप खड़े उसे देखते रहे...

अभी भी कभी-कभार दूर-दूर से चरवाहे लिङच्युन से मिलने आया करते थे। बूढ़ा चरवाहा अब लगभग अस्सी का हो चुका था, पर अभी भी पहले की ही तरह पैदल चल लेता था। एक दिन उसने लिङच्युन के बिस्तरे पर बैठकर एक शब्दकोश उठा लिया और उसे उलट-पलटकर देखने लगा, "बाप रे, थोड़े पढ़े-लिखे आदमी की इतनी मोटी किताब पढ़ने में तो पूरी जिंदगी लग जाएगी।"

बातूनी क्वो ने कहा, " अरे बाबा, वह शब्दकोश है। अब तुम सचमुच सठिया रहे हो।"

"हां, अब तो एक जिंदगी बीत गई। मैं तो अपनी आंखों के रहते भी अंधा ही हूं, जब कोई फिल्म देखने जाता हूं तो फिल्म व अभिनेता-अभिनेत्रियों के नाम भी नहीं पढ़ सकता। बस केवल उनके अभिनय देखता हूं।" चरवाहे ने उसांस भरी। "इन दिनों स्कूल जाना आवश्यक हो गया है। और कुछ भी करने के लिए पढ़ा-लिखा होना जरूरी है। एक बार मैं अपने जानवरों के लिए कुछ दवाइयां ले आया। जानते हो क्या हुआ? मैं उन्हे एक मलहम खिलाने जा रहा था, पर तभी अचानक मुझे महसूस हुआ कि मलहम तो जख्म और घाव पर लगाया जाता है।"

बातूनी क्वो ने लिङच्युन से कहा, "तो दक्षिणपंथी, तुम तो चरवाही के काम से मुक्त हो गए, पर हम अभी तक चिपके हुए हैं। हम तो खैर इसी काम के लिए बने हैं, पर हमारे बच्चों को तुमसे उम्मीदें हैं..."

बूढ़े चरवाहे ने सहमति प्रकट की, "बिलकुल सही, अगर तुमने मेरे पोते को इस मोटी किताब को पढ़ने लायक बना दिया तो पुराने दोस्तों के प्रति अहसान होगा।"

हालांकि इस बातचीत में सभ्य भाषा नहीं थी, फिर भी इससे उस काम के महत्व का स्पष्ट ज्ञान हुआ और वह भविष्य के प्रति अधिक आशान्वित हुआ। चरवाहों के शरीर से लिङच्युन को घोड़े के पसीने, घास और अन्य प्राकृतिक गंध मिलती थी। चरवाहों के साथ उसे जो आत्मीयता मिलती थी, वह पिता और सेक्रेटरी सुङ के साथ बिताए घुटन भरे माहौल से बिलकुल अलग थी।

चरवाहों, अपने छात्रों और अपने सहकर्मियों की नजर से उसे अपनी कीमत का पता चलता था। इससे अधिक सौभाग्य की बात और क्या हो सकती थी कि किसी को दूसरे की आंखों से अपनी कीमत का पता चले!

४

सुबह लिङच्युन ने पिता और सेक्रेटरी सुङ के साथ वाङफ़ूचिङ सड़क का एक चक्कर लगाया था। उसने महसूस किया कि वह अब शहरी जीवन के अनुकूल नहीं रह गया है। सीमेंट और एस्फाल्ट की सड़क पर चलने में उसे वह मजा नहीं आ रहा था, जो नर्म और

मुलायम घास पर चलने में आता था। वाङफूचिङ सड़क पर एक-दूसरे से अपरिचित लोगों की भीड़ अपनी चहलपहल के बावजूद उसे उदास कर गई। ऊपर से भीड़ के चौतरफा शोर ने थोड़ी ही देर में उसे थका दिया।

हस्तशिल्प की एक दुकान से लिङच्युन के पिता ने चिङतचन पोर्सलीन का एक पारंपरिक चीनी डिनर सेट खरीदा और उसके लिए छै सौ य्वान का चेक काटा। लिङच्युन ने बर्तनों की एक छोटी दुकान से अचार रखने का मर्तबान दो य्वान में खरीदा। पीली और भूरी रेखाओं की डिजाइन का छोटा व उत्कृष्ट मर्तबान हान राजवंश के मकबरे की खुदाई से प्राप्त मर्तबान लग रहा था। लिङच्युन ने उत्तरपश्चिम चीन की छोटी काउंटी में कभी इतना सुंदर घरेलू बर्तन नहीं देखा था। श्यूचि को हमेशा अचार के अच्छे मर्तबानों की खोज रहती थी और बहुत दिनों से वह एक ऐसा मर्तबान खरीदना चाहती थी। उनके घर पर अभी जो अचार का मर्तबान था, वह मिट्टी का बना था और किसी ने शेनशी प्रांत से लाकर उन्हें दिया था। श्यूचि ने इसके बदले में कई शामें बिताकर कपड़ों के जूते में तलवे लगाए थे। पुराने मर्तबान की हल्की नीली चमक गायब हो गई थी और वह देखने में एकदम भद्दा लगने लगा था।

"तुम्हारी पत्नी अवश्य ही बहुत सुंदर होगी," सेक्रेटरी सुङ ने होटल लौटने पर चुटकी लेने के अंदाज में पूछा। "उसके प्रति तुम्हारा प्यार देखकर किसी को भी ईर्ष्या हो सकती है।" सेक्रेटरी सुङ ने लाल व काली रेशमी कमीज के ऊपर "वी" गले का ढीला-ढाला हल्का बैंगनी स्वेटर और उससे मेल खाता धूसर रंग का ऊनी स्कर्ट पहन रखा था। शरद के सूर्य की गर्म किरणों ने उसके चमेली के सेंट की खुशबू बढ़ा दी थी।

"शादी हमेशा एक तरह का वचन और कर्तव्य रहा है," लिङच्युन के पिता ने कहा। अपनी कॉफी मिलाते हुए वह एक तरफ बैठ गए। शायद इस विषय ने व्यक्तिगत अनुभवों को जीवित कर दिया था; वह बड़ी सावधानी से शब्दों को चुनकर अपनी बात कह रहे थे। "कोई व्यक्ति अपनी पत्नी को प्यार करे या न करे, उसे पूरी कर्तव्यनिष्ठा के साथ अपने वचन और कर्तव्य को निभाना पड़ता है। अन्यथा उसका अन्तःकरण परेशान रहता है और वह पश्चाताप की आग में जलता रहता है। मैं तुमसे अकेले विदेश चलने के लिए नहीं कह रहा हूं, तुम निश्चित रूप से अपनी पत्नी और बच्ची को भी ले चलोगे।"

"हां तो, मिस्टर श्वी, क्या आप हमें अपने रोमांस के बारे में नहीं बताएंगे?" सेक्रेटरी सुङ ने पूछा। "आपका प्रेम प्रसंग भी अत्यंत रोचक होगा। तुम्हारे जैसे स्मार्ट युवक के पीछे अवश्य ही लड़कियां पड़ी होंगी।"

"भला मैं कैसे ऐसा रोमांस कर सकता था?" लिङच्युन ने झेंपते हुए मुस्कराकर कहा, "जब हमारी शादी हुई, हम एक-दूसरे को जानते भी नहीं थे।... रोमांस का तो सवाल ही नहीं उठता था।"

"ओह..." सेक्रेटरी सुङ ने मजाकिया लहजे में आश्चर्य व्यक्त किया, जबकि उसके पिता की समझ में न आया और उन्होंने अपने कंधे उचकाए।

लिङच्युन उन्हें अपनी शादी के बारे में बताना चाहता था, इस तरह की असामान्य शादी सामाजिक पृष्ठभूमि एक विपत्ति के समान ही थी—यह विपत्ति चीनी जनता का अपमान

भी थी। उसे डर था कि उसकी कहानी सुनकर उन्हें उन बातों पर उपहासपूर्ण हंसी आएगी, जो उसके लिए अत्यंत पवित्र थीं। लिङच्युन ने अपनी झिझक मिटाने के लिए कॉफी की चुस्कियां लीं। कॉफी के कड़वे स्वाद में एक मिठास थी, वास्तव में दोनों को अलग करना असंभव था। दोनों मिलकर ही वह विशेष स्वाद पैदा करती हैं जो कॉफी पीने वालों को कॉफी पीने के लिए अनुप्रेरित करता है। लिङच्युन के पिता और सेक्रेटरी सुङ कॉफी के स्वाद की प्रशंसा कर सकते थे, पर क्या वे जीवन की जटिलता को भी समझने में उतने ही समर्थ थे? उस अव्यवस्था के दौर में शादी भी किसी अन्य सामाजिक संस्था की तरह अपनी स्वाभाविक प्रतिष्ठा खो चुकी थी। यह महज सुविधा का विषय था। उसके पिता और सेक्रेटरी सुङ इसकी असंगति को देख सकते थे, पर इस सुविधा को सौभाग्य में कैसे बदलें, यह वे नहीं जानते थे। इसके अतिरिक्त जितनी मुश्किल उसकी परिस्थिति थी, उसे अपना अप्रत्याशित भविष्य उतना ही मूल्यवान जान पड़ता था। लिङच्युन ने सोचा कि उस दुख मगर तीव्र संवेदना को समझना किसी दूसरे के लिए मुश्किल है जिसे वह और उसकी पत्नी अपनी शादी की विचित्र परिस्थिति को याद कर महसूस करते थे।

१९७२ के वसंत की एक दोपहर को यह सब हुआ। वह दिन भी और दिनों की तरह आधा बीत चुका था। लिङच्युन घोड़ों को पानी पिलाने के बाद उन्हें बाड़े के अंदर हांककर घर लौटा था। उसने अभी अपना चाबुक रखा ही था कि बातूनी क्वो उसके कमरे में आ पहुंचा।

उसने उत्साह से पूछा, "अरे दक्षिणपंथी, क्यों, शादी करना चाहते हो? यदि हो, तो मैं तुम्हारी इच्छा पूरी कर सकता हूं, मैं तुम्हारी दुल्हन आज रात को ला सकता हूं।"

उसने क्वो की बात को मजाक समझा, इसलिए मुस्कराकर कहा, "फिर ले आओ।"

"ठीक है, मर्द की जबान एक होती है। बस तुम अपनी तैयारी कर लो। दुल्हन के कागजात तैयार हैं। मैं अभी-अभी तुम्हारे पार्टी सचिव से मिलकर आया हूं; उन्होंने कहा कि यदि तुम राजी हो तो वह कागज पर हस्ताक्षर कर देंगे। ठीक है, मैं तुम्हारे लिए सभी कागजात पूरे कर घर लौटते समय फार्म प्रबंध समिति को देता जाऊंगा। जब मैं वहां से लौटूंगा तो तुम्हारी दुल्हन भी मेरे साथ आएगी। आज की रात तुम्हारी सुहाग रात होगी।"

रात घिर आई। वह कुर्सी पर बैठा *मुक्ति सेना साहित्यिक मासिक* पढ़ रहा था, तभी बाहर से बच्चों की आवाज आई, "दक्षिणपंथी की दुल्हन आ गई! दक्षिणपंथी की दुल्हन आ गई!" दरवाजे पर दस्तक हुई और बातूनी क्वो ने पहले की ही तरह आकर कहा :

"लो, सब तय हो गया। मैं तुमसे एक घूंट शराब भी पिलाने के लिए नहीं कहूंगा, पर क्या अपनी कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए कम से कम एक ग्लास पानी नहीं दोगे? बस उतने ही से गला ठीक हो जाएगा। पूरी दोपहर इधर-उधर भागने में बीती, बस यों समझो कि मैं जमीन पर खड़ा ही नहीं था और फिर पंद्रह किलोमीटर चलकर आ रहा हूं।" लिङच्युन की बाल्टी से एक ग्लास पानी निकालकर पीने और अपनी कमीज की बांह से मुंह पोंछने के बाद उसने संतोष की सांस ली। दरवाजे के बाहर देखते हुए उसने आश्चर्य से पूछा, "अरे, तुम अंदर क्यों नहीं आईं? आओ, आ जाओ, अंदर आ जाओ! यही तुम्हारा घर है। आओ और

परिचित हो लो... यही दक्षिणपंथी है... इसी के बारे में मैंने तुम्हें बताया था। इसका असली नाम श्वी लिङच्युन है। यह बहुत अच्छा है, पर थोड़ा गरीब है। पर जो जितना गरीब होता है, वह उतना गौरवशाली होता है, समझीं!''

लिङच्युन ने भी देखा, दरवाजे के बाहर बच्चों के झुंड के आगे एक अपरिचित युवती खड़ी थी। उसने धूसर रंग का कुरता पहन रखा था और उसके हाथ में सफेद कपड़े की एक गठरी थी। वह उदास मगर सावधान नजरों से कच्ची ईंट की धूल भरी झोंपड़ी को तौल रही थी और अंदर आने की तैयारी में थी।

''नहीं... यह नहीं हो सकता!'' लिङच्युन ने चौंककर कहा। ''तुम इस हद तक आगे बढ़ गए!''

''क्यों नहीं हो सकता? तुम जैसे व्यक्ति को गंभीर होना चाहिए।'' बातूनी क्वो ने अपनी जेब से कागजों का एक पुलिंदा निकालकर खाङ पर रखा। ''सभी कागजों पर हस्ताक्षर हो चुका है। यह कानून है... कानून! समझ रहे हो न! ख्याल रखना, मैंने राजनीतिक विभाग को बताया कि तुमने घोड़ों को चराना छोड़ दिया है और मुझे कागज पर हस्ताक्षर करवाने की जिम्मेदारी सौंपी थी। यदि तुम अपनी जबान से मुकरते हो तो इससे बड़ी कृतघ्नता नहीं होगी! तुम मेरी बात समझ रहे हो न, दक्षिणपंथी?''

''नहीं, ऐसा नहीं हो सकता... नहीं! क्या ऐसा हो सकता है?'' लिङच्युन बार-बार बातूनी क्वो से एक ही सवाल पूछ रहा था, आश्चर्य और परेशानी में वह बार-बार हाथों को झटक रहा था। युवती अंदर आकर कमरे की एकमात्र कुर्सी पर बैठ गई थी। वह बिलकुल परेशान नहीं थी; वह इस तरह बेफिक्र थी जैसे उन दोनों की बातचीत का उससे कोई संबंध नहीं हो।

''यह नहीं हो सकता? तुम मुझसे वह कह रहे हो, जिसका तुम दोनों से संबंध है। तुम मुझसे जाकर किसी से पूछने के लिए क्यों कह रहे हो?'' बातूनी क्वो ने ''कानून'' खाङ पर रखा। ''ठीक है, फिर चिंता न करो! और हां अगले वर्ष जब अपने बच्चे के जन्म की खुशी मनाओगे तो मुझे शराब पिलाने के लिए बुलाना न भूलना।'' वह सीधे दरवाजे से निकला, दरवाजे के बाहर कमर पर हाथ रखकर खड़ा हो गया और वहां खड़े बच्चों को मुर्गियों की तरह भगाता हुआ बोला, ''तुम लोग क्या तमाशा देख रहे हो? क्या तुमने अपने मां-बाप की शादी नहीं देखी? जाओ, घर जाकर अपने मां-बाप से पूछो। जाओ, भागो यहां से!''

इसके बाद बातूनी क्वो चला गया।

कमरे की मद्धिम रोशनी में लिङच्युन ने छिपी नजरों से युवती को देखा। वह कहीं से भी सुंदर नहीं थी। चकत्तेदार छोटी-चपटी नाक; उसके बाल पीले थे और उनमें चमक नहीं थी तथा उसके चेहरे से उदासी झलकती थी। पता नहीं क्यों लिङच्युन उस पर गहरी दया करने लगा। उसने युवती के लिए एक ग्लास पानी काठ के बक्से पर रखा और कहा, ''पानी पी लो, काफी दूर से चलकर आई हो...''

युवती ने अपना चेहरा उठाया और उसकी मैत्रीपूर्ण आंखों को देखा। वह चुपचाप ग्लास का पानी गटक गई। पानी पीने के बाद जैसे उसकी ताकत लौटी। उसने खाङ के ऊपर मोड़कर रखी रजाई ठीक की और फिर खाङ के दूसरे किनारे से लिङच्युन की पैंट खींची। लिङच्युन

की पैंट घुटने के पास से घिस गई थी। पैंट को अपनी गोद में रखकर उसने गठरी खोली और गठरी से सुई, धागा व कपड़ों के टुकड़े निकाले। वह सिर झुकाए पैंट की सिलाई करने लगी। वह बड़े सुव्यवस्थित तरीके से काम कर रही थी और उसमें दमित उत्साह देखा जा सकता था। वह अपने व्यवहार में इस उत्साह को व्यक्त नहीं कर सकी, पर सामान को व्यवस्थित और कमरे को साफ करने के क्रम में लिङच्युन ने उसे महसूस किया। देखने में वह कमजोर युवती थी, पर थोड़ी ही देर में उसने कच्ची ईंट की झोंपड़ी को साफ-सुथरा और चमकदार बना दिया। कमरे के सामान को उठाते, संभालते और रखते समय उसकी उंगलियां इतनी कुशलता से चल रही थीं जैसे पियानो के काले सफेद पर्दों को दबा कोई मधुर राग छेड़ रही हों; और सचमुच थोड़ी देर में कच्ची ईंट की झोंपड़ी में मधुर राग प्रतिध्वनित होने लगा।

लिङच्युन ने बहुत पहले भूरे घोड़े से हुई अपनी मुलाकात याद की और उसके दिल में उदासी की एक लहर-सी उठी। उसे ऐसा महसूस हुआ कि वे एक-दूसरे को लंबे समय से जानते हैं और वह वर्षों से उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। वह अपूर्व आनन्द में अचानक उसकी बगल में बैठ गया। उसने अपना चेहरा हाथों से ढक लिया। वह सौभाग्य के आगमन को स्वीकार करने से डर रहा था। वह डर रहा था कि कहीं यह सौभाग्य अपने साथ नयी मुसीबतें न ले आए। अपनी हथेलियों के अंधेरे को देखते हुए वह इस नयी भावना को पकड़ने की कोशिश कर रहा था।

युवती ने तब तक सुई-धागा बगल में रख दिया था। युवती का अन्तःकरण कह रहा था कि इस् आदमी पर वह जिंदगीभर निर्भर रह सकती और विश्वास कर सकती है। वह उसे बिलकुल अपरिचित नहीं समझ रही थी। अकस्मात युवती ने उसके झुके कंधे पर अपना हाथ धीरे से रखा। खाङ पर बैठकर उन दोनों ने पौ फटने तक बातचीत की।

श्यूचि "समृद्ध भूमि" के नाम से मशहूर सछ्वान प्रांत की रहने वाली थी, पर उन वर्षों में ऐसा अकाल पड़ा था कि लोगों को खाने के लिए शकरकंद तक नहीं मिल पाता था। मजबूरी में भूखे किसानों को अपनी समृद्ध भूमि छोड़नी पड़ी। युवतियों की स्थिति थोड़ी बेहतर थी, वे बगल के प्रांतों के युवकों से शादी कर घर बसा सकती थीं। किसी गांव में एक युवती की शादी हो जाने पर वह युवती अपने गांव की अन्य युवतियों के लिए भी वर ढूंढ़ने का प्रयास करती थी। इस तरह एक-एक करके युवतियों का दल "पहाड़ और नदियों के 'पुराने' सछ्वान" को छोड़ अपने साथ एक छोटी गठरी लिये अन्य जगहों में शरण ले रहा था। उन्होंने याङफिङ दर्रे तथा छिङलिङ पहाड़ को पार किया और भविष्य की तलाश में असंख्य छोटी-बड़ी सुरंगों को पार कर शैनशी, कानसू, छिङहाए, निङश्या या शिनच्याङ पहुंचीं। जो परिवार कुछ खर्च करने की स्थिति में थे, उन्होंने अपने घर की युवतियों के लिए रेलगाड़ी के टिकट खरीद दिए, जबकि गरीब परिवार की युवतियों को चुपचाप रेलगाड़ी का सहारा लेना पड़ा। उनकी गठरियों में कपड़े के टुकड़ों के अलावा छोटा गोल आईना और एक काठ की कंघी होती थी। शृंगार की इन दो मूलभूत सामग्रियों के सहारे अपनी सुंदरता को ताजा बनाए रखकर वे जिंदगी का जुआ खेल रही थीं। वे सौभाग्यपूर्ण भविष्य भी जीत सकती थीं और अपना सब कुछ हार भी सकती थीं...

इस प्रकार की शादी लिङच्युन के इलाके के फार्मों में आरंभ से ही प्रचलित थी। स्थानीय लड़कियों से शादी करने के लिए पर्याप्त दहेज जुटाने में असमर्थ कुंआरे सछ्वान की लड़कियों की खोज में रहते थे। सछ्वान प्रान्त की औरतें अपने गांव की अन्य शादी लायक युवतियों का जोड़ा ढूंढ़ने में लगी रहतीं। किसी कुंआरे के मिलने पर वे ऐसी युवतियों की फहरिस्त सामने रख देती थीं, वह पत्र लिखकर किसी युवती को बुला लेती थीं और युवती के आने के साथ ही उसकी शादी हो जाती थी।

श्यूचि को भी ऐसे ही पत्र लिखकर बुलाया गया था। वह सातवें ब्रिगेड के एक ट्रैक्टर ऑपरेटर युवक की खोज में आई थी। टेढ़े-मेढ़े लंबे रास्ते से वह थोड़ी देर से फार्म पर अपनी पहचान का पत्र लिए पहुंची। उसके पहुंचने के तीन दिन पहले ट्रैक्टर दुर्घटना में वह युवक दब गया था और थोड़ी देर के बाद उसकी मृत्यु हो गई थी। श्यूचि कब्रिस्तान में अंतिम श्रद्धा व्यक्त करने भी नहीं गई। उस पर किसी की कृतज्ञता का ऋण नहीं था, इसलिए उसने वहां जाने की जरूरत नहीं समझी।

श्यूचि को अपने गांव की एक औरत के साथ रहने में अच्छा नहीं लग रहा था, क्योंकि उसकी परिचित औरत के घर की हालत अच्छी नहीं थी। उसका पति विकलांग था और शादी के दूसरे साल उन्हें एक बच्चा भी हुआ था तथा उसकी भी देखभाल करनी पड़ती थी। श्यूचि हमेशा सातवें ब्रिगेड के बाड़े के बाहर निराश बैठी अपनी छाया को खिसकती देखती रहती। उसका समय ऐसे ही बीत रहा था।

बातूनी क्वो हर दोपहर को घोड़ों को पानी पिलाने के लिए बाड़े में आता था। एक दिन उसे श्यूचि के बारे में पता चला और वह घोड़ों को घास मैदान में चरते छोड़कर उसकी मदद के लिए दरवाजे-दरवाजे भटका। उस समय सातवें ब्रिगेड में केवल तीन शादी लायक कुंआरे थे। वे तीनों एक-एक करके बाड़े के पास श्यूचि को देखने गए, पर उसे देखने के बाद कोई भी उस नाटी और मरियल लड़की से शादी करने को तैयार नहीं हुआ। बातूनी क्वो को तब लिङच्युन का ख्याल आया; लिङच्युन की उम्र तीस से अधिक हो चुकी थी।

तो इस तरह लिङच्युन की शादी हुई। भला इसमें रोमांस की कोई संभावना बनती थी?

"दक्षिणपंथी की शादी हो गई!" उसके उत्पादक ब्रिगेड में यह एक महत्वपूर्ण समाचार बन गया। "क्रांति को जीवन में उतारो" का उपदेश सुनते-सुनते थके लोगों को गुटबन्दी की लड़ाई से थोड़ी फुर्सत मिली और उन सबने "दक्षिणपंथी तत्व" के प्रति सहानुभूति प्रकट की। वह किसी भी गुट में नहीं था; उसने कभी किसी को क्षति नहीं पहुंचाई थी और केवल "उत्पादन बढ़ाने" की बाबत ही सोचता था। मनुष्य आखिरकार अच्छे स्वभाव का होता है, दूसरों के स्नेह और प्रेम के बदले में लिङच्युन ने भी अपना प्रेम व्यक्त किया।

किसी ने खाना पकाने के बर्तन दिए, किसी ने अनाज और कुछ ने कपड़े खरीदने का कूपन भेंट किया। एक पशुचिकित्सक ने तो सभी पड़ोसी घरों से पांच-पांच च्याओ का चंदा लिया और लिङच्युन को भेंट किया। यहां तक कि "सांस्कृतिक क्रांति" के आरंभ के बाद पहली बार पार्टी शाखा की एक सभा में सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित किया गया — नियम

के अनुसार नवदंपति को दी जाने वाली तीन दिन की छुट्टी लिङच्युन को दी गई। उस अंधेरे दौर में भी लोग आखिरकार अच्छे थे!

दूसरों की सहायता और सहानुभूति पर निर्भर रहकर नवदंपति ने घर बसाना आरंभ किया।

श्यूचि आरंभ से ही आशावादी और परिश्रमी महिला थी। वह गांव के पास के कस्बे के प्राइमरी स्कूल में दो वर्ष तक पढ़ी थी और काव्यात्मक भाषा में जीवन के अपने अनुभवों को व्यक्त नहीं कर सकती थी। उसके लिङच्युन के घर आने के दूसरे दिन शाम को सिनेमा ब्रिगेड ने "१९१८ में लेनिन" फिल्म अनाज सुखाने के अहाते में दिखाई थी। उसी दिन से सिनेमा में बोली गई एक पंक्ति उसकी जबान पर चढ़ गई, "यदि हमें रोटी मिल सकती है तो दूध भी मिलना चाहिए।" वह हमेशा मुस्कराते हुए यह पंक्ति दोहराया करती थी। पतली भौंहों और छोटी आंखों वाली श्यूचि जब हंसती थी तो ऐसा लगता था मानो दूज के दो चांद उसके चेहरे के आकाश में खिले हों। आंखों की सुंदरता गालों में पड़ने वाले गड्ढे के साथ मिलकर श्यूचि का विशेष सौंदर्य प्रकट करती थी।

लिङच्युन दिनभर घोड़ों को चराने के सिलसिले में घर से बाहर रहता था और वह हर दिन दोपहर की तेज धूप में मिट्टी के लौंदे से कच्ची ईंटें बनाकर सुखाती थी। फिर उसने एक-पहिया ठेले से ईंटें ढोने का काम किया और अपने मकान के सामने एक आंगन घेरने के लिए तीन तरफ से चारदीवारी की भी जोड़ाई की। इस तरह चीन के ९६,००,००० वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल में से उसने अपने उपयोग के लिए अठारह वर्ग मीटर जमीन घेर ली। उसने एक बार कहा, "मेरे गांव में हर घर के आसपास कुछ पेड़ अवश्य होते हैं। यह भी कोई घर है? दरवाजे से निकलो तो सामने खुला आकाश दिखाई पड़ता है!" इसके बाद वह जंगल से चावल के कटोरे के घेरे के जितने बड़े सफेद पॉपलर के दो पौधे ले आई। पौधे लाने में उसने आश्चर्यजनक साहस का परिचय दिया। घर लाकर उसने पौधों को घर के दोनों तरफ रोपा।

अहाता पूरी तरह से घेरने के बाद उसने कुछ पालतू जीव पाले। उसने मुर्गी, बत्तख, हंस और खरगोश पाले और जब कबूतरों को पालना आरंभ किया तो सभी उसे "सशस्त्र सेना की कमांडर" कहकर बुलाने लगे। राज्य संचालित फार्म में निजी तौर पर सुअरों को पालने की अनुमति नहीं थी, यह श्यूचि की भावी योजना को पूरी करने में सबसे बड़ी बाधक थी। रात में लिङच्युन की बगल में लेटी वह प्रायः अपना सपना सुनाती कि उसके सुअर कितने गोल-मटोल हो गए हैं।

जिस सुदूर फार्म में वे रहते थे, वह किसी जमे पानी के तालाब की तरह था। नेतृ वर्ग ने वहां न तो कभी सही नीतियों को लागू करने की कोशिश की और न ही कभी गलत नीतियों के सकारात्मक पक्षों को अपनाया। सारा दबाव केवल "पूंजीवाद के अवशेषों को नष्ट करो" पर रहता था, पर श्यूचि उनके लिए किसी जिद्दी घास की तरह चट्टान की दरार से उग आई थी। उसके पालतू जीव इतनी तेजी से बढ़े जैसे कोई जादूगर अपना करिश्मा दिखा रहा हो। "यदि हमें रोटी मिल सकती है तो हमें दूध भी मिलना चाहिए।" और सचमुच साल बीतते न बीतते उनके जीवन में महान परिवर्तन आ गया। हालांकि उन्हें अभी भी कम ही वेतन मिलता था, पर वे समृद्ध जीवन बिताने में सक्षम थे। श्यूचि में समाज की मुख्य धारा की

विपरीत दिशा में जाने की पर्याप्त क्षमता थी। दूसरे लोग जब कि कम्युनिज्म में संक्रमण का शोर मचा रहे थे, उसने अपने अहाते में प्राकृतिक अर्थव्यवस्था के लिए बाजार की अर्थव्यवस्था को पुनर्स्थापित किया। श्यूचि ने अपने हाथों से सब कुछ तैयार किया था। वह जब काम से घर लौटती थी तो मुर्गी, बत्तख, हंस और कबूतर उसके पीछे-पीछे लौटते थे। नन्हीं बेटी छिङछिङ उसकी पीठ पर बंधी होती थी, कदमों के आगे-पीछे मुर्गी, बत्तख, हंस और कंधे पर कबूतर बैठा होता था। लकड़ी और पुआल से उसका चूल्हा सुलगता रहा और लोहे की देगची में पानी उबलता रहा। हालांकि श्यूचि ने कभी "कार्य विधि अनुसन्धान" नहीं पढ़ा था, पर वह हर काम बड़े संयत और व्यवस्थित तरीके से करती थी, मानो वह सहस्रबुद्ध हो।

कभी शकरकंद के सहारे जीवित रहने वाली औरत ने लिङच्युन की जिंदगी में ऐसी खुशी ला दी, जिसे उसने इसके पहले कभी महसूस नहीं किया था। श्यूचि के प्रेम ने उसकी जिंदगी की जड़ें वहां की जमीन में और गहराई तक पहुंचा दीं; इन जड़ों को खाद-पानी उनका श्रम देता था। शादी ने उस जगह के प्रति लिङच्युन के प्रेम को बढ़ाया और उसे शारीरिक श्रम करने वाले व्यक्ति की सादगी, शुद्धता और उपयुक्तता की स्पष्ट समझदारी दी। वर्षों से जिस खुशी और संतोष की तलाश में वह बेहाल था, वह उसे मिल गई थी।

जिस दिन उपनिदेशक तुङ ने दोषारोपण से लिङच्युन की मुक्ति की घोषणा की और जरूरी कागजात पर हस्ताक्षर किए, उसी दिन लिङच्युन नयी नीति के निर्देशों के अनुसार वित्त विभाग से मिला पांच सौ य्वान का अनुदान घर ले आया। जब उसने श्यूचि को आरंभ से अंत तक सारा किस्सा सुनाया, तो उसकी आंखें आश्चर्य में खुली रह गईं। अपने गंदे हाथों को एप्रन से पोंछकर उसने ताजा नोटों की गिनती की।

"श्यूचि, अब हम भी दूसरों की तरह जी सकेंगे!" कमरे में हाथ-मुंह धोते हुए लिङच्युन ने कहा। श्यूचि अभी तक खाने की मेज के आसपास मंडरा रही थी। वह बहुत खुश थी। लिङच्युन ने फिर से कहा, "तुम कुछ बोल क्यों नहीं रही हो? क्या तुम्हारी जीभ को बिल्ली खा गई है?"

"कैसे संभालकर रखोगे इन्हें?" श्यूचि ने मुस्कराकर कहा। "ये कितने ज्यादा हैं, मैं तब से गिने जा रही हूं और ये..."

"अब बस भी करो! तुम तो... यों पैसे की कीमत भी क्या है? सबसे खुशी की बात यह है कि मेरे ऊपर लगा राजनीतिक दाग मिट गया..."

"राजनीतिक दाग मिट गया, मेरी बला से! मेरे विचार से तुम आज भी वही पुराने लिङच्युन हो। वे तुम्हें दक्षिणपंथी कहते रहे और आधी जिंदगी के बाद उन्होंने स्वीकार किया कि उनसे गलती हुई; अपनी गलती स्वीकार करने के बाद भी उन्होंने तुमसे कहा कि आगे से और कोई गलती न करना! पहले हमें दोषी ठहराया गया और आगे भी ठहराया जा सकता है! इसलिए इससे फर्क नहीं पड़ता। अब हमें पैसे मिले हैं, हम अपने आराम की कुछ चीजें खरीदेंगे। मुझे इस तरह तंग मत करो... जरा मुझे पहले इनकी गिनती कर लेने दो।"

हां, उससे पंद्रह साल छोटी पत्नी ने उसे कभी किसी दूसरे से भिन्न किस्म का नहीं समझा। वह गांव की साधारण महिला थी। वह दक्षिणपंथी है या नहीं, इस पर बहस करने के लिए

दक्षिणपंथी होने का मतलब मालूम होना चाहिए था, यह बात उसके छोटे दिमाग में कभी नहीं घुसी। वह केवल इतना जानती थी कि वह अच्छा और ईमानदार आदमी है... और यही उसके लिए काफी था। काम के समय वह प्रायः अपने साथ काम करने वाली औरतों से इस संबध में बताती, "छिङछिङ के पापा बड़े अच्छे हैं, कोई लाख बुरा करे, वह कुछ नहीं बोलेंगे। ...कोई उन्हें तीन लात लगा जाए, तब भी चूं तक नहीं करेंगे। यहां तक कि भेड़िया भी उनका पीछा कर रहा हो तो उन्हें फिक्र नहीं होती। यदि ऐसे आदमी का कोई नाजायज फायदा उठाता है तो वह पाप करता है, निश्चित ही उसकी आने वाली पीढ़ी को इसका फल भुगतना पड़ेगा।"

हां, श्यूचि को पैसों से प्रेम था, कभी-कभी किसी मौके पर पैसे न खर्च कर पाने से उसे दुख होता था। पांच सौ य्वान की छोटी रकम से भी वह इतनी संतुष्ट दिख पड़ी कि नोट गिनते समय उसकी उंगलियां कांपने लगीं और आंखों में खुशी के आंसू आ गए। मगर जब उसे पता चला कि लिङच्युन के पिता धनी "विदेशी सेठ" हैं, उसने "पैसे" का उल्लेख नहीं किया। उसने लिङच्युन से सिर्फ इतना आग्रह किया कि वह अपने पिता के लिए पांच मसालों की चाय में उबले कुछ अंडे ले जाए। वह सात वर्षीया छिङछिङ को समझाते समय हमेशा कहती, "यदि तुमने मेहनत से पैसे कमाए हों तो उन्हें खर्च करने में मजा आता है; तब तुम आराम से पैसे खर्च कर सकती हो। जब मैं नमक खरीदती हूं तो मुझे पता होता है कि अंडे बेचने से मिले पैसों से नमक खरीद रही हूं, जब मैं मिर्च खरीदती हूं तो मुझे पता होता है कि फसल काटने से मिले पैसों से मिर्च खरीद रही हूं और जब मैं तुम्हारी किताबें खरीदती हूं तो मुझे पता होता है कि अतिरिक्त काम कर मैं ये पैसे ले आई हूं..." श्यूचि बिना किसी नैतिक उपदेश या ऊंची दार्शनिक अवधारणाओं के अपनी बात कहती। फिर भी इस सहज और स्पष्ट सलाह का असर परिवार के सबसे छोटे सदस्य पर पड़ता था और वह अनेक बातें समझने लगी थी : शारीरिक श्रम उत्कृष्ट कार्य है; केवल श्रम से मिले पैसे से ही सच्ची खुशी मिलती है और शोषण से या मुफ्त में मिला पैसा अपमान है!

श्यूचि को गाना नहीं आता था। जब छिङछिङ एक महीने की हुई थी, तब तीनों काउंटी केंद्र गए थे और वहां के एकमात्र स्टूडियो में उन्होंने पूरे परिवार की तस्वीर खिंचवाई थी। आइसक्रीम बेचने वाले गलियों में घूमते हुए आवाज लगाकर अपना सामान बेच रहे थे "आइसक्रीम!" बाद में "आइसक्रीम" ही एकमात्र ऐसी लोरी थी, जो श्यूचि सुना सकती थी। छिङछिङ को सुलाते समय वह इस आवाज की नकल करने की भरपूर कोशिश करती। श्यूचि की आवाज एकरस व दूर से आती लगती थी, फिर भी छिङछिङ सो जाती थी और बगल में बैठकर पढ़ते लिङच्युन को भी वह आवाज मुग्ध कर देती थी, वह आदिम सुख महसूस करता। ऐसे क्षणों में वह शुद्ध सौंदर्य का आनंद उठाता।

पेइचिङ के वाङफूचिङ में भी आइसक्रीम बेचने वाले दिखे। पर उसे बेचने के लिए उन्होंने आवाज नहीं लगाई। वे भावहीन चेहरा लिए दूकानों में बैठे थे। कितनी विचित्र भिन्नता थी! लिङच्युन ने उस मधुर लोरी की कमी सपने की तरह महसूस की, उसने श्यूचि की आशापूर्ण

और गालों में गड्ढे पड़ने वाली मुस्कान की भी कमी महसूस की और उसकी बात "यदि हमें रोटी मिल सकती है तो हमें दूध भी मिलना चाहिए" भी याद की।

नहीं, वह शहर में नहीं रह सकता। वह तुरंत लौटना चाहता था। विपत्ति में उसकी मदद करने वाले लोग गांव में थे और अब उन्हें मदद की जरूरत थी। जिस जमीन में उसका पसीना बहा था, वह गांव में था और इस समय उसका पसीना खेतों में लहलहा रहा था। विपरीत परिस्थिति में उसका साथ निभाने वाली उसकी पत्नी गांव में थी और उसकी प्यारी बेटी भी तो वहीं थी। उसका सब कुछ गांव में था। उसकी जिंदगी की जड़ें गांव में थीं!

आखिरकार लिङच्युन लौट गया। वह अपने परिचित काउंटी केंद्र में पहुंचा। बस स्टेशन के सामने काउंटी केंद्र की एकमात्र पक्की सड़क थी, जिस पर हमेशा धूल की एक परत जमी रहती थी। हवा चलने पर सड़क की धूल दूकानों, बैंकों और डाकघर के दरवाजे के आस-पास मंडराती थी। सड़क के दूसरे किनारे रुई धुनने की मशीन अभी भी अपनी एकरूप आवाज के साथ चल रही थी, मानो उसके जाने के दिन से आज तक बंद ही नहीं हुई हो। बस स्टेशन के बाहर खमीरदार मीठा चावल, बठूरा और तरबूज के बीज बेचने वाले किसानों की भीड़ अभी तक वैसी ही थी। सड़क के दोनों तरफ पूर्व से पश्चिम तक कच्ची ईंट की झोंपड़ियां थीं, कुछ झोंपड़ियों के दरवाजे के ऊपर पुरानी शैली का नक्काशीदार सरदल लगा हुआ था। नए थिएटर का निर्माण किया जा रहा था; इसके चारों तरफ मजदूरों की भीड़ थी। वे अपने-अपने काम में व्यस्त थे।

पूरी दोपहर उसने महसूस किया कि वह पैराशूट से लटका हुआ था और अब उसके पांव ठोस जमीन पर पड़े हैं। वह इस जगह को तमाम कमियों के साथ अपनी जिंदगी की तरह प्यार करता था, जिसमें अतीत की परेशानी भी शामिल थी।

झुटपुटे के समय उसकी घोड़ागाड़ी उत्पादन ब्रिगेड से गुजरी जहां पहले वह रहा करता था। पश्चिमी पहाड़ियों से आ रही शाम के सूरज की किरणें तिरछी पड़ रही थीं, गांव और गांव के निवासी शाम की सुनहरी किरणों में नहा रहे थे। दूर से उसे अपने घर के आगे लगे सफेद पॉपलर के पेड़ ही दिखाई पड़ रहे थे। पॉपलर के पेड़ अब घर की छत से बड़े हो गए थे। दोनों पेड़ इस तरह खामोश खड़े थे जैसे तन्मय होकर उसे आता देख रहे हों।

बाड़े के जानवर शाम को घर लौट रहे थे और शायद उन्होंने लिङच्युन को पहचान लिया था। वे सड़क के दोनों किनारे खड़े होकर आंखें फाड़े उसे देख रहे थे। घोड़ागाड़ी के काफी आगे निकल जाने के बाद ही धीरे से सिर झुकाकर वे अपने बाड़े की तरफ मुड़े।

लिङच्युन का दिल उत्साह से भर गया। उसने पेइचिङ में पिता से हुई आखिरी बातचीत याद की। उस शाम दोनों आमने-सामने सोफे पर बैठे थे। सिल्क का नाइट सूट पहने पिता सोफे पर पीठ टिका कर बैठे थे, उनके चेहरे पर गहरी उदासी थी।

"तुम इतनी जल्दी जा रहे हो?" पाइप से कश लेकर धुआं छोड़ते हुए उन्होंने कहा।

"हां, परीक्षा होने वाली है, स्कूल में सारी व्यवस्था करनी होगी।"

थोड़ी देर चुप रहने के बाद उसके पिता ने कहा, "यहां आकर मैं तुमसे मिल सका, यह मेरे लिए एक खुशी का मौका था।" हालांकि उन्होंने शांत रहने की कोशिश की, पर बोलते समय उनके होंठ कांपने लगे। "तुम बहुत परिपक्व हो गए हो। शायद तुम्हारे अडिग विश्वास ने तुम्हें परिपक्व बना दिया है। दरअसल मनुष्य इसी विश्वास की खोज में रहता है। साफ कहूं, मैंने भी इस विश्वास की तलाश की, पर धर्म किसी व्यक्ति को सच्ची ..." उन्होंने थके व्यक्ति की तरह अपना एक हाथ हिलाया। विषय बदलते हुए उन्होंने आगे कहा, "पिछले वर्ष जब मैं पेरिस में था, मैंने 'मोपासां की कहानियां' पढ़ीं। उसमें एक कहानी अत्यंत दिलचस्प थी। यह राष्ट्रीय सभा के एक सदस्य और उसके बेटे के पुनर्मिलन की कहानी थी। अपने बेटे को उसने अपने युवाकाल में त्याग दिया था। वह लड़का बाद में बड़ा मूर्ख साबित हुआ। पहली बार इस कहानी को पढ़ने के बाद मैं रातभर नहीं सो सका। बाद में प्रायः तुम्हारी परेशान छवि मेरे सामने उभरती थी। अब तुम्हें देखने के बाद मेरी चिंता समाप्त हो गई है। तुमने सचमुच मुझे आश्चर्यचकित कर दिया; तुम तो एक... तुम तो एक..."

उसके पिता ने यह नहीं बताया कि लिङच्युन क्या हो गया है। फिर भी लिङच्युन ने अपने पिता की आंखों में संतोष की चमक देखी। उसने महसूस किया कि दोनों इस पुनर्मिलन और विदाई से संतुष्ट हैं। दोनों की इच्छाएं पूरी हो गईं थीं। उसके पिता की चिंता और ग्लानि समाप्त हो गई थी। लिङच्युन ने निर्णय के नाजुक मौके पर अपनी जिंदगी की समीक्षा की और जीवन से एक विशेष शिक्षा ली।

सूरज पश्चिमी पहाड़ी के पीछे छिपा था। सूर्य की अंतिम रक्तिम सुनहरी किरणें पहाड़ी के ऊपर आकाश में तैरते बहुरंगी बादलों पर पड़ रही थीं। बादलों से किरणें परावर्तित होकर पहाड़ की तलहटी में फैले घास के मैदान और गांव को आलोकित कर रही थीं। धीरे-धीरे शाम की मद्धिम किरणें शाम के झुटपुटे की गोद में समा रही थीं। स्कूल के पास आने पर उसे खेल का मैदान दिखलाई पड़ा। सुनहरी किरणों में नहाते गुलाबी फूलों के पेड़ों के बीच खेल का मैदान झील की तरह लग रहा था। शम की खुनक भरी हवा के साथ उपजी कोमल भावना ने उसे तरंगायित कर दिया।

उसने सोचा कि जब उसके पिता ने उसके अडिग विश्वास का उल्लेख किया, तब उसके पिता उसकी वर्तमान आत्मिक अवस्था को सचमुच नहीं समझ पाए थे। अनुभूतिहीन तार्किक ज्ञान खोखला होता है। कुछ पहलुओं और कुछ समय पर भावना ज्ञान से महत्वपूर्ण होती है। पिछले बीस वर्षों से अधिक समय में उसने जीवन के अनुभव से सबसे कीमती चीज शारीरिक श्रम की महत्ता हासिल की थी। सोचते-सोचते उसकी आंखों में आंसू आ गए। उसे स्वयं पर गर्व हुआ, उसने पिछले दो दशक व्यर्थ ही नहीं बिताए।

वह स्कूल के पास पहुंचा। उसके घर के सामने खड़े कुछ लोग आती घोड़ागाड़ी को देख रहे थे। श्यूचि ने सफेद एप्रन पहन रखा था। शाम की धुंधली रोशनी में उसका एप्रन तारे की तरह झिलमिला रहा था। घर के आगे खड़े लोगों ने उसे पहचान लिया और उसकी तरफ दौड़े। सबसे आगे लाल फ्रॉक में उसकी बेटी थी, उसे लगा कि उसकी तरफ लाल अंगारा आ रहा है। वह नजदीक आती जा रही थी, नजदीक... और नजदीक...

ल्यू फ़ूताओ

(१९४० -)

ल्यू फ़ूताओ का जन्म हूपेइ प्रांत की हानयाङ काउंटी में १९४० में हुआ था। १९५९ में उच्च माध्यमिक विद्यालय की पढ़ाई पूरी करने के बाद उन्होंने प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापन का कार्य किया। १९६२ में वह सेना में शामिल हुए। कुछ वर्ष तक सेना के एक अखबार के लिए रिपोर्टिंग करने के पश्चात १९७१ से उन्होंने सांस्कृतिक कार्य आरंभ किया। १९७९ में ल्यू पूर्णकालिक लेखक बने और उसी वर्ष उन्होंने चीन लेखक संघ की सदस्यता ली।

१९७२ से अब तक उनकी दस से अधिक कहानियां और गद्य रचनाएं प्रकाशित हो चुकी हैं, जिनमें "संकट की घड़ी" और "नीला ताप्ये पहाड़" उल्लेखनीय हैं। १९७८ में प्रकाशित उनकी कहानी "चश्मे" को सर्वश्रेष्ठ कहानी का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला था।

दक्षिण झील का चांद

ल्यू फ़ूताओ

१

कुछ वर्षों पहले तक दक्षिण झील के वक्राकार किनारे के पास की जमीन पर केवल एक ऊहान तृतीय दवा कारखाना राज्य संचालित कारखाना था। पर पिछले कुछ वर्षों में प्रदूषण के खिलाफ शहरी इलाके के नागरिकों के शोर मचाने के कारण शहर के एक के बाद दूसरे रासायनिक कारखाने यहां आते चले गए। यह अब शहर का रासायनिक उद्योग केन्द्र बन गया है।

आइए, आपको इन कारखानों का परिचय दूं। घुमावदार पक्की सड़क के पूर्व में इन कारखानों के साइनबोर्ड एक पंक्ति में लगे हैं; मध्य-दक्षिण रासायनिक कारखाना, लाल झंडा रासायनिक कारखाना, चिंगारी रासायनिक कारखाना, आदि। उनके नाम निश्चय ही शानदार थे। पर सचमुच में ये सब "छोटे कारोबार" थे, जिनमें सौ के लगभग मजदूर काम करते थे। कुछ लोग इन्हें नीची नजरों से देखते थे और कारखाना कहना पसंद नहीं करते थे। इन्हें वे इस नाम के योग्य नहीं समझते थे। पर वे तेजी से बढ़े और उनमें से कुछ कारखानों के उत्पाद की बराबरी करने वाला उत्पाद मध्य-दक्षिण चीन में नहीं था।

चिंगारी रासायनिक कारखाने का उदाहरण लें। यह देखने में उजाड़ लगता था और कोई भी इसके बारे में अच्छा अनुमान नहीं लगा सकता था। पर इसके कई मशहूर उत्पाद थे, जैसे चिरनूतन लेप, फेरिक क्लोराइड, फेरस क्लोराइड, और यहां तक कि सोया सॉस की बोतल का छोटा रबड़ का ढक्कन। इन सबका सालाना उत्पादन-मूल्य १० लाख य्वान से भी अधिक था। यहां का फेरिक क्लोराइड पूरे ऊहान शहर में जलशुद्धिकारक के रूप में अपरिहार्य था। इस छोटे कारोबार का पूरा नाम "सिंह गली का चिंगारी रासायनिक कारखाना, ऊछाङ नागर क्षेत्र, ऊहान शहर" था, पर इसकी मुहर में जानबूझकर "सिंह गली" को नहीं रखा गया था। वरिष्ठ अधिकारियों से इसकी अनुमति लेने के लिए कारखाने की पार्टी सचिव वान को इसका कारण समझाना पड़ा था। उन्होंने कहा, "हमारे कारखाने के युवा मजदूर चिंतित रहते हैं कि 'छोटे कारोबार' का नाम सुनकर उनकी कन्या-मित्र मुंह फेर लेंगी। इसके अलावा ये दो शब्द व्यापार में कोई सहायता भी नहीं करते। यदि लोगों ने 'छोटे कारोबार' का नाम लेबल पर देखा तो वे उत्पाद पर भी विशेष ध्यान नहीं देंगे।" हालांकि ये बातें

असंगत प्रतीत हुईं, पर पार्टी सचिव वान की व्याख्या वाजिब और तार्किक लगी। युवा मजदूरों के प्रेम की गंभीर समस्या और विशेषकर कारखाने के भविष्य को ध्यान में रखकर वरिष्ठ अधिकारियों ने मौन सहमति दे दी। पर मुहर में आए बदलाव से कारखाने की प्रतिष्ठा में कुछ खास सहायता न मिली। इसके बाद भी कारखाने को कोई सामग्री खरीदनी होती तो उन्हें अपनी जरूरत जोर देकर बतानी पड़ती, मानो कोई पक्षपात करा रहे हों। दूसरी तरफ इस छोटे कारोबार का उत्पादन अच्छा होने के बावजूद न तो घरेलू उपयोग का था और न खेलने के काम आ सकता था। यहां के उत्पादों के नाम सुनकर लोगों के कान खड़े हो जाते थे। ये क्या उत्पाद हैं? कोई जहरीली दवा हैं शायद? इस तरह, उत्पादन बढ़ाने में भी किसी की मदद नहीं मिलती थी।

तो यह स्थिति थी। पचास वर्षीया पार्टी सचिव वान के सामने एक नई समस्या आ खड़ी हुई थी। कारखाने के मुख्य उत्पादन फेरिक क्लोराइड को द्रव के बजाए अब ठोस रूप में उत्पादित करना था। इस काम के लिए एक तीन मंजिली इमारत बना ली गई और आवश्यक मशीनें लगा दी गईं। पर कारखाना एक ब्वायलर जुटाने में असफल रहा। सचिव वान के शब्दों में "पानी सिर के ऊपर से गुजरने वाला है।" यह सचमुच अत्यंत नाजुक घड़ी थी!

पार्टी सचिव के बारे में क्या बताऊं? वह पार्टी सचिव तो थीं ही, पर वह एक गृहिणी भी थीं। काम करने का उनका तरीका किसी प्रतिष्ठापित सिद्धांत के कठघरे में नहीं आता था, पर उनका कहा सभी मानते थे। कारखाने को किसी चीज की जरूरत होती तो वह दो फीट लंबी इस्पात की पटरी बजातीं और सभी मजदूरों को बुलाती थीं। मजदूरों के सामने कारखाने की समस्या रखकर उनसे सलाह मांगती थीं। मजदूर घर लौटकर अपने परिवार में सलाह करते थे। जरूरत पड़ने पर वे अपने दोस्तों और संबंधियों से मिलते थे या दूसरी इकाइयों और बड़े कारखानों में काम करने वाले अपने परिचितों से भी राय लेते थे। मौखिक वादा हो जाने के बाद कारखाने की मोहर लगा कर औपचारिक पत्र भेजा जाता था। आमतौर पर कारखाने की जरूरत की सामग्री को यथाशीघ्र उपलब्ध करने के लिए पार्टी सचिव वान स्वयं अनेक लोगों से मिलती थीं। पर इस बार सारी कोशिशों के बावजूद ब्वायलर नहीं मिल पा रहा था। आखिरकार कुछ मजदूर एक महत्वपूर्ण सूचना ले आए कि च्याङनान न्यू वाटरवर्क्स ने एक नया बड़ा ब्वायलर खरीदा है। उनका पुराना छोटा ब्वायलर उनकी कॉलोनी में रखा है। तुरंत एक संदेशवाहक को ब्वायलर के बारे में पता लगाने के लिए भेजा गया, पर वाटरवर्क्स ने उसे बेचने से मना कर दिया। उन्होंने जवाब में केवल यह कहा कि पुराने ब्वायलर की उन्हें स्वयं जरूरत है। कुछ ही दिनों के बाद "छोटे कारोबार" के मजदूरों को जानकारी मिली कि यदि वाटरवर्क्स के आपूर्ति विभाग के प्रभारी सहप्रबंधक य्वान राजी हो जाएं तो बिना परिचय पत्र के भी ब्वायलर मिल सकता है। सोच-विचार कर यही फैसला लिया गया कि कोई सहप्रबंधक य्वान से मिलने जाए। पर उन तक पहुंचना आसान काम नहीं था, इसलिए कोई भी इस कार्य के लिए तैयार नहीं हुआ।

टन... टन... टन...पार्टी सचिव वान ने फिर से घंटी बजायी। उन्होंने पूछा कि कोई इस

काम के लिए तैयार है? पर मजदूरों के बीच शांति बनी रही। वे खामोशी से पार्टी सचिव वान को देख रहे थे।

"ऐसे एकटक मुझे देखने से क्या होगा? आखिर हम क्या करें?"

"मैं कोशिश करता हूं।" अचानक किसी ने दबी आवाज में कहा। सामान्य स्थिति में इस व्यक्ति पर कोई ध्यान भी नहीं देता। पर इस नाजुक घड़ी में जब पार्टी सचिव वान और मजदूर किसी अकालग्रस्त इलाके में अनाज के लिए प्रतीक्षारत नागरिकों जैसे थे, कार्य की जिम्मेदारी लेने वाला कोई भी आदमी उनके लिए उद्धारक के समान था। पर उन्होंने जब उस व्यक्ति को देखा तो मजदूरों को ही नहीं पार्टी सचिव को भी संदेह हुआ और उनका दिल बैठ गया।

उस व्यक्ति का नाम खो थिङ था। वह एक नौजवान था। सभी की नजरें उस पर टिकी थीं, उसका गोरा चेहरा अचानक लाल हो गया। वह १८५ सेंटीमीटर लंबा और देखने में आकर्षक था।

"ठीक है, तुम कोशिश कर सकते हो और चाहे जैसे भी... जैसे भी हो... तुम्हें ब्वायलर ले आना है।" पार्टी सचिव ने अधमुंदी आंखों से उसे देखते हुए कहा। वह इसके बारे में रत्ती भर भी आश्वस्त नहीं थीं। वह तो यह भी कहना चाह रही थीं, "जब कोई जाने को तैयार नहीं है तो तुम जाओ, पर मुझे तुमसे किसी चमत्कार की उम्मीद नहीं है...।" पर उन्होंने आखिरी समय में उसे उत्साहित करने के विचार से जाने को कह ही दिया।

हालांकि खो थिङ किसी तकनीशियन के पद पर नहीं था, पर उसमें तकनीशियन का काम करने की योग्यता थी और अपने काम की दक्षता के लिए पूरे काखाने में मशहूर था। भविष्य में खुलने वाली ठोस फेरिक क्लोराइड कार्यशाला बड़ी और आधुनिक थी। कार्यशाला और इसका साज-सामान बिठाने की रूपरेखा और सारी तकनीकी प्रक्रिया इसी युवक ने तैयार की थी, हालांकि वह कभी किसी तकनीकी कॉलेज में नहीं पढ़ा था। दरअसल उसने चीन के शहरी युवकों का ही रास्ता अपनाया था, उच्च माध्यमिक विद्यालय की पढ़ाई पूरी करने के बाद उसे दो साल के लिए देहात में खेतीबाड़ी के लिए भेज दिया गया था और वहां से लौटने पर उसने एक "छोटे कारोबार" में नौकरी कर ली थी। आज के शिक्षित युवकों का यही एक रास्ता था; उसके सामने भी दूसरा कोई चारा न था। पर आने के कुछ ही समय बाद वह कारखाने की अनेक तकनीकी समस्याओं को सुलझाने में दक्ष हो गया। जब भी कोई नयी तकनीक अपनानी होती थी, लोग उसी पर भरोसा करते थे। नियमतः वह नए उपकरण के निर्देशों का सावधानी से अध्ययन करता था और धीरे-धीरे उन पर प्रयोग कर दक्षता हासिल कर लेता था। उसने अपने साथी मजदूरों का सिर कभी नीचे नहीं होने दिया। सभी नए मजदूर उसकी इज्जत करते थे और पुराने मजदूर भी मानते थे कि वह असाधारण व्यक्ति है। फिर भी अफसोस की बात यह थी कि ईमानदार होने के साथ-साथ वह बहुत अधिक शर्मीला था। उसके दिमाग में बहुत-सी बातें थीं, पर बोलने के मौके पर शब्द धोखा दे जाते थे। शायद इसी कारण उस शर्मीले युवक द्वारा काम स्वीकार करने पर पुराने मजदूरों को आश्चर्य हुआ, उसने इसके पहले कभी इस तरह के काम की जिम्मेदारी नहीं ली थी और आज वह सहप्रबंधक य्वान से मिलने जाने और ब्वायलर लाने की कोशिश करने के लिए आगे आया था!

वास्तव में खो थिङ को भी अपने ऊपर संदेह था कि उसे सफलता मिलेगी ही।

२

आइए, अब एक दूसरी बात करें। ऊछाङ के बाजार की भीड़ में कभी-कभी दो समान लंबाई की लड़कियां दिखाई पड़ती थीं। उन दोनों की लंबाई लगभग १७२ सेंटीमीटर थी। उनके बाल समान ढंग से कटे थे और वे एक जैसे कपड़े भी पहनती थीं। गली में चाहे जितनी भीड़ हो, फुटपाथ पर चाहे जितने आदमी चल रहे हों, वे दोनों हमेशा हाथ में हाथ डाले एक साथ घूमती फिरती थीं। चूंकि दोनों लंबी और संतुलित आकृति की थीं, इसलिए उनकी तरफ लोगों का ध्यान स्वयं ही चला जाता था। यहां तक कि उच्छृंखल लड़के भी उन्हें रास्ता दे देते थे और उन्हें जाता देखकर उनकी प्रशंसा करते थे। गोल चेहरे वाली लड़की का नाम ली लू था और अंडाकार चेहरे वाली का य्वान श्या था। वे दोनों एक ही स्कूल में पढ़ी थीं, पर अलग-अलग कक्षा में थीं। पर समान कद-काठी, समान अभिरुचि और इच्छाओं के कारण दोनों में दोस्ती हो गई थी। वे दोनों इतनी गहरी सखियां थीं कि जब भी मिलतीं बातें खत्म ही नहीं हो पातीं। वे एक-दूसरे के प्रेम संबंधों में भी सलाह देतीं। उनकी प्राथमिक शर्त भी समान थी: युवक १८५ सेंटीमीटर से कम लंबा नहीं होना चाहिए। भगवान भला करे! यह एक बड़ी शर्त थी। पारिवारिक पृष्ठभूमि, नौकरी और मासिक वेतन जैसी दूसरी शर्तों को छोड़ भी दें तो उनकी पहली शर्त के अनुसार ही १८५ सेंटीमीटर लंबा और वह भी उनकी उम्र का तथा इसी शहर का युवक पाना एक मुश्किल काम था, जबकि देश के युवकों की औसत लंबाई इतनी नहीं थी। उनमें सहमति थी कि इस मामले में वे क़ेवल एक-दूसरे की सलाह मानेंगी, दूसरों की सलाह और माता-पिता के आदेशों या किसी मध्यस्थ की सिफारिश पर ध्यान नहीं देंगी। उदाहरण के लिए, यदि कोई ली लू को किसी युवक से मिलवाता तो य्वान श्या उसे अच्छी तरह जांचती थी। यदि उसकी नाक फड़की और उसने कहा, "ओह, कितना नाटा है!" तो यह सुनकर ली लू के भाव अचानक बदल जाते थे और बेचारे युवक की कोशिशों का वह अंत होता था।

मैंने अभी-अभी बताया कि दो सखियां भीड़ भरे बाजार में अक्सर एक साथ घूमती थीं। यह छै महीने पहले की बात थी। और अब य्वान श्या की स्वीकृति से ली लू को एक दोस्त मिल गया था। उनकी छुट्टी के दिन शुक्रवार को अब ली लू और य्वान श्या पहले की तरह साथ नहीं रहती थीं। यह सच है कि ली लू अपने दोस्त के साथ य्वान श्या से मिलने आती थी पर य्वान श्या ने महसूस किया कि वे उसका दिल रखने के लिए ऐसा करते हैं ताकि वह उपेक्षित महसूस न करे। वह जब भी उन दोनों को साथ-साथ जाते देखती वह मंत्रमुग्ध होकर उनके ओझल होने तक उन्हें देखती रहती थी।

य्वान श्या की मां ने उसे बार-बार सलाह दी कि अपनी शर्त पर इस तरह अडिग न रहे। क्यों नहीं अपने बराबर लंबाई के या देखने में कुछ छोटे युवक पर विचार करती हो? पर मां की सलाह का हमेशा य्वान श्या और ली लू ने दृढ़ता से विरोध किया। एक बार य्वान श्या

की मां ने कहा, "अपने पिता को देखो। वह लंबाई में मुझसे छोटे हैं, पर इससे क्या फर्क पड़ता है।" य्वान श्या ने अपनी मां को घूरकर देखा और कहा, "तुम चाहती हो कि सभी तुम्हारे जैसे हो जाएं।" फिर उसने संक्षेप में बताया कि वह कैसा पति चाहती है, लंबा और ईमानदार। उसने अपने घर में अपनी शर्त बताई और कहा कि इससे कम पर वह नहीं मानेगी। उसके पिता अपना गुस्सा न रोक सके और बोले, "क्यों, तुम्हें नहीं लगता कि राजनीतिक मानदण्ड पहले रखना चाहिए?" य्वान श्या ने हठ के साथ कहा, "ठीक है तो ईमानदार और लंबा। और कोई आपत्ति?"

य्वान श्या राज्य संचालित तृतीय दवा कारखाने में काम करती थी और रोज साइकिल से कारखाने आती-जाती थी। वसंत में एक दिन उसकी इच्छा ली लू से मिलकर बातें करने की हुई। दक्षिण झील के किनारे-किनारे सड़क बनी थी। शाम के सूरज की तिरछी किरणें झील की लहरों को चमका रही थीं और हरे पहाड़ों की छवि झील में उभर रही थी। य्वान श्या साइलिक चलाती हुई आराम से चारों तरफ देखती जा रही थी, कई नाटे युवकों से आगे निकलकर उसे एक प्रकार का आत्मसंतोष हो रहा था। अचानक "अमरपक्षी-१२" पर सवार एक युवक उसकी बगल से निकला। उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने भी अपनी साइकिल तेज की और थोड़ी ही देर में उससे आगे निकल गई। आगे जाकर उसने पलटकर उस युवक को देखा, वह युवक भी ली लू के दोस्त के समान ही लंबा था। यह अत्यंत रोचक बात थी। थोड़ी देर के बाद उसने फिर से पलटकर देखा कि कहीं वह युवक उससे आगे निकलने की कोशिश तो नहीं कर रहा है। काम से घर लौटते समय खो थिङ जैसे युवक के लिए यह अपमान की बात थी कि कोई लड़की उससे आगे निकल जाए। वह ईमानदार और अच्छे स्वभाव का युवक था। पर ईमानदार व्यक्ति भी कभी-कभी विचित्र हरकतें करता है। जब उसने महसूस किया कि इस लड़की ने आगे निकलकर उसे चुनौती दी है तो उसने भी अपनी साइकिल तेज की और उससे आगे निकल गया। पर य्वान श्या को उसकी यह हरकत अच्छी नहीं लगी। उसने पेशेवर साइकिल चालक की तरह झुककर पूरी ताकत से तेज पैडल मारे और जल्दी ही खो थिङ से आगे निकल गई। आगे निकलकर अभी उसने सांस भी नहीं ली थी कि खड़ाक की आवाज हुई और पैडल ढीला हो गया। थोड़ी दूर तक चलने के बाद उसकी साइकिल अपने आप रुक गई। वह साइकिल से उतर गई और खो थिङ उससे आगे निकल गया। पीछे आने वाले "नाटे" भी उसकी हंसी उड़ाते हुए उससे आगे निकल गए।

उनकी हंसी सुनकर खो थिङ ने पीछे मुड़कर देखा, वह लड़की किंकर्तव्यविमूढ़-सी खड़ी थी। उसे अफसोस हुआ। वह साइकिल मोड़कर उस लड़की के पास पहुंचा।

"क्या हुआ, मैं देखूं क्या?" यह कहते हुए उसने अपनी जेब से एक छोटा पेचकस निकाला। फिर अपने चाबी के गुच्छे में लगा स्पैनर लेकर य्वान श्या की मंजूरी की भी प्रतीक्षा किए बिना वह "अमरपक्षी-१८" साइकिल की जांच करने लगा।

"साइकिल की चेन टूट गई," उसने कहा।

य्वान श्या ने असहाय नज़रों से साइकिल ठीक करते हुए युवक को देखा, वह कुछ कर भी नहीं सकती थी। उसने लंबी सांस छोड़ी, "ओह, क्या मुसीबत हो गई!"

शाम ढलती जा रही थी। झील के किनारे ठंडी हवा चल रही थी। शाम ढलने के साथ झील रंग बदल रही थी। पहले वह हरी से हल्की नीली हुई और फिर उस पर काली परत चढ़ गई। आकाश और झील का रंग एक-सा रहस्यपूर्ण हो गया था। य्वान श्या लंबी होने के बावजूद थी तो लड़की ही। एक अपरिचित युवक के साथ शाम के सन्नाटे में खड़ी, आखिर वह अपनी घबराहट नहीं रोक सकी।

अंधेरे की चादर हटाकर धीरे-धीरे चांद ऊपर आया और चांद से आलोकित आकाश की छाया झील में दिखाई पड़ी। वसंत की सुनसान रात में चांद और सड़क की बत्तियों की रोशनी संयोग से मिले युवक और युवती को बहला रही थी। य्वान श्या अपनी साइकिल के लिए चिंतित थी, पर थोड़ी डरी हुई भी थी। वह युवक की भलमनसाहत से दबी थी और धन्यवाद व्यक्त करने के लिए उचित शब्दों को ढूंढ़ने में लगी थी। अचानक उसने सोचा, "उसे अपने किए की सजा स्वयं भुगतनी चाहिए! अपनी समस्या से वह दूसरों को क्यों परेशान करे? पर यदि वह छोड़कर चला गया तो वह क्या करेगी? वह साइकिल ढकेलती हुई या कंधे पर लादकर घर जाएगी?" वह दुविधा में पड़ी थी। फिर से सोचने पर उसने यही फैसला किया कि वह उस युवक पर भरोसा करने के अलावा और कुछ नहीं कर सकती। वह युवक साइकिल ठीक करने में जी-जान से लगा था। अभी तक तो वह उसके नाम से भी अपरिचित थी।

आखिरकार खो थिङ ने कहा, "देखो, ऐसा करते हैं! यदि तुम्हें मुझ पर विश्वास हो तो तुम मेरी साइकिल से घर चली जाओ, तम्हारे घर वाले परेशान हो रहे होंगे। मैं तुम्हारी साइकिल ठीक कर दूंगा, पर इसमें समय लगेगा। कल हम लोग अपनी साइकिल बदल लेंगे।" उसने सोच लिया था कि लड़की की साइकिल यदि यहां ठीक नहीं हुई तो वह इसे लेकर घर चला जाएगा।

य्वान श्या ने पूरी गंभीरता से कहा, "पर मैं तुम्हें यहां अकेले छोड़कर नहीं जाना चाहती।"

"तुम्हें मुझ पर विश्वास नहीं है। तुम्हें ऐसा लगता है कि मैं अपनी पुरानी साइकिल के बदले तुम्हारी अच्छी व आधुनिक साइकिल लेकर चलता बनूंगा। चिंता न करो। साइकिल पर पीछे नंबर की प्लेट लगी है। तुम थाने में जाकर मेरा नाम व ठिकाना आसानी से पता लगा सकती हो।"

य्वान श्या ने तपाक से कहा, "नहीं, मेरा मतलब यह नहीं था।"

"फिर यहां क्यों रुकोगी? कोई जरूरत नहीं है। कल मैं सबेरे जगूंगा और तुम्हारी साइकिल लेकर तुम्हारे कारखाने के गेट पर आ जाऊंगा। तुम मध्य चीन कृषि कॉलेज की हो या तृतीय दवा कारखाने की?"

य्वान श्या ने बताया कि वह तृतीय दवा कारखाना में काम करती है। पर वह अभी भी नहीं जाना चाह रही थी। घर न जाने का कोई और कारण नहीं था; उसे लगा कि जब तक वह युवक साइकिल ठीक न कर ले, उसे वहीं रहना चाहिए। खो थिङ ने उससे बार-बार घर चले जाने को कहा, अंत में तो उसने यह भी चेतावनी दी कि अगर वह घर नहीं गई तो वह साइकिल ठीक नहीं करेगा। उसे भी महसूस हुआ कि यहां रुकने का कोई मतलब नहीं है।

फिर वह उसकी साइकिल से लौटी। घर लौटते समय उसके दिमाग में अनेक तरह की बातें घूम रही थीं।

अगली सुबह सबेरे ही खो थिङ उसके कारखाने आ गया और गेट के सामने खड़े होकर उसने उस लड़की की प्रतीक्षा की। साइकिल की अदला-बदली सामान्य रही। हाथ मिलाना या कागज पर हस्ताक्षर करना नहीं हुआ। थोड़ी बातचीत के साथ अदला-बदली पूरी हो गई। लड़की ने खुश और चकित होकर पूछा, "तुमने साइकिल ठीक कर दी?" युवक ने जवाब दिया, "हां।" य्वान श्या अपनी कृतज्ञता प्रकट करना चाह रही थी। अभी वह उसका नाम व ठिकाना पूछने ही वाली थी कि युवक मुस्कराया और अपनी साइकिल पर चढ़कर आगे बढ़ा। य्वान श्या ने पीछे से चिल्लाकर कहा, "कभी मेरी सहायता की जरूरत हो तो मुझे न्यू वाटरवर्क्स कॉलोनी मे ढूंढ़ सकते हो।"

ऊपर की प्रेम कहानी सुनकर य्वान श्या की सलाहकार ली लू ने मेज पर मुक्का मारते हुए आश्चर्य प्रकट किया। उसे लगा कि य्वान श्या लापरवाह रही। यदि उसने उसकी साइकिल का नंबर भी लिख लिया होता तो उसे ढूंढ़ निकालना आसान होता और फिर दोनों की मुलाकात करायी जाती।

य्वान श्या ने अपने बचाव में कहा, "यदि मेरी जगह तुम होतीं तो तुम भी यही करतीं। मैं अजीब दुविधा में थी।" यह तो अपने बचाव में उसका जवाब था, पर वह भी अफसोस कर रही थी।

३

सभी व्यावहारिक चीनी दुनिया के विभिन्न तरीकों से अच्छी तरह परिचित हैं। वे जानते हैं कि जिंदा रहने के लिए एक-दूसरे पर निर्भर रहना आवश्यक है। "एक-दूसरे की सहायता" उनके दैनिक जीवन का हिस्सा है। खो थिङ ने य्वान श्या की साइकिल ठीक की, पर साइकिल ठीक करने से पहले उसने यह नहीं सोचा था कि उसे भी उस लड़की की सहायता की जरूरत पड़ सकती है जिससे वह अचानक मिला था। उसकी सहायता करते समय खो थिङ ने दूसरी कोई बात सोची भी नहीं थी। यह तो जब पार्टी सचिव वान ने न्यू वाटरवर्क्स कॉलोनी में पड़े ब्वायलर की बात की तो उसे उस लड़की का ख्याल आया।

कारखाने से लौटने के बाद वह सीधे न्यू वाटरवर्क्स कॉलोनी गया। न्यू वाटरवर्क्स कॉलोनी में तीन-चार मंजिली नई इमारतें और कुछ पुराने मकान थे। जिस लड़की का नाम भी नहीं मालूम था, उसे वह कैसे खोज निकालता? वह यह भी नहीं कह सकता था कि दक्षिण झील के किनारे एक शाम जिस लड़की की साइकिल खराब हो गई थी, वह उसे ढूंढ़ रहा है। खो थिङ की समझ में नहीं आया कि क्या करे? अचानक उसे लगा कि उसने व्यर्थ की यह मुसीबत मोल ली, वह अपने कारखाने के लिए ब्वायलर की व्यवस्था नहीं कर सकता। पर उसने हार नहीं मानी। उसे यह आशा थी कि किसी खिड़की से उस लड़की का अंडाकार

चेहरा दिखाई पड़ जाएगा। आखिर शाम हो गई और वह निराश होकर घर लौट आया।

अगले दिन उसे देखते ही पार्टी सचिव वान ने पूछा, "खो थिङ, तुम ब्वायलर की व्यवस्था करने वाले थे, उसका क्या हुआ?"

"मैंने कोशिश की, पर सफलता नहीं मिली," उसने सीधा-सा जवाब दिया।

"क्या तुम किसी से मिले?" उन्होंने फिर से पूछा।

"नहीं, मैं किसी से नहीं मिला।"

पार्टी सचिव वान ने अधीर होकर कहा, "जाओ, फिर से कोशिश करो। पिछली बार तुमने किससे पूछा था? शायद मैं तुम्हारी कोई मदद कर सकूं। यदि तुम्हें बात करनी नहीं आती तो मैं सिखा सकती हूं।"

युवक को सच बताने की हिम्मत नहीं हुई। वह इतना ही कह सका, "ठीक है, अपनी पाली समाप्त होने के बाद मैं जाऊंगा और फिर से कोशिश करूंगा।"

"कोशिश" शब्द सुनकर पार्टी सचिव वान और अधीर हो गईं। उन्होंने कहा, "मैं तुमसे पूछ रही हूं, यह मजाक नहीं है। यदि कोई कठिनाई हो या उन्हें कुछ देना हो तो मुझे बताओ। ठीक है, अगली बार एक पैकेट अच्छी सिगरेट लेते जाना।"

"नहीं... रहने दें... वह सिगरेट नहीं पीती!"

पार्टी सचिव कैसे सोच सकती थी कि उसके दिमाग में कोई लड़की है। तो खो थिङ में बदलाव आ गया? वह हंसीं, उन्हें आशा की किरण दिखाई पड़ी।

"तो तुमने मुझ जैसी बूढ़ी औरत से भी यह बात छिपाई। अगर वह तुम पर मोहित हुई तो मैं सहायता करूंगी। ठीक है, तुम प्रेम के साथ-साथ ब्वायलर की भी बात करना। तुम उससे सहायता मांग सकते हो।"

खो थिङ ने गंभीरता से कहा, "पार्टी सचिव वान, आपको मुझसे मजाक नहीं करना चाहिए।"

उन्होंने नाखुश होकर पूछा, "भला क्यों?"

खो थिङ शरमाकर वहां से चला गया। उस दिन उसने चुपचाप काम किया और छुट्टी होने से आधे घंटे पहले दवा कारखाने के गेट पर उसकी तलाश में निकला।

उसके कारखाने के गेट पर थोड़ी देर वह खड़ा रहा। छुट्टी का सायरन बजते ही लापरवाह युवा मजदूरों का एक समूह शोर करता हुआ बस स्टेशन की तरफ भागा। फिर साइकिल सवारों का एक समूह आया और आगे निकल गया। खो थिङ अपने विशेष उद्देश्य के कारण केवल महिला मजदूरों को देख रहा था। उसने अनेक महिला मजदूरों को देखा, पर वह नजर नहीं आई। उसने सोचा शायद काम समाप्त होने के बाद वह कपड़े बदल रही हो। अचानक वह दिखाई पड़ी। उसने आधुनिक तो नहीं पर सुंदर कपड़े पहन रखे थे। अपनी "अमरपक्षी-१८" साइकिल लिए वह अपनी सहेलियों के साथ हंसी-मजाक करती चली आ रही थी। उसके साथ आ रही सभी लड़कियां उससे नाटी थीं। हां, वही थी। लंबी और छरहरी, अंडाकार चेहरे की सुंदर लड़की! जब वह गेट के पास पहुंची तो खो थिङ को पहले थोड़ी झिझक महसूस हुई। साहस बटोरकर वह उसे बुलाने वाला ही था कि वह अपनी साइकिल पर चढ़कर

चलने के लिए तैयार हुई। इस नाजुक मौके पर खो थिङ के साहस ने साथ दिया और उसने आवाज दी, "ओ, कॉमरेड!"

लड़कियों ने अपरिचित युवक को देखा और एक-दूसरे की तरफ देखकर मुस्कराईं। उन्हें नहीं मालूम था कि वह किसे बुला रहा है।

य्वान श्या चौंकी, पर उसने तुरंत पहचान लिया। इसी युवक के बारे में तो वह दिन-रात सोच रही थी और आभार व्यक्त करना चाहती थी। "अरे... तो तुम ही हो?" खुशी और आश्चर्य से उसका चेहरा लाल हो गया।

उसकी सभी सहेलियां अपनी-अपनी साइकिलों से उतर गईं। इस लंबी जोड़ी को देखकर सबने एक ही बात सोची। एक लड़की ने चिढ़ाने के अंदाज में य्वान श्या से पूछा, " 'ओ, कॉमरेड'! क्या अब भी हम तुम्हारा इंतजार करें?"

निश्चित ही य्वान श्या नहीं चाहती थी कि वे रुकी रहें, पर उसने कहा, "जैसी तुम सबों की मर्जी।"

लड़कियों ने ताना मारा, "अरे, सीधी क्यों नहीं कहती कि मुझे अकेली छोड़ दो!" इतना कहकर वे मधुमक्खियों के झुंड की तरह वहां से उड़ गईं।

खो थिङ ने झेंपते हुए कहा, "मैं एक खास वजह से तुमसे मिलने आया हूं।..."

ऐसी परिस्थिति में इन बातों का कोई औचित्य नहीं होता, फिर भी युवक की झेंप देखकर उसने कहा, "उनकी चिंता मत करो, आओ इस रास्ते से चलें।"

वे अपनी साइकिल से विपरीत दिशा में निकले। वे आपस में बातें करते जा रहे थे।

"मैं तुम्हें खोजने न्यू वाटरवर्क्स कॉलोनी गया था।"

"कब?"

"कल, छुट्टी होने के बाद।"

"कल शाम मैं घर पर ही थी।"

"उस बड़ी कॉलोनी में कई इमारतें हैं। मैं..."

"दूसरी इमारत के दूसरे गेट से घुसने पर दूसरी मंजिल पर मेरा फ्लैट है। इसे याद रखना बड़ा आसान है। वहां केवल मेरा नाम पूछो तो भी कॉलोनी वाले बता देंगे। सभी मुझे जानते हैं।"

इस बार य्वान श्या का जवाब सकारात्मक और निश्चित था।

"तुम्हारे माता-पिता वाटरवर्क्स के पुराने मजदूर हैं क्या?"

"हां, पिता जी को पुराना मजदूर कहा जा सकता है। मां पहले एक 'छोटे कारोबार' में काम करती थी। बाद में वह भी वाटरवर्क्स में आ गई।"

"छोटे कारोबार" के उल्लेख से खो थिङ को ऐसा लगा जैसे किसी ने उसकी कमजोर नब्ज पर उंगली रख दी। अगर वह "छोटे कारोबार" में नहीं होता तो उसे सहायता मांगने के लिए नहीं आना पड़ता। उसने थोड़ी परेशानी महसूस की, पर झिझकते हुए पूछा, "तो तुम्हारे पिता पुराने मजदूर हैं। उनका पद क्या है? किस चीज के प्रभारी हैं?"

"सब कुछ और कुछ भी नहीं हैं!" य्वान श्या ने शरारत से कहा।

"तुम्हारा मतलब वह मजदूर नहीं, कार्यकर्ता हैं?" खो थिङ ने पूछा।

खो थिङ के इस सवाल से य्वान श्या कुछ नाराज हो गई। उसने गुस्से में पूछा, "मेरे पिता कार्यकर्ता हैं या मजदूर हैं, इससे तुम्हारा क्या मतलब है?"

लड़की ने अचानक यह सवाल पूछ दिया था, खो थिङ ने ईमानदारी के साथ सीधा जवाब दिया, "मेरा अनुमान था कि तुम कार्यकर्ता परिवार की हो और तुम्हारे पिता किसी ऊंचे पद पर हैं। मेरा यह मतलब नहीं था कि पुराना मजदूर..."

यह सुनकर य्वान श्या ने सोचा, "तो तुम भी औरों की तरह ही हो!" उसकी उस युवक में रुचि समाप्त हो गई, उसने अपना सिर झुकाया और अचानक तेज पैडल मारने लगी। कुछ ही क्षणों में वह खो थिङ से आगे निकल गई। जब खो थिङ ने उसके पास आकर कुछ कहना चाहा तो उसने इस तरह से अपना हाथ हिलाया मानो कह रही हो "फिर मिलेंगे" (या कभी नहीं मिलेंगे) और तेजी से साइकिल चलाने लगी।

"मैं अंधी थी..." लड़की ने सोचा। वह उदास और परेशान दिख रही थी। चूंकि वह वसंत में खो थिङ से अचानक मिली थी और ली लू की आलोचना उसने स्वीकार की थी, इसलिए वह युवक उसके दिल में घर बनाने लगा था। काम से घर लौटते समय जब भी वह सहेलियों से अलग होती, वह झील के किनारे उस यादगार स्थान पर जरूर जाती। उसे उम्मीद थी कि वह युवक उसे वहां मिलेगा और वह उसे तुरंत पहचान लेगी। वह धीमी आवाज में तब उससे कहती, "देखो, मेरी आंखें कितनी तेज हैं!" पर वह सपना ही रह गया। पिछली बातों की याद और लगातार मिली निराशा ने उसके प्रथम प्रेम की आग तेज ही की थी। उसे ऐसा लगता था कि दूसरे लोग उसके दिल की गुप्त लालसा के बारे में जानते हैं, पर वह स्वयं को समझा लेती थी कि वह तो केवल आभार व्यक्त करने के लिए मिलना चाहती है। पर आज की अप्रत्याशित मुलाकात ने उसकी खुशी के साथ धोखा किया था, और उस यादगार स्थान पर मंडराने के उसके सारे बहाने बेकार सिद्ध हो गए थे।

य्वान श्या तेजी से साइकिल चलाए जा रही थी। थोड़ी ही देर में वह यादगार स्थान दिखा। उसके दिल में कसक सी उठी, "जब तुम मेरी साइकिल ठीक रहे थे, उस समय तुम कितने सीधे और गंभीर लग रहे थे, पर आज तुम भोंड़े लग रहे हो... क्या मैं सचमुच अंधी थी?"

पीछे-पीछे आ रहा खो थिङ इस बात से परेशान था कि उसकी किस बात से लड़की नाराज हो गई। क्या उसने कोई उल्टी-सीधी बात कह दी? फिर भी ब्वायलर के लिए, और यह भी कहा जा सकता है क्रांति के लिए, प्रेम के लिए नहीं, वह इतनी जल्दी हार मानने वाला नहीं था। उसने भी साइकिल तेज की और पास आता हुआ बोला, "एक मिनट रुकना... मुझे तुमसे एक जरूरी बात करनी है..."

भगवान को खुश करने से आसान लड़की को खुश करना था। उसकी व्याकुल आवाज में प्रकट ईमानदारी या प्रथम मुलाकात से दिल में उत्पन्न मधुर इच्छाओं की याद के कारण, या फिर अपना आभार व्यक्त करने के लिए वह उस यादगार स्थान पर पहुंचने के साथ अपनी साइकिल से उतरी। खो थिङ ने भी अपनी साइकिल रोकी।

लड़की को नाराज हुआ देखकर खो थिङ ने पुरानी बात छोड़ दी और सीधे ब्वायलर के संबंध में बात की।

उसकी बात सुनकर उसके दिल से बोझ उतर गया। उसे हंसी आई कि इस सीधे युवक को यह नहीं मालूम कि वह सहप्रबंधक य्वान की बेटी है। इसलिए उसने प्यार से कहा, "चिंता मत करो! मेरे ऊपर छोड़ दो!"

"तुम्हारे ऊपर छोड़ दूं?... क्या तुम निश्चित हो? मैंने सुना है कि सहप्रबंधक य्वान से मिलना मुश्किल काम है। क्या तुम्हारे पिता उन्हें अच्छी तरह जानते हैं?"

खो थिङ के सवाल से उसे हंसी आई और गुस्सा भी आया, उसने जवाब दिया, "हां, मैंने कहा न, मेरे ऊपर छोड़ दो। और क्या चाहते हो?"

खो थिङ ने आगे कहा, "ठीक है, अगर बात बन जाती है तो मैं कारखाने से परिचय पत्र लिखवाकर ले आऊंगा।"

"ठीक है, ठीक है... और कोई बात करो!" य्वान श्या ने उसकी बात समाप्त कर दी। उसे लगा कि सिर्फ ब्वायलर की बात करना तो इस अच्छे समय को बर्बाद करना है।

४

न्यू वाटरवर्क्स कॉलोनी में घुसते ही खो थिङ ने कोने में पड़ा ब्वायलर देखा। उसने जेब से स्टील टेप निकालकर उसे नापा। य्वान श्या से नहीं रहा गया, उसने कहा, "यदि ब्वायलर ठीक तुम्हारी जरूरत के अनुसार भी हो तो क्या होता है, तुम्हें क्या मालूम कि वे तुम्हें देंगे या नहीं?" खो थिङ ने झेंपकर स्टील टेप जेब में रखा और य्वान श्या के पीछे-पीछे एक इमारत में घुसा।

वे दूसरी इमारत के दूसरे गेट से घुसकर दूसरी मंजिल पर आए। खो थिङ आसपास के माहौल से बेपरवाह था। वह हिसाब लगा रहा था कि इस ब्वायलर से कितनी मात्रा में वाष्प बन सकेगा। य्वान श्या ने धक्का देकर दरवाजा खोला और उसे अंदर बुलाती हुई बोली, "यह सहप्रबंधक य्वान का घर है।" खो थिङ ने इसकी उम्मीद नहीं की थी। वह घबरा गया और उसने चौंककर पूछा, "तुमने तो कहा था कि इस संबंध में पहले अपने पिता से बात करोगी?" य्वान श्या ने किसी अनुभवी अभिनेत्री की तरह संदिग्ध सा जवाब दिया, "एक ही बात है।"

ड्राइंग रूम में तीन-चार व्यक्ति बैठे थे और पूरा कमरा सिगरेट के धुएं से भरा था। य्वान श्या और खो थिङ के आने से सबने बातें बंद कर दीं और उनकी तरफ देखा। य्वान श्या ने हाथ से हवा करते हुए भौंहें चढ़ाकर कहा, "हद है!" वह अपने घर आने वाले अनिमंत्रित मेहमानों को पसंद नहीं करती थी। एक प्रौढ़ उम्र का मेहमान उठा और बोला, "य्वान साहब, मैं आपकी सलाह के अनुसार ही करूंगा। मुझे पूरी उम्मीद है कि समय आने पर आप अवश्य मदद करेंगे।" दूसरे अन्य दो व्यक्ति भी उठे और बोले, "य्वान साहब, आपकी मदद के बिना हमारी समस्या नहीं सुलझेगी। हो सकता है, हम फिर से आकर आपको तकलीफ दें।" इस बीच खो थिङ ने सहप्रबंधक य्वान को अच्छी तरह देख लिया था। वह नाटे व्यक्ति थे, पर उनका गंजा सिर और चमकदार माथा उनकी गरिमा बढ़ाता था।

सभी मेहमानों के जाने के बाद य्वान श्या ने खो थिङ से कहा, "इसे अपना ही घर समझो और आराम से बैठो। मुझे एक जरूरी काम है, मैं जल्दी ही लौट आऊंगी।" यह कहकर वह दरवाजे से बाहर निकली।

य्वान श्या के जाने के बाद खो थिङ को थोड़ी घबराहट हुई। उसे नहीं मालूम था कि लड़की क्या चाल चल रही है? कहीं सहप्रबंधक य्वान के स्वभाव के डर से ही तो वह केवल परिचय कराने के बाद जानबूझकर नहीं निकल गई?

"सहप्रबंधक य्वान... य्वान साहब... माफ करें, आपको तकलीफ... "

"नहीं... नहीं... तकलीफ की क्या बात है? बैठो, बातें करते हैं।"

सहप्रबंधक य्वान ने लंबे युवक का उत्साह से स्वागत-सत्कार किया। उन्होंने मुस्कराते हुए उससे मेज के पास रखी बेंत की कुर्सी पर बैठने को कहा और एक प्याली चाय दी। खो थिङ ने महसूस किया कि सहप्रबंधक य्वान इतने बुरे स्वभाव के नहीं हैं, जितना लोग कहते हैं। सहप्रबंधक य्वान खिड़की के पास की कुर्सी पर आराम से बैठे और उससे बातें करने लगे।

"तुम दोनों एक-दूसरे को बहुत दिनों से जानते हो, ठीक है?"

"नहीं, हम एक-दूसरे को पहले नहीं जानते थे।"

"अच्छा, तुम्हारा परिचय कैसे हुआ?" सहप्रबंधक य्वान ने युवक की लंबाई देखकर माना कि यह लड़का य्वान श्या के योग्य है।

खो थिङ ने शरमाते हुए धीमे स्वर में जवाब दिया, "बस, एक संयोग था।"

सहप्रबंधक य्वान ने इस संबंध में और कोई सवाल नहीं पूछा। उन्होंने मेज पर रखी एक छोटी शीशी उठाई और उसमें से कुछ गोलियां निकालकर पानी के साथ उन्हें निगला। फिर अपने गंजे सिर पर हाथ फेरते हुए उन्होंने कहा, "तुम दोनों पहले नहीं मिले थे, कोई बात नहीं, पर आगे बार-बार मिलोगे और एक-दूसरे को अच्छी तरह समझ लोगे।"

खो थिङ को लगा कि कहीं गलतफहमी हो गई है। उसका चेहरा लाल हो गया और दिल तेजी से धड़कने लगा। उसे याद आया कि रास्ते में जब वह लड़की से ब्वायलर की बात कर रहा था तो वह बार-बार जोर दे रही थी, "मेरे ऊपर छोड़ दो!" और घर में इस तरह घुसी जैसे उसी का घर हो। क्या वह सहप्रबंधक य्वान की बेटी है? हां, दोनों का कुलनाम तो एक ही है। पर उसने जब नाटे सहप्रबंधक को देखा तो उसे संदेह हुआ। फिर भी उसने सोचा, आनुवंशिकी भी कभी-कभी सही नहीं होती और आज तो ऐसा ही लग रहा है। पर उसे इससे क्या? उसे तो ब्वायलर से मतलब है। वह मिल जाए, बस। कितना अच्छा होता यदि य्वान श्या सहप्रबंधक य्वान की बेटी होती!

कुछ सोचकर उसने यह बात सहप्रबंधक य्वान से नहीं पूछी और सीधे अपने काम की बात पर आ गया, "य्वान साहब, बात यह है... हमारे कारखाने को एक ब्वायलर की जरूरत है... हां, वही जो आपकी कॉलोनी में पड़ा है। मैंने उसे नाप लिया है और मार्का भी अच्छा है। वह ठीक हमारी जरूरत के मुताबिक है। य्वान श्या मुझे यहां ले आई, क्या आप अपनी सहमति जाहिर कर हमारी मदद करेंगे?"

बात बिगड़ गई। अब तक सहप्रबंधक य्वान ससुर बनने का सपना देख रहे थे, पर अब वह अचानक प्रबंधक बन गए। उन्हें गुस्सा आया। "फिर वही ब्वायलर!" वह थोड़ी देर तक चुप रहे।

खो थिङ ने आग्रह किया, "हमारे छोटे कारखाने की मदद कीजिए।"

सहप्रबंधक य्वान ने पूछा, "तुम्हारा कारखाना क्या उत्पादित करता है?"

"हमारा प्राथमिक उत्पादन 'चिरनूतन लेप' है।"

"चिरनूतन... लेप? तो तुम यह बनाते हो? क्या यह सचमुच अच्छा है?" सहप्रबंधक ने पूरी रुचि के साथ पूछा। उनकी उंगलियां मेज पर रखी शीशी से खेल रही थीं।

"यह बुरा नहीं है। दूसरे शहरों और सेना से हमें काफी आर्डर मिलते हैं।"

"ओह, यह तो पक्का सबूत है। पर मुझे नहीं लगता कि वह इतना प्रभावशाली है।"

"रासायनिक शोध संस्थान ने इसकी जांच और प्रशंसा की है। दूसरे, हमारे ग्राहक भी संतुष्ट हैं।"

सहप्रबंधक य्वान ने मेज से शीशी उठा ली और उसे देखते हुए पूछा, "यह जीवनवर्द्धिनी गोलियों की तुलना में कैसा है?"

"वह तो बिलकुल अलग चीज है," खो थिङ ने जवाब दिया।

सहप्रबंधक य्वान दिल खोलकर हंसे, अपना सिर पीछे की तरफ झुकाकर उन्होंने अपना भार कुर्सी की पिछली टांगों पर डाला। वह बोले, "मुझे तो सब एक ही से लगते हैं। मैंने य्वान श्या के दवा कारखाने की जीवनवर्द्धिनी गोलियां खाईं, पर देखो और भी गंजा होता जा रहा हूं।" फिर दिखाने की गरज से उन्होंने अपने सिर पर हाथ फेरा। " 'जीवनवर्द्धिनी गोली'; 'चिरनूतन लेप' ये बड़े मोहक नाम हैं। उनके सेवन या प्रयोग से कोई हानि नहीं होती। तुम सहमत हो कि नहीं?"

थोड़ी देर के बाद सहप्रबंधक पहले की अवस्था में आ गए। कुर्सी की टांगें सीधी हो गईं और उनके हाथ भी सिर से नीचे आ गए। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा, "अब देखो क्या करना चाहिए। तुम कारखाने लौटकर अपने पार्टी सचिव और कारखाना निदेशक से पूछो कि क्या वे अपने कारखाने का उत्पादन हमें मुहैया करा सकते हैं। मैं अपने कारखाने में दूसरे प्रधानों से ब्वायलर के बारे में बात कर सकता हूं।"

अचानक खो थिङ ने महसूस किया कि सहप्रबंधक य्वान रबड़ की आयु बढ़ाने के काम आने वाले 'चिरनूतन लेप' को जीवनवर्द्धिनी दवा समझकर उससे ऐसी मांग कर रहे हैं। उसकी हंसने की इच्छा हुई, पर साहस नहीं हुआ। उसने सोचा यदि वह सच बता दे तो सहप्रबंधक मूर्ख सिद्ध होंगे। इसलिए उसने होशियारी से काम लिया और एक बहाना गढ़ा, "अभी तक हमने व्यक्तिगत ग्राहकों को नहीं बेचा है, क्योंकि इसकी कीमत बहुत ज्यादा है। दूसरे, यह..."

सहप्रबंधक य्वान उसके गोलमटोल जवाब से चिढ़ गए और त्योरियां चढ़ाकर बोले, "हां, आजकल हम लोग सारे काम नियम के अनुसार करते हैं। अच्छा तुम्हारे कारखाने का क्या नाम है?"

"ऊछाङ नगर क्षेत्र का चिंगारी रासायनिक कारखाना," युवक ने जवाब दिया।

सहप्रबंधक ने अपनी भौंहें सिकोड़ते हुए पूछा, "ऊछाङ नगर क्षेत्र में इस नाम का कोई कारखाना है क्या?"

"दरअसल इसका पूरा नाम सिंह गली का चिंगारी रासायनिक कारखाना है, यह ऊछाङ नगर क्षेत्र में ही है।"

"ओह, एक छोटा कारोबार है?" सहप्रबंधक ने तिरस्कारपूर्ण स्वर में कहा। "अब हमें बिलकुल नियम के अनुसार काम करना चाहिए। मैं ही यहां का अकेला प्रभारी नहीं हूं, इसलिए सिर्फ मेरी सहमति से कुछ नहीं हो सकता... है कि नहीं? और फिर हमें स्वयं उस ब्वायलर की जरूरत है... और कुछ?"

उन्होंने बातचीत खत्म करने के लहजे में अपनी बात कही थी। खो थिङ ने अचानक सिहरन महसूस की, उसका पूरा बदन मलेरियाग्रस्त रोगी की तरह कांपने लगा। उसने स्वयं को अपमानित महसूस किया। उसे यह भी अफसोस हुआ कि उसने व्यर्थ ही कारखाने में धाक जमाने की कोशिश की।

"नौजवान, तुम्हें अनुभव नहीं है। शायद तुम इसके पहले कभी व्यापार की बात करने नहीं गए। अब से कभी भी कहीं बात करने जाओ तो अपने साथ परिचय पत्र लेकर जाओ।" सहप्रबंधक उठकर खड़े हो गए और जबरन मुस्कराने की कोशिश की।

यह गंजा नाटा आदमी! मूर्ख! लालची! दंभी! अज्ञानी! खो थिङ बोलने ही वाला था। वह अपने गुस्से को दबा रहा था... छोटा कारोबार... तो क्या? क्या छोटे करोबारों ने बिना सरकारी मदद के लाखों-करोड़ों रुपए सरकार के लिए नहीं कमाए हैं? सच यह है कि वह भी पहले छोटे कारोबारों को तुच्छ समझता था। काम के बाद उसने विश्वविद्यालय प्रवेश परीक्षा की तैयारी की थी और पार्टी सचिव वान से इजाजत मांगी थी। उसके लिए छोटे कारोबार से निकलने का यह एकमात्र रास्ता था। पार्टी सचिव वान ने तब कहा था, "हमारे पुराने मजदूरों ने तुम्हें पाल-पोसकर बड़ा किया, तुम्हें उड़ना सिखाया। अब तुम्हारे डैने मजबूत हो गए हैं तो तुम उन्हें छोड़कर उड़ जाना चाहते हो। क्या तुम्हें हमें छोड़कर जाने का कोई दुख नहीं है?" उन्होंने उसांस भरी और आगे कहा, "यदि तुम जीर डालोगे तो मैं चाहकर भी तुम्हें नहीं रोक सकूंगी। पूरे देश के हित की उपेक्षा कर केवल अपनी इच्छाओं का ख्याल रखना स्वार्थ है। संक्षेप में, मैं तुम्हारा भविष्य खराब नहीं करूंगी। पर मैं उम्मीद करती हूं कि अपनी जगह किसी और के आ जाने तक तुम इंतजार करोगे।" युवक का दिल पसीज गया, पार्टी सचिव की बातें उसे छू गईं और वह रोया। भावना और व्यक्तिगत भविष्य की दुविधा में भावना की जीत हुई। वह पुराने उस्तादों और पार्टी सचिव का सिर नहीं झुकने देगा। उसे अपने नेताओं से सहानुभूति हुई। पार्टी सचिव वान की उम्र घर पर बैठकर पोते की देखभाल करने की है, पर वह साढ़े चार बजे सुबह उठती हैं और तीन बसें बदलकर शहर के उत्तरी हिस्से से दक्षिणी हिस्से में आती हैं। वह इतनी मेहनत क्यों करती थीं? वैसे पैंसठ वर्षीय कारखाना निदेशक रोजाना लगभग ३० किलोमीटर पुरानी टूटी-फूटी साइकिल से आते-जाते हैं। वह इतनी मेहनत क्यों करते थे? सहप्रबंधक यूवान को देखने के बाद पार्टी सचिव वान

और कारखाना निदेशक के प्रति उसकी श्रद्धा और बढ़ गई। वे उसकी नजर में पहले की अपेक्षा काफी बड़े हो गए। वे कितने अच्छे थे, अपने मजदूरों से कितना मधुर व्यवहार करते थे!

खो थिङ भी खड़ा हो गया, सहप्रबंधक य्वान के सामने उसने स्वयं को भी काफी लंबा महसूस किया। इस छोटे कमरे में उसने बहुत सीखा और साथ ही उसे अच्छा सबक मिला था, अपनी ईमानदारी की अधिक इज्जत करने का। वह पूछना चाहता था, "सहप्रबंधक ! क्या ब्वायलर आपकी निजी संपत्ति है या फिर चीन लोक गणराज्य की संपत्ति है?"

खो थिङ ने सहप्रबंधक य्वान को घृणा से देखा और एक-एक शब्द पर जोर देते हुए बोला, "आपके सुझाव के लिए धन्यवाद, य्वान साहब!" इसके बाद वह कमरे से निकल गया।

वह तेज कदमों से सीढ़ियों से उतरा। वह अपनी साइकिल का ताला खोलने ही वाला था कि किसी ने उसका हाथ पकड़ा। उसने पलटकर देखा, एक औरत टोकरी भर खाने का सामान लिए खड़ी थी।

"अरे, भागे क्यों जा रहे हो?"

खो थिङ की समझ में नहीं आया कि क्या बात है।

"देखो, मैं कुछ खाने का सामान खरीदकर लाई हूं। जब य्वान श्या ने बताया कि तुम आए हो तो मैं दौड़ी-दौड़ी बाजार गई। अभी न जाओ, वह जल्दी ही आ जाएगी। उसे काफी समय हो गया है। बस, आ ही रही होगी। तुम थोड़ी देर और रुको, ऊपर चलो न!"

लंबी, स्पष्ट और गर्मदिल औरत की सूरत य्वान श्या से मिल रही थी। पर उसका अपमान हुआ था, इसलिए उसने सोचा कि तीनों एक ही जैसे हैं और उसे मूर्ख बना रहे हैं। उसने लापरवाही से कहा, "नहीं, मैं एक जरूरी चीज लेकर नहीं आया हूं।"

उसका आशय न समझकर श्रीमती य्वान ने पूछा, "क्या मतलब? तुम्हें क्या लाने की जरूरत है? तुम बगैर कोई झंझट किए आए, यह तो बड़ी खुशी की बात है। तुमने मुंह भी जूठा नहीं किया और चले जा रहे हो। नहीं, यह नहीं होगा। य्वान श्या लौटकर मुझे दोष देगी। अगर उस शाम तुमने उसकी साइकिल ठीक नहीं की होती तो क्या हुआ होता, इसकी कल्पना नहीं की जा सकती।"

खो थिङ ने औरत के हाथ से अपना हाथ छुड़ाया और कहा, "अभी मैं नौजवान हूं। मुझे सारे तौर-तरीके नहीं मालूम हैं। मैं अपना परिचय पत्र नहीं ले आया था!" वह साइकिल पर चढ़ा और जाने के लिए बढ़ा।

श्रीमती य्वान ने उसे जाते हुए देखा, उन्हें स्वयं नहीं मालूम कि उन्होंने क्या महसूस किया। वह उन्हें सुशील युवक लगा। जरूर य्वान श्या के पापा ने किसी बात से उसे नाराज कर दिया होगा। परिचय पत्र! क्या बकवास है? उन्हें मालूम ही नहीं कि वह क्या पूछ बैठे...

५

य्वान श्या सचमुच ही किसी काम से चली गई। वह ली लू को फोन किए बिना सीधे

उसके घर गई। ली लू को जब युवक के आगमन का पता चला तो वह झट से तैयार हो गई। वह य्वान श्या के साथ लौटी।

दो "अमरपक्षी" साइकिलें अगल-बगल में चली जा रही थीं, दोनों साइकिलों पर सवार लड़कियां बातें करतीं और हंसती जा रही थीं। साइकिलें इतनी तेज चल रही थीं कि रास्ते के पेड़-पौधे, सड़क की बत्तियां, पैदल चलने वाले सभी पीछे छूटते जा रहे थे। ऐसा लग रहा था कि वे दोनों संसार की सबसे अधिक खुश और लंबी लड़कियां हैं। सुनहरा भविष्य उन्हें संकेत दे रहा था।

हमेशा की तरह ली लू ने घर में घुसने के पहले चेतावनी दी, "चाचा-चाची, मैं फिर से आ गई हूं। क्या मेरा स्वागत है?"

पर कोई उसके स्वागत के लिए नहीं आया, वह स्वयं ही अंदर घुसी। ड्राइंग रूम किसी युद्ध मैदान की तरह लग रहा था। य्वान चाचा किसी घायल बंदी की तरह कुर्सी पर लुढ़के पड़े थे। य्वान चाची उनके सामने विजयी योद्धा की तरह खड़ी थीं।

"वह युवक कहां है? चला गया?"

चाची ने क्रोध में कहा, "इनसे पूछो!"

सहप्रबंधक ने दया की भीख मांगी, "उसने हमारी मदद की, इसलिए अवश्य ही मैं भी उसकी मदद करूंगा! तुम लोग और क्या चाहते हो?"

श्रीमती य्वान ने कमुक के आ जाने से दोहरी ताकत से आक्रमण किया, "मुझे तुम्हारे ब्वायलर की परवाह नहीं, मैं उस युवक को यहां देखना चाहती हूं।"

उनके पति ने कहा, "मैं उसे कहां से ले आऊं? कल तुम उसके छोटे कारोबार फोन करके कह देना कि मैं सहमत हूं।"

"छोटा कारोबार" शब्द सुनकर ली लू का दिल बैठ गया। वह य्वान श्या से अकेले में इस बारे में पूछना चाहती थी। उसने य्वान चाची को शांत कर खाना बनाने के लिए भेजा। य्वान चाची भी इतनी जल्दी शांत नहीं हुईं। उन्होंने ली लू का सहारा लेकर अपने पति को लंबी-चौड़ी सुनाई और उनके स्वभाव की आलोचना की। उन्होंने उस युवक से परिचय पत्र क्यों मांगा? उन्होंने घोषणा की कि वह य्वान साहब के लिए खाना नहीं बनाएंगी। उन्होंने कहा, "इस बूढ़े को भूखा मरने दो।" सहप्रबंधक ने इस नाजुक मौके पर चुप रहना ही उचित समझा और हार मान ली, वर्ना बात और बढ़ जाती और ली लू को बुरा लगता। उन तीनों में वह सबसे नाटे और अभागे थे। पर उनकी पत्नी ने तब तक भाषण देना बंद नहीं किया, जब तक वह स्वयं न थक गईं।

य्वान श्या के कमरे में आकर ली लू ने पूछा, "बताओ, क्या वह छोटे कारोबार में काम करता है?"

य्वान श्या ने उसका प्रश्न टालते हुए कहा, "इससे क्या फर्क पड़ता है? वह छोटे कारोबार में काम करता है, क्या इसलिए हमें उसे तुच्छ समझना चाहिए? दूसरे दर्जे का नागरिक?"

ली लू ने कहा, "नहीं, बिलकुल नहीं। मुझ पर नाराज मत हो। पर मुझे डर है कि चाचा-चाची आपत्ति करें?"

निस्संदेह य्वान श्या ली लू पर अपना गुस्सा नहीं निकाल रही थी। साथ ही वह अपनी सहेली को सब कुछ समझाना भी जरूरी नहीं समझ रही थी। उसने कहा, "हाथ में लौह कटोरा आ जाने के बाद मेरे प्रिय पिता उन दिनों को भूल गए, जब वह टूटी टोकरी लिए खाने की भीख मांगा करते थे। यदि उनके दिल में छोटे कारोबार के प्रति इज्जत होती तो वह मां का स्थानान्तरण राज्य संचालित कारखाने में नहीं करवाते। इसलिए जब मैं किसी के मुंह से नौकरशाही और बड़े अधिकारियों की आलोचना सुनती हूं तो मुझे एक साथ खुशी और दुख का अनुभव होता है। मुझे दुख इस बात का होता है कि मैं ऐसी आलोचना करने में असमर्थ हूं। मुझसे वह हक छीन लिया गया है।"

य्वान श्या ने ली लू के सामने अपनी स्पष्ट राय रखी। उसने बताया कि यदि एक मनुष्य अच्छे चरित्र का है तो हमें उसके पद और प्रतिष्ठा की चिंता नहीं करनी चाहिए। ली लू चिंगारी कारखाने के बारे में विस्तार से जानना चाहती थी। य्वान श्या को जितना मालूम था और खो थिङ ने उसे जो बताया था, उसने सब कुछ ली लू को बताया। उसने कहा कि चिंगारी कारखाने के फेरिक क्लोराइड की मांग बढ़ी है, ऊहान लोहा और इस्पात कंपनी बड़ी मात्रा में उनसे फेरिक क्लोराइड खरीदना चाहती है। पश्चिमी जर्मनी के एक विशेषज्ञ ने उन्हें बताया था कि यदि वे उत्पादन नहीं कर सकते तो उसे पश्चिमी जर्मनी से आयात कर सकते हैं। पर इस छोटे कारोबार ने किसी तरह इसके उत्पादन में सफलता हासिल की है। य्वान श्या का अनुराग देखकर ली लू अधिक देर तक तटस्थ नहीं रह सकी। जल्दी ही दोनों सहमत हो गईं कि वह सही आदमी है। उन्होंने तुरंत आगामी कार्यवाही की एक योजना बनाई।

६

अगले दिन सुबह य्वान श्या और ली लू दोनों चिंगारी रासायनिक कारखाना गईं। कारखाने में ऐसी कोई खासियत नहीं थी। पर इस दृष्टिकोण से देखने पर कि अनेक कठिनाइयों का सामना करते हुए भी कारखाना आगे बढ़ रहा है, कारखाने की महत्ता मालूम हो सकती थी। कारखाने के गेट के बाहर से ली लू ने सब कुछ देख लिया। रात में य्वान श्या की बतायी बात याद आई कि कैसे वे आधुनिक इस्पात कारखाने के लिए फेरिक क्लोराइड बनाने की कोशिश में लगे हैं। उसने कारखाने के अन्य मशहूर उत्पादनों के बारे में भी सोचा। अब कारखाने की हालत अपनी आंखों से देखने के बाद वह प्रशंसा किए बिना नहीं रह सकी, "कौन सोच सकता था कि यह छोटा कारखाना इतना सफल होगा।"

य्वान श्या ने इशारा किया, "वह आ रहा है।"

ली लू ने देखा, वह युवक साइकिल पर चला आ रहा था। वह लंबा और सुंदर था। पहली नजर में उसकी राय अनुकूल बनी, वह किसी भी तरह उसके दोस्त से कम नहीं था। उसने खुशी के साथ दूसरी टिप्पणी की, "कौन सोच सकता था कि यह संभव है!" उसने य्वान श्या की पसंद की सराहना की। उसका गोल चेहरा खुशी से और गोल हो गया।

"साहस, हठ और उत्साह से काम लो," उसने य्वान श्या को दबी आवाज में समझाया।

उसकी तीनों सलाह प्रभावशाली नहीं रहीं। य्वान श्या माफी मांगने आई थी और कुछ दूसरी बात भी सोच रही थी। वह प्रायः आराम से विश्वास के साथ काम लेती थी, पर अब उसके पास आते ही वह क्षुब्ध हो गई।

खो थिङ भी बदला हुआ था। सहप्रबंधक के छोटे ड्राइंग रूम में हुई अग्नि परीक्षा के बाद उसके व्यवहार में ठंडापन आ गया था, उसकी आंखें स्थिर थीं और वह आने वाली हर मुसीबत का मुकाबला करने को तैयार था। य्वान श्या को देखकर उसे आश्चर्य हुआ। वह यहां क्यों आई है और वह भी एक सहेली के साथ? उसने खोजकर तीक्ष्ण शब्द और आक्रामक मुहावरे निकाले ताकि उन्हें ताना मार सके। वह क्या सलाह देने आई है? यदि वह अपने पिता के लिए 'चिरनूतन लेप' खरीदने आई है तो वह उसकी इच्छा पूरी करने में मदद करेगा।...

य्वान श्या ने आगे बढ़कर कहा, "बड़े सबेरे आ गए।"

"तुम... तुम तो मुझसे भी पहले आई हो," खो थिङ ने दो टूक जवाब दिया। उसे झगड़ा करने की आदत नहीं थी। उसके सौंदर्य और लाज का उस पर असर हुआ, वह इतना कठोर हृदय नहीं था कि उसकी अवहेलना करता। सभी तीक्ष्ण और आक्रामक शब्द वह भूल गया।

थोड़ी देर तक खामोशी बनी रही। अंतरराष्ट्रीय वार्ताओं में ऐसी खामोशी बड़ी बात नहीं है, कभी-कभी वर्षों कोई बातचीत नहीं होती। पर ऐसे मौके पर थोड़ी देर की खामोशी भी तनाव बढ़ा देती है। खामोशी युद्ध से अधिक असहनीय हो गई।

पार्टी सचिव वान आधा भठूरा हाथ में लिए आ रही थीं। उन्होंने दूर से ही पूछा, "खो थिङ, क्या ब्वायलर मिला?"

"वे परिचय पत्र चाहते हैं!" खो थिङ ने जवाब दिया। उसने य्वान श्या पर व्यंग्य करते हुए यह बात कही।

"अगर तुमने सारी व्यवस्था कर ली है तो परिचय पत्र लिखने में मुझे कितना समय लगेगा।" परिस्थिति से अपरिचित पार्टी सचिव वान बहुत खुश दिखीं। पास आने पर उन्होंने प्रशंसा के स्वर में पूछा, "ये दोनों लड़कियां कौन हैं?"

ली लू ने तुरंत स्थिति संभालते हुए कहा, "सहप्रबंधक य्वान ने हमें यहां भेजा है। कल कॉमरेड खो के लौटने के बाद सहप्रबंधक य्वान ने कहा, 'उसे बार-बार यहां आने-जाने की क्या जरूरत है। हम सभी चार आधुनिकीकरण को सफल बनाने में व्यस्त हैं।' इसलिए उन्होंने स्वयं यह आदेश लिखकर हमें यहां पहुंचाने के लिए दिया।"

य्वान श्या ने अपने पिता की गलती को ढंकने के लिए ली लू की कोशिश की प्रशंसा की। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या कहे। सच यह था कि ब्वायलर की समस्या तुरंत नहीं सुलझाई गई तो संभव था कि किसी दूसरे कारखाने को बेच दिया जाता। ली लू य्वान श्या के दोस्त को देखना भी चाहती थी ताकि वह दोस्त के निजी सलाहकार की भूमिका अच्छी तरह अदा कर सके। इसलिए दोनों ने सहप्रबंधक य्वान को आदेश लिखने पर बाध्य किया था।

पार्टी सचिव वान कृतज्ञ थीं। वह दोनों लड़कियों को अपने दफ्तर में बुलाकर बात करना

चाहती थीं, पर उन्हें डर था कि उनके तेल लगे हाथ से लड़कियों के कपड़े गंदे हो जाएंगे। ली लू ने कहा कोई बात नहीं है और वह पार्टी सचिव वान के साथ दफ्तर में आई। ली लू ने पार्टी सचिव वान को कल की घटना उचित रूप से बताई और साथ ही खो थिङ के बारे में विशेष जानकारी भी हासिल कर ली। पार्टी सचिव वान अत्यंत खुश थीं, उन्होंने मुस्करा कर बाहर खड़ी य्वान श्या को बार-बार देखा। उनके कारखाने की कुछ लड़कियों ने तृतीय दवा कारखाने के मजदूरों से शादियां की थीं। अब तृतीय दवा कारखाने की इतनी सुंदर लड़की, और वह भी सहप्रबंधक य्वान की बेटी, उनके छोटे कारोबार में स्वयं आई थी। इससे उनकी प्रतिष्ठा में इजाफा हुआ था। उन्होंने सहप्रबंधक य्वान के प्रति आभार व्यक्त किया; उन्होंने केवल ब्वायलर देकर ही मदद नहीं की थी, बल्कि दहेज में एक सुंदर लड़की भी दी थी। "हमारे छोटे कारोबार को तुच्छ न समझें, यहां तक कि सहप्रबंधक य्वान भी इसके बारे में अच्छी राय रखते हैं।" उन्होंने संतोष की सांस ली।

य्वान श्या ने खो थिङ से माफी मांगी। पर खो थिङ अभी भी नाराज था। उसने कोई बात नहीं की। तभी पाली आरंभ होने की घंटी बजी और खो थिङ अपने काम पर चला गया। य्वान श्या नहीं जान पाई कि उसने उसे माफ किया या नहीं।

उस शाम दक्षिण झील के किनारे पर य्वान श्या प्रतीक्षा कर रही थी। वह उसी स्थान पर खड़ी थी, जहां उसकी साइकिल खराब हुई थी और उसे खो थिङ ने ठीक किया था। अनेक लोग वहां से गुजरे। उदास य्वान श्या सोच रही थी, "क्या आज भी मनमोहक चांद निकलेगा? क्या खो थिङ अपने वादे के अनुसार यहां आएगा? या वह लंबा रास्ता लेकर दूसरी तरफ से घर लौट जाएगा? उसे उसके पिता और उसके बीच का फर्क देखना चाहिए...।"

ली पिनख्वेइ

(१९४५ -)

ली पिनख्वेइ का जन्म १९४५ में शेनशी प्रांत की हयाङ काउंटी में हुआ था। १९६४ में उच्च माध्यमिक विद्यालय की पढ़ाई पूरी करने के बाद वह अपने गांव लौटे और कृषि कार्यों में संलग्न रहे। चार वर्षों के बाद वह सेना में भर्ती हुए। १९७० में वे चीनी कम्युनिस्ट पार्टी में शामिल हुए। १९७४ में उनका स्थानान्तरण उरुमछी सैन्य क्षेत्र की नाटक मंडली में हुआ और तब से वहां वह लेखक के तौर पर कार्य कर रहे हैं।

उन्होंने अपना साहित्यिक जीवन १९६४ में आरंभ किया। "हिमाच्छादित पहाड़ में लाल लालटेन" ऑपेरा और सहयोगी प्रयास से लिखित "हचिना की हरी धरती" नाटक के अलावा उनके अनेक लघु उपन्यास प्रकाशित हो चुके हैं। उन्होंने अनेक कहानियां भी लिखी हैं। "छुट्टी" और "प्रेम का फव्वारा" उनकी उल्लेखनीय रचनाएं हैं।

थ्येनशान पहाड़ का सैनिक

ली पिनख्वेइ

१

अपना साहस बटोरकर रास्ते से गुजरने वाली मोटरों को रोकती-चलती मैं सूखी घाटी में पहुंची। मैं सीधी सैन्य टुकड़ी के रिहायशी मकानों की तरफ गई, पर वहां खाली बैरक देखकर मुझे अत्यंत निराशा हुई। सभी सैनिक थ्येनशान पहाड़ की घाटी में काम करने चले गए थे।

पूर्वनिर्मित मकानों की एक कतार थी, उसे ही सैनिकों ने हॉस्टल का नाम दे रखा था। हॉस्टल में मेरे अलावा एक और अतिथि थी। अंडाकार चेहरे और सुंदर आकृति की उस आकर्षक औरत की उम्र तीस के लगभग होगी। उसने अपने काले ऊनी जैकेट पर सफेद फूल लगा रखा था। रोने से सूजी उसकी आंखें देखकर मुझे परेशानी हुई। वह सिसक रही थी, "हाएचओ, मुझे तुम्हें नहीं छोड़ना चाहिए था। मैंने तुम्हारे प्रति अन्याय किया है।"

विशाल गोबी रेगिस्तान में तेज आंधी का शोर था और रेत व धूल हवा के साथ उड़ रही थीं। मैंने मेज और खाली पलंग खींचकर दरवाजे और खिड़की के पास लगाए, ताकि वह गिरे नहीं। फिर चेहरे पर मुंहपट्टी रखकर कपड़े पहने हुई ही लेट गई। मेरी आंखें थोड़ी देर तक छत पर टिकी रहीं।

मैंने अपने कारखाने की प्रबंध समिति से शिनच्याङ में आयोजित भेड़ के बाल काटने की कैंची के सुधार से संबंधित सम्मेलन में भाग लेने की अनुमति ली थी, इसके पहले मुझे चिथुङ के कई पत्र मिल चुके थे। हर पत्र में उसने लिखा था, "छ्येन, तुम यहां जरूर आओ। यह एक अच्छा मौका है। तुम अपनी आंखों से देख सकोगी कि थ्येनशान पहाड़ में हम सैनिक कैसे रहते और काम करते हैं। मुझे विश्वास है कि इसके बाद तुम मुझे समझ पाओगी...।" चलने के दिन उसकी मां मुझसे मिलने आईं। वह अपने साथ टॉफियां लाई थीं और उन्होंने कहा कि इन्हें तुम स्वयं चिथुङ को देना।

टुकड़ी के मुख्यालय के बाहर चल रही रेतीली आंधी भयंकर थी। न जाने पहाड़ों में क्या स्थिति होगी? थोड़ी देर पहले पांचवीं कंपनी के कमाण्डर हान उस युवती को विदाई देने हॉस्टल में आए थे। मैं अभी सोच ही रही थी कि चिथुङ की टॉफियां उनके हाथों भिजवा दूं, तभी

फोन पर चिथुङ से हुई उनकी बातचीत से मैंने अपना इरादा बदल दिया। वह फोन पर कह रहे थे, "डिप्टी बटालियन कमाण्डर, तुम्हारी दोस्त तुमसे मिलने यहां आई हैं। वह पेइचिङ से सीधे आई हैं। अपने साथ शादी की थैलीभर टॉफियां लाई हैं!" अफसोस! पिछले तीन महीनों में मैंने उसे एक छोटा पत्र भी नहीं लिखा था।

मैं यहां अपने मामले को अंतिम रूप देने की इच्छा लेकर आई थी। मेरे दोस्त श्याओ थ्येन की बात में सच्चाई थी। उसने कहा था कि चिथुङ शायद अगले वर्ष अपने संबंधियों से मिलने पेइचिङ आए, अभी वह इकतीस वर्ष का हो चुका है, इसका मतलब एक साल और प्रेम की आग में तड़पना और तब तक दिल की बात दिल में दबाए रखना। इसी वजह से तो मैं यहां आ गई, पर यहां मैं उससे क्या कह सकूंगी? इसलिए अच्छा होगा कि उसे एक पत्र लिख दूं। पत्र लिखने का विचार मुझे अच्छा लगा। मैंने अपनी रजाई फेंकी और बिस्तरे से निकली।

मैंने लिखना आरंभ किया, "कॉमरेड चङ चिथुङ..." ओह, यह कितना भद्दा संबोधन है! इस संबोधन में एक ठंडापन और हृदयहीनता थी। नहीं, मुझे लिखना चाहिए, " प्रिय चिथुङ"। हर बार जैसे ही मैंने उसका नाम लिखकर पत्र लिखना आरंभ किया कि मेरी आंखों के सामने उसकी छवि उभरी, तेज नजरों वाला एक हृष्ट-पुष्ट युवक। उसके कर्णभेदी कहकहों की आवाज मेरे कानों में गूंजने लगी। ऐसे मौके पर मुझे लगा कि वह मेरी बगल में खड़ा है और मेरे बालों को सहलाते हुए कह रहा है, "छ्येन, तुम कितनी कठोर हो! मैंने तय कर लिया है, मैं तुम्हारे साथ पेइचिङ लौट जाऊंगा। मैं तुम्हें छोड़कर अब कभी नहीं जाऊंगा।"

"असंभव," मैंने स्वयं से कहा। फिर कुछ सोचकर मैंने इरादा बदला, "पहाड़ में उससे मिलने आने के बाद इतना निराश होने की क्या जरूरत है?" मैंने स्वयं को समझाया। इसके पहले भी मेरे मन में यह अंतर्द्वंद्व कई बार उठ चुका था, फिर से उसी तरह के विचार मन में उठे। अचानक मैंने कलम फेंकी और कागज फाड़ फेंका। फिर से बिस्तरे में आकर लेट गई और रोने लगी।

कमरे में लैम्प की हल्की पीली रोशनी युवती पर पड़ रही थी, वह किसी कांस्य मूर्ति की तरह लग रही थी और बाहर तेज हवा अपने झकोरों से छोटी झोंपड़ी को हिला रही थी।

अगले दिन सुबह कार्यस्थल से कोई बड़े नेता जीप से आए और युवती को अपने साथ ले गए। युवती के जाने के बाद दुखी होकर मैं कमरे में टहलने लगी, तभी कॉमरेड हान कमरे में आए। उनके मौसम के सताए चेहरे पर रहस्यपूर्ण मुस्कान थी। उन्होंने मुझे माचिस की तोड़ी डिबिया दी, उस पर लिखा था :

छ्येन, माफ करना, तुम्हें थोड़ी प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। यहां कुछ जरूरी काम आ पड़ा है, जिसके लिए मुझे रुकना पड़ेगा। कल मिलूंगा।

चिथुङ

लिखावट साफ नहीं थी। लिखावट से स्पष्ट था कि पत्र जल्दी में लिखा गया है। मैं परेशान हो उठी। "क्या बात हो सकती है?" मैंने सोचा। "पिछले दो दिनों से यातायात संपर्क

टूट गया था..." हान ने कहा। उनकी बात और युवती के जैकेट पर लगे सफेद फूल ने मेरी चिंता बढ़ा दी। मैं एक मिनट भी इंतजार न कर सकी। मेरी इच्छा हुई कि मैं अभी तुरंत उससे मिलूं। "हां, अभी चलें!" मैंने कहा और तेज कदमों से आगे बढ़ी।

बिना किसी झिझक के मैं एक लॉरी के केबिन में बैठी, उस लॉरी पर खाद्य सामग्री लदी थी।

२

लॉरी पहाड़ी सड़कों पर दौड़ी जा रही थी।

मेरी उम्मीद से अधिक चौड़ी सर्पीली एस्फाल्ट सड़क पहाड़ी ढलान पर बनी थी। चारों तरफ देवदार के बड़े पेड़ थे, जो सूरज को छिपा रहे थे। घाटी में नीचे एक नदी थी, जिसमें बर्फ के टुकड़े भी पानी के साथ बह रहे थे। अभी सड़क यातायात के लिए नहीं खुली थी, इसलिए इक्के-दुक्के ट्रक आते-जाते दिखाई पड़ रहे थे। धुंधली घाटी में शांति और ठंड थी। तो यह सड़क चिथुङ ने बनाई है! इस सड़क को मैंने उसके पत्रों के माध्यम से अपने कल्पना जगत में आकार लेते देखा था! मेरे अंदर एक नयी भावना का संचार हुआ और मैं कविता या स्वप्न की दुनिया में प्रवेश कर गई। सचमुच, हमारा प्रेम एक स्वप्न की तरह था...

१९७१ में हमारे स्कूल में भयंकर खलबली मची थी। स्कूल के छात्रों को देहातों में जाने के लिए प्रेरित करने के उद्देश्य से बुलाई गई सभा में किसी ने अपना संदेह व्यक्त किया, "हम छात्रों को अवश्य ही निर्धन और निम्न मध्यमवर्गीय किसानों से पुनर्शिक्षित होने के लिए देहातों में जाना चाहिए, पर मेरा सवाल है..." उसने अपनी आशंका व्यक्त की, " पर चीन में बेरोजगारी की समस्या के बारे में आप क्या सोचते हैं?" सारा स्कूल स्तंभित रह गया और कैम्पस में चिथुङ की चर्चा होने लगी। उसकी आलोचना करने के लिए एक सभा बुलाई गई। सभी लोग देखना चाहते थे कि यह प्रतिक्रियावादी तत्व कितने दुस्साहस के साथ अपनी राय पेश करता है? संयोग ऐसा हुआ कि उसकी भर्त्सना करने के लिए सबसे पहले मुझे बुलाया गया। मेरे औपचारिक भाषण को सुनकर श्रोताओं ने टिटकारियां मारीं। क्रोध में मैंने श्रोताओं पर नजर डाली तो सामने मध्य में चिथुङ बैठा दिखाई पड़ा। उसके बाल छील दिए गए थे, वह तिरस्कार में अपना सिर हिला रहा था। उसके हावभाव से ऐसा लगा जैसे इस सभा से उसे कुछ लेना-देना न हो। इससे सभा में वह गंभीरता नहीं रह गई। मैं उसे लाल रक्षक हेडक्वार्टर में ले गई। मैंने मेज पर मुक्का मारते हुए उससे पूछा, "तुम अलग और जिद्दी दिखने की कोशिश कर रहे हो। तुम अपने आपको आखिर समझते क्या हो?" उसने मेरा उपहास किया और मुझसे पूछा, "तुम अपने बारे में क्या सोचती हो, लड़कों की तरह बाल कटा रखे हैं, क्या तुम अलग और जिद्दी दिखने की कोशिश नहीं कर रही हो?" गुस्से के कारण मेरे होंठ नीले पड़ गए और चेहरा लाल हो गया। पर मैं उसे कोई जवाब न दे सकी। कुछ दिनों के बाद चङ चिथुङ ने बड़े रेखाक्षरों का पोस्टर लगाया, उसमें उसने घोषणा की कि वह चीनी क्रांति की पवित्र भूमि उत्तरी शैनशी प्रांत के देहातों में रहेगा और काम करेगा।

हम दोनों को एक ही गांव में भेजा गया। मुझे अपनी जीत महसूस हुई। आखिरकार उसने पश्चाताप किया और गांव में किसानों से पुनर्शिक्षा प्राप्त करने के लिए तैयार हुआ। "चङ चिथुङ, तुम्हें अपनी नौकरी के लिए यहीं रुकना चाहिए था," शेनशी जाते समय मैंने उससे व्यंग्य किया, "तुमने क्यों इस पठारी इलाके में जाने का फैसला लिया?" "क्या तुम्हें मालूम है कि अमरीकियों ने अपने पश्चिमी क्षेत्रों को कैसे विकसित किया था?" वह हंसते हुए बोला, "अपने पूर्वजों को ही देखो, वे सीमाओं पर जाकर रहे और सीमा की चौकसी की!" मैंने उसकी बातों पर ध्यान नहीं दिया और मुंह बंदकर हंसी। वह ठहाका लगा कर हंसने लगा। मैंने अपनी जिंदगी में इतना विचित्र और जोरदार ठहाका नहीं सुना था। मैं चिढ़ गई, पर अन्य सहपाठियों ने ताली और सीटी बजाई और उसकी प्रशंसा की। मैंने मन ही मन में कहा, "ऐसा अहंकार न करो। हालांकि मैं मिडिल स्कूल की छात्रा हो सकती हूं, पर मैं कॉलेज के छात्रों और उनके प्राध्यापकों को नीची नजर से देखती हूं। तुम्हें किस बात का घमंड है। तुम सब बैल की तरह मूर्ख हो।"

दो वर्ष बीत गए। राजनीतिक आंदोलनों का कोई अच्छा नतीजा न निकला। स्कूल के छात्र फिर से पेइचिङ लौटने के लिए शराब की बोतल लिए प्रभावशाली व्यक्तियों के दरवाजे खटखटाने लगे। जिन छात्रों के अच्छे संपर्क थे, वे मेरा उपहास कर चले गए; जिनके संपर्क नहीं थे, उन्होंने अपनी झुंझलाहट मुझ पर निकाली, क्योंकि मैं "सांस्कृतिक क्रांति" के सक्रिय तत्व की हैसियत से गांव में आई थी। अब मेरा उत्साह भी धीरे-धीरे कम होता गया और अंततः मेरा भी मोहभंग हो गया। चूंकि मैंने पेइचिङ लौटने से इंकार कर दिया था, इसलिए मुझे वहीं रहना था। सोचने पर दुख होता था कि मैंने चङ चिथुङ के साथ क्यों ऐसा व्यवहार किया! मैंने चङ चिथुङ पर गौर करना आरंभ किया। मैं यह देखने लगी कि वह आसपास के माहौल के प्रति क्या रवैया रखता है। वह अब पहले जैसा नहीं रह गया था। न तो उत्तेजक भाषण देता था और न बड़ी टिप्पणियां करता था। वह अल्पभाषी बन गया, दिन-रात खेतों में काम करता और खाने के समय भी किसी से बातचीत न करता। वह खाली समय में दर्शनशास्त्र से संबंधित पुस्तकें और पत्रिकाएं पढ़ा करता था। उसके बिस्तर पर पुस्तकें और पत्रिकाएं बिखरी रहती थीं। उसकी भौंहें हमेशा चढ़ी रहती थीं और ऐसा लगता था कि वह विश्व की किसी जटिल गुत्थी को सुलझाने में लगा है।

गर्मियों में एक दिन दोपहर में अचानक वर्षा हुई, ओलतियों से पानी टपक रहा था। बिजली चटक कर अहाते के एल्म पेड़ पर गिरी। चङ चिथुङ बनियान और हाफपैंट पहने नंगे पांवों बारिश में भीगता गांव से बाहर जा रहा था। निरी मूर्खता थी, वह क्यों खतरा मोल ले रहा था! मैं भी उसे आवाज देती हुई उसके पीछे दौड़ी। वह एक चट्टान पर खड़ा आकाश की तरफ देखता हुआ अपने हाथ हिला रहा था। पास आने पर मैंने सुना, वह सुंग राजवंश काल की एक कविता का पाठ कर रहा था, "महान नदी पूर्व की ओर बहती है, महान पुरुषों और पिछली पीढ़ियों के निशान मिटाती हुई...।" "पागल हो गए हो क्या?" न जाने कहां से मुझे शक्ति मिली, मैंने उसका हाथ पकड़कर पूछा। उसने चौंककर मुझसे कहा, "तुम पागल हो गई हो।" "तुम अवश्य ही पागल हो गए हो, तभी ऐसी भयंकर वर्षा में बाहर निकले हो।

क्या तुम आत्महत्या का प्रयास नहीं कर रहे हो?" "आत्महत्या? मैं तो वर्षा में नहा रहा था।" उसने शांत स्वर में एक-एक शब्द पर जोर देते हुए बताया। मैंने उसे घूरकर देखा। मेरी चिंता समझकर उसने ठहाका लगाया। "तुम अपने आप को बुद्धू बना रही हो, खेतिहर," उसने कहा। (गांव में आने के बाद मैंने अपना नाम खेतिहर रख लिया था)। "बिजली, तूफान और बवंडर से महिमामंडित देहात का यह विस्तार स्वयं में एक कविता है! इसने पीढ़ियों से वीर पैदा किए हैं। नए चीन को जन्म देने वाले क्रांति के इस पवित्र स्थान में हम क्यों डरें और प्रकृति की परीक्षाओं से क्यों भागें? आओ, मेरे साथ तुम भी घूमने चलो!" उसके रोमांटिक और ओजपूर्ण शब्दों ने आग की तरह मेरी ठंड समाप्त कर दी और पहली बार मैंने उसकी प्रखर बौद्धिकता और हृदय की शुद्धता की झलक देखी।

हम दोनों गपशप करते हुए लगभग दो घंटे तक घूमते रहे। बाद में कुछ दिनों तक मैं बुखार में तपती रही। वह एक दिन आया, उसे भी जुकाम हो गया था। उसने मेरे सामने अप्रत्याशित घोषणा की, "मेरा जीवन बड़ा बेढंगा और अनुशासनहीन रहा। मुझे एक सैनिक का जीवन जीना चाहिए। मैं सेना में भर्ती हो जाऊंगा!" मैं नहीं चाहती थी कि वह मुझे छोड़कर जाए, मुझे नहीं मालूम कि मैं ऐसा क्यों चाहती थी। इसलिए मैंने ताना मारते हुए कहा कि वह किसी भी तरह पेइचिङ लौटने की कोशिश कर रहा है। "हां, कुछ लोग व्यक्तिगत हित के लिए सेना में भर्ती होते हैं, पर मैं समाज को और अच्छी तरह जानने के लिए सेना में भर्ती होऊंगा...।" मैंने निराश होकर उसे याद दिलाया, "स्कूल में तुम्हारी आलोचना हुई थी और तुम्हें अनुशासित किया गया था, है कि नहीं?" उसने तुरंत अपनी उंगली दांत से काटी और कागज पर खून से लिखा, "मनुष्य को दुनिया का मुकाबला करना चाहिए।" उसने उस क्षेत्र में सेना के नियुक्ति अधिकारी को वह कागज देने का फैसला किया। "ठीक है!" मेरी आंखों में आंसू भरे थे। "तुम सब मुझे छोड़कर चले जाओ। मैं आत्महत्या कर लूंगी।" उसने कठोर शब्दों में मुझसे कहा, "आत्महत्या! क्या एक योग्य आदमी ऐसा करता है? जरा देहात के लोगों को देखो। उन्होंने खुले दिल से क्रांति में मदद की और आज वे भूखे हैं। उन्हें पेट भरने के लिए पर्याप्त काला सोयाबीन या बाजरा भी नसीब नहीं होता। वे क्या करें? आत्महत्या कर लें? शहरों या कस्बों में स्थानान्तरण करें और वहां काम करें व रहें? प्रिय खेतिहर, पिछले कुछ वर्षों में मैंने अपनी आंखों से छोटे लोगों की दुर्दशा देखी है। शायद मैं तुमसे अधिक दुखी हूं। संभव है 'सांस्कृतिक क्रांति' हमें बर्बाद कर दे, पर इसी में कुछ ठोस और पके हुए व्यक्ति निकलेंगे। हमें गंभीरता से सोचना और स्थितियों का विश्लेषण कर देश और लोगों के हित में काम करना चाहिए।" मैं उसे अच्छी तरह जानती थी, यदि उसे लगा कि उसने सही फैसला किया है तो वह पूरी निष्ठा से उस दिशा में आगे बढ़ता रहेगा। इसलिए भरी आंखों से उसे विदा करने के लिए मैं उसके साथ तीन किलोमीटर तक गई। वह छिङहाए के छाएदाम बेसिन में चला गया। वहां भीषण ठंड पड़ती थी और लोगों को सालभर गर्म कपड़े पहनने पड़ते थे। उसने मुझे कुछ पत्र लिखे, पर सभी पत्र अवैयक्तिक थे, उनमें आत्मीयता नहीं थी। मैंने भी अपना दिल पत्थर कर लिया। फिर भी अपने पहले प्रेम और प्रेमी को कोई कैसे भूल सकता है?

३

देवदार के जंगलों को पीछे छोड़ती लॉरी चली जा रही थी। एक जमी नदी पार करने के बाद झिलमिलाती ढलान और हिमाच्छादित पर्वतश्रेणियां दिखाई पड़ीं। अचानक आकाश विस्तृत लगने लगा। नीले आकाश की पृष्ठभूमि में सफेद बर्फ चमक रही थी।

१९७७ में मेरा स्थानान्तरण पेइचिंग हो गया था। जाड़े की एक शाम मैं श्याओ थ्येन के घर एक पार्टी में गई थी और आधी रात तक नाचती रही थी। वहां से लौटने पर लगभग बंद घर का दरवाजा खोलकर मैं अंदर घुसी तो देखा कि मां बिस्तर पर पड़ी कराह रही है और पिताजी, छोटा भाई, छोटी बहन और एक सैनिक सभी बिस्तर के पास खड़े हैं। मुझे देखकर सैनिक ने कहा, "खेतिहर ली...।" उसकी भारी आवाज ने मुझे चौंका दिया। चङ चिथुङ, वह चिथुङ ही था। उसे मेरा पुराना नाम अभी तक याद था। "तुम्हारी मां एक भीड़ भरी बस में चढ़ने की कोशिश में गिर पड़ीं और कमर में चोट खा गईं, चङ उन्हें अपनी पीठ पर ढोकर यहां ले आया," पिता ने बताया। मां बैठने की कोशिश करती हुई बोली, "वह तो जा रहा था, पर जब उसे मालूम हुआ कि तुम मेरी बेटी हो तो रुक गया।"

मुझे लगा कि मैं सपने की दुनिया में पहुंच गई हूं। वह वर्दी में लंबा और तगड़ा लग रहा था। उसके चौकोर चेहरे से पौरुष टपक रहा था। वह किसी शिकारी की तरह मजबूत लग रहा था। वह मुझे ऊपर से नीचे तक निहार रहा था। फिर हमारी आंखें मिलीं।

इस उलझन के क्षण में भी मां का एकालाप जारी था, "छ्येन अभी तक अकेली है। शादी का नाम सुनते ही काटने को दौड़ती है। तुम्हारा क्या हाल है? क्या तुमने शादी कर ली?" वह शर्माया हुआ अपने हाथ मल रहा था और मेरे दिल की धड़कन तेज होती जा रही थी। थोड़ी देर के बाद उसने हकलाते हुए कहा, "सेना में ऐसा नियम है कि अविवाहित सैनिक को हर दो साल के बाद छुट्टी दी जाती है। मेरे कमांडर ने इस बार कहा है कि मैं बगैर शादी किए न लौटूं।" मैंने किसी तरह अपनी हंसी रोकी और राहत की सांस ली। मेरी छोटी बहन इतने जोर से हंसी कि चिथुङ का चेहरा शर्म से लाल हो गया।

रात गहरी हो गई थी। जब मैं उसे सड़क तक छोड़ने आई तो रास्ते में कहीं कोई नहीं मिला। पूरी गली सुनसान पड़ी थी।

"रविवार को आना।"

"नहीं, नहीं आ पाऊंगा। मेरी छुट्टी खत्म हो गई है।"

"अच्छा तो तुम्हें पत्नी मिल गई है?" यह कहने के साथ ही मुझे अफसोस हुआ कि मैंने ऐसी छिछोरी टिप्पणी क्यों की। कड़वी मुस्कान के साथ उसने कहा, "पेइचिङ की लड़कियों का दिल जीत पाना मुश्किल है। कौन मुझ जैसे शिनच्याङ में नीरस काम करने वाले से शादी करेगी?"

"रहने भी दो," मैंने अपनी प्रसन्नता छिपाकर कहा, "मुझे लगता है कि अफसर बन जाने से तुम बहुत ज्यादा नकचढ़े हो गए हो।"

"अरे नहीं!" उसने सफाई दी, "मैं नहीं चाहता कि कोई मुझे किसी लड़की से मिलाए।

मैं ऐसी लड़की चाहता हूं, जो मेरे साथ काम कर चुकी हो और मुझे अच्छी तरह जानती हो...'' उसने उत्सुकता से मेरी तरफ देखा। घबराकर अपने बालों को सहलाती हुई मैं दूसरी तरफ देखने लगी।

हम दोनों खामोश, एक-दूसरे के बोलने की प्रतीक्षा में खड़े रहे। हमारे दिल की धड़कन तेज हो गई थी। पर चिथुङ आत्मसंयमी निकला, उसने घड़ी देखी और फिर हाथ मिलाकर चला गया।

जिस दिन चिथुङ वापस लौटा, मैं उसे विदा करने स्टेशन भी गई। लौटते समय उसकी मां बुदबुदाती रहीं, ''अब वह डिप्टी बटालियन कमांडर हो गया है और सेना का आदर्श इंजीनियर भी है। पर इन बातों से क्या फर्क पड़ता है? २९ वर्ष की उम्र हो गई, पर अभी भी अकेला है। लड़कियों की निगाहों में सैनिक आजकल निकम्मे हैं। देहात की लड़कियां भी सैनिकों को पसंद नहीं करतीं, वे भी शहरी लड़कों को खोजती हैं। भला कौन उसके साथ शिनच्याङ जाएगी?...''

प्रायः रात के चमकीले तारे चिथुङ के साथ देहात में बिताए पुराने दिनों की याद दिलाते थे। मैं अधिक दिनों तक प्रतीक्षा नहीं कर सकी। मैंने उसका हाल जानने के लिए उसको पत्र लिखा। एक महीना बीता, दूसरा महीना भी बीत गया, पर शिनच्याङ से कोई जवाब नहीं आया। कोई उसकी चर्चा करता तो मुझे अच्छा नहीं लगता था।

लगभग दो महीनों के बाद १९७८ का वसंत आया। एक दिन शाम को काम से लौटने पर मेरी छोटी बहन ने मुझे चिढ़ाते हुए सुनाया, ''बड़ी अच्छी खबर है। मैं सब-वे में आज चङ चिथुङ से मिली थी। वह आजकल सेना अकादमी में पढ़ रहा है। वह तुम्हारे बारे में पूछ रहा था।'' ''उसने पूछा था? मेरी बला से!'' मेरे जवाब से छोटी बहन का मुंह अपना सा रह गया, वह चली गई। उसी दिन शाम को चिथुङ आया, चेहरे पर वही पुरानी मुस्कान थी। बिना किसी आत्मीयता के मैं उसे अपने कमरे में ले गई। मैं जानबूझकर उससे आंखें नहीं मिला रही थी।

उसने क्षमा याचना के स्वर में कहा, ''जानता हूं, मुझसे नाराज हो!'' पर जब मैंने उससे पूछा कि उसने मेरे पत्र का जवाब क्यों नहीं दिया तो उसकी मुस्कराहट गायब हो गई और त्योरियां चढ़ गईं। कुछ देर के बाद उसने निर्णयात्मक स्वर में कहा, ''हम सैनिक स्पष्टवादी होते हैं। मैं उम्मीद करता हूं कि तुम बुरा नहीं मानोगी, हालांकि मैं जानता हूं कि यह कहकर मैं भयंकर गलती कर रहा हूं। 'सांस्कृतिक क्रांति' के पहले सीमांत क्षेत्र या उत्तरपश्चिमी पठार के सैनिकों की बड़ी इज्जत की जाती थी। वे जहां भी जाते थे, सीना फुलाकर गर्व के साथ अपना परिचय देते थे। लड़कियों से मिलने पर भी यही कहते थे, 'मैं सीमांत क्षेत्र से आया हूं।' इतना कहने भर से सामने खड़े व्यक्ति की आंखों में प्रशंसा झलकने लगती थी। पर अब हम बड़े निरीह भाव से अपना परिचय देते हैं, 'मैं तो सीमांत क्षेत्र से आया हूं; संभव है आपको यह बात अच्छी नहीं लगे।' '' उसने लंबी सांस ली, उसका चेहरा क्रोध से तमतमा रहा था, ''मैं तुमसे सच कहूं, मुझे किसी की सहानुभूति नहीं चाहिए, और न ही मैं किसी की दया चाहता हूं। जब मैं पिछली बार पेइचिङ में था, सैनिकों के प्रति लोगों का रवैया देखकर

पागल हो गया। मैं ऐसा अपमान बर्दाश्त नहीं कर सकता!" उसने मेज पर मुक्का मारा, उसका पूरा बदन थरथर कांप रहा था। "तुम नहीं बर्दाश्त कर सकते, इसलिए तुमने मान लिया कि मैं कर सकती हूं?" मैंने प्रतिकार किया। "खेतिहर, मैं जानता हूं कि तुम्हारा पेइचिङ स्थानान्तरण आसान नहीं है। मैं क्यों भविष्य की तुम्हारी खुशी में बाधक बनूं? इसलिए..." "इसलिए क्या? जब तुम्हें सब मालूम ही है तो बताने की क्या जरूरत है?" मैं इतना ही कह सकी।

मेरे व्यंग्यपूर्ण वाक्यों से वह चुप हो गया। अनेक बार वह जाने के लिए उठा, पर हर बार कुछ सोचकर बैठ गया। अपना गुस्सा उतरने पर उसे तकलीफ पहुंचाने का मुझे अफसोस हुआ। वह निश्चय ही मुझसे प्यार करता था, पर मुझे किसी दुविधा में नहीं रखना चाहता था। शायद मेरा पत्र पढ़कर उसे बहुत तकलीफ हुई थी और उसे स्वयं पर नियंत्रण करने में समय लगा था। पर अंत में वह केवल एक असंतोषजनक उत्तर लेकर आया था, जो उसकी स्वीकारोक्ति थी। उसके जैसे आत्मसम्मान प्रिय व्यक्ति को किसी लड़की का व्यंग्य सहन करने में भयंकर कठिन परीक्षाओं से गुजरना पड़ा होगा। मैंने बेचैनी महसूस की।

वंसत आखिर प्यार का मौसम होता है। इसलिए आंखें बंदकर मैंने स्वयं को भावनाओं के सागर में लहराने दिया। मुझे उसके पास जाना चाहिए। मैंने दुर्भाग्य से बचने के लिए प्रार्थना की।

४

लॉरी तेजी से चली जा रही थी... चली जा रही थी...

बादलों के बीच से लाल सूरज झांक रहा था। उसकी सुनहरी किरणें सफेद बर्फ से परावर्तित होकर झिलमिला रही थीं। नवागंतुक बर्फ की सुहावनी छटा की तुलना किसी सुंदर लड़की से करता है। उस समय वह यह कल्पना नहीं कर पाता कि हिमस्खलन रूपी सुंदर लड़की की कुरूपता कितनी विनाशकारी होती है।

मेरी मां को हमारे संबंधों की प्रगाढ़ता से खुशी हुई, पर चिथुङ का अंदेशा सही निकला। वह चिंतित थीं कि शिनच्याङ बहुत दूर है। मेरी छोटी बहन की दूसरी राय थी। उसे विश्वास था कि चिथुङ को फौजी अकादमी में काम मिल जाएगा और यदि यह नहीं भी हो पाता है तो वह सेना की नौकरी छोड़कर पेइचिङ वापस आ जाए। मेरी प्रिय सहेली मीमी ने उसे छोड़ देने की राय दी। उसने कहा, "स्थितियां बदल गई हैं। अब सेना की नीरस नौकरी अच्छी नौकरी नहीं रह गई है। यदि मैं तुम्हारी तरह सुंदर होती तो अवश्य ही किसी बड़े अधिकारी या प्रवासी चीनी या कम से कम किसी उच्च शिक्षा प्राप्त लड़के को पसंद करती। उसे छोड़ दो!" श्याओ थ्येन ने तो चुटकी लेते हुए कहा, "अपने हीरो से हमें क्यों नहीं मिलवाती हो?" श्याओ थ्येन के साथ मेरे मित्रतापूर्ण संपर्क के बारे में चिथुङ को आपत्ति नहीं थी, मैंने उसे अपने दोस्तों से मिलवाने का निश्चय किया। जब हम उनसे मिलने पहुंचे तो मीमी और कुछ अन्य नाच रहे थे। मीमी ने चुटकी ली, "अरे, संगीत और नृत्य की भूमि शिनच्याङ का मेहमान आया है, यह तो खुशी की बात है। आओ, हमें अपना नृत्य दिखाओ!" दूसरों ने

ठहाके लगाए। मैंने अपमानित महसूस किया। किसी ने उम्मीद नहीं की थी कि चिथुङ उसका आग्रह स्वीकार करेगा। वह आराम से मेरे साथ वाल्ज की धुन पर नाचने लगा। उसके कदम बड़े सधे हुए थे और वह पानी के ऊपर लहरा रहे ड्रैगनफ्लाई की तरह वाल्ज की धुन पर लहरा रहा था। मैं उसका नृत्य देखकर दंग रह गई। उसने मीठी मुस्कान मेरी तरफ फेंकी और धीमे स्वर में बोला, "क्यों, अगली बार हम लोग संगीत सुनने चलेंगे?" उस दिन सचमुच मेरी खुशी का प्याला छलका था।

श्याओ थ्येन को ईर्ष्या हुई। अपनी उंगलियां चटखाते हुए वह बोला, "नहीं, यह अच्छा नहीं है। कुछ सुरीली धुन होनी चाहिए।" "हां, 'अच्छी शराब व काफी' की धुन बजाओ," किसी ने कहा। टेप पर नई धुन बजने लगी और सभी फटी आवाज में गाने लगे "कौन करता है मुझे प्यार? कौन करेगा मुझे प्यार?..." मीमी अपने भारी कूल्हे मटका रही थी और उसका मुलम्मा किया हुआ नेकलेस उछल रहा था। उसने चिथुङ को नृत्य के लिए आमंत्रित किया।

चिथुङ ने अप्रसन्नता से भौंहे सिकोड़ीं, "माफ कीजिए, अब मुझे जाना है।" वह कमरे का नक्काशीदार दरवाजा खोलकर झटके से बाहर निकला।

मैं उसके पीछे दौड़ी। मैं जैसे ही उसके पास पहुंची, मेरे कुछ बोलने के पहले वह बिफर कर बोला, "कुछ बताने की जरूरत नहीं है! मैं कुछ भी सुनना नहीं चाहता! यह कोई मनोरंजन नहीं है। ये सब निक्कमे और कुंठित लोग हैं! हमारे थ्येनशान के सैनिक यह सब देखकर क्या सोचेंगे?" फिर थ्येनशान! थ्येनशान-थ्येनशान सुनकर मेरे कान पक गए थे। "तुम मुझे प्यार करते हो या अपने थ्येनशान को? तुम्हारे दोस्त क्या सोचते हैं, उससे मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता है!" मैं अपनी साइकिल पर चढ़ी और निकल गई। वह वहीं खड़ा गुस्से में उबल रहा था। उसे अच्छी सजा मिली थी।

इसके बाद अगले दो सप्ताह तक हम नहीं मिले। मैं प्रायः रात में नहीं खाती थी। मैंने अंग्रेजी की एक पाठ्यपुस्तक पढ़ने की कोशिश की, पर उसमें भी दिल नहीं लगता था। बड़ा खुश्क मौसम था। गर्मी पड़ रही थी और हवा बिलकुल नहीं चलती थी। फिर अचानक वह दो गुलाबी टिकट लेकर हाजिर हुआ था।

"आज एक संगीत समारोह है। आओ चलें!" वह बड़े उत्साह में था, उसके व्यवहार से ऐसा लग रहा था कि हमारे बीच कभी अनबन ही नहीं हुई है। "तुम जाओ! मैं सोने जा रही हूं।" मैं बिस्तर पर लेटी ही थी, मैंने रजाई खींचकर ओढ़ ली और मुंह ढक लिया। वह थोड़ी देर तक खामोश रहा। उसकी कुर्सी की चरमराहट दिल को चीर रही थी। आखिरकार उसने कहा, "ठीक है! अपने अशिष्ट व्यवहार के लिए मैं दुखी हूं, पर मुझे लगता है कि तुम भी पिछले कुछ वर्षों में काफी बदल गई हो। तुमने अपना आत्मिक आधार खो दिया है," उसने नरम स्वर में कहा और उसका हर शब्द दिल के तारों को झंकृत करता रहा।

उसका कहना सही था। देहात के दिनों की याद दिलाने की जरूरत नहीं थी। पेइचिङ लौटने के बाद काफी दिनों तक मैं स्वयं को अत्यधिक उदास महसूस करती रही थी। काम, भोजन और वेतन मेरे जीवन की लीक बन गई थी। श्याओ थ्येन के घर की पार्टी से लौटने पर मैं खाली महसूस करती। इससे बचने के लिए कभी-कभी कमरे में बंद होकर मैं अंग्रेजी

पढ़ती या लिपिकला का अभ्यास करती। रात में बिस्तर में लेटी ऐसा महसूस करती कि मेरी नाव अपार समुद्र में दिशाहीन बही जा रही है। कभी-कभी जीवन में सही उद्देश्य ढूंढ़ने का प्रयास करती। पर कोई क्या कर सकता था? चौगुटे का पतन हो गया था, पर इससे मुझे क्या फायदा हुआ था? मैंने छै वर्षों तक देहात में विपरीत परिस्थिति में श्रम किया था, पर कुछ लोग अभी भी ऐसा सोचते थे कि मैं चौगुटे का शिकार बनी थी। अब श्याओ थ्येन ही को लें! अपने प्रभावशाली संपर्कों से सेना की सूची में अपना नाम दर्ज कराके वह देहात जाने से बच गया था। वह शहर में बना रहा और यहां तक कि उसे पार्टी की सदस्यता भी मिल गई। फिर रहस्यपूर्ण तरीके से उसे पर्यटन ब्यूरो की नौकरी मिल गई थी। उसकी मदद के बिना मेरा स्थानान्तरण पेइचिङ नहीं हो सकता था—मैं उससे हमेशा मुस्कराकर मिलती थी। देहात जाने के समय की मेरी पहलकदमी को याद कर अभी भी मेरे दोस्त हंसा करते थे। उन महान आदर्शों और क्रांति का उपहास किया करते थे।

"देखो, यथार्थ कभी भी कल्पना की तरह सुंदर नहीं हो सकता।" चिथुङ ने उसांस भरी। फिर उसने पिछले वर्षों के अपने अनुभव सुनाए।

"१९७३ में जब मैं सेना में भर्ती हुआ, उस समय मैं उसे स्वर्ग समझा करता था। कंपनी में शामिल होने के कुछ ही दिनों के बाद मुझे रेजीमेंट के अवकाशकालीन प्रचार दल में स्थानान्तरित कर दिया गया। प्रतिदिन जब सैनिक भोजनालय में खाने बैठते तो रेजीमेंट कमांडर की पालतू मुर्गियां खाने की तलाश में वहां पहुंच जाती थीं और थोड़ी ही देर में भोजनालय उनकी विष्ठा से भर जाता था। तुम तो जानती हो, मैं कितनी जल्दी उत्तेजित हो जाता हूं। इसलिए एक दिन गुस्से में मैंने बड़े झाड़ू से एक मुर्गी को मार डाला। इसके बाद कमांडर की आलोचना एक पोस्टर पर लिखकर भोजनालय के दरवाजे पर टांग दी। नतीजे के तौर पर मुझे अपनी आत्मालोचना लिखनी पड़ी और अनुशासित करने के लिए मुझे कंपनी में वापस भेज दिया गया। मेरे क्रोध का ठिकाना न रहा। कमांडर की ऐसी की तैसी! अगर कोई प्रशासनिक अधिकारी होता तो उसे बड़ी आसानी से पूंजीवाद-समर्थक ठहरा दिया जाता; उस समय सोचने पर मैंने महसूस किया और मेरा पक्का यकीन हो गया कि यदि फौजी यूनिट में ऐसी स्थिति है तो हमारे देश की स्थिति सचमुच बड़ी दयनीय है। बाद में हमारी रेजीमेंट को शिनच्याङ भेजा गया। सैन्य टुकड़ी अभी पहाड़ों में घुसी ही थी कि उसे बर्फीले तूफान का सामना करना पड़ा। हमारा ट्रक घोंघे की चाल से चल रहा था। चौबीस घंटे में हमने पांच किलोमीटर रास्ता तय किया। कुछ ही दिनों में हमारा खाना समाप्त हो गया। अर्दली ने ट्रक के नीचे घुसकर धमनदीप से कमांडर के लिए सोयाबीन पकाया। पर उन्होंने सारा सोयाबीन ड्राइवरों को दे दिया। बर्फ हटाने और ट्रक को धक्का देने में उन्होंने हमारा साथ दिया। मैं उस समय उनसे इतना प्रभावित था कि मैं नारा लगाना चाहता था, "कमांडर जिंदाबाद!" मेरे दिमाग में उनके प्रति कोई संदेह नहीं रह गया था, वह सचमुच अनुभवी क्रांतिकारी थे। बाद में मैं बार-बार सोचता रहा कि वह आखिर किस मिट्टी के बने हैं, पर मैंने जितना ही सोचा, उतना ही उलझता गया। समय बीतने के साथ मुझे जवाब मिल गया, " 'सांस्कृतिक क्रांति' के दुष्प्रभाव से हमारे सोचने का तरीका यांत्रिक हो गया था। हमें अति पर चलने की आदत हो गई थी। यदि किसी

北京

की प्रशंसा कर रहे हों तो उससे अच्छा कोई नहीं, यदि उसी की आलोचना कर रहे हों तो उससे बुरा कोई नहीं। जो लड़कियां लड़कों की तरह बाल कटवाकर 'वफादार नृत्य' करती थीं, उन्हें अधिक क्रांतिकारी माना जाता था। आजकल लंबे बाल और रॉक-एण्ड-रोल की धुन पर नाचना पूर्ण बौद्धिक मुक्ति माना जा रहा है। सभी चीजें बदल रही हैं और तुम बहुत जल्दी समझ जाओगी कि हवा के रुख के साथ चलना ही सबसे सुरक्षित रास्ता है। मैं अभी भी नहीं समझ पाता हूं कि देहातों में जाकर काम करने में क्या बुराई है और ग्रामीण क्षेत्रों के विकास के लिए क्रांतिकारी प्रेरणा से काम करना क्यों गलत है। क्या अब हमारे पास बिखरे सपने और कटु अतीत मात्र शेष रह गए हैं? यदि हमारी पीढ़ी का यही निष्कर्ष है तो उनसे देश के प्रति क्या उम्मीद की जा सकती है? ऐसे विचारधारात्मक ध्वंसावशेष के आधार पर देश कैसे नए आत्मिक जीवन का निर्माण करेगा?''

चिथुङ की ईमानदारी से कही सारी बातें मेरे दिल को छूती रहीं, बाहर हो रही बारिश की टिप-टिप ने मुझे उन दिनों की याद दिला दी, जब मैं क्रांतिकारी छात्र हुआ करती थी और चिथुङ के साथ उत्तरपश्चिमी पठारों में रहती और काम करती थी। ओह, वह अविस्मरणीय रात्रि, भयंकर बारिश में उसका नहाना!! और इस कमरे में आज फिर हम दोनों एक साथ थे : एक ही पीढ़ी के, पर एक-दूसरे से भिन्न और दूर? सामाजिक अन्याय से पीड़ित मैं इतनी कुंठित और कटु क्यों हो गई, जबकि वह जीवन के सत्य की खोज में लगा रहा और उसे पाया। मैं स्वयं पर नियंत्रण न रख सकी और रोने लगी।

चिथुङ ने मेरे चेहरे पर से रजाई हटाई और अपने रूमाल से गाल पर लुढ़क आए आंसुओं को पोंछा। किसी बच्चे को फुसलाने के स्वर में उसने कहा, ''अरे, तुमने तो तकिए के खोल पर अंग्रेजी में 'गुडनाइट' की कढ़ाई की है। मैंने तो ध्यान ही नहीं दिया था कि तुम इतनी मेहनत से अंग्रजी पढ़ रही हो।'' ''तुम महान हो!'' मैंने कहा। उसने बड़े प्यार से मेरा हाथ अपने हाथ में लेकर कहा, ''छ्येन, मैं तुम्हारे योग्य नहीं हूं। तुम अभी भी सबसे अच्छी हो!'' किसी शैतान बच्चे की तरह मैंने उसकी गर्दन में हाथ डालकर बैठने की कोशिश की।

तब से मैं उसे बेहद प्यार करने लगी। एक दिन हम दोनों ग्रीष्मप्रासाद की खुनमिङ झील के किनारे घूम रहे थे, भावना के अतिरेक में मैंने शादी का प्रस्ताव रखा। उसने पूरी गंभीरता के साथ मुझे बताया कि उसे तुरंत काम पर लौटना है। ''क्या तुम मेरे साथ जिंदगीभर पहाड़ों में रहना चाहोगी?'' उसने पूछा। मैंने इसके बारे में पहले नहीं सोचा था, यह सोचकर मेरा सिर चकराने लगा...

''मजबूती से पकड़कर बैठो!'' ड्राइवर की चेतावनी मुझे सपने की दुनिया से लौटा लाई। लॉरी एक ऊबड़खाबड़ सड़क से गुजर रही थी। मैंने अपनी घड़ी देखकर चिंतित स्वर में पूछा, ''क्या हम लोग कार्यस्थल के निकट आ गए हैं?''

''हमारे सामने बिंदुरेखा क्षेत्र है,'' ड्राइवर ने कहा, वह एकटक आगे की सड़क देख रहा था। उसकी छोटी मूंछें हवा से फड़क रही थीं।

''वन्या तुम्हारा बटालियन बिंदुरेखा क्षेत्र में स्थित है?''

''हां।''

"क्या तुम लोग बहुत व्यस्त हो?"

"नहीं, बहुत अधिक तो नहीं! बस दिनभर में दो पाली और बारह घंटे की एक पाली। इसमें आपात्कार्य शामिल नहीं है।" उसके व्यंग्य ने मुझे चौंका दिया। एक नया सैनिक मुझे प्रभावित करना चाह रहा है, मैंने यही सोचा।

५

लॉरी चट्टानों और बलुआ पत्थर के ढेर के पास आकर रुकी। उन पर बर्फ की मोटी तह जमी हुई थी। हम पहुंच गए थे। पर पहुंचने के बाद मुझे बेचैनी और उलझन सी महसूस हुई।

हान लॉरी से उतरा, ठंड के कारण उसके होंठ कांप रहे थे। उसने मुझे बताया कि यह स्थान समुद्र सतह से ३,००० मीटर की ऊंचाई पर है, इसका नाम बिंदुरेखा क्षेत्र इसलिए पड़ा कि यहां की खड़ी व संकरी चट्टानों का सर्वेक्षण करना मुश्किल है। इसी कारण नक्शे में इस स्थान को बिन्दुओं से दर्शाना पड़ा। "तुम यहां रुको। मैं डिप्टी बटालियन कमांडर को बुलाने जा रहा हूं।" वह चट्टानों के बीच से कुशलता के साथ दौड़ता हुआ दूसरी तरफ गया। वहीं सैनिक थे। तेज हवा के कारण मैं उनकी बातचीत नहीं सुन सकी। फिर भी मैंने देखा कि उनमें से एक आकाश की तरफ इशारा कर रहा है। मैंने भी उधर देखा।

अद्भुत! मैंने पहली बार ऐसी खड़ी चट्टान देखी थी। चट्टान किसी घायल जंगली भालू की तरह आक्रमण के लिए तैयार लग रही थी, उसकी फूत्कार से धुएं और वाष्प का बादल उठ रहा था। धुंधले बादलों के बीच चट्टान से चिपकी एक अस्पष्ट आकृति तेज हवा के कारण हिल रही थी। वह इस्पात के डंडे से लटकी चट्टान पर चोट करने की कोशिश कर रहा था। किसी भी क्षण वह जीर्ण पत्ते की तरह उड़ सकता था। "क्या वह चिथुङ हो सकता है?" अचानक मैं डर से कांपने लगी। अच्छी तरह से देखने के लिए अपने सुन्न पैरों के सहारे दौड़कर मैं आगे गई।

"रुक जाओ, यह खतरनाक है!" हान ने मेरी तरफ दौड़कर आते हुए कहा। इसके पहले कि मैं कुछ समझ सकूं पूरी घाटी एक भयंकर धमाके से हिल गई। धमाके के साथ बर्फ और रेत के बादल उड़े और चिथुङ मेरी नजरों से ओझल हो गया। मैंने तेज चीख भरी और आंखें बंद कर लीं। फिर क्या हुआ मुझे पता न चला।

न जाने कितनी देर के बाद मुझे होश आया, एक परिचित आवाज सुनाई पड़ी, "क्या हुआ? क्या कोई घायल हो गया?" फिर आश्चर्य और खुशी के साथ उसी आवाज में उसने पूछा, "अरे, तुम यहां कैसे आ गईं?" हान और उसके अन्य साथी मुंह बन्द करके हंस रहे थे। मेरा चेहरा लाल हो गया। मैंने उसे भरी नजरों से देखा। उसे देखकर मैं अचंभित हुई। उसने बेंत की पुरानी टोपी पहन रखी थी, रुईदार लंबे कोट के ऊपर कमर पर मोटी सुरक्षा-पेटी बंधी थी। उसके जूते पर बर्फीली कीचड़ थी और उसका चेहरा व शरीर बर्फ और चट्टान के कणों से भरा था। केवल उसकी काली चमकदार आंखें ही थीं जिनसे मैं उसे पहचान पाई। मैं अत्यंत संतप्त थी।

मेरी आशा के विपरीत वह मुझे देखकर उत्साहित नहीं हुआ। मुझे वह रात अभी तक याद है, उसकी अकादमी की पढ़ाई समाप्त होने वाली थी। एक रात ग्यारह बजे दरवाजे पर किसी ने दस्तक दी। मैंने सोचा, कोई भयानक घटना घटी है। पर दरवाजे के बाहर चिथुङ खड़ा था। उसने सहज स्वर में कहा, "कोई खास बात नहीं है, बस मैं तुमसे मिलना चाहता था... क्यों? यह मत पूछना! मुझे ऐसा पूर्वाभास हुआ कि हम फिर कभी नहीं मिलेंगे।" मैं रातभर उसके साथ टहलती रही। उस रात ही मुझे पता चला कि वह भी मुझसे असीम प्यार करता है...

और अब, संभव है यह औरत का सहज बोध हो, पर मुझे लगा कि वह किसी समस्या से परेशान है, अन्यथा वह इतने विरक्त भाव से नहीं मिलता। उसने ठंडे स्वर में कहा, "हान तुम्हें बटालियन हेडक्वार्टर में ले जाएंगे। मुझे यहां कुछ कार्य निबटाने हैं।" "जैसी तुम्हारी मर्जी," मैंने भी ठंडा सा जवाब दिया। वह थोड़ा झिझका, शायद कुछ कहना चाहता था। पर उसने अपना इरादा बदला और हान की तरफ बढ़ते हुए कहा, "वह चट्टान हटा दी गई है। सैनिकों से कहो कि वे अब चिंता न करें। जैसे भी हो, दोपहर चार बजे के पहले सड़क की सफाई करवा देना। यह तुम्हारी जिम्मेदारी होगी। मैं राजनीतिक प्रशिक्षक को फोन करने जा रहा हूं।"

हवा के साथ उड़ते बर्फ के कण चेहरे पर चुभ रहे थे। थोड़ी देर में ही ठंड से मेरे पांव सुन्न हो गए, पर मेरा दिल और भी ठंडा हो गया था। हान से जब उसकी बात खत्म हो गई तो उसके साथ जाने के लिए मैंने अपना बैग उठाया। उसने मेरी तरफ कोई ध्यान नहीं दिया और फोन करने के लिए आगे बढ़ गया। उसके प्रति मेरी सहानुभूति नाराजगी में बदल गई। उसने जरूर मेरे बारे में कुछ सुना होगा और मेरे आने के कारण का अनुमान किया होगा। इसलिए वह जानबूझकर मेरे साथ ठंडा बर्ताव कर रहा है।

पिछली बार उसके जाने के कुछ दिनों के बाद उसके रेजीमेंट कमांडर एक सम्मेलन में भाग लेने पेइचिङ आए थे। वह मुझसे मिलने आए थे और मुझसे आग्रह किया था कि मैं उससे शादी कर लूं और उसके साथ रहूं। उन दिनों मीमी भी मुझे परेशान कर रही थी कि मैं श्याओ थ्येन के एक दोस्त से मिलूं, जो जल्दी ही विदेश जाने वाला था और जिसके पिता एक बड़े अधिकारी थे। दुविधा में मैंने दोनों प्रस्ताव ठुकरा दिए। इसके कुछ ही दिनों के बाद चिथुङ का पत्र आया था, पत्र में उसका आग्रह था कि मुझे श्याओ थ्येन और मीमी से संपर्क तोड़ लेना चाहिए। ओह, मैं कैसी बुरी स्थिति में फंस गई थी! मेरी छोटी बहन चिथुङ की बड़ी सराहना करती थी, उसने भी कहा कि चिथुङ एक अच्छा आदमी है, पर अच्छा पति नहीं हो सकता।

मैंने सोचा, चलो बहुत हुआ। चूंकि वह इस ठंड में मुझे जानबूझकर छोड़ गया है, इसलिए मैं भी साफ-साफ अपनी बात बताकर दोपहर में लौट जाऊंगी। यह जगह रहने लायक नहीं है।... नहीं, मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए। किसी भी अंतिम निर्णय पर पहुंचने से पहले मुझे अच्छी तरह से सोच लेना चाहिए। कोमल भावनाओं वाले व्यक्ति के लिए ऐसा संबंध विच्छेद भयंकर आघात होगा। इसके बाद उसका क्या होगा?

धड़ाम! फिर से कहीं धमाका हुआ। मैंने उस खड़ी चट्टान की तरफ देखा, जिसकी लटकती चट्टान अभी-अभी हटाई गई थी। चिथुङ दौड़ा हुआ आया, उसने पसीने से भीगा अपना हेलमेट मुझे पकड़ाया और मेरा बैग उठाकर तेज कदमों से भागा। मैं भी पीछे-पीछे भागी। बिंदुरेखा क्षेत्र से बाहर सुरक्षित स्थान में आने पर उसने मुझे बताया, "मैं जानता हूं, तुम मुझसे नीचे हॉस्टल में मिलने के लिए परेशान थीं। जब हान का फोन आया, उस समय मैं कार्यस्थल पर था। इसलिए तुम्हें देने के लिए एक नोट लिखकर मैंने ड्राइवर को दिया था... बिंदुरेखा क्षेत्र चट्टानों के टुकड़ों से भरा और खतरनाक है, पिछले दिनों कुछ दुर्घटनाएं भी हुईं। यातायात बंद रहने के कारण पिछले कुछ दिनों से ईंधन और उपकरण भी नहीं लाये जा सकते थे। हमारा खाना भी समाप्त हो रहा था।" हालांकि उसने मुस्कराने की कोशिश की, पर उसकी आवाज ने मुस्कराहट का साथ नहीं दिया और उसकी चिंता व्यक्त की। इस तनावपूर्ण वातावरण को हल्का करने के लिए मैं कुछ बोलती, इसके पहले ही मैंने घुटन महसूस की और मुझे मतली सी आई। उसने मेरी तरफ देखते हुए सहज शब्दों में कहा, "तुम्हें कोई परेशानी नहीं होगी। यह जगह काफी ऊंचाई पर है। नए-नए आने वालों को आरंभ में थोड़ी परेशानी होती है। पर प्रकृति के नियम के अनुसार औरतें जल्दी अभ्यस्त हो जाती हैं।" मैं सड़क के किनारे बैठ गई। मेरी सांस तेज चल रही थी। मैंने उल्टी करने की कोशिश की; पर कुछ भी नहीं निकला, शायद कल शाम से कुछ न खाने के कारण ऐसा हुआ हो। उसने झुककर मेरी पीठ को सहलाया और थपकी दी। मैंने किंचित तीखे स्वर में कहा, "इतने जोर से नहीं!"

गर्मियों के दिन ही थे। उतरते समय मैंने देखा कि बर्फ पिघल रही है। ढलान पर इधर-उधर घास की हरी पट्टियां उभर आई थीं। सड़क के किनारे की हिमवर्तिकाओं के बीच से छोटे पीले फूल झांक रहे थे और सूरज भी गर्मी दे रहा था। चिथुङ की विनोदवृत्ति लौट आई। वह मुझसे सवाल पूछता हुआ बर्फ पर उछलता और फिसलता रहा। पेइचिङ की गतिविधियों में उसकी विशेष रुचि थी। यह जानकर कि हाल ही में एक विदेशी सिम्फनी वाद्य मंडली आई थी, वह ईर्ष्या से भर गया। "कितना अच्छा होता, यदि इसका सीधा प्रसारण होता और हम यहां पहाड़ों में इसे देख सकते!" पता नहीं वह मेरे आने का कारण जानना चाह रहा था या पेइचिङ लौटने की इच्छा प्रकट कर रहा था?

बर्फ के पिघलने से ऊबड़-खाबड़ ढलानों से लगातार पानी टपक रहा था। पानी के टपकने की आवाज हर तरफ थी। कहीं भी पांव सीधा रखने के लिए सूखी जमीन नहीं मिली। "ऊंची एड़ी के जूते पहनकर चलने से तुम्हारे टखने में मोच आ जाएगी। आओ, मैं तुम्हें पार करा देता हूं।" मैं नहीं समझ पाई कि वह मजाक कर रहा है या चिढ़ा रहा है। उसकी बात न सुन पाने का बहाना करके मैंने एक पत्थर पर अपना पांव रखना चाहा। "नहीं, ऐसे नहीं होगा!" उसने दबी हंसी के साथ कहा। "बेहतर होगा कि तुम मेरे जूते पहन लो। मैं नंगे पांव चलूंगा।" मैं खीझकर आगे की ओर झुकी, तभी एक ट्रक बर्फ के कण उछालता हुआ तेजी से गुजरा। घबराहट में पत्थर पर रखे पांव का संतुलन बिगड़ गया और मैं कीचड़ में फंस गई। चङ चिथुङ ठहाके लगाकर हंसा। "अच्छ हुआ! अब तुम थ्येनशान पहाड़ को समझ सकोगी।" कितनी क्रूर और प्रचण्ड हंसी थी। यह तो हद थी। इसलिए खीझती हुई मैं बोली, "हो, मैं

तुम्हें अच्छी तरह जानती हूं, जानती हूं कि नहीं?" वह घबराकर बोला, "अरे मैं तो मजाक कर रहा था और तुम नाराज हो गईं।" मैंने कोई जवाब नहीं दिया और चुपचाप बर्फीले कीचड़ के बीच चलती रही, मेरी समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था। वह भी चुपचाप चल रहा था और थोड़ी-थोड़ी देर के बाद मेरी ओर देख लेता था। उसकी गहरी सांसें मुझे सुनाई पड़ रही थीं।

६

बटालियन हेडक्वार्टर के शिविर ढलान को समतल कर गाड़े गए थे। प्रवेश द्वार पर लकड़ी के तीन लट्ठों को जोड़कर एक संरचना बनी थी। द्वार के ऊपर बीच वाले क्षैतिज टुकड़े पर सफेद कागज का एक बड़ा फूल टंगा था, दोनों तरफ के खंभों पर सफेद कागज पर काले अक्षरों में शोक वाक्य लिखे थे :

उन्होंने थ्येनशान पहाड़ में कुर्बानी दी;
उन्होंने अपना जीवन क्यों अर्पित किया?
देश और सेना का नाम रौशन करने के लिए।
वह दस वर्षों तक पत्नी से अलग रहे;
उन्हें कहां खुशी मिली?
अनगिनत जोड़ों के मिलन में।

मैंने तुरंत चिथुङ के ठोस गहरे अक्षर पहचान लिए। वह थोड़ी देर के लिए वहां रुका और उसने फिर से उदास नजरों से उन्हें देखा। "कोई मर गया?" मैं अभी सोच ही रही थी कि राजनीतिक प्रशिक्षक निकलकर हमसे मिलने आए।

दरवाजे और खिड़कियों के पर्दे के पीछे से चेहरे झांके। ऐसा लगा कि सब मुझे ही देख रहे थे। संदेशवाहक मेरे धूप के चश्मे को घूर रहा था। मैंने उन बदबूदार और प्रचण्ड सैनिकों के बीच स्वयं को अकेला महसूस किया। मैं बिना कुछ बोले एक मेज के पास जाकर बैठ गई।

"क्यों, पेइचिङ की लड़की को लाज नहीं आनी चाहिए, आनी चाहिए क्या?"

"बकवास बंद करो! उसे चक्कर आ रहा है। लो, मिठाई खाओ..." चिथुङ ने मुस्कराने और मेरी झेंप मिटाने की कोशिश की। मिठाई देखकर उनकी खुशी का ठिकाना न रहा। "अरे विवाह के पहले ही मुंह मीठा करा रहे हो? चलो अच्छी बात है! हम तुम्हारे सुहाग कक्ष में परंपरा के अनुसार आएंगे। हम अभी से ही बता देते हैं। अच्छा होगा कि अपनी भावी पत्नी को अभी से बता दो। हम बड़े ही उजड्ड हैं, हम जब तुम्हारे विवाह की खुशी मनाएं तो वह नाराज न हो।" चङ चिथुङ उनकी बात पर सिर हिलाए जा रहा था। आखिरकार राजनीतिक प्रशिक्षक हमारी जान बचाने आए। खुशी के साथ वे सब अपने काम पर लौट गए। जब मैंने सुना कि चिथुङ और राजनीतिक प्रशिक्षक मेरे रहने की समस्या पर विचार कर रहे थे, तब तो मुझे बहुत घबराहट होने लगी।

"तुम लोग कैसा मजाक करते हो!" मैंने शिविर में घुसते समय उसे रोककर कहा। उसने

मुझे समझाने की कोशिश की, "वे तुमसे मिलकर खुश थे, इसलिए उन्होंने तुम्हें तंग किया। हान ने यह समाचार फैला दिया है कि तुम यहां मुझसे शादी करने आई हो!" उसके चेहरे पर हंसी थी। मैंने बीच में ही टोका, "अरे, उसे किसने बताया कि मैं तुमसे शादी करने आई हूं?" मेरी टिप्पणी से उसका चेहरा लटक गया। वह और भी कुछ बताना चाहता था, पर चुप हो गया। उसने लंबी सांस ली और शिविर से बाहर चला गया।

छोटी खिड़की से आ रही सूरज की किरणों से शिविर इतना गर्म हो गया कि ऊनी स्वेटर निकालने के बावजूद मुझे पसीना आता रहा। चिथुङ जब दोबारा लौटकर आया तो उसने स्टोव पर से पिघले बर्फ से भरी बाल्टी उतारी और गीले कोयले डालकर स्टोव की आग पर रखी। "पहाड़ों का मौसम ऐसा ही होता है। यहां एक ही दिन में चारों मौसमों से गुजरना पड़ता है और उसी के अनुसार कपड़े भी बदलने पड़ते हैं।" अपना चेहरा धोने के बाद उसने बिस्तर के नीचे से चप्पलें निकालीं और मुझे देते हुए कहा, "इन्हें पहन लो। मैं तुम्हारी जूतियां बाहर धूप में रख आता हूं।" उसका गुस्सा उतर गया था। "नहीं, मैं अपनी जूतियां नहीं बदलना चाहती।" मैंने खीझकर कहा। "उतार दो। वे भीग गई हैं, तुम्हें ठंड लग जाएगी।" उसने खुशामद के स्वर में कहा, "तुम अभी भी वही जिद्दी लड़की हो, एकदम नहीं बदलीं। ठीक है, मैं गलत था, अच्छा!" वह जूतियों के फीते खोलने के लिए झुका। मैंने पांव झटका, झटके में उसके सिर पर चोट लगते-लगते बची। मैं घबराई हुई थी, पर वह मेरे सामने ऊकड़ूं बैठा अपनी तेज और कोमल निगाहों से मुझे घूर रहा था। वह मुझे छोटी नटखट बहन को फुसलाता बड़े भाई सा लगा। मैं उससे अत्यंत प्रभावित हुई।

सचमुच वह काफी दुबला लग रहा था। धूप में लगातार काम करने और पठार की हवा से उसका रंग गहरा पड़ गया था। धंसे गाल और खूंटीदार दाढ़ी से वह चालीस की उम्र का लग रहा था। उसकी चमकीली आंखें थकान और चिंता से लाल हो गई थीं और उसकी आवाज में भी भर्राहट थी। बटालियन हेडक्वार्टर आने के बाद से वह मेरी देखभाल करने में इतना व्यस्त रहा था कि उसे कपड़े बदलने की भी फुर्सत नहीं मिली थी। अब तो उसके कोट पर जमे बर्फ के कण पिघलने लगे थे। यह देखकर मैंने सोचा कि मुझे उसे तकलीफ नहीं देनी चाहिए। "ठीक है, मैं अपनी जूतियां खोल देती हूं।" मैंने समझौते के स्वर में कहा, "तुम भी अपने कपड़े बदल लो। इन कपड़ों में तुम कितने भयंकर लग रहे हो।" उसने मुस्कराकर कहा, "नहीं, अभी मुझे खाने की व्यवस्था करनी है।" "तुम पागल तो नहीं हो गए हो? अपना रुईदार कोट उतारो!" मैंने उससे कहा और उसका कोट खींचा। पर वह तुरंत खिसक गया। उसके इस व्यवहार से मैं चिढ़ गई। थोड़ी देर के बाद उसने मजबूर होकर कोट उतारा, उसने अपने दोनों हाथों से पीठ दबा रखी थी और मुस्कराने की कोशिश कर रहा था।

पहले मैंने उसकी तरफ न देखने का बहाना किया, पर अचानक उसके पीछे जाकर मैंने उसके हाथ हटाए। ओफ्फ! मैं स्तंभित रह गई। उसकी पीठ पर गहरा घाव था और कमीज कच्चे घाव से चिपक गई थी। कमीज पर खून और पसीने के दाग थे। तो इसलिए ही वह हमेशा चमड़े की चौड़ी पेटी बांधे रहता था और कोट नहीं उतारना चाहता था। उसने घाव पर अधिक ध्यान नहीं दिया। "कोई खास बात नहीं है," मुझे दिलासा देता हुआ बोला,

"खरोंच लग गई है, बस।" जाहिर था कि वह अपने घाव को सबसे छिपाए लगातार काम में लगा हुआ था। तौलिए को गर्म पानी में भिगोकर मैंने घाव से चिपकी उसकी कमीज गीली की और उतारी। उसकी पीठ पर मलहम लगाते समय मेरी पीड़ा आंसुओं में बदलकर उसकी पीठ को भिगो रही थी। मैं नहीं समझ पाई कि ऐसी प्रतिकूल स्थिति में वह क्यों जान की जोखिम उठा रहा है। चिथुङ मेज के सहारे झुका मेरी शिकायतें सुन रहा था। थोड़ी देर के बाद वह बोला, "पिछले रविवार को बिंदुरेखा क्षेत्र में भयंकर हिमस्खलन हुआ था," उसने धीमे स्वर में कहा, "पांचवीं कंपनी के राजनीतिक प्रशिक्षक इसमें मारे गए। पूरी चट्टान उनके खून से लाल हो गई थी। यह घटना तब हुई, जब उनकी पत्नी उनसे मिलने यहां आई थीं। वह आजकल नीचे शिविर में रह रही हैं।"

"अच्छा तो उसी औरत से मैं हॉस्टल में मिली थी!" मैं सन्न रह गई। चिथुङ ने गहरी सांस ली और फिर सीधा होकर बोला, "उनकी शादी जल्दी ही हो गई थी। उनका बेटा दो साल का हो चुका है, पर वे दस वर्षों तक एक-दूसरे से अलग रहे। य्वी की तबियत हमेशा खराब रहती थी। इस बार उनकी पत्नी उनके लिए चीनी जड़ी-बूटियां लेकर आई थीं। किसने सोचा था..." वह फफक पड़ा। "जब मैं उनकी लाश निकाल रहा था तो मुझे चोट लग गई। गहरी चोट नहीं है। सच यह है कि य्वी की मौत की याद ने इस घाव के दर्द को कम कर दिया है। तुमने कई महीनों से कुछ नहीं लिखा। मेरी स्थिति पागलों जैसी हो गई थी।" वह पलटा, भावातिरेक में उसने मेरे हाथ पकड़ लिए, वह अपनी भावनाओं को दबाने की कोशिश में होंठ भींच रहा था, पर उसकी आंखों में अभी भी आंसू भरे थे। "छ्येन, तुम कुछ अधिक दिन यहां रुको। मैं तुमसे बहुत बातें करना चाहता हूं..."

मेरा गला रुंध गया। उसकी भावुकता के सामने मुझे क्या कहना चाहिए? मैं स्वयं को दोषी और शर्मिंदा महसूस कर रही थी। मेरा दिल घबरा रहा था। मैं अधिक देर तक मानसिक यंत्रणा बर्दाश्त नहीं कर सकी और उसकी बांहों में लिपटकर रोने लगी। मैं रोती और उसके चौड़े सीने पर अपना सिर पटकती रही। मैंने उससे कहा, "चलो, लौट चलें! अगर तुम सेना की नौकरी छोड़ दो, तो मैं तुम्हारी कोई भी बात मान लूंगी। मैं तुम्हारी परेशानी बर्दाश्त नहीं कर सकती।"

वह मुस्कराया। अपने कठोर हाथों में मेरा चेहरा लेकर उसने उंगलियों से मेरे आंसू पोंछे और कहा, "यह तो बच्चों की बात हो गई। तुम्हें लगता है कि मैं जा सकता हूं?" "क्यों नहीं?" उसे अधिक बोलने का मौका दिए बिना मैंने पूछा और कहा, "तुम सैनिक यहां पहाड़ों में जीवन दांव पर लगा रहे हो, पर कौन जानता है, यों कहो कि कौन इसकी परवाह करता है? अनेक भूतपूर्व कार्यकर्ता किसी भी तरह पेइचिङ लौटने और काम ढूंढ़ने की कोशिश कर रहे हैं। ऐसे भी लोग हैं, जो इस देश में ही नहीं रहना चाहते। श्याओ थ्येन और कुछ अन्य लोग पासपोर्ट लेने की कोशिश में लगे हैं। मूर्खता न करो, चिथुङ। तुम थ्येनशान पहाड़ से बाहर निकलो और दुनिया देखो। इसी में भलाई है।" मेरी आवाज तेज हो गई थी।

"हर आदमी अपने तरीके से इस दुनिया को देखता है। मेरा विश्वास है कुछ लोगों को

सड़क बनानी चाहिए ताकि दूसरे आराम से यात्रा कर सकें। जहां तक श्याओ थ्येन जैसे व्यक्तियों की बात है, बेहतर है कि उनके बारे में न सोचो।'' चिथुङ ने मुस्कराने की कोशिश करते हुए उत्साह से कहा, ''छ्येन, आओ हम अपने बारे में बातें करें।''

ठीक तभी जो ड्राइवर मुझे लेकर आया था, उसने चिथुङ को आवाज दी। वह शिविर से निकलकर बाहर गया। अजीब मुसीबत थी।

मैं मेज का सहारा लेकर खड़ी हो गई और उलझन में पड़ गई। उसकी साफ मेज पर पड़े हिम कमलों से हल्की खुशबू आ रही थी। मेरी नजर मेज पर शीशे के नीचे दबी एक तस्वीर पर पड़ी। मेरी ही तस्वीर थी। आंखों से गुस्सा और अहंकार झलक रहा था। यह तस्वीर चिथुङ ने ग्रीष्म प्रासाद की खुनमिङ झील पर टहलते समय ली थी। उस दिन पहली बार उसने अपनी मजबूत बांहों में मुझे भींचा था। मैं विश्वास भी नहीं कर सकती थी कि उसके जैसे सैनिक के दिल में प्यार की ऐसी आग होगी। उसने मेरे बालों को चूमते हुए कहा था, **''...हमें नीरस क्यों कहा जाता है? क्या हम केवल हट्टे-कट्टे हैं और हमारे पास दिमाग नहीं है? सच्चाई यह है कि प्यार की कीमत हम सबसे अधिक समझते हैं...।'' ''बड़ी ऊंची बातें** कर रहे हो!'' मैंने उसे चिढ़ाने की कोशिश की। ''हां, यह सच है! अगर कोई व्यक्ति दूसरों से प्यार न करता हो तो वह सेना में भर्ती नहीं होना चाहेगा।'' उसका दिल भोला था और उसने मुझे पूरे आवेग के साथ प्यार किया। पर क्या मैं सचमुच स्वार्थी और संकीर्ण थी? क्या हम शहर में रहकर देश की सेवा नहीं कर सकते? क्या मुझे अपनी इच्छा के अनुसार खुशी पाने का हक नहीं था?

चिथुङ परेशान अवस्था में लौटा। वह कमरे में टहल रहा था, उसके भारी कदम किसी भावी तूफान की पूर्व सूचना दे रहे थे। डरते-डरते मैंने पूछा कि क्या बात हुई! गुस्से में वह चिढ़कर बोला, ''हद हो गई! एक साल पहले सेना में भर्ती हुआ सैनिक सेना की नौकरी छोड़ना चाहता है और उसके बारे में हंगामा मचा रहा है। आजकल देहातों से आए सैनिक सेना की नौकरी छोड़ रहे हैं, देहातों में 'ठेका जिम्मा व्यवस्था' लागू होने के बाद से वे परिवार में आदमी की कमी होने का बहाना बनाते हैं; दूसरी तरफ शहरों और कस्बों के लोग सेना की नौकरी ही पसंद नहीं करते। कुछ इस साल सेना से भाग गए। सेना अधिकारी सीमांत क्षेत्र में खुशी-खुशी काम नहीं करते। ये लोग देश की समस्या के बारे में बिलकुल नहीं सोचते। वे केवल अपने बारे में सोचते हैं। बेहतर है कि उसे जाने दें, ऐसे व्यक्तियों से छुटकारा मिल जाए।'' अपनी झुंझलाहट निकालने के बाद वह अपना माथा ठोकता हुआ कुर्सी पर बैठ गया। वह अत्यंत उद्विग्न था।

संदेशवाहक ने अब तक खाना तैयार कर लिया था, पर हम दोनों में से किसी की भी खाने की इच्छा नहीं थी। संदेशवाहक को अचंभा हुआ। मुझे खुश करने के लिए उसने मार्मोट (गिलहरी की जाति का एक जन्तु) लाकर दिया। चिथुङ ने ठंडी मुस्कराहट के साथ सिर हिलाकर इशारा किया कि मैं थोड़ी देर उसके साथ बाहर टहल आऊं।

७

पहाड़ की तलहटी में विशाल घास मैदान था। मुझे अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हुआ। घास हवा में लहरा रही थी और लहरदार घास के बीच जहां-तहां जंगली पियोनी फूल दिखाई दे रहे थे। दूर अलस्तान नदी के दोनों किनारों पर सफेद शिविर गड़े थे, पुल बनने की जगह से गाड़ियों और मजदूरों की मिश्रित आवाजें आ रही थीं...

चिथुङ फिर अत्यंत उत्साहित था। उसने ताजा हवा में गहरी सांस ली और मेरा हाथ पकड़े हुए एक मार्मोट के पीछे दौड़ा। थोड़ी ही देर में मेरी सांस उखड़ गई, मैंने एक हाथ से सीने को दबाकर उससे रुकने के लिए कहा। दौड़ना छोड़कर वह सीने के बल घास मैदान पर ऐसे लेट गया, मानो वह उसे अपनी बांहों में भरने की कोशिश कर रहा हो। "छ्येन, देखो, कोमल घास देखो। सड़क बन जाने के बाद चरवाहे आसानी से पहाड़ों में आ सकेंगे। यह पूरा घास मैदान एक विशाल मशीनीकृत पशु फार्म बन जाएगा..." उसने कल्पना में खोकर कहा, "शहर में रहने से क्या फायदा है? प्रदूषण, शोर, एक कमरे में तीन पीढ़ियों का एक साथ रहना, पार्क में फूलों से अधिक संख्या में जमी भीड़ और एक ही बेंच पर बैठे दो प्रेमीयुगल। यहां पहाड़ों में बस इस घास मैदान की तरफ देखो और तुम्हारी सारी चिंता, ऊब और परेशानी पलभर में गायब! लोग मुझे मूर्ख कह सकते हैं। पर मैं इसकी परवाह नहीं करता।" वह अपनी बांहें फैलाकर बैठ गया और फिर पांवों को समेटकर सोचने में डूब गया। थोड़ी देर बाद बोला, "तुम जानती हो, थाङ राजवंश (६१८-९०७) में एक प्रसिद्ध यात्री श्वेन च्वाङ (ह्वेन त्साङ) और मिङ राजवंश (१३६८-१६४४) में एक महान नाविक चङ हुए थे। पिछली शताब्दियों में हमारे देश को लूटा और अपमानित किया गया। यह सही है कि मनुष्य इतिहास बनाता है, पर इतिहास भी राष्ट्र की भावना को प्रभावित करता है। क्या हम पिटे-पिटाए रास्ते पर चल रहे हैं? क्या हम सामंती कड़ी से और अर्द्ध-औपनिवेशिक देशों की हीन मानसिकता और चापलूस स्वभाव से पूर्णतः मुक्त हो चुके हैं? सभी व्यक्ति यथास्थिति से संतुष्ट हैं और कोई परिवर्तन नहीं चाहते। पायनियरों का काम करने का वह दृढ़ उत्साह कहां है, दुनिया की नयी चीजों के अन्वेषण में लगे साहसिक कहां हैं या वे वीर कहां हैं, जो अपने देश को विश्व में सर्वश्रेष्ठ सिद्ध करते हैं। शायद मैं कुछ अधिक ही सोच रहा हूं, पर मेरी दृढ़ मान्यता है कि यदि हम ईमानदारी से अपने देश को मजबूत बनाना चाहते हैं तो हमें युवाओं को ऐसे उत्साह से अनुप्राणित करना होगा, तभी सभी अपनी योग्यतानुसार योगदान करेंगे। तुम क्या ऐसा नहीं सोचतीं?"

मैंने कुछ नहीं कहा। मैंने उसके विचारों की प्रशंसा की पर अपने अंतर्मन में रास्ता ढूंढ़ रही थी। एक तरफ मैंने चिथुङ के प्रति अभूतपूर्व प्रेम महसूस किया, कई बार कहने की इच्छा हुई कि मैं शादी को तैयार हूं। दूसरी तरफ मैं जानती थी कि चिथुङ को बदल पाना असंभव है। प्यार आलिंगन और चुंबन ही नहीं होता। अलगाव, बच्चों का पालन-पोषण, सेना के साथ लगी अदला-बदली ...मेरे अंदर अन्वेषक का उत्साह नहीं था। मैं वीरांगना होने का जोखिम नहीं उठा सकती थी। जीवन निष्ठुर था और मैं मनुष्य के इतिहास को समझने

और उसमें अपना योगदान करने की स्थिति में नहीं थी। मेरे लिए राष्ट्र की भावना या उत्साह संबंधी बहस से बेहतर मेरे बोनस का बढ़ना था। मैंने यह सत्य स्वीकार लिया था कि मैं महान बनने के लिए पैदा नहीं हुई हूं। मेरे लिए अपने सुखद घोंसले में लौट जाना ही बेहतर था। और इसमें गलत भी क्या था? पर मेरे दुख ने मुझे निराश कर दिया। मुझे चिथुङ को छोड़ देना चाहिए। पर मैं कोई फैसला नहीं कर सकी।

सूरज धीरे-धीरे हिमाच्छादित चोटियों के पीछे छिप गया। चिथुङ खामोश चल रहा था। उसकी खामोशी असहनीय थी। वह शोक और दुख में डूबा य्वी हाएचओ की कब्र के पास रुका। मुझे उसे देखने की हिम्मत नहीं हुई। इसी समय रेजीमेंट कमांडर की पत्नी डाक्टर चाओ आईं। उन्होंने मेरा हाथ अपने हाथ में लेकर कहा, "अरे, मैं तुम्हें पहाड़ में खोज रही थी। चलो आज रात को हमारे साथ रुकना। हमारा क्लीनिक कार्यस्थल के पास ही है। हमने तुम्हारे लिए एक शिविर भी तैयार किया है। मेरे पति तुमसे मिलना चाहते हैं।"

"मुझे एक ही दिन की छुट्टी मिली थी और मुझे आज ही लौटना है। धन्यवाद, फिर कभी।" मैंने शिष्टतापूर्वक इनकार किया, क्योंकि मैं समझती थी कि मुझे यहां रुककर चिथुङ को फिर किसी भी तरह का कष्ट नहीं देना चाहिए।

निराश होकर डाक्टर चाओ चली गईं। "चलें, जल्दी वापस जाएं!" चिथुङ ने अचानक दृढ़ स्वर में कहा, "मुझे चार बजे कार्यस्थल पर जाना है।" तभी संदेशवाहक दौड़ा हुआ आया और हांफते स्वर में बोला, "डिप्टी बटालियन कमांडर, रेजीमेंट कमांडर ने मुझे यह बताने के लिए आपके पास भेजा है कि आप घर पर रह सकते हैं और..." मेरी तरफ देखकर वह दबी हंसी हंसा। चिथुङ ने उसे रोककर कहा, "दौड़कर जाओ और कमांडर को बताओ कि मैं जल्दी ही कार्यस्थल पर जा रहा हूं।" "नहीं, यह नहीं हो सकता। आपने खाना भी नहीं खाया है, आपको पलक झपकाने की भी तो फुर्सत नहीं मिली..." "बकवास बंद करो, जाओ, जल्दी जाओ।" चिथुङ को अचानक गुस्सा आ गया, पर संदेशवाहक गया नहीं, वह वहीं खड़ा बुदबुदाता रहा। चिथुङ उसकी ओर एक कदम बढ़कर डाट-डपट करने ही वाला था कि कुछ सोचकर उसने अपना इरादा बदल दिया और जबरन मुस्कराहट के साथ कहा, "जाओ, जाते हो कि नहीं? तुम्हें नहीं मालूम कि कार्यस्थल पर एक मीटिंग होने वाली है?" निराश होकर संदेशवाहक कार्यस्थल की तरफ लौट गया।

बिगुल बजा। लाउडस्पीकर से सैनिक धुन आने लगी। कंधे पर औजार लिए और छाती पर फूल टांके सैनिकों की पंक्तियां बिंदुरेखा क्षेत्र की तरफ बढ़ रही थीं। बैरक में पहुंचने पर मुझे वहां का वातावरण गंभीर किन्तु हलचल से भरा लगा। चिथुङ ने जब रक्षा-पेटी पहनी और दराज से सफेद फूल निकाला तो मुझे अशुभ की आशंका हुई। मैं पूछ बैठी, "तुम लोग कैसी मीटिंग करने जा रहे हो? तुम वहां जाने के लिए जिद्द क्यों कर रहे हो?" थोड़ी झिझक के बाद उसने कहा, "राजनीतिक प्रशिक्षक य्वी की जहां मौत हुई थी, उस स्थान पर सेना के झंडे के नीचे रेजीमेंट के सभी लोग शपथ लेंगे। हम बिंदुरेखा क्षेत्र पर विजय पाने की सौगंध लेंगे। आज से मैं पांचवीं कंपनी के राजनीतिक प्रशिक्षक का काम देखूंगा। मीटिंग के बाद मैं सैनिकों के साथ कार्य को आगे बढ़ाने जाऊंगा। मुझे जाना चाहिए, है कि नहीं?"

"चिथुङ, तुम... तुम मत जाओ!" अपनी भावनाओं को वश में न रख पाने के कारण मैंने उसके हाथ से सफेद फूल छीन लिया। मानो वह मेरे सामने से तुरंत ओझल हो जाएगा। "नहीं, वापस दो!" उसने मेरा हाथ गुस्से में पकड़ा। उसकी क्रुद्ध नजरों के बावजूद मैं रोने लगी और बोली, "नहीं, मैं नहीं दूंगी... चिथुङ, इस जगह को छोड़ दो। मैं तुम्हारे हाथ जोड़ती हूं। हम अभी बात कर कोई रास्ता निकालेंगे। मैं तुम्हारे बिना नहीं रह सकती... हां... मैं नहीं रह सकती!" मैंने उसके चौड़े कंधों को बांहों में भरा और उसके सीने से सटकर मैंने उसकी आंखों में देखा। मेरी आंखों में अनुनय था। भावना के संचार से उसका सीना फूल गया था। उसने खिड़कियों के बाहर दूर पहाड़ों को देखा। फिर एक-एक शब्द पर जोर देते हुए धीमी और थरथराती आवाज में बोला, "तुम्हें सच बताऊं, पिछले छै महीने से मैं स्वयं अनिर्णय की स्थिति में पड़ा हूं। मैंने तुमसे अधिक पीड़ा सही है। ऐसे भी क्षण आए, जब मैंने लगभग सेना छोड़ने का फैसला ले लिया। मेरी मां भी तुम्हारी तरह बराबर रोती रहती है। पर अब मैंने यहीं रहने का फैसला कर लिया है और आगे से फिर कभी तुम मुझसे सेना की नौकरी छोड़ने के लिए मत कहना।... कुछ दिनों पहले अधिकारी और तकनीशियन सीमांत क्षेत्र की सड़क का मुआयना करने गए थे। बारिश हो रही थी और संयोग की बात कि हमारी जीप सीमांत चौकी के पास की कीचड़ में फंस गई। जब हम कीचड़ में फंसी जीप निकाल रहे थे तो उन्होंने हम पर सीटियां बजायीं, हमारी हंसी उड़ाई और फोटो भी खींचे। उन्होंने अपने सैनिकों को हमारी मदद के लिए नहीं भेजा। खराब सड़क और पिछड़े उपकरणों के कारण वे हम पर हंसे। यह तो अपमान था; मेरा व्यक्तिगत अपमान नहीं, बल्कि सेना और देश का अपमान था। बोलो, है कि नहीं? अब न केवल बड़ा देश हमारा उपहास करता है बल्कि छोटा देश भी हमें धमकी देता है। पर कुछ देशवासी अभी भी यह महसूस नहीं करते कि हम खतरों के बीच जी रहे हैं। मजबूत सेना के बिना और सीमाओं की रक्षा व निर्माण करने में जुटे सैनिकों के परिश्रम और जोखिम के बिना हमारी सीमा खतरे में पड़ सकती है। सीमा खतरे में हो तो राष्ट्र सुरक्षित नहीं रह सकता — 'चार आधुनिकीकरण' और लोगों की खुशी व प्रेम की बात तो जाने दो! इस बारे में सभी अलग-अलग तरीके से सोचते हैं। मैं अपने विचार तुम पर नहीं लादूंगा। नए चीन के सैनिक की हैसियत से आक्रमणकारियों के टैंक से कुचले जाने के बजाए देश की आधुनिक सुरक्षा के लिए मैं अपनी जान दे देना बेहतर समझूंगा...।"

मैंने अनुनय किया, "चिथुङ... मुझ पर अधिक जोर मत डालो। मुझे ठंडे दिल से फिर सोचने का मौका दो..." मैंने स्वयं को उसकी बांहों में छोड़ दिया, मेरी सारी शिकायतें ज्वालामुखी की तरह फूट निकलीं...

बाहर से जीप के हॉर्न की आवाज आई। हिमकण फिर से उड़ने लगे और जल्दी ही सड़क हिमाच्छादित हो गई तथा नीला आकाश उनसे भर गया। मैं दूर बहुत दूर जा रही लॉरी की केबिन में निढाल पड़ी थी।

धड़ाम! फिर से धमाके की आवाज आई। ठंडी हवा में सेना का झंडा फहरा रहा था और मशीनों के चलने से एक मिश्रित धुन सुनाई पड़ रही थी। मैंने केबिन की खिड़की से बाहर

देखा। हजारों सैनिकों के ऊपर से फिसलती मेरी नजरें चिथुङ को खोज रही थीं। ओह, बिंदुरेखा क्षेत्र की लटकती चट्टान के ऊपर खड़ा मेरा प्रियतम चिथुङ हाथ हिलाकर मुझे विदा कर रहा था, बर्फ की विस्तृत सफेदी के बीच उसकी टोपी का लाल सितारा किसी धधकती लौ की तरह चमक रहा था...

चाङ लिन

(१९३९-)

चाङ लिन का जन्म ल्याओलिङ प्रांत की फ़ाखू काउंटी में १९३९ में हुआ था। १९५९ में उच्च माध्यमिक विद्यालय से उत्तीर्ण होने के बाद उन्होंने रेलवे में ट्रेन परिचारक और फिर भोजनयान के प्रमुख का काम किया। इन दिनों चाङ छीछीहार रेलवे में यात्री ट्रेनों के ट्रेन परिचारकों के प्रधान हैं।

उन्होंने १९७७ में लिखना आरंभ किया। १९७८ में उनका लघु उपन्यास "अग्निपुष्प" प्रकाशित हुआ। १९८० में उनकी "बर्फ", "अकेला हंस" आदि कहानियां प्रकाशित हुईं।

क्या आप कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य हैं?

चाङ लिन

१

उत्तर रेलवे ब्यूरो के निदेशक ल्यू ताशान दो वर्षों के बाद साठ के हो जाएंगे और फिर बूढ़ों की श्रेणी में आ जाएंगे। उनके अनुसार उनका विगत जीवन अनगिनत उतार-चढ़ावों और जटिलताओं से भरा था, पर साथ ही वे यह भी महसूस करते थे कि कुल मिलाकर उन्होंने साधारण जीवन ही जिया।

बचपन में जब वह अपनी छोटी बंदूक के इतने लंबे भी नहीं थे, तभी तगड़े और मजबूत जवानों के दल के साथ उन्होंने जापानी आक्रमणकारियों के खिलाफ गुरिल्ला लड़ाई में हिस्सा लिया। उस युद्ध के समाप्त होते ही उन्होंने स्वयं को क्वोमिनताङ प्रतिक्रियावादियों के खिलाफ लड़ते पाया। एक बरसात की रात जब ल्याओशी-शनयाङ युद्ध आरंभ होने वाला था और सेना दक्षिण की ओर कूच करने की तैयारी कर रही थी, रेजीमेंट कमांडर ने ल्यू को मुख्य कार्यालय बुलाया और डिवीजनल कमांडर के साथ क्वोमिनताङ के हाथ से लेकर रेलवे का प्रबंध करने का आदेश दिया। साथ ही यह भी बताया कि अब से वह रेलवे से संबंधित काम करेंगे। इस आदेश को सुनते ही उनकी आंखें भर आईं, अभी भी उनके हाथों में एक राइफल थी। पूरी रात वह रोते रहे और उनकी आंखों की झड़ी बाहर की बारिश से तेज थी। उन्होंने जिद्द की कि वह भी रेजीमेंट के साथ दक्षिण जाना चाहते हैं। उनके आंसुओं को देखकर सहयोद्धाओं से न रहा गया, वे उनकी तरफ से रेजीमेंट कमांडर से अपील करने गए। पर उन्हें फटकार पड़ी और वे खामोश लौट आए।

अगले दिन सुबह डिवीजनल कमांडर उनके बैरक में आए। कमरे में प्रवेश करने के साथ उन्होंने पूछा, "ल्यू ताशान किसका नाम है?"

ल्यू चिढ़े हुए खड़े हो गए। डिवीजनल कमांडर ओवरकोट के अंदर कंधे को झटककर उनकी तरफ बढ़े। उन्होंने अपनी काली व चौड़ी भौंहें चढ़ाईं और चिल्लाकर बोले, "नयी दुल्हन की तरह रो रहे हो? क्या तुम कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य हो?" इतना कहकर वह चले गए।

ल्यू ताशान अवाक रह गए, उनके कानों में डिवीजनल कमांडर की आवाज गूंज रही थी। अंततः चुपके से उन्होंने अपनी राइफल को चूमा और दूसरे सैनिक को दे दिया। सेना के दक्षिण कूच करने के बाद वह रेलवे का काम देखने के लिए डिवीजनल कमांडर के साथ

वहीं रह गए। धीरे-धीरे उन्हें लोहे की रेल से प्रेम हो गया, वह बर्फ की तरह रेल पटरियों की गर्मी महसूस करने लगे और उनकी धड़कन सुनने लगे। भूतपूर्व डिवीजनल कमांडर और रेलवे के प्रभारी निदेशक को गुजरे तो वर्षों हो गए, पर ल्यू ताशान के दिल में उस बूढ़े क्रोधी आदमी की याद ताजा बनी रही।

ल्यू ताशान का जन्म शानतुङ प्रांत के च्याओतुङ इलाके में हुआ था। उनके पिता किसान थे और उनके दादा तथा पूर्वज भी किसान ही रहे थे। लंबी नाक, चौड़ा मुंह और मोटे खड़े काले बाल वाले ल्यू ताशान देखने में शानतुङ प्रांत की लम्बी-तगड़ी कद-काठी के थे। एक समय वह अपने बाल अधिक स्टाइल में रखना चाहते थे, पर उनके बाल अत्यंत कड़े थे और उन्हें दबाकर नहीं झाड़ा जा सकता था। इसलिए उन्हें सेना छाप बाल की कटाई से संतोष करना पड़ा और अपने बालों को जूता साफ करने वाले ब्रश की तरह खड़े रखना पड़ा — हालांकि खड़े बाल उनके दृढ़ चरित्र को समुचित रूप से व्यक्त करते थे। वे पूर्णतः दृढ़प्रतिज्ञ थे, उन्होंने अपने सिद्धांतों को कभी नहीं छोड़ा। "सांस्कृतिक क्रांति" के दस वर्षों के दौरान राजनीतिक अवसरवादियों के आगे झुकने से उन्होंने इंकार कर दिया था और स्वाभाविक रूप से उन्हें अपनी हठधर्मिता की सजा भुगतनी पड़ी थी। उस दुःस्वप्न के समाप्त होने और पार्टी की नयी नीति लागू होने के बाद उन्हें एक ऊंचा पद दिया गया, जहां अधिक काम न था। उन्हें यह अच्छा नहीं लगा था और वह कहा करते थे कि यह काम तो मेरे पूर्वजों की कब्र खोदने से भी अधिक बुरा है। हाल ही में उन्हें फिर से रेलवे ब्यूरो के निदेशक पद पर नियुक्त किया गया था।

रेलवे ब्यूरो के सभी सचिव नए होने के बावजूद चालाक और दुनियादार थे, पर वे ल्यू ताशान के बारे में अधिक नहीं जानते थे। उन्होंने यही सुन रखा था कि उन्हें गाली देने की आदत है। वह क्रोधित होने पर गाली देते थे और खुश रहने पर भी गाली देते थे—हां दोनों गालियों में स्वर की भिन्नता होती थी। उनके आने के पहले सचिवों ने कार्यालय में सब कुछ पुनर्व्यवस्थित किया। एक डबल बेड जितनी चौड़ी मेज थी, जिसके पांव बाघ के पैरों की तरह थे। मेज पर तीन टेलीफोन थे। दीवारों को हल्के पीले रंग से रंगा गया, जो वैज्ञानिक रूप से उत्साह और हार्दिकता का रंग है और यह उम्मीद की गई कि चिड़चिड़े निदेशक के लिए सौहार्दपूर्ण वातावरण बनाने में वह सहायक होगा। आने के बाद इस "हार्दिक घोंसले" में वह केवल एक दिन रुके। अगले दिन सुबह उन्होंने सचिव चओ फ़ङ को बुलाया और कहा, "हमें बाहर चलना है। हम रेलवे स्टेशन के पास वाले कमरे का उपयोग करेंगे।"

सभी सचिव फिर से पूरी सुबह व्यस्त रहे। कार्यालय बदलने का कार्य अंततः पूरा हुआ और वे पूर्णतः निढाल थे। नए कार्यालय का कमरा छोटा था, यहां से स्टेशन पर नजर रखी जा सकती थी। कमरे की खिड़की बड़ी टीवी के पर्दे जैसी थी, जिससे स्टेशन पर होने वाली सभी गतिविधियां साफ-साफ देखी जा सकती थीं। प्रेषणकर्मियों का स्वर, कुलियों का शोर, निरीक्षकों की डांट और इन सबसे ऊपर इंजन की सीटी की आवाज—ये सभी आवाजें मिलकर वातावरण को प्रभावित करती थीं। अब निदेशक ल्यू ताशान सुविधा और आराम महसूस कर रहे थे, जैसे उन्होंने कोई अच्छी शराब पी ली हो या कोई सुरीला संगीत सुन रहे हों। खिड़की के सामने कुर्सी पर बैठकर मुस्कराहट के साथ उन्होंने कहा, "हूं! ऐसी ही व्यवस्था होनी चाहिए!"

सचिवों के लिए नए निदेशक के बारे में विस्तार से जानने में कोई कठिनाई नहीं थी। थोड़े ही समय में उन्हें निदेशक के पिछले जीवन की कुछ विशेष जानकारियां मिल गईं, जिनमें से दो घटनाएं अधिक महत्वपूर्ण थीं।

पहली घटना : १९६५ की कड़ाके की सर्दी में रेलवे लाइनों पर बर्फ जम गई थी और सारे सचिव ठीक से काम नहीं कर रहे थे। ढलान पर चढ़ते समय रेलगाड़ियों का चक्का जाम हो जाता था। इस भीषण मौसम में एक दुर्घटना हो गई, पर उस समय लुङहो शाखा ब्जूरो के निदेशक अपने कार्यालय में नहीं थे। वह घर पर गहरी निद्रा में सोए हुए थे। जब ल्यू को यह जानकारी मिली तो वह आग-बबूला हो उठे, उस शाम छै बजे शिफ्ट बदलने के समय उन्होंने शाखा ब्यूरो के निदेशक को फोन किया। शाखा निदेशक के जवाब देने के साथ ही ल्यू ने अपना गला साफ किया और गुस्से में गालियां देनी शुरू कर दीं, "धिक्कार है आपको! हमारे आदमी वहां हवा और बर्फ में दिन-रात एक किए हुए हैं, पर आप अपनी शिफ्ट समाप्त होने के साथ ही घर भागते हैं और दो घूंट बदबूदार शराब पीकर बीवी की रजाई में घुस जाते हैं... क्या आप पार्टी से सदस्य भी हैं? अब से सभी शाखा ब्यूरो के निदेशक रात की ड्यूटी करेंगे। मैं हर रोज रात में बारह बजे आप लोगों की हाजिरी लूंगा। अगर आप थक जाएं तो रेलवे लाइन की बगल में सो जाएं! किसी को घर लौटने की इजाजत नहीं दी जाएगी।"

इस तरह सभी शाखा ब्यूरो के निदेशकों ने अपने कार्य को तत्परता से पूरा किया; कोई अन्य दुर्घटना नहीं हुई और सब कुछ सामान्य रहा।

दूसरी घटना : १९६४ में अनेक मजदूरों ने शिकायत की कि रेलवे ब्यूरो का अस्पताल बुरी हालत में है। चिकित्सा सेवा बहुत खराब है और अस्पताल के कर्मचारी रोगियों की परवाह नहीं करते। गलत निदान के कारण दो रोगियों की मृत्यु हो गई। एक डॉक्टर ने तो बिना ठीक से आला लगाए एक रोगी की जांच की। जब ल्यू को इन बातों की जानकारी मिली तो उन्होंने गाली नहीं दी, बल्कि अपने होंठ भींचकर रह गए। कुछ दिनों के बाद एक गहरी रात को उन्होंने अपने दफ्तर में अचानक कहा कि उनके पेट में दर्द हो रहा है। उन्होंने अपनी कार नहीं निकाली और न ही अस्पताल जाने के लिए किसी को साथ लिया। वह स्वयं ही धीरे-धीरे चलकर इमरजेंसी वार्ड तक गए। वहां का डॉक्टर चैन की नींद सो रहा था, उसके मुंह से लार निकल रही थी। ल्यू ने उसे जगाने के लिए आवाज दी। डॉक्टर ने अपनी नींद से भारी पलकें खोलीं और फिर उन्हें बंद करके बीमारी के बारे में पूछा। डॉक्टर ने ल्यू को बिस्तर पर लेटने के लिए कहा और जम्हाई लेते हुए अधीरता के साथ पेट की जांच की तथा बताया कि रोगी को एपेन्डीसाइटिस है और इमरजेंसी ऑपरेशन की जरूरत है। ल्यू बिस्तरे से उछल पड़े और घूरते हुए डॉक्टर को डाटने लगे, "धिक्कार है तुम्हें और तुम्हारी एपेन्डीसाइटिस को! तुम कैसे डॉक्टर हो? तुम तो इस सफेद कोट के लिए कलंक हो!"

डॉक्टर की नींद तुरंत काफूर हो गई, उसने घबराकर इस असामान्य रोगी को देखा, "तुम?..."

"हां, मैं ल्यू ताशान हूं। डॉक्टर, आज मैं विशेषकर यही देखने आया था!"

डॉक्टर का चेहरा पीला पड़ गया और उसकी गर्दन झुक गई।

ल्यू बिस्तरे से नीचे उतरे और कमीज के बटन लगाते हुए बोले, "जाओ और अपने प्रबंधक को फोन करो, उन्हें यहां आने के लिए कहो।"

थोड़ी देर में प्रबंधक अपनी कार से वहां पहुंचे। उन्हें नहीं मालूम था कि क्या हुआ है, क्योंकि डॉक्टर अपनी घबराहट के कारण प्रबंधक को साफ-साफ कुछ भी नहीं बता सका था। जब वह दरवाजा खोलकर कमरे में घुसे तो उन्होंने अपने सामने गुस्से में खड़े रेलवे ब्यूरो के निदेशक को पाया।

ल्यू ने मुलायम स्वर में उनसे पूछा, "क्या आप कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य हैं?"

प्रबंधक ने सहमति में सिर हिलाया, वह नहीं जानते थे कि ल्यू ने ऐसा सवाल क्यों पूछा। ल्यू का गुस्सा और बढ़ गया, पर उन्होंने ठंडे स्वर में कहा, "तुम स्वयं को कम्युनिस्ट पार्टी का सदस्य कहते हो, पर मुझे तो तुम क्वोमिनताङ के सदस्य लगते हो।..."

ऊपर की घटनाओं के विवरण में कुछ बातें सही नहीं भी हो सकती हैं। रेलवे मजदूरों के बीच प्रचलित इस कहानी के कहने-सुनने में कुछ मिर्च-मसाला जोड़ देना असंभव नहीं है। यह भी सबको मालूम था कि ल्यू को अधिकारियों ने फटकारा है कि उनकी सख्ती और गाली देने की आदत गुरिल्ला जीवन की देन है। ल्यू ने अपनी आलोचना स्वीकार की और इन अवांछनीय आदतों से स्वयं को मुक्त करने का विश्वास दिलाया। पर अभी एक सप्ताह भी नहीं बीता था कि उन्हें गाली देते और ताना मारते हुए सुना गया। वस्तुतः उन्हें ऐसा लगता था कि ऐसी भाषा का प्रयोग कर वह अपनी बात अधिक प्रभावशाली ढंग से कह सकते हैं, ठीक वैसे ही जैसे कुछ लेखकों को विस्मयादिबोधक चिह्न का प्रयोग अत्यंत प्रिय होता है। "सांस्कृतिक क्रांति" आरंभ होने पर वह उन कुछ पहले व्यक्तियों में थे, जिनके गले में लोकनिंदा का पात्र होने के कारण बड़ा बोर्ड लटकाया गया था। उनके अपराधों की सूची लंबी थी, कम्युनिस्ट पार्टी के किसी सदस्य को उनका यह कहना कि तुम्हारा व्यवहार क्वोमिनताङ सदस्य की तरह है, उनके नारकीय जीवन के लिए पर्याप्त था। जब इस अपराध के लिए उनकी खुली आलोचना की जा रही थी तो अस्पताल के प्रबंधक मंच पर आए और यह सिद्ध करने की कोशिश की कि उन्होंने यह टिप्पणी पार्टी के अपमान के उद्देश्य से नहीं की थी और अस्पताल की आलोचना जायज थी। पर उनके बचाव में पेश की गई दलील के नतीजे के रूप में अस्पताल के प्रबंधक को "राजतंत्रवादी" ठहराया गया और उनके गले में भी बड़ा बोर्ड लटका दिया गया। ल्यू ताशान को प्रबंधक की ईमानदारी पर पूरा विश्वास था। उन्होंने तथाकथित क्रांतिकारियों से चिल्लाकर कहा, "यह क्या बकवास है! धिक्कार है तुम लोगों को!" इसके बाद क्या हुआ होगा, इसकी सहज कल्पना की जा सकती है।

यह सब पुरानी बातें थीं। ल्यू ताशान पौराणिक कथाओं के नायक के रूप में मशहूर हुए और रेलवे ब्यूरो में उनसे संबंधित अनेक किस्से प्रसिद्ध थे।

२

ल्यू ताशान की एक और आदत थी। वह प्रतिदिन ब्यूरो के विभिन्न विभागों और दफ्तरों

में अचानक जाते थे और कर्मचारियों व मजदूरों के कार्यों की जांच करते थे। उनका मानना था कि रेलवे देश की प्रमुख धमनी है, इसलिए उसे अच्छी तरह काम करना चाहिए। साथ ही उसकी देखभाल करने वाले ब्यूरो का काम भी सही ढंग से होना चाहिए। ब्यूरो को अपने कर्तव्यों को पूरा करने में किसी प्रकार की कोताही नहीं करनी चाहिए।

एक दिन दोपहर को परिवहन और वित्त विभाग की जांच करने के बाद ल्यू ताशान टाइपिंग कक्ष में आए। वह यहां हमेशा नहीं आते थे। कमरे में घुसने पर उन्होंने देखा कि एक चालीस वर्षीया टाइपिस्ट हल्के नीले रंग का बेल-बूटेदार ऊनी कोट पहनने में लगी हैं। पहनकर काफी देर तक ऊपर-नीचे व आगे-पीछे से स्वयं को निहारने के बाद उसकी आंखों में चमक आई। लगभग बीस वर्षीया दूसरी लड़की ने प्रशंसा में ताली बजाई। ल्यू को यह सब बहुत बुरा लगा, पर उन्होंने डाटा-फटकारा नहीं क्योंकि वह जानते थे कि यदि उन्होंने कुछ कहा तो वे दुखी हो जाएंगी। महिलाओं के सामने वह हमेशा स्वयं पर नियंत्रण रखने की कोशिश करते थे। उनकी यह कहने की इच्छा हो रही थी, "यदि आपको पहनकर देखना ही है तो कृपया यह काम घर पर किया करें। दफ्तर ऐसे क्रिया-कलापों के लिए नहीं होता।" इसके साथ ही उन्होंने सोचा कि वह अपना स्वर धीमा रखेंगे। पर उनके कुछ बोलने के पहले दोनों टाइपिस्टों ने उन्हें देख लिया। छोटी की जीभ तो तालू से सट गई। दोनों जल्दी से अपनी कुर्सी पर बैठीं और काम करने में इस तरह तल्लीन हो गईं कि जैसे कुछ हुआ ही न हो। बगैर कुछ बोले ही ल्यू कमरे से बाहर निकले। उन्होंने मन ही मन सोचा, "हूं, इस उम्र की औरत अभी भी हल्के नीले रंग का ऐसा कोट पहन रही है, जिस पर हल्के पीले रंग के फूलों की कढ़ाई है। क्या यह सचमुच उचित है?" लोग कहते हैं कि वह अविवाहिता है, अपनी जवानी के दिनों में उसने अपने लिए एक सुंदर और चुस्त-दुरुस्त युवक को खोजने की कोशिश की थी। पर ऐसा युवक केवल उसके सपनों में ही आता रहा, वास्तविक दुनिया में उसे अपने सपने का युवक नहीं मिला, क्योंकि ईश्वर ने उसकी सृष्टि ही नहीं की थी। अब चूंकि उसकी उम्र चालीस से अधिक हो गई थी, इसलिए उसने महसूस किया कि उसे जीवन साथी की तलाश में इतनी मीन-मेख नहीं निकालना चाहिए। अब बस एक ही इच्छा थी कि उसका पति सरकारी कार्यकर्ता हो, भले ही थोड़ी अधिक उम्र का क्यों न हो। यही सब कुछ सोचते हुए ल्यू ताशान सचिव के दफ्तर में गए। पर वहां भी कोई नहीं था। उन्हें किसी ने बताया कि परिवहन विभाग ने कहीं से ताजा मछली की व्यवस्था की है और सारा स्टाफ अपने हिस्से की मछली लेने गया है। ल्यू को तेज गुस्सा आया। उन्होंने सोचा : "कितने गैरजिम्मेदार हैं। मछली की गंध लगते ही काम छोड़कर चले गए। मैं यहीं बैठकर देखता हूं कि वे कब लौटते हैं!" वह एक कुर्सी पर बैठ गए और मेज पर रखे मोटे शीशे के नीचे रखी तस्वीर देखने लगे। एक सुंदर लड़की की तस्वीर थी, वह बैले नर्तकी लग रही थी। शायद किसी सचित्र पत्रिका से उसकी तस्वीर काटी गई थी। फिर उन्हें मेज पर अपने नाम लिखा एक पत्र दिखाई पड़ा। उन्होंने तुरंत खोलकर पढ़ा। फिर तो उनके गुस्से का ठिकाना न रहा।

पत्र पढ़ते हुए वह गुस्से में चिल्लाए, "धिक्कार है!" इस पत्र में पिछले महीने पाएथा रेलवे स्टेशन पर हुई दो ट्रेनों की टक्कर की विस्तृत जानकारी दी गई थी। इस पत्र ने पर्दाफाश

किया कि कैसे पाएथा रेलवे स्टेशन और पेइछाङ शाखा ब्यूरो ने मिलकर अपनी रिपोर्ट में एक बड़ी दुर्घटना को छोटी दुर्घटना बताकर अधिकारियों की आंखों में धूल झोंकने की कोशिश की थी। ल्यू ने पहले ही इस दुर्घटना पर विचार किया था और यह मान लिया था कि यह साधारण दुर्घटना है। पर इस पत्र के अनुसार यह सचमुच एक बड़ी दुर्घटना थी। उन्होंने मेज पर जोर से मुक्का मारा, मेज पर रखी दवातें उछल पड़ीं। उन्होंने चिल्लाकर कहा, "धिक्कार है! तुम लोगों ने मेरे साथ गंदा खेल खेला। मुझे पूरी तरह से धोखे में रखा। अगर इस पत्र की बातें सच्ची हैं तो मैं भी दिखाता हूं!" फिर अचानक उन्होंने सोचा कि कहीं झूठा दोषारोपण तो नहीं किया गया है। आखिर "सांस्कृतिक क्रांति" के समय से झूठा दोषारोपण तो सामान्य बात हो गई है। उन्होंने फिर से पत्र पढ़कर देखा कि नीचे किसी का हस्ताक्षर है या नहीं। यदि हस्ताक्षर और पता है तो पत्र की अस्सी या नब्बे प्रतिशत बातें सही होंगी।

पत्र हस्ताक्षरित था : ल्वी च्यूछाए, पाएथा रेलवे स्टेशन का एक पैटमैन। अपने होंठों पर जीभ फेरते हुए उन्होंने पत्र लिखनेवाले की प्रशंसा की, "हां, इसमें अपना नाम और पता लिखने का साहस है। यह सच्चा आदमी है!"

बरामदे से ऊंची एड़ियों के जूते की ठकठक की आवाज आई, जैसे कोई शोख लड़की चली आ रही हो। थोड़ी देर में मजबूत धागों से नथी मछलियां लटकाए सचिव चओ फ़ङ ने मुस्कराते हुए कमरे में प्रवेश किया; एक मछली अभी भी छटपटा रही थी। चओ फ़ङ ने उन मछलियों में से दो अच्छी व बड़ी मछलियां छांटकर उनके सामने रखीं और कहा, "निदेशक ल्यू, ये आपके लिए हैं।"

ल्यू ताशान ने सचिव चओ को घूरते हुए पूछा, "कहां से मारकर ला रहे हैं इतनी अच्छी मछलियां?"

चओ फ़ङ ने कोई जवाब नहीं दिया, बस झेंपते हुए मुस्कराते रहे। निदेशक ल्यू का चेहरा तना हुआ था और गुस्से के कारण उनकी ठोड़ी कांप रही थी। "मैंने भी एक बहुत बड़ी मछली पकड़ी है और साथ में कुछ छोटी मछलियां भी..." उन्होंने पत्र दिखाते हुए चओ फ़ङ से कहा। चओ फ़ङ की तो बस यह हालत थी कि काटो तो खून नहीं; उनके हाथ से मछलियां गिरती-गिरती बचीं।

"यह पत्र कब आया?" ल्यू ने पूछा।

"....."

"सच-सच बताएं!"

चओ फ़ङ ने ल्यू की तरफ देखा और सोचा कि अब झूठ बोलने का कोई फायदा नहीं होगा। इसलिए उन्होंने कहा, "तीन दिन पहले।"

"फिर इसे तुरंत मेरे पास आपने क्यों नहीं भेजा?"

"पेइछाङ शाखा ब्यूरो के प्रधान पाए फ़ान ने मुझे फोन किया था कि एक मजदूर सारे मामले का बतंगड़ बना रहा है। मैंने सोचा, चूंकि 'सांस्कृतिक क्रांति' के दौरान आप पाए फ़ान के साथ दो वर्षों के लिए हिरासत में थे, ऐसे में यह पत्र पाकर आप लज्जित महसूस करेंगे..."

ल्यू ने आंखें मिचमिचायीं, "क्या पाए फ़ान को इस पत्र की जानकारी है?"

चओ फ़ङ ने भीगी बिल्ली की नजरों से ल्यू को देखा और हामी भरी, "जी, उन्होंने फोन किया था कि शाखा ब्यूरो को प्रतियोगिता में मिली जीत के लिए जल्दी ही लाल झंडा दिया जाएगा। यदि इस पत्र की बातें अभी जाहिर..."

ल्यू ताशान के चेहरे का रंग बदल गया। वे अपने होंठ भींचते हुए गहरी सांस ले रहे थे। "हुं, यदि कोई आपकी चापलूसी करे और आपको तोहफा दे तो आप सिद्धांतों को ताक पर रख सकते हैं। आप तो एक आदर्श सचिव हुआ करते हैं! इस घृणित व्यापार में आप कितने दिनों से लगे हुए हैं?"

गुस्से में भरे वह इधर-उधर घूमने लगे। बाहर मालगाड़ी का इंजन सीटी दे रहा था और लट्ठों से लदी मालगाड़ी स्टेशन से छूटी। उन्होंने अचानक मुड़कर सचिव से पूछा, "क्या आपने '१९१८ में लेनिन' फिल्म देखी है? क्रेमलिन की रक्षा करने वाले गार्डों का कप्तान याद है? वह सिद्धांतों का आदमी था, एक सच्चा कम्युनिस्ट था! पूंजीपतियों ने उसे रुपयों से ढक देने का प्रलोभन दिया। पर क्या वह बहका? यदि उतने पैसे आपको दिए जाएं तो क्या आप नहीं बहक जाएंगे?" वह इतनी जोर से बोल रहे थे कि उन्हें पता ही नहीं चला कि किसी ने दरवाजा खोलकर झांका और फिर बंद कर दिया। सचिव चुपचाप खड़े थे, उनके मुंह से एक शब्द नहीं निकला। उन्होंने वह फिल्म देखी थी, पर उन्होंने कभी यह नहीं सोचा था कि यदि वह सुरक्षा गार्डों के कप्तान होते तो क्या करते? ल्यू कमरे में टहलते रहे। फिर अचानक उन्होंने टेलीफोन का रिसीवर उठाया और बोले, "हेलो, पार्टी स्कूल है न? मैं ल्यू ताशान बोल रहा हूं। मैं एक छात्र आपके यहां भेजना चाहता हूं।"

उधर से भर्रायी आवाज आई, "हमारी कक्षा एक सप्ताह पहले शुरू हो गई है।"

"इससे फर्क नहीं पड़ता। छात्र का नाम चओ फ़ङ है।"

ल्यू ने रिसीवर रखा, आंखें मिचकायीं और कहा, "सुनिए, मेरे युवा चतुर साथी, आप कल पार्टी स्कूल जाएंगे। अपने दिमाग में कुछ काम की बातें भरिए, भरेंगे न? '१९१८ में लेनिन' फिल्म को कुछ और मर्तबा देखिए।"

चओ फ़ङ ने सहमति में सिर हिलाया और फिर से मछली उठाई। वह अभी कुछ बोलने ही जा रहे थे कि ल्यू ने कहा, "इन मछलियों को वहीं भेज दें, जहां से आई हैं। मैंने पहले ही बड़ी सफेद मछली पकड़ ली है। (बड़ी सफेद मछली का तात्पर्य शाखा ब्यूरो प्रधान से है। पाए फान के पाए रेखाक्षर का अर्थ सफेद होता है)।"

चओ फ़ङ के सफेद चेहरे से पसीना चू रहा था। उन्होंने सोचा, "मैंने भी क्या किया? जब दुनिया में इतने आदमी मौजूद हैं तो भला मुझे उनके खिलाफ खड़े होने की क्या जरूरत थी?"

३

उस दोपहर ल्यू ने एक सभा बुलाई और एक विशेष जांच दल गठित किया, जिसमें अनुशासन निरीक्षण विभाग के प्रधान के अलावा परिवहन विभाग के प्रधान और तकनीकी विभाग के

प्रधान को शामिल किया। उन्हें पाएथा रेलवे स्टेशन जाना था। उनके जाने के पहले ल्यू ने उन्हें अपने दफ्तर बुलाया और चेतावनी दी, "आप सभी कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य हैं...ठीक! जब पाएथा रेलवे स्टेशन में होंगे, आप शराब नहीं पिएंगे। कोई भी आपको खाने पर बुलाए, आप इंकार करेंगे। अपना मुंह बंद रखेंगे। अगर आपने किसी की आवभगत स्वीकार की तो बाद में उसके विरुद्ध कुछ भी कहने में आपको कठिनाई होगी। यह निश्चित कर लें कि आप घूस नहीं लेंगे। यदि आप शराब पीना ही चाहते हैं तो आप लोगों के लौटने पर मैं एक भोज दूंगा।"

यात्री ट्रेन न होने के कारण उस दोपहर जांच दल मालगाड़ी से रवाना हुआ। दो दिनों के बाद जांच दल वापस लौटा और सीधे ल्यू के दफ्तर गया। उस समय वह एक मीटिंग में बैठे थे। थोड़ी देर में वह बाहर आए, उनका चेहरा लाल हो रहा था। दरअसल मीटिंग अभी खत्म नहीं हुई थी और शायद किसी विषय पर जोरदार बहस चल रही थी। जांच दल के वापस आने की सूचना पाकर वह बाहर आए थे। जांच दल के सदस्यों ने प्राप्त जानकारी की विस्तृत रिपोर्ट की। पैटमैन के पत्र की बातें सच्ची थीं। जांच दल ने मजदूरों से पूछताछ और दुर्घटना स्थल पर क्षतिग्रस्त डब्बों की भी जांच की थी। सचमुच बड़ी दुर्घटना थी। जब वे वहां थे तो एक व्यक्ति ने उन्हें खाने पर भी बुलाने की कोशिश की। वह व्यक्ति कोई और नहीं, स्टेशन मास्टर थे। स्टेशन मास्टर बड़े ही जिंदादिल और बात करने में चतुर व्यक्ति थे। उनकी बातें अन्य कहीं की अपेक्षा अधिक मीठे तुरपान के अंगूरों की तरह ज्यादा मीठी थीं। निस्संदेह जांच दल ने उनका निमंत्रण स्वीकार नहीं किया था। दुर्घटना की रिपोर्ट उन्होंने ही लिखी थी और शाखा ब्यूरो के प्रधान पाए को फोन करके उन्होंने ही बताया था कि ऐसी रिपोर्ट क्यों लिखी गई है। पाए ने उनकी दलील सुनकर उनकी प्रशंसा में कहा था, "आपका दिमाग बहुत तेज है!"

"धिक्कार है उन्हें! ये लोग हमेशा गड़बड़ घोटाला करते हैं!" ल्यू ने रिपोर्ट सुनने के बाद यही टिप्पणी की। अपने बालों में हाथ फेरते हुए वह अचानक उठ खड़े हुए, "पाएथा स्टेशन से मेरी बात कराएं और ल्वी च्यूछाए को तुरंत यहां बुलाएं। उस स्टेशन मास्टर को, हां उस 'चालाक गधे' को तुरंत बरखास्त करें और किसी ईमानदार व्यक्ति को वहां बहाल करें!"

ल्यू के अलावा सभी वहां से चले गए। ल्यू आंखें बंद कर गाड़ियों की सीटी की आवाज सुनते रहे। उन्होंने सोचा, "मैं इस बड़ी सफेद मछली के साथ कैसे पेश आऊं? हां, मुझे हटाकर उसके साथ रेलवे में काम करने के लिए भेजा गया था, गलती न होने के बावजूद हम दोनों को दो वर्षों के लिए कैद में रखा गया था। हमने वहां बेहद बातें कीं, हमने दुनिया की सभी समस्याओं पर विचार किया। हमने कहा कि पृथ्वी गोल है। मैंने कहा कि पृथ्वी पर हर तरह की समस्याएं हैं। क्या ऐसा नहीं था? कुछ सवालों के जवाब हमारे पास थे, पर अधिकांश सवालों के बारे में हम कुछ नहीं जानते थे। जब हम किसी सवाल का जवाब नहीं ढूंढ़ पाते तो हम अत्यंत दुखी होते। धीरे-धीरे हमें शराब पीने की आदत लग गई। हम उस सुकुमार युवक से चोरी-छिपे शराब मंगवाते थे, जो हमारी निगरानी के लिए नियुक्त था। हमें एक बोतल शराब की कीमत एक यूवान देनी पड़ती थी, इसलिए हमने उसका नाम 'एक यूवान की शराब' रख दिया था। जब भी हमें रात में नींद नहीं आती तो हम प्रायः बोतल से

शराब पिया करते थे। थोड़ी शराब लेने के बाद पेट गरम होने पर हम धैर्य से इधर-उधर की बातें करते थे। कभी-कभी अधिक शराब पीने से पाए का चेहरा समुद्री झींगे की तरह लाल हो जाता था। नशे की हालत में अपनी अधमुंदी आंखों से मुझे देखता हुआ निःश्वास लेकर कहता था, 'अय, आए, लाओ ल्यू, क्या तुम यहां से निकलने के बाद भी रेलवे की नौकरी करोगे? मेरा तो जी भर गया। मैंने बीस वर्षों तक रेलवे में काम किया और इसका इनाम मुझे क्या मिला, ये जेल की सलाखें?...' "

ल्यू एक घूंट शराब पीकर होंठों पर जीभ फेरते हुए पाए के नजदीक जाकर फुसफुसाते, "मैं अपनी पत्नी की तरह रेलवे लाइनों को भी नहीं छोड़ सकता... तुम बताओ, लाओ पाए, क्या कभी तुम अपनी पत्नी के बारे में सोचते हो?"

पाए की आंखें लाल हो जातीं और वह जवाब देने के बजाए पूछ बैठते, "क्या तुम याद करते हो?"

"हां, कैसे नहीं करूंगा! कोई अपनी पत्नी के बारे में कैसे नहीं सोचेगा?" तब तक शराब खत्म हो जाती थी और वे दोनों बातें करना बंद कर गहन विचारों में खो जाते थे। थोड़ी देर बाद चूहों की भगदड़ मचती, वे दीवार और फर्श के कोनों में दौड़ लगाते। फिर उनकी चूं-चूं सुनाई पड़ती। ल्यू सोचते, "शायद नवजात चूहे चूं-चूं कर रहे हैं, वे अपनी मां को खोज रहे होंगे। यही उनकी दुनिया है। पर क्या ऐसा ही हमारी दुनिया में नहीं है? एक इंसानों की दुनिया है और एक चूहों की दुनिया है। अच्छे इंसान भी हैं, बुरे इंसान भी हैं। बुरे इंसानों से अधिक संख्या अच्छे इंसानों की होती है। पर क्या यह अच्छा नहीं होगा कि दुनिया में अच्छे इंसानों की संख्या और अधिक हो?"

नजरबंदी से छूटने के बाद भी वे अक्सर मिलते और साथ बैठकर पीते रहे। सीधे बोतल से पीने की उनकी आदत थी। उन्हें सुंदर कांच के ग्लासों के प्रयोग का अभ्यास नहीं था। हालांकि ग्लास से पीना उचित था, पर इससे मुंह में शराब नहीं भरती थी। बाद में ल्यू की पत्नी ने उन्हें फटकारा कि अमरीकी सिपाही सीधे बोतल से शराब पीते हैं। इसलिए पीने के वक्त वे पोर्सलिन का सफेद जार रखने लगे। कभी-कभी पी लेने के बाद पाए अपने कपड़े खोलकर तथाकथित क्रांतिकारियों द्वारा की गई पिटाई के जख्मों के निशान दिखाते थे। पर ल्यू ऐसा कभी नहीं करते थे, "क्यों परेशान हों? वे केवल भयानक अतीत की याद दिलाते हैं।" यह कहते हुए उनका चेहरा लाल हो जाता था।

इंजन की कर्णभेदी आवाज ने उन्हें वर्तमान में पहुंचा दिया। ल्यू कुर्सी से उठकर खिड़की के पास गए। यह रेलवे स्टेशन प्रमुख रेलवे यातायात और माल परिवहन स्टेशन था। रोजाना सैकड़ों गाड़ियां आती और जाती थीं, पर यहां लगे सभी साज-सामान पुराने थे; ऐसा लगता था जैसे छिङ राजवंश की पोशाक पहने आधुनिक लोग खड़े हों। कुछ इंजन तो जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध के दिनों के थे। सामने एक वाष्प इंजन खड़ा था, अचानक उससे घना काला धुआं निकला और खिड़की से दिखाई पड़ रहे आधे आकाश को ढक लिया।

उन्होंने स्वयं से कहा, "ओह, ऐसा पिछड़ापन! चीन का पिछड़ापन हम कम्युनिस्टों के लिए शर्म की बात है। लोग खुले आम झूठ बोलते हैं और कुछ लोग खुश होकर उस झूठ को

सुनते हैं और उस पर यकीन करते हैं। जो वास्तव में मिथ्या है, उसे लोग सच समझ कर गंभीरता से लेते हैं। धिक्कार है उन्हें! एक शाखा ब्यूरो प्रधान ने अपने सहयोगियों को धोखा दिया और अपने अधिकारियों को मूर्ख बनाया। लोग हमारे बारे में क्या सोचेंगे? पार्टी की प्रतिष्ठा पहले ही से कम है और अगर यही स्थिति चलती रही तो पार्टी की प्रतिष्ठा और कम होगी। लोग हम पर विश्वास करना छोड़ देंगे। यह कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्यों के लिए सबसे अधिक शर्म की बात है! पाए, मैंने तुम्हें आज पकड़ा है और मैं तुम्हें आसानी से नहीं छोड़ूंगा। मैं तुम्हारे साथ सख्ती से पेश आऊंगा और ब्यूरो बुलेटिन में इसकी घोषणा करूंगा।''

उन्होंने रिसीवर उठाया और पाए को फोन किया, ''हेलो, मैं पाए फ़ान से बात करना चाहता हूं।... लाओ पाए? तुम अपनी नौकरी बदल सकते हो!... तुम किस नयी नौकरी के चक्कर में हो? जाओ और अभिनेता बन जाओ!... तुम हंस रहे हो? तुम कितने अच्छे अभिनेता हो! तुम झूठ को सच बना सकते हो! तुम्हें धिक्कार है! मैंने तो लगभग तुम्हारी बातों का यकीन कर लिया था! तुमने ये तरकीबें कहां से सीखीं?... तुमने पाएथा स्टेशन दुर्घटना के बारे में ब्यूरो को झूठी जानकारी दी। कम्युनिस्ट पार्टी का एक सदस्य दूसरे सदस्य को धोखा देता रहा!... मैंने पूरे मामले की विस्तृत जांच की है। मैंने सुना है कि तुम ल्वी च्यूछाए को परेशान करना चाहते हो। तुम्हें धिक्कार है! पर मैं उसके साथ हूं। तुम्हारे बातूनी स्टेशन मास्टर को अवश्य ही बरखास्त किया जाएगा... और तुम्हें भी सजा भुगतनी पड़ेगी!'' फोन पर पाए तर्क और दलीलें पेश करने के साथ-साथ अनुनय-विनय भी कर रहे थे। ल्यू ने रिसीवर मेज पर पटका, कमरे का एक चक्कर लगाने के बाद उन्होंने फिर से रिसीवर उठा लिया, ''लाओ पाए, क्या तुम अभी भी कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य हो? ठीक है, अपने किए का नतीजा भुगतने के लिए तैयार रहो!'' इतना कहकर उन्होंने रिसीवर रख दिया।

उस शाम ब्यूरो पार्टी समिति की एक सभा हुई और दुर्घटना की सही जानकारी न देने के लिए पेइछाङ शाखा ब्यूरो को दंडित किए जाने के संबंध में फैसला लिया गया। कुछ लोगों ने महसूस किया कि दंड कुछ अधिक व कठोर है, यह एकता और स्थिरता कायम करने की कोशिश को प्रभावित कर सकता है। पर ल्यू निश्चल और अपनी राय पर अडिग रहे। उन्होंने कहा, दंड और एकता व स्थिरता दो भिन्न मुद्दे हैं, इन पर पृथक रूप से विचार किया जाना चाहिए; अंत में अनुशासन बनाए रखने के लिए पाए को एक गंभीर चेतावनी दी जानी चाहिए और उनकी फाइल में इसका उल्लेख करना चाहिए। पाएथा रेलवे स्टेशन के स्टेशन मास्टर और पेइछाङ शाखा ब्यूरो के सुरक्षा पर्यवेक्षण कार्यालय के प्रधान को बरखास्त किया गया। इसके अलावा ल्वी च्यूछाए को पचास य्वान का इनाम देने की बात तय की गई और साथ ही यह फैसला भी लिया गया कि अगले दिन ब्यूरो बुलेटिन में इन फैसलों को प्रकाशित किया जाएगा।

सभा के बाद ल्यू थकान महसूस कर रहे थे। उनकी पीठ में कुछ दर्द था। वे अपनी पीठ सहलाते हुए अपने दफ्तर लौटे। अभी वे कुर्सी पर बैठे ही थे कि रेलवे मजदूर की यूनिफॉर्म पहने एक अपरिचित अंदर आया। उसने अपनी टोपी उतारी, उसके बाल सफेद थे और चेहरे

पर झुर्रियां थीं। हाथ में टोपी लिए हुए वह ल्यू की तरफ आया और बोला, "मैं निदेशक ल्यू से मिलना चाहता हूं।"

"मैं ही हूं। आप बैठें।" ल्यू ने सामने की कुर्सी की तरफ इशारा कर कहा। पर बूढ़ा नहीं बैठा।

"मेरा नाम ल्वी च्यूछाए है, मैं पाएथा रेलवे स्टेशन का पैटमैन हूं," बूढ़े मजदूर ने धीरे-धीरे नर्म आवाज में कहा।

ल्यू धीरे से अपनी कुर्सी से उठे, उन्होंने आदर के साथ धीमी आवाज में पूछा, "क्या आप कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य हैं?"

"हां, मैंने १९५० में पार्टी की सदस्यता ली।"

"मैं भी हूं। मैंने १९४२ में पार्टी की सदस्यता ली थी।"

दोनों चुप रहे। उन्होंने महसूस किया कि बोलना अनावश्यक है। चुप रहना ही बेहतर है। भाषा की शक्ति सीमित थी, पर भावनाओं की शक्ति असीम थी। दोनों ने एक-दूसरे को गौर से देखा। दोनों अपने सामने के व्यक्ति में कम्युनिस्ट पार्टी के सच्चे सदस्य की छवि देख रहे थे। अचानक ल्यू ने बूढ़े मजदूर को गले लगाया और रुंधे गले से कहा, "कॉमरेड, आप सचमुच अच्छे हैं।" फिर स्वयं पर काबू कर पूछा, "अभी आपकी उम्र क्या है?"

"उनसठ वर्ष चार महीने।"

"आप मुझसे एक वर्ष बड़े हैं। आप मेरे बड़े भाई हैं, हां बड़े भाई!" ल्यू ने खुश होकर कहा।

उन्होंने बूढ़े मजदूर के सफेद बालों और चेहरे की झुर्रियों को देखा और उदास होकर बोले, "कितने दुख की बात है! काश, आप दस या कम से कम पांच वर्ष छोटे होते! हमें अनेक जगहों पर आप जैसे ईमानदार व्यक्ति की जरूरत है!"

बूढ़े मजदूर ने अपना सिर हिलाया। वह कांपते होंठों से बोला, "अब मैं छोटा नहीं हो सकता, यह असंभव है। पर युवाओं की मदद करें, जिससे वे यथाशीघ्र परिपक्व हों। यह आप पर निर्भर करता है।"

ल्यू ने सहमति प्रकट की।

बूढ़े मजदूर ने अपनी बात जारी रखी, "मैं अगले वर्ष रिटायर हो जाऊंगा। पिछले बत्तीस वर्षों से रेलवे में काम कर रहा हूं। मुझे मालूम है कि स्विच रूम में कितने पत्थर लगे हैं। मैं काम नहीं...?"

ल्यू अशांत थे। वे कम्युनिस्ट पार्टी के इस पुराने सदस्य के प्रति आदर व्यक्त करना चाहते थे। फिर से गले लगाते हुए उन्होंने कहा, "आज रात आप हमारे हॉस्टल में ठहरें और कल वापस जाएं।"

बूढ़े मजदूर का जवाब सुने बिना उन्होंने फोन किया, "हेलो, मैं ल्यू ताशान बोल रहा हूं। आज हमारे एक मेहमान रात में यहां ठहरेंगे। उनके खाने की... क्या? किस श्रेणी के कार्यकर्ता हैं? एक मिनट..."

ल्यू मुस्कराए, रिसीवर के मुंह को हाथ से ढककर कनखी मारते हुए ल्वी च्यूछाए से कहा, "वे आपकी श्रेणी पूछ रहे हैं।"

"मैं केवल मजदूर हूं," ल्वी ने कहा।

ल्यू ने फोन पर बताया, "श्रेणी?... वह मेरे अधिकारी हैं!"

४

उस रात दस बजे ल्यू ताशान खाली पेट पैदल घर लौटे। उनकी पत्नी ने उनके लिए पहले से शराब गर्म कर दी थी। थके होने के बावजूद वह खुश दिख रहे थे, अपनी बूढ़ी पत्नी को देखकर वह मुस्कराए।

ल्यू वर्षों पहले गांव की एक लड़की के प्रेमपाश में फंसे थे। उस समय उनकी फौजी यूनिट उस गांव में रुकी थी। पर उनके प्रेम की जानकारी मिलने पर उनके कमांडर ने उन्हें सावधान किया कि हम लोग अभी युद्ध लड़ रहे हैं और यह विवाह करने का उचित समय नहीं है। युद्ध समाप्त होने तक प्रतीक्षा करनी चाहिए। हालांकि ल्यू को वह जगह छोड़नी पड़ी, मगर उनका दिल वहीं रह गया। १९५० में सेना से सेवामुक्त होने के बाद वह एक बार फिर उस गांव में उस लड़की की तलाश में गए। गांव वालों ने उन्हें बताया कि उस लड़की की तो शादी हो गई और वह मां भी बनने वाली है। यह सुनने के बाद किसी घायल शेर की तरह वह गांव से निकले। आखिरकार उन्होंने दिल को समझाया और अपने गांव लौट आए। गांव आकर उन्होंने एक लड़की से शादी की, वही अब उनकी पत्नी हैं। उनके प्रथम प्यार की तरह वह सुंदर नहीं थीं, पर सीधी, ईमानदार और दूसरे का ध्यान रखने वाली थीं। धीरे-धीरे ल्यू अपनी पत्नी से प्रेम करने लगे और उन्हें अहसास हुआ कि वह अपनी पत्नी को नहीं छोड़ सकते।

ल्यू ने शराब पी, पत्नी बगल में बैठी थीं। उन्हें आज पति से कुछ कहना था। पर वह इंतजार कर रही थीं। शराब पीने से पति का चेहरा लाल हो गया और आंखें मुस्कराहट से फड़कने लगीं। लगभग आधे घंटे के बाद उनके चेहरे को देखते हुए पत्नी ने कहा, "तुमने फिर से वही किया। वही पुरानी गलती।"

"कौन सी गलती?" ल्यू ने शराब के प्याले को होंठों से लगाते हुए पूछा।

"कौन सी गलती? तुम्हारा उग्र स्वभाव। तुमने लाओ पाए को क्यों दंडित किया?"

ल्यू ने पत्नी को घूरकर देखा, अपना प्याला टेबल पर रखकर जोर से बोले, "औरतों को राजनीति में दखलंदाजी नहीं करनी चाहिए। जब औरतें राजनीति में हस्तक्षेप करती हैं तो स्वाभाविक रूप से सब गड़बड़ कर देती हैं।"

उनकी पत्नी जानती थीं कि पीने के बाद वह अपेक्षाकृत अच्छी मानसिक अवस्था में रहते हैं। उन्होंने समझाया, " 'सांस्कृतिक क्रांति' से मिला सबक न भूलो..."

ल्यू ने अपनी आवाज ऊंची की और तरन्नुम में बोले, "अगर एक और 'सांस्कृतिक क्रांति' हो तो भी हम बुरे लोगों को मनमानी करने की इजाजत नहीं देंगे। मरने के बाद ही मैं हार मानूंगा।"

"नहीं! तुम्हें लाओ पाए की मदद करनी चाहिए और उनको मिले दंड के बारे में कुछ करना चाहिए।"

ल्यू ने अपनी भौहें चढ़ायीं और कठोर स्वर में बोले, "मैं कुछ भी नहीं करूंगा। पार्टी समिति के सामने उनको दिए जाने वाले दंड का प्रस्ताव मैंने रखा था, मैंने!"

"तो फिर..." उनकी पत्नी भी हार मानने को तैयार न थीं।

ल्यू ने शराब के प्याले को परे रखा। और शराब पीने की इच्छा खत्म हो गई थी। "अगर तुमने एक शब्द भी और कहा तो तुम्हें लानत है। मैं तुम्हें तलाक दे दूंगा।"

उनकी पत्नी से बर्दाश्त न हुआ, वह उठकर अंदर कमरे में रोने चली गयीं। ल्यू थोड़ी देर तक स्थिर बैठे सोचते रहे, "च्च! मुझ पर फिर से गुरिल्ला आदत सवार हो गई!" वह भी उठकर अंदर गए और प्यार से पत्नी को सीने से लगाया, "माफ करो, मुझे गुस्सा आ गया। दुनिया की सारी जवान लड़कियों के लिए भी मैं तुमसे अलग नहीं हो सकता! तुम मेरा कीमती खजाना हो।"

उनकी पत्नी ने हड़बड़ाकर दरवाजे की तरफ देखा और खुद को छुड़ाती हुई बोलीं, "जाने दो। यदि पोती ने देख लिया तो?"

दरवाजे पर हल्की दस्तक सुनाई पड़ी। ल्यू पत्नी के साथ बाहर निकले और उन्होंने दरवाजा खोला। एक युवक सिर झुकाए हुए अंदर घुसा। वह लगभग तीस वर्ष का था। पतले-दुबले, छोटे गोरे चेहरे वाले युवक के कंधे से एक बड़ा थैला लटका था।

ल्यू ने पूछा, "किसे खोज रहे हो?"

युवक ने कोई जवाब नहीं दिया। अचानक अपना चेहरा ढंककर वह रोने लगा। ल्यू को बड़ा अजीब सा लगा। उन्होंने युवक को बैठने के लिए कुर्सी दी और पूछा, "क्या बात है? मुझे बताओ।"

"मैं पाएथा रेलवे स्टेशन का स्टेशन मास्टर था। पर अब नहीं हूं... मैंने एक गलती की..." वह इस तरह सिसकियां ले रहा था, जैसे उसके मां-बाप अभी-अभी मरे हों।

हालांकि ल्यू अनुभवी व्यक्ति थे, पर इस विचित्र दृश्य ने उन्हें भावुक बना दिया। उन्होंने युवक को आगे-पीछे से एक नजर देखा। अचानक वह उसके आगे रुके, "होश में आओ और शर्म करो! क्या अपनी नौकरी खोने के कारण रो रहे हो? या अपनी गलती का पश्चाताप कर रहे हो? तमाशा मत करो! रोने से क्या तुम्हारा पद तुम्हें वापस मिल जाएगा? यह मत सोचो कि मैं दयालु बुद्ध हूं।"

युवक थोड़ी देर तक सिसकियां लेता रहा, फिर चुप हो गया। ल्यू अपनी हंसी नहीं रोक सके। उन्होंने मन ही मन सोचा, "कितना कुशल अभिनेता है! पिछले दस वर्षों में कितने अभिनेताओं को प्रशिक्षित किया गया है!"

युवक ने अपने चेहरे से हाथ हटाया। हालांकि उसकी आंखें लाल दिख रही थीं, पर उनमें आंसू नहीं थे। उसने ल्यू को झटके से देखा और फिर असहमति में अपने होंठ खोले, "निदेशक ल्यू, यदि आप ऐसे ही करते रहे..."

"क्या होगा? कहो, चुप क्यों हो गए?"

युवक ने गहरी सांस ली, जैसे ल्यू के प्रति दुख प्रकट कर रहा हो।

ल्यू हंसने लगे। उन्होंने अपने बालों में हाथ फेरते हुए कहा, "तो तुम्हें लगता है कि तुम्हारे

निकाले जाने से आसमान गिरने वाला है! तुम्हारी उम्र अधिक नहीं है, पर तुम चालबाज हो। पहले तुमने झूठ बोला, जब झूठ नहीं चला तो रोते हुए मेरे पास आए और अब मुझे धमकी दे रहे हो। लानत है तुम पर! क्या तुम पार्टी सदस्य हो?''

युवक ने नजर उठाकर ल्यू की क्रोधित नजरों को देखा। उसने फिर से गर्दन झुका ली।

''जाओ, ईमानदार आदमी बनने की कोशिश करो! मेरे साथ बकवास मत करो। मुझे इससे चिढ़ है!''

युवक ने कुछ और ''चालें'' चलने की कोशिश की, पर जैसे ही वह अगली चाल चलता था, शानतुङ निवासी ल्यू उसे खारिज कर देते थे। आखिर वह निराश होकर लौटा। ल्यू के घर से काफी दूर जाने के बाद उसने थैले में पड़ी शराब की बोतलें और केक निकालकर बाहर फेंक दिए और बुदबुदाया, ''अच्छा है आवारा कुत्ते खा जाएं।''

शीघ्र ही रात की हवा शराब की भीनी मीठी खुशबू से भर गई।

५

जब ब्यूरो बुलेटिन में दंड प्रकाशित किए गए, ऐसा लगा मानो रेल की पटरियां भूकंप के झटके से उखड़ गईं। कुछ लोग गहरी नींद से जागे और एक व्यक्ति पर तो मानो बिजली ही गिर पड़ी। पाए फ़ान उसी दिन दिल की बीमारी से बीमार पड़ गए। जब ल्यू ने सुना तो सोचा : ''क्या शर्मिंदगी के कारण वह बीमार पड़ा या फिर उसे ऐसा लगा कि उसे गलत समझा गया। पिछले कुछ वर्षों में ऐसी कितनी घटनाएं हमारे समाज में हो चुकी हैं? लोगों में बीमार पड़ने की प्रकृति उभरी थी, इससे वे यह सिद्ध करना चाहते थे कि उन्होंने बहुत काम किया है।''

ल्यू ने उस रात पाए फ़ान के यहां जाने को सोचा। वह स्वयं उनके स्वास्थ्य के बारे में जानना चाहते थे। अधिकांश व्यक्ति इस तरह की मुलाकात से डरते हैं, पर ल्यू ऐसे नहीं थे।

चांदनी रात में तारे जगमगा रहे थे। सड़क पर लोगों की आवाजाही कम हो गई थी। युवक-युवतियों के कुछ जोड़े पास के बगीचे में जा रहे थे।

ल्यू एक नवनिर्मित अपार्टमेन्ट में पहुंचे। दरवाजे पर दस्तक दिए बिना वह सीधे दूसरी मंजिल के एक कमरे में घुसे। कमरे में पाए सिर के नीचे तकिए डाले बिस्तर पर लेटे थे। बिस्तर की बगल की मेज पर दवाइयों की बोतलें पड़ी थीं, उनमें से कुछ जापान और जर्मनी से आयातित दवाइयां भी थीं। वह सचमुच बीमार थे। पाए फ़ान ने जब ल्यू को देखा तो उन्होंने दीवार की तरफ पलटने की कोशिश की और आंखें बंद कर लीं। तभी भीतरी कमरे का दरवाजा खुला। कमरे के अंदर से सुंदर युवती लिङलिङ ने झांककर देखा। ल्यू को देखने के बाद उसने झटके से दरवाजा बंद कर दिया। ल्यू वहां खड़े-खड़े सोचते रहे, ''ऐसा अहंकार!'' वह कुर्सी खींचकर बैठ गए। मेज पर एक सुंदर औरत की तस्वीर रखी थी। पाए की पत्नी की तस्वीर थी, दो वर्ष पहले उनका देहांत हो गया था। जब वह छोटी थीं, तभी से अपनी

सुंदरता के लिए प्रसिद्ध थीं। पाए फ़ान का वास्तविक नाम पाए अड़चू था। इस लड़की के प्रेम में अपने नाम को थोड़ा रोमांटिक बनाने के लिए उन्होंने नया नाम रख लिया था, हालांकि ल्यू ताशान ने उस समय नाम बदलने का विरोध किया था। पाए फ़ान ने इस लड़की को प्रेम पत्र लिखने के लिए विश्वविद्यालय के एक लड़के की मदद ली थी। पत्र "मेरी प्रिय..." संबोधन से आरंभ किया गया था, ताकि लड़की यह सोचे कि पाए फ़ान योरप में पढ़ चुके होंगे। परंतु उसने "मेरी प्रिय..." संबोधन को पसंद नहीं किया था। इन अशुभ शब्दों के कारण पाए फ़ान को परखने में उसने तीन महीने का अधिक समय लगाया। अब यह सौंदर्य दुनिया में नहीं है। तस्वीर की वह औरत उदास नजरों से अपने घर को देखती हुई मानो पाए फ़ान और अपनी बेटी लिङलिङ से पूछ रही थी, "मेरे बिना तुम लोग कैसे रह रहे हो?"

ल्यू काफी देर तक बैठे रहे। पाए ने करवट नहीं बदली। ल्यू ने अंदर के कमरे के दरवाजे की तरफ देखा, खांसा और आवाज दी, "लिङलिङ, तुम्हारे यहां एक मेहमान आया है। क्या तुम चाय नहीं पिलाओगी?"

अंदर के कमरे से फिर भी कोई आहट न मिली। ल्यू ने अपनी आवाज ऊंची की, "लिङलिङ, क्या तुम्हें भी दिल की बीमारी हो गई है?"

अंदर के कमरे में शांति छाई रही। अचानक पाए पलटे और बोले, "लिङलिङ, यह बड़ों के बीच की बात है। तुम इसमें न पड़ो और चाय ले आओ!" उनकी आवाज में रूखापन था। उन्होंने लिङलिङ को बुलाकर फिर से पीठ घुमा ली और आंखें बंद कर लीं।

मुंह फुलायी हुई लिङलिङ आई। उसने चाय की प्याली ल्यू को दी। ल्यू ने उसकी आंखों में आंसू देखे।

उसने अपने चेहरे से आंसू पोंछते हुए कहा, "चाचा ल्यू, आपने मेरे पिता के साथ ऐसा व्यवहार क्यों किया... यदि उन्हें कुछ हो गया तो मैं क्या करूंगी?"

ल्यू ने उसके सिर को सहलाते हुए भरे दिल कहा, "नहीं, उन्हें कुछ नहीं होगा।" फिर कहा, "यदि कुछ हो गया तो मैं हूं न!"

लिङलिङ मुस्कराई। ल्यू ने बिस्तरे के पास कुर्सी खींची और पाए से कहा, "धिक्कार है! कम से कम मुझसे बोलो तो।"

पाए ने कमर सीधी की, पर चेहरा नहीं घुमाया। ल्यू ने आगे कहा, "मैं जानता हूं, तुम परेशान हो। पर क्या तुम्हें लगता है कि मैं खुश हूं? लिङलिङ की रोनी सूरत देखकर मेरे दिल पर क्या गुजरी? पर हम क्या कर सकते हैं? हम अपने आदर्श और सिद्धांत छोड़ दें क्या? पार्टी छोड़ दें? तुम मुझसे अधिक जानते हो... आओ... थोड़ी शराब पिएं।"

पाए ने चेहरा घुमाया और ल्यू से पूछा, "किसके लिए शराब पियोगे, दोस्ती की खातिर? दो वर्ष हिरासत में रहने के नाम पर? या मुझे दंडित करने के नाम पर?"

ल्यू ने जवाब नहीं दिया। थोड़ी देर के बाद वह बोले, "धिक्कार है! तुम इतने जिद्दी क्यों हो?" उन्होंने कपबोर्ड खोला और एक पोर्सलिन जार और अड़क्वोथओ (बाजरे से बनायी गई विशेष शराब) की बोतल निकाली। उन्होंने पोर्सलिन जार को आधा भरा और जाम उठाकर बोले, "हमारी दोस्ती की खातिर।"

ल्यू ने लंबी घूंट ली और पाए की तरफ जार बढ़ाया। पाए ने जार नहीं पकड़ा। ल्यू ने फिर से जाम उठाया, "वाष्प इंजन की समाप्ति और स्वचालित स्विचिंग के नाम पर!" उन्होंने फिर से एक घूंट ली और पाए की तरफ जार बढ़ाया। पाए ने फिर भी ध्यान नहीं दिया। ल्यू ने तीसरी बार जाम उठाया और बोले, "हम दोनों की खातिर, कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्यों की खातिर और तुम्हारी पार्टी सदस्यता के लिए मेरी सिफारिश की खातिर!" उन्होंने तीसरी बार घूंट भरी और पाए की तरफ जार बढ़ाया। इस बार पाए बिस्तर से उठ बैठे। उनका चेहरा लाल हो गया। उन्होंने कांपते हाथों से जार पकड़ा और धीरे-धीरे घूंट भरी।

ल्यू खड़े हुए और जाने के लिए मुड़े। वह बाहर निकल गए। उन्होंने पीछे किसी के आने की आवाज नहीं सुनी। काफी दूर जाने के बाद उन्होंने मुड़कर देखा, दरवाजे के बाहर लिङलिङ के सहारे पाए खड़े थे और उन्हीं की तरफ देख रहे थे। ल्यू फिर से भावुक हो उठे, "आः... वह सड़ी लकड़ी का कुंदा नहीं है।"

रात गहरी हुई। ल्यू को लौटते समय लगा कि उनके दिमाग में कुछ घूम रहा है। उनकी बगल से एक प्रेमी युगल निकला, युवती का सिर युवक के कंधे से टिका था और दोनों खामोश चले जा रहे थे। ल्यू ने उन्हें फिर से देखने की कोशिश नहीं की। उन्हें अपनी पिछली जिंदगी याद आ गई! उनकी आंखों के सामने च्याओतुङ के खेत, लाल बेर और सहयोद्धाओं की मृत्यु के दृश्य उभर आए। उन्होंने पुराने डिवीजनल कमांडर की कड़क आवाज सुनी, "क्या तुम कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य हो?"

उन्होंने महसूस किया कि उन्हें पाए को, कम्युनिस्ट पार्टी के सभी सदस्यों को, इस प्रश्न का ईमानदारी से उत्तर देना चाहिए।

विजय कुमार बसु की डायरी

ISBN: 81-7007-163-1 पृष्ठ : ३४०
अक्तूबर, १९९३ मूल्य : ९५ रुपये

डॉ० विजय कुमार बसु उस मेडिकल मिशन के एक महत्वपूर्ण सदस्य थे जो भारत की जनता की ओर से चीन की संघर्षरत जनता की सहायतार्थ १९३८ में चीन भेजा गया था।

१९३८ से आरम्भ, १९४३ तक लिखी गयी डॉ० विजय कुमार बसु की यह ऐतिहासिक डायरी न केवल चीनी जनता के वीरत्वपूर्ण संघर्ष की झांकी प्रस्तुत करती है वरन् माओ चतुङ, चू ते और चओ अनलाए जैसी विभूतियों से इस मेडिकल मिशन के सदस्यों की जब-तब मुलाकातों से भी परिचित कराती है।

इस मेडिकल मिशन को विदाई देने के लिए बम्बई में एक विशाल सार्वजनिक सभा आयोजित की गयी थी जिसकी अध्यक्षता सुप्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी सरोजिनी नायडू ने की थी। डॉ० बसु के शब्दों में, "हमें फूलमालाएं पहनाते और सफेद रेडक्रॉस पट्टे भेंट करते हुए उन्होंने हमारे जरिए चीनी जनता के लिए एकता का सन्देश भेजा और भविष्यवक्ता के अन्दाज में कहा, 'आप बहुत जोखिम का काम हाथ में ले रहे हैं...हो सकता है, आप में से कुछ या एक भी न लौटे।'" सच ही, डॉ० कोटनिस नहीं लौटे, तथापि अपने निधन से पूर्व चीन में ही विवाह कर भारत-चीन मैत्री की दृढ़ आधारशिला स्थापित कर गये।

पुस्तक के अन्त में दिये गये रिपोर्ताज तथा चित्र आदि इस पुस्तक के महत्व को और भी बढ़ा देते हैं।

मूल्य : 85 रुपये ISBN: 81-7007-183-6